हिन्दी समिति ग्रन्थमाला संख्या——१९७

# भारत का भाषा-सर्वेक्षण

[भाग ९——पंजाबी]

संकलनकर्ता तथा सपादक

सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

अनुवादक

डॉ० हरदेव बाहरी

प्रयाग विश्वविद्यालय

हिन्दी समिति

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

लखनऊ

# प्रकाशकीय

भारतीय आर्य परिवार की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओ और लिपियो मे शिल्पिक सघटन का बाहरी विभेद होते हुए भी भाव एव ध्वनि-व्यजना मे पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इसी प्रकार व्याकरणिक ढाँचे मे सज्ञा, क्रिया, कारक आदि की बहुत कुछ एकरूपता दिखाई देती है। यह इस विशाल देश की एकात्मता या भावात्मक एकता का ज्वलन्त उदाहरण है। भाषा-विज्ञान के विद्वानो ने इस विषय के स्पष्टीकरण का स्तुत्य प्रयास किया है, जिसमे सर जार्ज ग्रियर्सन भारतीय भाषातत्त्वान्वेषण के अनुपम आचार्य माने जाते हैं। कार्यत और आकारत उनकी महान् कृति 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया' एक संदर्भग्रन्थ के साथ ही तुलनात्मक अध्ययन की दिशा मे भी प्रामाणिक रचना है। उक्त ग्रन्थ की भाषावैज्ञानिक उपयोगिता से आकृष्ट होकर हिन्दी समिति ने उसके हिन्दी भाषी क्षेत्र के सर्वेक्षण सबधी भागो का राष्ट्रभाषा मे प्रकाशन आरम्भ किया, जिसके अन्तर्गत प्रस्तुत 'भारत का भाषा-सर्वेक्षण' भाग - ९ का पजाबी खण्ड आशिक रूप मे पश्चिमी हिन्दी से सबद्ध है।

समिति के अनुरोध पर उक्त खण्ड का अनुवाद-कार्य सुप्रसिद्ध कोशकार एव भाषा-वैज्ञानिक डा० हरदेव बाहरी ने सपन्न किया है, तदर्थ समिति आपकी आभारी है। पजाबी होने के नाते आपने इस अनुवाद कार्य मे पजाबी, डोगरी, काँगडी, लहँदा, कश्मीरी आदि के सूक्ष्म भेदो के रूपान्तरो एव गुरमुखी, टाकरी, शारदा, फारसी आदि लिप्यन्तरो का साधिकार निर्वाह किया है, जिससे पुस्तक की प्रामाणिकता बढ गयी है। आशा है, पिछले प्रकाशनो की तरह यह खण्ड भी पाठको के भाषावैज्ञानिक अध्ययन मे अच्छा मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
सचिव, हिन्दी समिति

पंजाबी भाषा क्षेत्र
बोलियां तथा उपबोलियां
कश्मीरी
तिब्बत-बर्मी भाषाएं
चमेआली
हिन्दुस्तानी
राजस्थानी
अटक
करनाल
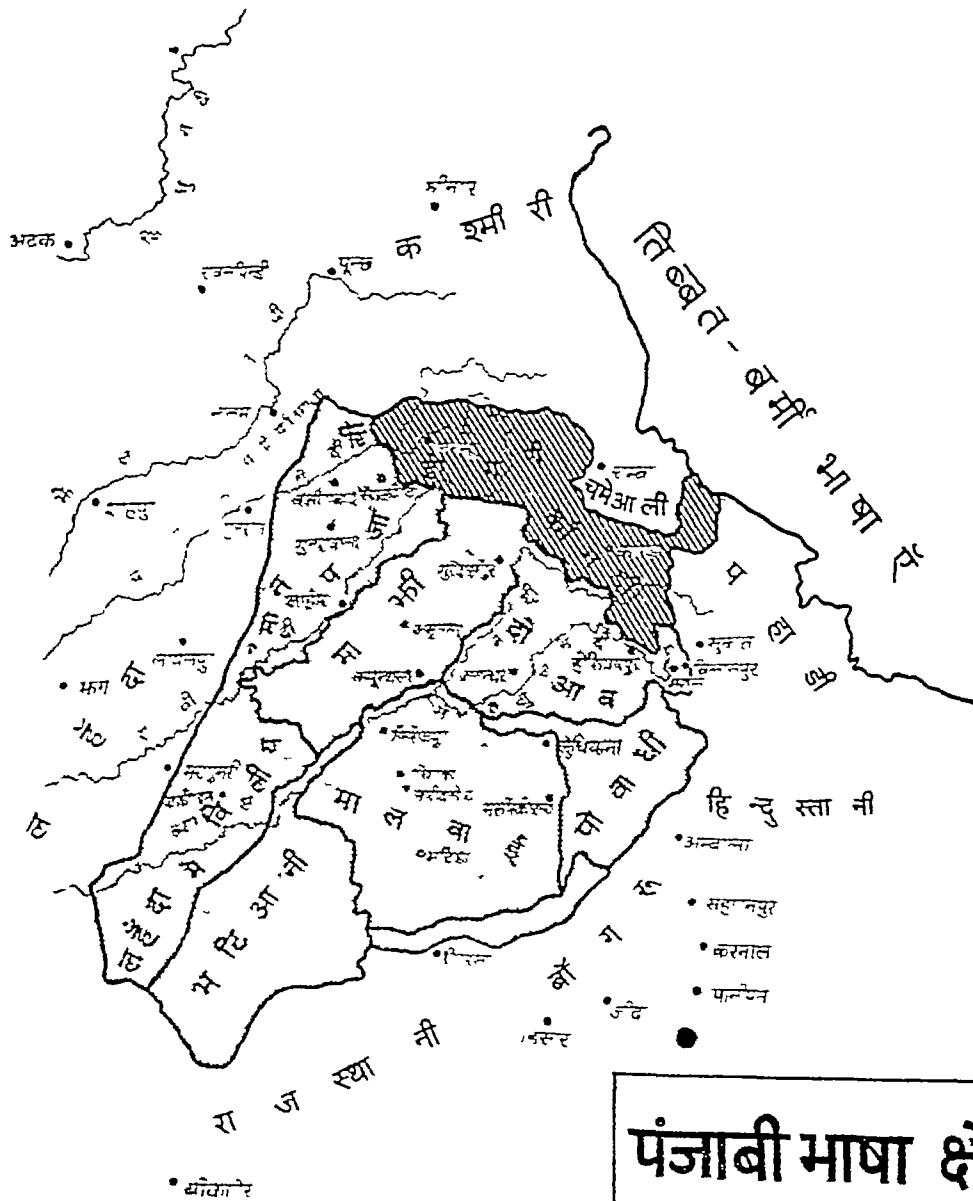
# अनुवादकीय

## सर्वेक्षण-कार्य

### ग्रियर्सन से पहले

अलवरूनी से लेकर ग्रियर्सन तक ऐसे विदेशी विद्वानो की एक लबी सूची है जिन्होंने भारतीय भाषाओ को अपने अनुशीलन का विषय बनाया। ऐसे विद्वानो मे बहुतो ने एक-एक भाषा की खोज की, लेकिन व्यापक अध्ययन करनेवालो मे, और इस नाते भारतीय भाषाओ के परस्पर सबन्धो का अन्वेषण करनेवालो मे पहला नाम शायद 'सीरामपुर मिशन' के पादरी विलियम कैरे का है। सन् १७९३ से १८२२ तक, वे बाइबिल के अनुवाद भारतीय भाषाओ मे करते-कराते रहे। सन् १८१६ मे उन्होने सस्कृत, बगला, हिन्दी, कश्मीरी, डोगरी, वुच (लहँदा), सिन्धी, कच्छी, गुजराती, कोकणी, पजाबी, बीकानेरी, मारवाडी, जयपुरी, उदयपुरी, हाडौती, ब्रज, बुन्देलखण्डी, महाराष्ट्री, मागधी, अवधी (कोसली), मैथिली, नेपाली, असमी, उडिया, तेलुगु, कन्नड, पश्तो, बलूची, खसी और बरमी, इन प्रमुख भाषाओ के नमूने प्रकाशित किये। इनके सहयोगियो मे मार्शमैन और वार्ड भी थे। ये नमूने बाइबिल की 'ईश-प्रार्थना' के भाषान्तर हैं। प्रत्येक नमूने के शब्दो और व्याकरणिक रूपो पर विचार किया गया है। १८१२ ई० मे कैरे का एक 'पजाबी व्याकरण' भी प्रकाशित हुआ था।

मेजर राबर्ट लीच के अध्ययन का विस्तार इतना बड़ा तो नही था, लेकिन सन् १८३८ से १८४३ तक प्रकाशित ब्राहुई, बलोची, पजाबी, पश्तो, बुदेली तथा कश्मीरी भाषाओ के उनके द्वारा तैयार किये हुए व्याकरण गभीरता और तुलनात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कई बोलियो के शब्द-सकलन भी प्रकाशित कराये।

कैरे की उपर्युक्त देन के सैंतीस वर्ष बाद, बम्बई मे भारतीय आर्यभाषाओ के तुलनात्मक अध्ययन की चर्चा आरम्भ हुई। बम्बई के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश तथा रायल एशियाटिक सोसाइटी के अध्यक्ष सर टामस एरस्किन पेरी ने १८५३ ई० मे भारत की भाषाओ के वर्गीकरण पर नया प्रकाश डाला। उन्होंने पजाबी, लहँदी (जिसे उन्होने मुलतानी कहा), सिन्धी तथा मारवाडी को हिन्दी की बोलियाँ माना।

सन् १८६७ मे सिविल सर्विस के एक युवक अधिकारी जान वीम्स ने "भारतीय भाषाओ की रूपरेखा" शीर्षक विवरण प्रस्तुत किया, और इसके पाँच वर्ष बाद उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ "आधुनिक आर्य भाषाओ का तुलनात्मक व्याकरण" प्रकाशित हुआ। इसके तीन खण्डो मे पजाबी, बगाली, उडिया, हिन्दी, मराठी, गुजराती और सिन्धी के ध्वनिविकास और व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सन् १८८६ मे वियना के प्राच्य सम्मेलन मे इस बात पर विचार हुआ कि भारत मे भाषाध्ययन की क्या-क्या समावनाएँ हैं। सम्मेलन ने एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से अनुरोध किया कि वह भारत की भाषाओ का विधिवत् सर्वेक्षण कराये। डा० कूलर और डा० वेबर इसके प्रस्तावक थे और कावेल, मैक्समूलर, हार्नले, ग्रियर्सन समर्थक। भारत सरकार ने सिद्धान्तत इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु आर्थिक कठिनाइयो के कारण इस पर तत्काल कोई कार्रवाई नही की जा सकी।

## सर जार्ज ग्रियर्सन का कार्य

सन् १८९४ मे सर्वेक्षण का कार्य जार्ज ग्रियर्सन को सौपा गया। वे विहार सिविल सर्विस मे थे। उस समय तक उनके 'विहारी भाषाओ के सात व्याकरण' प्रकाशित हो चुके थे। वे लगभग एक सौ भाषाओ के जानकार थे। नये काम के लिए सरकार के सारे साधन उन्हे उपलब्ध हुए। सर्वेक्षण के कुछ आधार निश्चित किये गये। किन्ही कारणो से हैदराबाद और मैसूर राज्य तथा मद्रास और बरमा प्रान्त को सर्वेक्षण का क्षेत्र न बनाया जा सका। शेप प्रान्तो के जिलाधिकारियो को आदेश दिये गये कि वे अपने-अपने जिले मे व्यवहृत प्रत्येक बोली या भाषा के तीन नमूने भेजे। पहला—अपव्ययी पुत्र (उडाऊ पूत) की कथा का अनुवाद, जो अग्रेजी से न कराकर किसी अन्य भारतीय भाषा से करायें। १८९७ ई० मे इस कथा के ६५ भाषान्तर तैयार करके पुस्तक रूप मे प्रकाशित किये गये। इसकी सहायता से क्षेत्रीय कार्य करनेवालो को बहुत सुविधा रही। यह भी कहा गया कि अनूदित कथा का पक्ति-पक्ति लिप्यन्तर और शाब्दिक अनुवाद कराया जाय। दूसरा नमूना स्थानीय लोगो की इच्छा से लिया जाय—वह कोई विवरण, गीत अथवा वृत्त हो सकता है। तीसरे नमूने मे कुछ शब्द और वाक्य थे (देखें, इसी पुस्तक के अन्त मे पृ० २२२ इत्यादि)। इन्हे छपे हुए फार्मों मे भरकर भेजना था।

नमूने १८९७ मे आने शुरू हो गये और १९०० के अन्त तक तो अधिकाश आ भी

गये, यद्यपि कुछ-एक नमूने वाद मे आते रहे। इनकी जाँच तथा सम्पादन का कार्य सन् १८९८ मे आरम्भ कर दिया गया। यदि एक ही जगह के नमूनो मे पाठभेद होता था तो भाषाशास्त्र की दृष्टि से निर्णय किया जाता था, नही तो पत्र-व्यवहार द्वारा शका-समाधान किया जाता था। सव नमूने नही लिये जा सके—कुछ अनावश्यक थे, कुछ रद्दी थे। एक ही वोली के कई नमूने होते थे तो अच्छे से अच्छा नमूना स्वीकृत होता था।

ग्रियर्सन ने अपने सहयोगियो, कर्मचारियो और लिपिको की सहायता से इन सव नमूनो का परीक्षण किया। इनके आधार पर उन्होने वोलियो का परस्पर सवन्ध, आसपास की भाषाओ से उनका जोड-मेल निर्धारित किया और प्रत्येक वोली के व्याकरण और अन्य विशेषताओ की सक्षिप्त रूपरेखा तैयार की। अध्ययन और पूछ-ताछ के भरोसे उन्होंने प्रत्येक भाषा का सक्षिप्त इतिहास, बोलनेवालो की संख्या और उनका स्वभाव, उस भाषा का साहित्य उपलब्ध है तो उसका परिचय एव उस भाषा या वोली पर उस समय तक जो कार्य हुआ उसका विवरण दिया। वोलियो अथवा भाषाओ की सीमाएँ क्या है, इस जटिल प्रश्न को भी उन्होंने गम्भीरतापूर्वक हल करने की चेष्टा की। किन्तु उनका कोई आग्रह नही है कि उस सीमा को सिद्ध मान लिया जाय। यह सीमा दो-चार मील इधर-उधर भी हो सकती है। कोई तथाकथित भाषा वास्तव मे भाषा है या वोली, इसका निर्णय उन्होने कुछ सिद्धान्तो की स्थापना करके किया। उनसे विद्वानो का मतभेद हो सकता है—हुआ भी, किन्तु ग्रियर्सन ने कहा कि मैं अपना मत परिवर्तित करने को तैयार नही हूँ। वे जानते थे कि कोई ऐसा निर्णय देना जो सवको स्वीकार्य हो अत्यन्त कठिन है।

सन् १८९१ की जनगणना के अनुसार सारे भारत की आवादी उस समय २८ करोड ७० लाख थी। ये लोग, सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यो के अनुसार, १७९ भाषाएँ और ५४४ वोलियाँ वोलते थे। इनका विवेचन ग्रियर्सन ने "भारत का भाषा-सर्वेक्षण" के ११ वडे-वडे खण्डो मे प्रकाशित कराया। यह कार्य १९२७ ई० मे ३३ वर्षों की निरन्तर साधना के साथ समाप्त हुआ। उक्त ग्यारह खण्डो का ब्यौरा इस प्रकार है—

पहला खड, भाग १—भूमिका

भाग २—भारतीय भाषाओ का तुलनात्मक शब्द-भण्डार

भाग ३—भारतीय आर्यभाषाओ का तुलनात्मक कोश

दूसरा खंड, मान ख्मेर और ताई परिवार
तीसरा खंड, भाग १—तिब्बत और उत्तरी असम की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ
भाग २—बोडो, नागा, काचिन वर्ग की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ
भाग ३—कुकी, चिन तथा बरमा वर्ग की तिब्बत-बर्मी भाषाएँ
चौथा खड, मुण्डा तथा द्रविड़ भाषाएँ
पाँचवाँ खंड, भाग १—बगाली तथा आसामी
भाग २—बिहारी तथा उड़िया
छठा खण्ड, पूर्वी हिन्दी
सातवाँ खण्ड, मराठी
आठवाँ खण्ड, भाग १—सिन्धी तथा लहँदा
भाग २—दरदी, पिशाच भाषाएँ
नवाँ खण्ड, भाग १—पश्चिमी हिन्दी तथा पंजाबी
भाग २—राजस्थानी तथा गुजराती
भाग ३—भीली भाषाएं, खानदेशी आदि
भाग ४—पहाड़ी भाषाएँ
दसवाँ खण्ड, ईरानी परिवार
ग्यारहवाँ खण्ड, जिप्सी भाषाएँ

ऐतिहासिक आधार पर आर्यों के बसने के क्रम से, भारतीय आर्य-भाषाओ की पहले दो शाखाएँ मानी गयी—बहिरग और अन्तरग। इन दोनो के बीच मे पूर्वी हिन्दी को रखा गया, जिसे ग्रियर्सन ने मध्यवर्ती शाखा कहा। 'भाषा-सर्वेक्षण' मे उन्होने इन सब भाषाओ का वर्गीकरण इस प्रकार से किया—

१. बहिरग शाखा—(क) पश्चिमोत्तरी वर्ग (लहँदा, सिन्धी)
(ख) दक्षिणी वर्ग (मराठी)
(ग) पूर्वी वर्ग (उड़िया, बंगाली, आसामी, बिहारी)
२. मध्यवर्ती शाखा—पूर्वी हिन्दी
३. अन्तरंग शाखा—(क) केन्द्रीय वर्ग (पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, भीली, खानदेशी।
(ख) पहाड़ी वर्ग (पूर्वी, मध्यवर्ती, पश्चिमी)।

वाद मे ग्रियर्सन ने अन्तरग शाखा की भाषा के वर्गीकरण मे थोडा हेर-फेर किया। भारतीय विद्वानो ने प्राय इस वर्गीकरण को स्वीकार नही किया। किन्तु ग्रियर्सन अपने मत पर दृढ रहे।

जव से भारतीय विद्वानो ने अपनी भाषाओ और वोलियो पर शोधकार्य किया है, तव से सर जार्ज ग्रियर्सन के अनेक निष्कर्षो पर प्रश्नचिह्न लग गये हैं। प्रस्तुत भाग मे ही हम लिप्यन्तर, उच्चारण, अनुवाद, व्याकरण आदि की अनेकानेक गलतियाँ दिखा सकते हैं। ध्वनिशास्त्रीय जानकारी अपूर्ण भी है और यत्र-तत्र भ्रामक भी। वैसे भी यह सर्वेक्षण व्यापक भले ही हो, गंभीर नही है। किन्तु इन वातो से ग्रियर्सन के इस कार्य का मूल्य कम नही होता। यह सच है कि जव ग्रियर्सन ने यह काम किया था तव तक ससार के किसी दूसरे देश मे ऐसा नही हुआ था। यह भी सच है कि अपने सीमित साधनो के रहते ग्रियर्सन ने वडे परिश्रम और सावधानी से भाषागत तथ्य निकाले और जो दो-तीन नमूने किसी वोली के उनके पास थे, उनके आधार पर उन्होने इतनी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत कर दी जो कि आज तक नाना वोलियो के विषय मे भारतीय भाषाशास्त्र की रीढ वनी हुई है। भाषाशास्त्र के सैंकडो विद्यार्थियो और अनुसन्धित्सुओ ने इस सन्दर्भ-शास्त्र से लाभ उठाया है और कई पीढियो तक हजारो लोग लाभान्वित होते रहेगे।

## प्रस्तुत पुस्तक

ग्रियर्सन ने अपने सर्वेक्षण के नवम खण्ड मे पश्चिमी हिन्दी, पजावी, राजस्थानी, गुजराती, भीली और खानदेशी को सम्मिलित किया है। यह बात सर्वसम्मति से मानी गयी है कि इन भाषाओ का परस्पर घनिष्ठ संवध है। इनमे भी ग्रियर्सन के अनुसार, पश्चिमी हिन्दी से पजावी का सवध सवसे निकट का है। उन्होंने इस खण्ड के एक भाग मे पश्चिमी हिन्दी और पजावी को एक साथ जोड़ दिया है। हम लोग राजस्थानी को पश्चिमी हिन्दी से अधिक सपृक्त मानते चले आ रहे हैं। ग्रियर्सन के मत पर विद्वानो ने विचार नही किया। उन्होंने सर्वेक्षण की भूमिका मे लिखा है कि वहुत अशो मे हिन्दी से पजावी का वही सवन्ध है जो वर्न्स कवि की स्काच भाषा का दक्षिणी अग्रेजी से है। यह भी याद रहे कि व्यवहारत वे विहार अथवा पूर्वी हिन्दी की अपेक्षा पजावी को पश्चिमी हिन्दी के अधिक निकट मानते थे। इनसे पूर्व पेरी ने तो पजावी को हिन्दी की एक वोली कहा था। आधुनिक खोजो से भी यह तथ्य प्रकट होता है कि हिन्दी के विकास

मे पजावी का योगदान वहुत अधिक है। पजावी की 'गुरुवाणी' का अध्ययन करने से अथवा फरीद आदि प्राचीन पजावी कवियो की भापा को देखने मे यह नही लगता कि हिन्दी और पजावी मे कोई वहुत वडा अन्तर है। इस विपय पर गम्भीर तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से इस खण्ड के पजावी अश का जो हिन्दी अनुवाद और नागरी लिप्यन्तर हिन्दी जगत् के सामने आ रहा है, उससे इस दिशा मे कई लोगो को सोचने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रस्तुत पुस्तक को पढते समय कुछ बातें घ्यान मे रखने की हैं—प्रथम यह कि ग्रियर्सन के समय का पजाव आज का पजाव नही रहा। इस सर्वेक्षण मे आये हुए कई ज़िले—मटगुमरी, सियालकोट, लाहौर, गुजरांवाला, गुजरात—अव पाकिस्तान मे है। पजाव अव 'पाँच नदियो का देश' नही रहा। रचना (रावी और चनाव के वीच का) दोआव अव भारत मे नही है। इधर पूर्व मे अम्वाला ज़िला हरियाणा मे आ गया है। ग्रियर्सन के समय मे दिल्ली भी पजाव प्रान्त मे थी। कुल्लू, काँगडा और शिमला हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत हैं। जम्मू, जहाँ पंजावी की डोगरी वोली वोली जाती है, कश्मीर राज्य के साथ है। इन तथ्यो को दृष्टि मे रखते हुए पाठको को ग्रियर्सन का तैयार किया हुआ मानचित्र सावधानी से देखने की आवश्यकता होगी।

ग्रियर्सन की अग्रेज़ी अशो मे पुरानी पड गयी है। उनके समय मे भापा-विज्ञान की पारिभाषिक शव्दावली अपूर्ण तो थी ही, आज की शव्दावली से भिन्न भी थी। हमने चेप्टा की है कि ग्रियर्सन के युग को सुरक्षित रखा जाय। यह उचित ही था, यद्यपि आधुनिक पाठक को उसके समझने मे थोडी-वहुत कठिनाई हो सकती है। पजावी नमूनो का हिन्दी मे अनुवाद करते समय हमने पजावी की आत्मा, पजावी सरचना, शव्द-क्रम आदि को अक्षुण्ण रखने की चेष्टा की है। ग्रियर्सन ने अधिकारियो, सूचको और कर्मचारियो को निर्देश दे रखा था कि अनुवाद शाब्दिक रहना चाहिए। क्योकि हैं इससे मूल भाषा की प्रकृति को यथार्थ रूप मे आँका जा सकता है।

नमूनो का लिप्यन्तर करते समय हमने ग्रियर्सन की रोमन लिपि का ध्यान तो रखा है, किन्तु जहाँ गुरमुखी, फारसी या नागरी लिपि और रोमन मे सामजस्य नही था वहाँ मूल (भारतीय) लिपि का अनुसरण किया है—केवल शुद्धता के उद्देश्य से।

हरदेव वाहरी

# विषय-सूची


भूमिका — १

- नाम और प्रदेश — १
- भाषागत सीमाएँ — १
- पश्चिमी सीमा — २
- पंजाबी और 'पाँच नदियों का देश' — ३
- बोलियाँ और उपबोलियाँ — ४
- बोलने वालों की संख्या — ७
- पंजाबी की विशेषताएँ — १४
- लहँदा और पश्चिमी हिन्दी से सम्बन्ध — १५
- उच्चारण — १६
- संज्ञा के कारक-चिह्न — १७
- सम्बन्ध कारक — १८
- कर्ता कारक — १८
- पुरुषवाची सर्वनाम — १९
- कर्मवाच्य — १९
- सार्वनामिक प्रत्यय — २०
- शब्दभंडार — २०
- पंजाब का प्राचीन इतिवृत्त — २१
- साहित्य — २२

पुस्तक-सूचियाँ — २३

- (१) सामान्य — २३

(२) व्याकरण, कोश आदि — ३२
लिपि — ३७
व्याकरण — ४४
पंजाबी का संक्षिप्त व्याकरण — ४७
सज्ञाएँ — ४७
विशेषण — ४८
सर्वनाम — ४९
क्रियाएँ — ५१
क सहायक क्रिया — ५१
ख कर्तृवाच्य क्रिया — ५३
ग. अनियमित क्रियाएँ — ५४
घ. कर्मवाच्य — ५७
ङ. प्रेरणार्थक क्रियाएँ — ५७
च सयुक्त क्रियाएँ — ५७
पजावी के शव्दो की सूची, जिनके आदि मे व आता है — ५८
डोगरा या डोगरी — ६१
प्रदेश — ६१
नाम की व्युत्पत्ति — ६१
भाषागत सीमाएँ — ६२
उपवोलियाँ — ६२
वोलनेवालो की सख्या — ६२
वोली की विशेषताएँ — ६३
साहित्य — ६३
लिपि — ६४
डोगरी व्याकरण — ६९
आदर्श पंजावी — ७५
नमूना, स० १ — ७५

माझी ७९

नमूने, सं० २, ३, ४ ८२,८८,९२

जलंधर दोआव की पंजाबी ९९

नमूना, सं० ५ १०१

कहलूरी या बिलासपुरी १०५

नमूना, सं० ६ १०६

पोवाधी १०७

नमूने, सं० ७, ८, ९, १० ११०,११४,११६,११८

राठी या पछाड़ी १२०

नमूने, स० ११, १२, १३ १२१,१२२,१२५

मालवाई १२८

नमूने, स० १४—१९ १३२-१४६

भट्टिआनी १४८

बीकानेर की राठी १४९

नमूना, स० २० १५०

फीरोजपुर की तथाकथित वागडी १५२

नमूना, स० २१ १५३

फीरोजपुर की राठौरी १५३

नमूना, सं० २२ १५४

भटनेरी १५४

नमूना, स० २३ १५५

लहँदा मे विलीयमान पंजाबी १५६

पश्चिमी लाहौर की पंजाबी १५८

नमूना, स० २४ १६१

सियालकोट, पूर्वी गुजरावाला और उत्तरपूर्वी गुजरात की पंजाबी १६४

नमूना, स० २५ १६६

पूर्वी मंटगुमरी की पंजाबी १६८

नमूना, स० २६ १६९

डोगरा अथवा डोगरी १७०

नमूना, स० २७ १७१
नमूना, स० २८ १८५

कण्डिआली १८८

नमूना, स० २९ १८९

काँगडी बोली १९०

नमूने, स० ३०, ३१, ३२ १९६,२०४,२०६

भटेआली २०८

नमूना, स० ३३ २१४

पंजाबी के आदर्श शब्दो और वाक्यो की सूची २२२

# पंजावी

## भूमिका

### भाषा का नाम और प्रदेश

'पजावी' नाम का अर्थ स्वत स्पष्ट है, अर्थात् पजाव की भापा। जैसा कि आगे जान पडेगा, यह नाम अच्छा नही है, क्योकि पजावी कदापि उम प्रान्त मे वोली जाने वाली एक मात्र भापा नही है।

पजावी लगभग एक करोड सत्ताईस लाख पचास हजार लोगो की भाषा है, और यह पजाव प्रान्त के पूर्वार्व के अधिकतर भाग मे, राजपूताना मे वीकानेर राज्य के उत्तरी कोने मे, और जम्मू राज्य के दक्षिणार्व मे वोली जाती है। प्रान्त के अत्यन्त उत्तरपूर्व मे, अर्थात् शिमला पहाड के अधिकतम राज्यो और कुल्लू की भापा पहाडी है। दूर दक्षिण की ओर, यमुना नदी के दक्षिणी तट पर के अथवा निकट के जिलो की, अर्थात् अम्वाला के पूर्वार्ध, रोहतक, दिल्ली और गुडगाँव की भापा पजावी नही है, अपितु पश्चिमी हिन्दी का कोई रूप है। इन अपवादो के साथ, हम कह सकते हैं कि पूरे पूर्वी पजाव की वोली पजावी है। इस क्षेत्र के उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे वीकानेर के अनुर्वर मैदान और पश्चिम मे रचना दोआव की क्रूर 'वाड' स्थित है।

### भाषागत सीमाएँ

उत्तर और उत्तर-पूर्व मे पजावी हिमालय की निम्नतर श्रेणियो की पहाडी भाषा से घिरी हुई है। पर्वतीय प्रदेश के भीतर इसका विस्तार नही है। इसके पूर्व मे पश्चिमी हिन्दी के नाना भेद है—पूर्वी अम्वाला मे हिन्दुस्तानी वोली और यमुना के सन्निकट पश्चिमी क्षेत्र मे वोली जानेवाली वाँगरू। इसके दक्षिण मे पश्चिमी हिसार और वीकानेर मे वोली जानेवाली राजस्थानी की वागड़ी और वीकानेरी विभाषाएँ है। पजावी और इन सव भाषाओ की सीमारेखा वहुत कुछ स्पष्ट है (यद्यपि वास्तव मे

एक भाषा का दूसरी भाषा मे कुछ-कुछ विलयन अवश्य होता है), क्योकि भाषा-भेद बहुत हद तक जातीय भेद का द्योतक होता है। पंजाबी और पश्चिमी हिन्दी की सीमा पर विशेष रूप से हम देखते हैं कि पंजाबी वस्तुत सिखो की भाषा है। मोटे-तौर पर, हम इन दो भाषाओ के बीच की सीमारेखा को घग्घर नदी के साथ-साथ ले जा सकते है। घग्घर घाटी के पूर्व के सब लोग, सिखो की छिटपुट बस्तियो को छोड़कर पश्चिमी हिन्दी बोलते हैं।

दूसरी ओर दक्षिण मे एक मध्यस्थ या अन्तर्वर्ती विभाषा, भट्टिआली के माध्यम से, राजस्थानी के साथ क्रमश विलयन होने लगता है। पजाबी की तरह राजस्थानी ऐसी भाषा है जो मूलत भारतीय आर्यभाषा की बाहरी उपशाखा से, जिसका उपस्तर आज भी बचा हुआ है, सम्बन्धित है। साथ ही इस मूल पर भीतरी उपशाखा की भाषा छा गयी है और उसने इसे अन्तर्भुक्त-सा कर लिया है।[1] ये दो भाषाएँ, परस्पर बहुत मिलती-जुलती, बिना कठिनाई के एक दूसरी मे विलीन हो जातीं हैं। वास्तव मे यह एक विचित्र सत्य है कि डोगरी मे, जो पजाबी का एक दूर-उत्तरवर्त्ती भेद है, कुछ उच्चारणगत विलक्षणताएँ ऐसी हैं (जैसे कारकीय प्रत्ययो मे आदि क- का ग- मे परिवर्तन), जो बागड़ी मे भी पायी जाती हैं।

उत्तर मे पजाबी की एक सुस्पष्ट विभाषा है डोगरी, जो आदर्श पंजाबी और निम्न हिमालय की पहाडी भाषा के बीच की कड़ी है।

### पश्चिमी सीमा

आपने देखा होगा कि अभी तक मैंने पजाबी की पश्चिमी सीमा के सबध मे कुछ नही कहा। कारण यह है कि इस प्रकार की सीमा निर्धारित करना असम्भव है। पजाबी के पश्चिम मे लहँदा अथवा पश्चिमी पजाबी भाषा है जिसे हम जच (जेहलम और चनाब के बीच के) दोआब मे दृढ रूप से स्थापित पाते है। इसके अतिरिक्त शुद्धतम प्रकार की पजाबी (व्यास और रावी के बीच के) बारी दोआब के ऊपरी भाग मे बोली जाती है। आरम्भ मे दिये गये मानचित्र को देखने से मेरा आशय स्पष्ट हो जायगा। यहाँ की भाषा पजाबी और लहँदा का सम्मिश्रण है— पूर्व मे अधिकाधिक पजाबी, पश्चिम मे अधिकाधिक लहँदा। इसका कारण यह जान

१. इसकी पूरी व्याख्या पंजाबी के लक्षणो का वर्णन करते समय की जायगी।

पडता है कि किसी जमाने मे लहँदा का कोई पुरातन रूप दूर सरस्वती नदी तक फैला रहा होगा, और अब भी पजाबी उस पर आधारित है। ज्यो-ज्यो हम पश्चिम की ओर बढते हैं, और ज्यो-ज्यो पूर्व से बढती हुई भाषा की उस लहर का प्रभाव क्षीण होता जाता है जिसने आधुनिक पजाबी का रूप ग्रहण किया है, त्यो-त्यो लहँदा का प्रभाव (पजाबी-भाषी क्षेत्र मे भी) अधिकाधिक बढता जाता है। बात यह है कि यद्यपि भारत मे हम दो भाषाओ को आपस मे धीरे-धीरे घुलते-मिलते हुए बराबर पाते हैं, पंजाबी और लहँदा मे होनेवाली प्रक्रिया अन्यत्र नही मिलती। चूँकि इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से इन दो भाषाओ के बीच मे कोई न कोई सीमा आवश्यक है, मैंने दोनो का विभाजन दिखाने के लिए निम्नलिखित परपरागत रेखा मान ली है। ज़िला गुजरात मे स्थित पब्बी पर्वत के सिरे से आरभ कीजिए, ज़िले के पार चनाब नदी के किनारे-किनारे गुजरावाला के रामनगर कस्बे तक जाइए। यहाँ से लगभग सीधे दक्षिण की ओर गुजरावाला के दक्षिणी कोण तक, जहाँ वह मटगुमरी ज़िले के उत्तरी कोण से मिलता है, एक रेखा खीच ले जाइए। तब इस रेखा को सतलुज नदी पर मटगुमरी के दक्षिणी कोण तक बढाइए। कुछ मीलो तक सतलुज का अनुसरण करते हुए बहावल्पुर राज्य का उत्तरी कोना पार कीजिए। इस रेखा से पूर्व की ओर की भाषा को मैं पजाबी कहता हूँ और पश्चिम की ओर की लहँदा। किन्तु यह याद रहे कि यह रेखा विशुद्ध और मनमानी रूढि है, और यह भी ध्यान रहे कि इस रेखा के पश्चिम मे कुछ दूर तक, जिस भाषा को मैं लहँदा कहता हूँ, वह रचना दोआब के पूर्व की ओर गुजरात के उत्तरपूर्व की भाषा से, जिसे मैं पजाबी कह रहा हूँ, बहुत थोडी भिन्न है। मैं प्रमुखतः शब्दभण्डार से परिचालित हुआ हूँ। इस रेखा के पश्चिम मे, उस भाषा का शब्दभण्डार, जो प्रधानत उस क्षेत्र की भाषा है जिसे बाड (जगल) कहते है, लहँदा के शब्दभण्डार से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। चनाब को पार करने से पहले, मुलतान को छोडकर, हमे लहँदा के कारकचिह्न भी नही मिलते।

## पजाबी और 'पाच नदियो का देश'

उपरिलिखित चर्चा से एक रोचक तथ्य सामने आता है। पजाब, अर्थात् पज-आब, वस्तुत झेलम, चनाब, रावी, ब्यास, सतलुज इन पाँच नदियो का देश है। किन्तु पजाबी भाषा इन पाँच नदियो मे सबसे दूर-पूर्व वाली सतलुज नदी के पार पूर्व मे दूर

तक फैली हुई है और घग्घर तक जा पहुँची है। यह व्यास और सतलुज के बीच के दोआव और रावी तथा व्यास-सतलुज के दोआव मे व्याप्त है। चनाव और रावी के बीच के रचना दोआव के एक भाग मे एव झेलम और चनाव के बीच के जच दोआव के छोटे से कोने मे भी पजावी वोली जाती है। किन्तु चनाव और झेलम द्वारा सींचे जाने वाले वहुत वडे क्षेत्र के लगभग समूचे भाग मे तथा सतलुज के निचले भाग में पंजावी नही वोली जाती। इसलिए पजावी पाँच नदियों के पूरे देश की भाषा नही है।

## बोलिया और उपवोलिया

पजावी की दो बोलियाँ है—इस भाषा का परिनिष्ठित या सामान्य भेद और डोगरा या डोगरी। डोगरी, कई रूपो मे, जम्मू के उपपर्वतीय भाग मे एव कागडा जिले के सदर के अधिकाश भाग मे तथा अतिव्याप्त होकर पडोस के जिला सियाल-कोट और गुरदासपुर एव चम्वा राज्य के सलग्न भागो मे वोली जाती है।

सामान्य पजावी पजाव के मैदानो मे शेष पजावी-भाषी भाग मे वोली जाती है और पडोस मे शिमला पहाड के राज्यो मे भी घुस गयी है। यह आदर्श पजावी जगह-जगह थोडी-वहुत वदल जाती है, किन्तु इसका शुद्धतम रूप वह माना गया है जो अमृतसर के आसपास माझा अथवा वारी दोआव के मध्य भाग मे पाया जाता है। यह माझी उपवोली रावी के इस पार के लाहौर जिले की और अमृतसर तथा गुरदासपुर जिलो की भाषा कही जा सकती है। दोआव के निचले भाग मे मटगुमरी ज़िले की भाषा विशुद्ध माझी नही है वल्कि लहँदा-मिश्रित भाषा है। हम माझी को पजावी का आदर्श रूप मान सकते है। किन्तु इस कारण से कि परिस्थितिवश पजाव के पहले गम्भीर यूरोपीय अध्येता लुधियाना मे रहते रहे, अमृतसर मे नही, एक दूसरी आदर्श पजावी, जिसे यूरोपीय आदर्श कह ले, अस्तित्व मे आ गयी है। जहाँ जे० न्यूटन ने सन् १८५१ मे अपना व्याकरण लिखा, जहाँ से 'लुधियाना मिशन कमेटी' ने १८५४ मे पंजावी कोश प्रकाशित किया, और जहाँ पर ई० पी० न्यूटन ने १८९८ ई०मे इस भाषा का नवीनतम और सम्पूर्ण व्याकरण प्रकाशित कराया, वह लुधियाना पिछली शती के मध्य से अंग्रेज़ो के लिए पजावी भाषा के शिक्षण का केन्द्र वन गया है। यह स्वाभाविक था कि ये धुरधर विद्वान् पजावी के उस रूप को आदर्श मानते जिससे उनका घनिष्ठ परिचय रहा। अत हम देखते है कि उनके द्वारा पढायी हुई भाषा मे

कुछ ऐसे लक्षण हैं जो पूर्वी पजाबी के हैं, माझी के नही है।[1] इनमे सबसे प्रमुख है मूर्धन्य ळ का विचित्र प्रयोग। यह व्यजन-ध्वनि माझा मे नही सुनी जाती, यद्यपि इसका प्रयोग सब व्याकरणो और कोशो मे सिखाया जाता है।[2]

इस प्रकार हम देखते है कि पजाबी के दो मानक हैं—एक माझा का जिसे भारत के लोग और (सिद्धान्तत ) यूरोपीय लोग स्वीकार करते है, और दूसरा लुधियाना

१. ई. पी न्यूटन जैसे विद्वान् भी लुधियाना की पजाबी को इतनी निश्चितता से आदर्श मान लेते हैं कि वे माझी के विशिष्ट रूपो को अपवादो मे गिनते हैं। तुलना कीजिए उनके व्याकरण मे पृ० ३३, ५७ और ७३। यदि वे माझी बोली को आदर्श मानते तो इन पृष्ठो में दिये गये रूपो को नियमो के अन्तर्गत लेते और इनके अप्रयोग को अन्यत्र, माझी में इनके प्रयोग के बजाय, अपवाद मानते।

एकमात्र डॉ० टिस्टल का छोटा-सा 'संक्षिप्त व्याकरण' मेरे देखने मे आया है जो एक अंग्रेज का लिखा हुआ है और जिसकी रचना माझी बोली के आधार पर की गयी है।

यहाँ पर यह भी कह दूं कि बाइबिल के पजाबी रूपान्तर को देशी विद्वानो ने लुधियाना की बोली मे लिखा हुआ बताया है।

२. इस मूर्धन्य ळ का प्रयोग देश के एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित है। भारत के उत्तरी मैदानो मे यह पश्चिम मे व्यास, सतलुज और पूर्व मे गगा के मध्य भाग में सुनाई पड़ता है। इस प्रकार पूर्वी पजाब मे, जहाँ पंजाबी बोली जाती है एवं जहाँ हिन्दुस्तानी और बाँगरू बोली जाती हैं, और ऊर्ध्वतर गंगा दोआब मे जहाँ हिन्दुस्तानी बोली जाती है, यह सुस्पष्ट है। शिमला पहाड के राज्यो और उनके आसपास की पश्चिमी पहाडी और गढ़वाल-कुमायूँ की मध्य पहाडी मे भी यह व्यापक है, किन्तु पूर्वी पहाडी या नेपाल की खसकुरा में नहीं पाया जाता। पवित्र नदी सरस्वती के मार्ग को इसकी केन्द्रीय रेखा माना जा सकता है जहाँ से यह विकिरित होता है। मुझे यह ब्रजभाखा मे नहीं मिला, परन्तु बागरू से होकर यह दक्षिण मे बागड़ी क्षेत्र में और वहाँ से राजपूताना, मध्य भारत, गुजरात और महाराष्ट्र मे फैला हुआ है। भारत के दक्षिण मे यह द्रविड भाषाओ मे सुना जाता है। सिन्धी में नहीं है और न ही कश्मीरी या खस मे, परन्तु लहंदा और उसके पास वाले माझा के पश्चिमी क्षेत्र मे सुनाई पडता है। पश्चिमी पहाड़ी के पश्चिम की पर्वतीय भारत-आर्य भाषाओ मे भी यह मिल जाता है, किन्तु पुन्छी से होकर कश्मीरी तक पहुँचते-पहुँचते क्रमशः लुप्त हो जाता है।

का, जो मात्र ऐसा है जिसे व्यवहारत यूरोपीयो ने स्वीकार किया, जिसका वर्णन अधिकतर व्याकरणो और कोशो मे हुआ और जिसमे इजील का अनुवाद हुआ।[1]

सामान्य पजाबी की अन्य बोलियो मे जलंधर दोआब की बोली, पोवाधी, राठी, मालवाई, भट्टिआनी एव रचना दोआब तथा उत्तरपूर्वी गुजरात की पजाबी सम्मिलित हैं। जलधर दोआब की बोली लुधियाना की बोली से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। किन्तु ज्यो-ज्यो हम पहाडियो की ओर बढ़ते हैं त्यो-त्यो पहाडी भाषा के प्रभाव के चिह्न दिखाई देने लगते हैं। पोवाधी (पोवाध अर्थात् पूर्वी पंजाब की पजाबी), जैसा कि इसके नाम से प्रकट है, पजाबी के दूरतम पूर्व का रूप है। यह ज़िला लुधियाना मे सतलुज के दक्षिणी तट पर बोली जाती है (और यहाँ पर यह लुधियाना की बोली का ही पर्याय है, जिसका उल्लेख थोडे विस्तार के साथ किया जा चुका है), परन्तु इसका मुख्य क्षेत्र पूर्वी देशान्तर रेखा के लगभग ७६° से पूर्व का पजाबी-भाषी प्रदेश है। इसके पूर्व मे दक्षिणी शिमला के पहाड़ी राज्यो की पश्चिमी पहाडी, अम्बाला और पूर्वी पटियाला की ग्रामीण हिन्दुस्तानी और करनाल की बाँगरू है। इसके दक्षिण मे राठी है जिसका वर्णन अभी किया जानेवाला है, और पश्चिम मे मालवाई पजाबी है। जैसा कि अपेक्षित है, पोवाधी पजाबी पर, ज्यों-ज्यो हम पूर्व की ओर चलते हैं, पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव बढता जाता है। पोवाधी और मालवाई पजाबी के तुरन्त दक्षिण मे, घग्घर नदी के मैदानी भाग मे, उस क्षेत्र के पछाडा राठी मुसलमानो की भाषा राठी पजाबी है। पोवाधी की अपेक्षा पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली मे यह अधिक प्रभावित है। यह सानुनासिक ध्वनियो के प्रति अपने रुझान के कारण उल्लेखनीय है। इसके दक्षिण मे बागडी और हिसार की बाँगरू पडती हैं। पूर्वी देशान्तर रेखा के ७६° पश्चिम मे, सतलुज तक, मालवा या सिख जट्टो का पुराना आबाद किया हुआ शुष्क प्रदेश पडता है, जिसके दक्षिण की ओर 'जगल' या गैर-आबाद क्षेत्र है। इन क्षेत्रो की भाषा को मालवाई पजाबी या जगली माना गया है। इसके दक्षिण मे घग्घर के मैदान की राठी पजाबी और दक्षिणी फीरोज़पुर तथा बीकानेर की भट्टिआनी पंजाबी है। मालवाई पजाबी लुधियाना की आदर्श भाषा से बहुत भिन्न नही है, किन्तु

१. अमृतसर के भाई हज़ारासिंह ज्ञानी के 'दुल्हन दर्पण' मे जो 'मिरातुल उरूस' का रूपांतर है और जो माझा की शुद्ध बोली मे लिखा गया है, आदि से अन्त तक देख जाइए, मूर्धन्य ळ नहीं मिलता।

ज़्यो-ज्यो हम दक्षिण की ओर वढते हैं, दन्त्य 'न' और 'ल' को क्रमश मूर्धन्य 'ण' और 'ळ' मे परिवर्तित करने की प्रवृत्ति दिखाई देने लगती है। मालवा के दक्षिण की ओर दक्षिणी फीरोज़पुर और उत्तरपश्चिमी बीकानेर मे भट्टी जाति का देश भट्टिआना स्थित है। यहाँ पजावी राजस्थानी मे विलीन होने लगती है और हमे एक मिश्रित वोली प्राप्त होती है जिसे मैंने भट्टिआनी नाम दिया है। भट्टिआनी सतलुज के वाये किनारे ऊपर की ओर, फीरोज़पुर ज़िले के दूर भीतर तक वोली जाती है, और वहाँ पर इसका स्थानीय नाम राठौरी पडा हुआ है। सतलुज पार करके हम वारी दोआव मे प्रवेश करते हैं। इसका केन्द्रीय भाग माझा है जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। लाहौर के दक्षिण पूर्व मे, रावी के दोनो किनारो पर मटगुमरी का ज़िला है। मटगुमरी का रावी-पार का भाग यद्यपि शासकीय दृष्टि से वारी दोआव के अन्तर्गत पडता है, किन्तु भाषा की दृष्टि से अगले दोआव अर्थात् रावी और चनाव के वीच के रचना दोआव से सम्वद्ध है। यह वह रचना दोआव है जिसमे हम पजावी को लहँदा मे विलीन होते पाते हैं।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, इन दो भाषाओ के वीच की कोई स्पष्ट विभाजक रेखा दिखाना सम्भव नही है, और इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से मैंने एक विशुद्ध रूढ़िगत रेखा को स्वीकार कर लिया है, जो गुजरात के उत्तर-पश्चिमी कोने के निकट पब्बी पर्वत श्रेणी के उत्तरी सिरे से शुरू होकर सतलुज के ऊपर मटगुमरी के दक्षिण-पूर्वी कोने पर समाप्त होती है, फिर यह सतलुज से नीचे उतरती हुई वहावलपुर रियासत के उत्तरपूर्वी सिरे के परे चली जाती है, जहाँ यह भट्टिआनी की दक्षिणी सीमा से जा मिलती है। इस रेखा के पूर्व मे सारी-की-सारी भाषा, मेरे मत से और इस सर्वेक्षण के अभिप्राय से पजावी है, और इसके पश्चिम मे लहँदा ही लहँदा है। उत्तरपूर्वी गुजरात, रचना दोआव और पूर्वी मटगुमरी की यह पजावी, जैसे-जैसे हम पश्चिम को वढते है, अधिकाधिक लहँदा की विशेषताओ से युक्त होती जाती है।

## वोलनेवालो की सख्या

निम्नलिखित तालिका से पजावी वोलनेवालो की सख्या का पता चलता है, जैसा कि इस सर्वेक्षण के लिए अनुमानित किया गया है। अधिकतर आँकडे सन १८९१ की जनगणना पर आधारित हैं। मै पजावी बोलनेवालो की सख्या का आरम्भ उन क्षेत्रो से करता हूँ जहाँ की यह अपनी स्थानीय भाषा है।

## तालिका

| | |
|---|---|
| **माझी—** | |
| लाहौर | १०,३३,८२४ |
| अमृतसर | ९,७३,०५४ |
| गुरदासपुर | ८,००,७५० |
| | २८,०७,६२८ |
| **जलधर दोआबी—** | |
| जलधर | ९,०५,८१७ |
| कपूरथला | २,९६,९७६ |
| होशियारपुर | ८,४८,६५५ |
| मिश्रित बोलियाँ | २,०७,३२१ |
| | २२,५८,७६९ |
| **पोवाधी—** | |
| हिसार | १,४८,३५२ |
| अम्बाला | ३,३७,१२३ |
| कलसिया रियासत | १८,९३३ |
| नालागढ रियासत | ३९,५४५ |
| मल्लोग रियासत | ३,१९३ |
| पटियाला रियासत | ८,३७,००० |
| जींद रियासत | १३,००० |
| | १३,९७,१४६ |
| **राठी—** | |
| हिसार | ३६,४९० |
| जींद रियासत | २,५०० |
| | ३८,९९० |

मालवाई—

| | |
|---|---|
| फीरोज़पुर | ७,०९,००० |
| लुधियाना | ६,४०,००० |
| फरीदकोट | १,१०,००० |
| मलेरकोटला | ७५,२९५ |
| पटियाला | ३३४,५०० |
| नाभा | २०७,७७१ |
| जींद | ४४,०२१ |
| कलसिया | ९,४६७ |
| | २१,३०,०५४ |

भट्टिआनी—

| | |
|---|---|
| बीकानेर की राठी | २२,००० |
| फीरोजपुर की बागडी | ५६,००० |
| फीरोजपुर की राठौरी | ३८,००० |
| | १,१६,००० |

लहँदा मे विलीन होनेवाली पजाबी—

| | |
|---|---|
| उत्तर-पूर्वी गुजरात | ४,५७,२०० |
| सियालकोट | १०,१०,००० |
| पूर्वी गुजरावाला | ५,०५,००० |
| रावी पर लाहौर | १७,३९८ |
| पूर्वी मटगुमरी | २,९२,४२६ |
| उत्तरी बहावलपुर | १,५०,००० |
| | २४,३२,०२४ |

डोगरी—

| | |
|---|---|
| मानक | ५,६८,७२७ |
| कण्डिआली | १०,००० |
| कागडा बोली | ६,३६,५०० |
| भटेआली | १४,००० |
| | १२,२९,२२७ |

देशी भाषा के रूप मे पजाबी बोलनेवालो की कुल सख्या १,२४,०९,८३८

पजावी पजाब के दूसरे ज़िलो मे भी बोली जाती है, जहाँ इसे देशी भाषा नही परिगणित किया जाता। करनाल और मुलतान की सख्याएँ सब से महत्त्वपूर्ण है। जहाँ तक करनाल का सम्बन्ध है, यह ज़िला पोवाधी बोलने वाले पटियाला के क्षेत्र से ठीक जुडा हुआ है, और ये सख्याएँ उसी रियासत से आ बसनेवाले सिख आबादकारो की ही है। मुलतान मे सिखो की एक बहुत बडी बस्ती है जो सिधमई नहर योजना के कारण बन गयी है। अन्य ज़िलो मे उल्लिखित आँकड़ो पर टिप्पणी देने की आवश्यकता नही है। वे आँकडे इस प्रकार है—

पजाब के अपजाबी-भाषी ज़िलो और राज्यो मे पजाबी बोलनेवालो की तालिका

| | |
|---|---|
| रोहतक | २३८ |
| गुडगाँव | १७८ |
| दिल्ली | १,७८४ |
| पटौदी | १३२ |
| लोहारु | ७ |
| दुजाना | २ |
| करनाल | २५,५०० |
| शिमला | ३,२८० |

शिमला की पहाडी रियासतें

| | |
|---|---|
| वशहर | २७६ |
| क्योठल | १९४ |
| वघल | १२९ |
| वघात | ७०२ |
| जुव्वल | २७ |
| कुम्हारसैन | ९५ |
| भज्जी | ३६ |
| वलसन | ३८ |
| धमी | ३० |
| कुठार | १८८ |
| कुनिहार | ९७ |
| मगल | १० |
| वीजा | ६५ |
| तर्होच | १२ |
| नाहन | ८,१९७ |
| | १०,०९६ |

| | |
|---|---|
| मडी | ७३२ |
| सुकेत | १४६ |
| चम्वा | २,३८७ |
| मुलतान | ८७,१०२ |
| डेरा इस्माईलखान | ७,२३८ |
| डेरा गाजीखान | ६,६६६ |
| मुजपफरगढ | ८,४८० |
| कुल योग | १५४,३०१ |

इस सर्वेक्षण के लिए प्रतिवेदित सूचनाओ के अनुसार हमे पंजाव मे पजाबी वोलने वालो की कुल सख्या इस प्रकार प्राप्त होती है—

| | |
|---|---|
| उन क्षेत्रो मे जहाँ वह प्रदेशीय भाषा है | १,२४,०९,८३८ |
| उन क्षेत्रो मे जहाँ वह प्रदेशीय भाषा नही है | १,५४,३०१ |
| कुल योग | १,२५,६४,१३९ |

१८९१ की जनगणना के अनुसार पजाव मे (डोगरी को लेकर) पजाबी वोलने वाले १,५७,५४,८९५ आलिखित हुए है। इस अन्तर के कई कारण है। पहला यह; गुजरावाला (पश्चिमी आधा भाग), मटगुमरी (पश्चिमी आधा भाग), वहावल्पुर (उत्तर पश्चिमी भाग), झग, शाहपुर, जेहलम, रावलपिंडी, हजारा, पेशावर, कोहाट और बन्नू और दूसरे क्षेत्र, जिन्हे इस सर्वेक्षण मे लहँदा-भाषी दिखाया जायगा, उक्त जनगणना की तालिकाओ मे वहाँ के ४५,८३,००० लोगो को पजावी-भाषी वताया गया है। दूसरा यह कि ऊपर के आँकडो मे काँगटी बोली वोलने वाले ६,३६,५०० लोग सम्मिलित है जिन्हे जनगणना की तालिकाओ मे पहाडी-भाषी वताया गया है और इनमे जम्मू के इलाके मे डोगरी वोलने वाले ४,३४,००० तथा वीकानेर मे भट्टिआनी वोलने वाले २२,००० लोग भी सम्मिलित है जो पजाब की जनगणना मे आते ही नही, क्योकि जम्मू और वीकानेर शासकीय दृष्टि से पजाव के अतर्गत नही पडते। दोनो ओर इतनी छूट देने पर हमे जनगणना की कुल सख्या १,२२,६२,३९५ प्राप्त होती है। इस सख्या और सर्वेक्षण की सख्या का जो ३०१,७४४ का अतर है वह अशत इस कारण से है कि सर्वेक्षण मे अधिकाधिक पूर्णांक दिये गये हैं, अशत इस कारण से कि सर्वेक्षण के आकडे जनगणना के कोई सात-आठ वर्ष वाद स्थानीय अधिकारियो द्वारा लिये गये स्वतन्त्र अनुमान मात्र हैं, और अशत इसलिए भी कि सर्वेक्षण के आकडो के अन्तर्गत वे छोटी-छोटी वोलियाँ भी ली गयी है जिन्हे जनगणना की तालिकाओ मे अन्य भाषाओ के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। सीमावर्ती क्षेत्रो मे जहाँ एक भाषा दूसरी मे विलीन हो जाती है वहाँ वर्गीकरण वहुत कुछ वैयक्तिक फलन पर निर्भर रहता है और इस तरह की छूट इस प्रकार के आँकडो के आकलन मे अवश्य दी जानी चाहिए।

अव हम पजाव की सीमा के वाहर पजावी बोलने वाले लोगो की सख्या पर विचार करते हैं। यहाँ पर यदि हम १८९१ की जनगणना के आँकडो को ले, तो हमारे

सामने दो कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती है। उस जनगणना मे, कश्मीर या राजपूताना और मध्य भारत मे की नाना भाषाओ के बोलने वालो को परिगणित नही किया गया था। दूसरी वात यह है कि उस जनगणना मे (पजाव को छोडकर) लहँदा और पजावी मे कोई भेद नही किया गया और दोनो को एक ही शीर्षक—पजाबी के अन्तर्गत डाल दिया गया। इसलिए मै निम्नलिखित तालिका मे कश्मीर या राजपूताना और मध्य भारत मे पजावी वोलनेवालो की सख्या नही दे सकता। उनकी जगह मै इन इलाको मे रहनेवाले (जिनके आँकड़े प्राप्य है) उन्ही लोगो की कुल सख्या दे रहा हूँ जिनका जन्म पजाव मे हुआ। दूसरी कठिनाई कुछ गम्भीर है। हम अनुमान ही कर सकते हैं। सन् १९०१ की जनगणना मे लहँदा और पजाबी के आँकडे अलग-अलग रखे गये हैं, और उनकी कुल सख्या मे परस्पर ३ और १७ का अनुपात है। मै समझता हूँ कि यह अनुपात १८९१ के लिए भी सही हो सकता था और इसलिए मैंने निम्नलिखित आँकडो की कुल सख्या मे से ३/२० भाग लहँदा भाषियो के निमित्त काट दिया है। शेप वच जानी चाहिए वही कुल सख्या जो पजाव के वाहर पजावी वोलने वालो की होगी।

१८९१ की जनगणना के अनुसार पजाव के वाहर पजावी या लहँदा वोलने वाले लोगो की कुल सख्या की

**तालिका**

| | |
|---|---|
| कश्मीर | ६६,१०६ (अनुमानित) |
| सिंघ (और खैरपुर) | २२,१५० |
| सयुक्त प्रान्त (और रियासतें) | १३,०८० |
| क्वेटा | १०,५४४ |
| वर्मा | ८,१०५ |
| वगाल (और रियासतें) | २,८५७ |
| हैदरावाद | २,४३९ |
| वम्वई (और रियासते) | ३,३३४ |
| राजपूताना और मध्य भारत | १९,७९० (अनुमानित) |
| अडमान | १,५१३ |
| अजमेर-मेरवाडा | १,१५४ |

| | |
|---|---|
| मध्य प्रान्त | १,१५४ |
| मद्रास | ४९८ |
| वरार | ३७३ |
| वडौदा | २५५ |
| असम | १६० |
| मैसूर | १८ |
| कुल जोड | २,३३,५३० |

इसमे से लहँदा के लिए ३ २० अर्थात् ३५,०३० काट दे तो हमे पजाव से वाहर भारत मे पजावी वोल्ने वालो की कुल सख्या अनुमानत १,९८,५०० प्राप्त होती है।

सारे भारत मे पजावी-भाषियो का कुल जोड इस प्रकार उपलब्ध होता है—

| | |
|---|---|
| पजाव और अन्यत्र स्थानीय बोली के रूप मे पजावी वोलने वाले | १,२५,६४,१३९ |
| भारत मे और जगह पजावी वोलने वाले | १,९८,५०० |
| पजावी के सभी वोलने वालो का कुल जोड | १,२७,६२,६३९ |

पजाव के वाहर पजावी वोलनेवालो मे अधिकतर या तो सिख सिपाही हैं या पुलिस कर्मचारी और इस तरह के दूसरे लोग।

## पजावी की विशेषताएँ

पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी तथा गुजराती को लेकर, पजावी, भारतीय आर्य भापाओ मे केन्द्रीय वर्ग की अन्यतम भाषा है। इनमे इस वर्ग की एकमात्र शुद्ध भाषा पश्चिमी हिन्दी है। दूसरी भाषाएँ तो मिश्रित हैं। यद्यपि इनकी आवश्यक विशेपताएँ मुख्यत केन्द्रीय वर्ग की सी हैं, इनमे प्रत्येक मे दूसरी भाषा के लक्षण मिलते हैं, जिस पर कोई केन्द्रीय भाषा व्याप्त हो गयी है—आच्छादित हो गयी है कहना अधिक समीचीन होगा। यह वात हम राजस्थानी और गुजराती मे अधिक स्पष्टता से पायेंगे। और इन दो भापाओ के सम्वन्ध मे यह भी देखेंगे कि केन्द्र से, जहाँ से भीतरी भाषा अतिक्रमण करती है, हम जितनी दूर जाते है उतनी ही यह विलीन परत अधिक उभर

उठती है। प्रत्येक पक्ष मे यह विलीन परत स्पष्टत भारतीय आर्य भापाओ के वाहरी वृत्त की भाषा रही है। हम मथुरा और कन्नौज के वीच के केन्द्रीय गगा-दोआव को विखराव का केन्द्र मान सकते हैं। यह कह देना आवश्यक है कि कन्नौज भारत की मुसलमानी विजय के पूर्व की शताब्दियो मे भारतीय आर्य शक्ति का वहुत वडा केन्द्र रहा है।

## लहँदा और पश्चिमी हिन्दी से सम्वन्ध

पजावी पूर्वी पजाव की भाषा है, और वर्तमान काल मे इसके तुरन्त पश्चिम मे, पश्चिमी पजाव मे, लहँदा वोली मिलती है। लहँदा वाहरी वृत्त की भाषाओ मे से है और सिन्धी, कश्मीरी और सिंधु-कोहिस्तान की भापाओं से वहुत कुछ मिलती-जुलती है। यदि भापावैज्ञानिक साक्ष्य का कोई मूल्य है तो इसमे कोई सन्देह नही है कि इस लहँदा से वहुत कुछ मिलती-जुलती भापा किसी समय उस सारे क्षेत्र मे भी वोली जाती रही है जहाँ की वोली आज पजावी है। पजावी के तुरन्त पूर्व मे पश्चिमी हिन्दी के हिन्दुस्तानी रूप हैं जो यमुना नदी के दोनो ओर और ऊपरी गगा-दोआव मे व्यवहृत होते है। वर्तमान भापागत परिस्थितियो से स्पष्ट होता है कि इस हिन्दुस्तानी का कोई पुराना रूप सारे पूर्वी पंजाव मे क्रमश फैल गया है जो कम से कम चनाव नदी के ऊपरी आधे भाग तक पुरानी लहँदा भापा का स्थानापन्न हो गया है या उस पर छा गया है। वस्तुत इसका प्रभाव वहुत आगे तक प्रसृत हुआ है, और जव तक हम विशाल थल या झेलम-चनाव और सिन्धु के वीच के रेतीले क्षेत्र तक नही जा पहुँचते तव तक उसके चिह्न वने रहते हैं। जैसा कि राजपूताना मे है, केन्द्रीय भाषा की वढती हुई लहर के लिए रेगिस्तान एक रुकावट वन गया है, और प्रत्येक स्थिति मे हमे इसके पश्चिम मे वाहरी वृत्त की एक शुद्ध भाषा मिलती है—एक मे सिन्धी, दूसरी मे लहँदा।

जैसे ही यह लहर अपने प्रस्थान-विन्दु से पश्चिम की ओर वढी, इसका कलेवर और वल क्रमश. नष्ट होता गया। पजावी क्षेत्र से धुर पूर्व मे, प्राचीन सरस्वती के किनारे, प्राचीन लहँदा के विरल चिह्न देखने मे आते हैं। जव हम वारी दोआव तक आते हैं, जहाँ आदर्श पजावी वोली जाती है, वहाँ हमे लहँदा की अनेक विशेपताएँ अव भी शेप मिल जाती हैं जो पोवाध या पूर्वी पजाव मे लुप्त हो गयी हैं। रचना दोआव मे ये विशेपताएँ और अधिक उभर आती हैं और यहाँ हमे पजावी और लहँदा के वीच की रूढ सीमा-रेखा मिलती है। जच दोआव मे ये विशेपताएँ और भी अधिक स्पष्ट

होती है और यहाँ पर हम लहँदा को पक्की तरह जमी हुई कह सकते है। सिंव-सागर दोआब मे केन्द्रीय भाषा के प्रभाव के एक-दो अवशेषो को छोड़ सभी लुप्त हो जाते है, और हमारे सामने वाहरी वृत्त की शुद्ध भाषा आ जाती है। इस प्रकार हम देखते है कि पजाबी एक मिश्रित भाषा है।

इसी बात को यो भी कहा जा सकता है कि आधार स्तर तो है आधुनिक लहँदा से सम्बद्ध कोई वाहरी वृत्त की भाषा, और इसकी उपरि सरचना है पश्चिमी हिन्दी की कोई बोली। उपरि सरचना इतनी महत्त्वपूर्ण है और उसने नीव को इतना छिपा रखा है कि पजाबी को वर्तमान समय मे, ठीक ही, केन्द्रीय वर्ग की भाषा मानकर वर्गीकृत किया गया है।

## उच्चारण

विस्तार मे जाने पर हम देखते है कि प्रथमत आदि व पश्चिमी हिन्दी मे सदा ब हो जाता है जब कि पजाबी मे किन्ही शब्दो मे सुरक्षित रहता है, जैसे पश्चिमी हिन्दी बीच, किन्तु पजाबी विच्च, मे। यह सिन्धी, लहँदा और कश्मीरी की भी विशेषता है। पजाबी उच्चारण मे एक और सयोग है जो अत्यन्त विशिष्ट है, और इस भाषा को एक साफ-सुथरा पुट प्रदान करता है एव जिसकी ओर प्रथम बार इसे सुनने वाले का ध्यान तुरन्त आकृष्ट हो जाता है। इसका वर्णन करने के लिए व्युत्पत्ति के एक प्रश्न पर विचार कर लेना आवश्यक है। भारत की सभी प्राकृत बोलियो मे, कारण देने की यहा आवश्यकता नही है, बहुत से ऐसे शब्द थे जिनमे एक-न-एक द्वित्वीकृत व्यजन था, जिसके पहले ह्रस्व स्वर था। उदाहरणार्थ, हम घोडस्स, घोड़े का, जुत्तो, युक्त, खग्गो, खड्ग, मक्खणम्, मक्खन, मारिस्सइ, वह मारेगा, ले लें। इन भाषाओ के ध्वनिशास्त्र-सम्बन्धी एक अन्यतम नियम के अनुसार, उन द्वित्व व्यंजनो के प्रथम अर्ब वर्ण का लोप करके सरलीकरण एव क्षतिपूर्ति के लिए पूर्ववर्ती स्वर के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति रही है। इस प्रकार इन शब्दो के क्रमश घोडास; जूतो; खागो; माखण, मारीसै हो जाने की प्रवृत्ति थी।[1] केन्द्रीय वर्ग की आधुनिक बोलियो

१. अन्य प्राकृतो की अपेक्षा प्राचीन प्राकृतो और शौरसेनी मे इस प्रवृत्ति के चिह्न कम पाये जाते है। शौरसेनी को पश्चिमी हिन्दी की ओर मध्यवर्ती वर्ग की दूसरी भाषाओ की अधिरचना (अध स्तर से भिन्न) की जननी कहा जा सकता है।

मे हम इस प्रवृत्ति को एकरूपता के साथ चलते नही देखते। पश्चिमी हिन्दी मे हमे एक ही शब्द के दोनो रूप मिल जाते है—प्रायः एक साहित्यिक भाषा मे और दूसरा बोलचाल मे। इस प्रकार 'मक्खन' के लिए प्राकृत **मक्खणम्** साहित्यिक हिन्दुस्तानी मे तो बन जाता है **मक्खन**, किन्तु ग्रामीण लोगो के मुख से हम प्राय सुनते है **माखन**। राजस्थानी मे सयुक्त व्यजन के सरलीकरण की प्रवृत्ति, जैसे ही हम पश्चिम और दक्षिण की ओर चलते हैं, बढती जाती है, यहा तक कि हम गुजराती तक पहुच जाते हैं तो उस भाषा मे पूर्ववर्ती खड के क्षतिपूरक दीर्घीकरण के साथ (सयुक्त व्यजन के) सरलीकरण की प्रवृत्ति सामान्य नियम बन जाती है। हमे यहा **माखण** मिलता है **मक्खण** कभी नही। दूसरी ओर उपरि-गगा दोआब की हिन्दुस्तानी पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर सहित द्वित्व व्यजन के उच्चारण को प्राथमिकता देती है, और इस प्रकार हम सदा **मक्खण** पाते हैं, **माखण** नही। पजाबी ठीक इसका अनुसरण करती है। वह ऐसे सयोगो का सरलीकरण नही करती। हमको सदा **मक्खण** मिलता है, **माखण** नही। इसी प्रकार के शब्द है पजाबी **कम्म**, किन्तु हिन्दुस्तानी **काम**, पजाबी **विच्च**, किन्तु हिन्दुस्तानी **बीच**; पजाबी **उच्चा** किन्तु हिन्दुस्तानी **ऊँचा**।[1] इस सारी प्रक्रिया से पजाबी वाणी मे सुनिश्चित द्वित्व व्यजनो का आधिक्य हो गया है एव इस भाषा की एक सुविदित और सुस्पष्ट विशेषता प्राप्त हुई है जो प्रत्येक ऐसे व्यक्ति के सुनने मे आने लगती है, जिसका भारतीय भाषाओ से प्रथम परिचय इस प्रदेश मे आते ही हो जाता है।

## सज्ञा के कारक-चिह्न

संज्ञाओ के रूपान्तर मे हम देखते हैं कि अ-प्रातिपदिक वाले सबल पुल्लिग नाम आकारान्त होते है, शुद्ध पश्चिमी हिन्दी की तरह औकारान्त अथवा ओकारान्त नही होते। जैसे **घोडा**, पश्चिमी हिन्दी की तरह **घोड़ौ** या **घोड़ो** नहीं।

१. इस विषय मे लँहदा पंजाबी का अनुसरण करती है। सिन्धी इस प्रक्रिया को एक और दिशा मे ले चलती है। इसमे अघोष सयुक्त व्यजन तो सरल हो जाता है किन्तु स्वर दीर्घ नहीं होता। इसमे 'मखण' मिलता है। पजाबी शब्दो की व्युत्पत्ति पर विचार करते समय यह सब महत्त्वपूर्ण होगा। उदाहरणस्वरूप, हम निश्चयपूर्वक

बहिरंग वर्ग की प्राय. सभी भाषाओं का यह विशिष्ट लक्षण है। तुलना कीजिए मराठी 'घोडा' तथा बगाली 'घोड़ा'।

सबंध कारक

पजाबी का अन्यतम लक्षण जो प्रारम्भिक विद्यार्थी को तुरन्त खटकता है और जो वास्तव मे इस भाषा की अपनी प्रमुख विशेषता है, यह है कि सम्बन्ध कारक में पश्चिमी हिन्दी के को, को (या का) के स्थान पर, -दा परसर्ग का प्रयोग होता है। यह परसर्ग दक्षिणी लहंदा मे भी प्रयुक्त होता है, और निस्सन्देह यह उस भाषा के मूल रूप से सम्बन्धित है जो एक समय मे सारे पजाब मे फैली हुई थी। निश्चित रूप से यह पूर्वी पजाब की अपनी उपज है।[२]

कर्ता कारक

कर्ता कारक का सकेत करने के लिए साहित्यिक हिन्दुस्तानी ने प्रत्यय का व्यवहार करती है। यह पत्यय ठीक पश्चिमी हिन्दी (हिन्दुस्तानी जिसकी एक बोली है) का नहीं है। उस भाषा की अन्य बोलियो मे बिना प्रत्यय का आगिक या विभक्त्यात्मक कर्ता कारक प्रयुक्त होता है। अलबत्ता साहित्यिक हिन्दुस्तानी का ने ऊपरि गगा दोआब की बोलचाल की हिन्दुस्तानी मे भी पाया जाता है, और स्पष्टत इसका ग्रहण पंजाबी से हुआ है जिसमे कि इसका व्यवहार (नै के रूप मे) नियमित रूप से होता है।

कह सकते हैं कि पंजाबी 'सीता', सिया, या सित्ता का सक्षिप्त रूप नहीं है। इस प्रकार का संक्षेपण पंजाबी, लहँदा या सिन्धी की प्रकृति के विरुद्ध है।

१. इस विषय में, पश्चिमी हिन्दी की उन बोलियो पर, जो भौगोलिक दृष्टि से पंजाबी के निकट हैं, पंजाबी का प्रभाव पड़ा है। उर्ध्वतर गगा दोआब की बोली मे तथा उस पर आधारित साहित्यिक हिन्दुस्तानी मे -आ पाया जाता है, -औ या -ओ नहीं। इस प्रकार ब्रजभाषा की संज्ञाओं में भी, किन्तु विशेषणो मे नहीं।

२. -का और -दा दोनो की व्युत्पत्ति संस्कृत 'कृतः' से हुई है। दोनो रूप प्राकृत के 'केरओ' अथवा 'किरओ' के माध्यम से देशी भाषाओं में आये हैं। हिन्दुस्तानी में समय की गति से 'र' का लोप होने से 'केअओ' और फिर 'का' बन गया जो वास्तव में परसर्ग—

## पुरुषवाची सर्वनाम

उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सर्वनामो के वहुवचन (असीं, हम, तिर्यक् रूप असाँ, एव तुसीं, तुम, तिर्यक् रूप तुसाँ) इस भाषा के प्राचीन लहँदा आधार के अवशेष है, शुद्ध केन्द्रीय भाषा के नही है, जिसमे क्रमश हम और तुम पाये जाते हैं। तुलना कीजिए सिंधी असीं (तिर्यक् असाँ), हम, लहँदा अस्सीं (तिर्यक्) अस्साँ, हम, तुस्सीं (तिर्यक् तुस्साँ), तुम, मैयाँ (सिंधु कोहिस्तानी), तुस, तुम, कश्मीरी अस (तिर्यक् असे, हम। साथ ही, इन सर्वनामो का सम्वन्ध-कारकीय रूप असाडा, तुसाडा, वनता है। इन शव्दो का मूर्धन्य ड लहँदा की विशिष्टता है।

## कर्मवाच्य

पजावी क्रिया का कर्मवाच्य यदा-कदा धातु मे 'ई' जोडने से वनता है।[1] यह लहँदा

एक स्पष्ट शब्द है, प्रत्यय नहीं। इसके विरुद्ध, बहिरग वर्ग की भाषाओ ने किदओ को पृथक् शब्द के रूप मे नहीं, प्रत्यय के रूप मे ग्रहण किया। इस प्रकार, प्राचीन भाषा के 'घोडहिकिदउ' से हिन्दुस्तानी मे 'घोड़े का' विकसित हुआ। उस भाषा मे किदउ ऐसा ही पूरा शब्द था जैसा अग्रेजी मे of है। किन्तु प्राचीन लहँदा मे 'घोडहि-किदउ' वोलते थे, और उसमे 'किदउ' प्रत्यय के समान था, जैसे लैटिन equi मे i. एक प्रसिद्ध नियम है कि जव शब्द के भीतर 'क' स्वरमध्यग होता है तो उसका लोप हो जाता है। अतः एक ही शब्द होने के कारण 'घोडहिकिदउ' का 'घोडहिदउ' हो गया, और उससे 'घोडेदा' बना 'घोड़े' और 'दा' के बीच मे सयोजक चिह्न के विना। मुख्य शब्द के साथ परसर्ग जोडकर एक शब्द मान लेने की यह प्रवृत्ति वहिरंग वर्ग की भाषाओ की विशेषता है जो मध्यवर्ती भाषाओं में अप्राप्य-सी है।

प्राकृत वैयाकरणो ने 'किदउ' प्रत्यय के विषय मे लिखा है कि यह मध्य और उत्तर गगा दोआव मे वोली जानेवाली शौरसेनी प्राकृत मे अवशिष्ट रहा, किन्तु लहँदा मे इसके अस्तित्व से प्रकट है कि यह उत्तर-पश्चिमी भारत के एक वहुत वड़े भाग मे परवर्ती काल तक बना रहा होगा।

१. पंजावी अध्ययन की सीमित अवधि मे मुझे यह कर्मवाच्य प्राय. नहीं मिला। टिस्डल के व्याकरण के सिवाय सभी व्याकरणो मे लहँदा को पजाबी के अतर्गत सम्मि-लित किया गया है। ई० पी० न्यूटन ने इस कर्मवाच्य का उल्लेख किया है, किन्तु उनके सव उदाहरण 'जनम साखी' से लिये गये हैं जो लहँदा कृति है।

मे सामान्य है, जबकि सिंघी मे एक श्लिष्ट कर्मवाच्य रूप प्रचलित है। पश्चिमी हिन्दी मे यह कर्मवाच्य एक-दो तथाकथित शिष्ट आज्ञार्थ रूपो मे अवशिष्ट है (यदि इसे अवशेष कहा जा सके)।

### सार्वनामिक प्रत्यय

बाहरी वृत्त की भाषाओ का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लक्षण है क्रियाओ मे सार्वनामिक प्रत्यय जोडने का स्वतन्त्र प्रयोग (यह ऐसी प्रक्रिया है जो केन्द्रीय वर्ग की भाषाओ मे अपरिचित है)। जैसे लहँदा मे आखेउस, उसने (उस) कहा (आखेआ)। पंजाबी की माझी बोली मे भी ये पाये जाते है। जैसे आखिउस, उसने कहा। धुर पूर्व में शायद ही ये सुनाई पडते हो।

### शब्द-भडार

अन्तिम बात। लहँदा और सिन्धी की तरह पजाबी ऐसी भाषा है जिसके शब्द-भडार मे मुख्यत शुद्ध तद्भव शब्द अधिक हैं। तत्सम शब्दो का अभाव स्पष्ट है, और इस विषय मे पाच नदियो के इस देश की भाषा सस्कृत और देशी भाषा के जारज मिश्रण से नितान्त भिन्न है जिसे कलकत्ता और बनारस के पण्डित साहित्यिक मान बैठे है। यह घरेलू भाषा है जो आज के पजाब की सुगधि से सुवासित है। बीम्स ने ठीक ही कहा है[1]—

"पजाबी और सिंधी मे गेहूँ के आटे की महक और झोपड़ी के धुएँ की गध है जो भारत के पूर्वी भागो की पण्डित-यव्ध एव चर्मावृत भाषाओ द्वारा प्रस्तुत किसी वस्तु से अधिक स्वाभाविक और मनोहारी है।"

किन्तु घरेलू होते हुए भी, यह न समझ लेना चाहिए कि यह साहित्य के अयोग्य अनगढ भाषा है। यह इतनी अनगढ नही है जितनी कवि बर्न्स की विस्तृत निम्नभूमि की स्काच भाषा थी। पजाबी अपने ही शब्द-भडार के द्वारा किसी विचार को अभिव्यक्त करने मे समर्थ है, एव गद्य और पद्य दोनो के लिए सुपयुक्त है। यह सच है कि इसमे साहित्य कम है, किन्तु इसका कारण यह है कि यह अपनी निकट सम्बन्धिनी हिन्दुस्तानी द्वारा आच्छादित रही है और यह भी कि शताब्दियो तक पजाब दिल्ली

१. तुलनात्मक व्याकरण, भाग १, पृ० ५१।

से शासित रहा है, किन्तु लोकगाथाओ से, जो सर्वत्र प्रचलित है, इसकी क्षमताओं का पता चल जाता है। वर्तमान काल मे भी इसको हिन्दुस्तानी की एक बोली मात्र मानकर (यद्यपि यह ऐसी है नही), और स्वतन्त्र भाषा के रूप मे इसकी सत्ता से इन्कार करके, इसे तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति रही है। इसके दावे का प्रमुख आधार इसकी अपनी ध्वनिशास्त्रीय पद्धति और हिन्दी मे न पाया जाने वाला इसका अपना शब्द-भडार है, और ये दोनो विशेषताएँ इसकी प्राचीन लहँदा नीव के कारण से है। पजावी के कुछ सामान्य शब्द हिन्दुस्तानी मे नही मिलते। जैसे **पिउ**, पिता, **माउँ**, माँ, **आखना**, कहना, **इक्क**, एक, **साह**, साँस, **तिह**, तृषा, और सैकड़ो अन्य शब्द जो सभी वाहरी वृत्त की भाषाओ मे पाये जाते हैं।

## पजाव का प्राचीन इतिवृत्त

केन्द्रीय और पश्चिमी पजाव की भाषाओ (पजावी और लहँदा) का मिश्रित स्वरूप इन क्षेत्रो के निवासियो के महाभारत मे वर्णित चरित्र से, तथा पाणिनि व्याकरण के आनुषगिक सदर्भो से, भली भाति व्यजित होता है। यद्यपि मध्यदेश या गगा दोआब से, जिस केन्द्र से सस्कृत सभ्यता का प्रसार हुआ, पजाव दूर नही है, तो भी यहाँ के रीति-रिवाज आदि काल मे ही मध्यदेश के रीति-रिवाजो से अत्यधिक भिन्न रहे है। वताया गया है कि एक काल मे यहाँ के लोग अराजकता की अवस्था मे रहते थे और दूसरे काल मे उनके यहाँ कोई ब्राह्मण नही थे। मध्यदेश के कट्टर हिन्दू के लिए यह भयानक स्थिति थी। वे छोटे-छोटे गाँवो मे रहते थे और ऐसे राजाओ द्वारा शासित थे जिनका जीवनक्रम पारस्परिक युद्धो से सचालित था। न केवल ब्राह्मण नही थे, जाति-पाति भी नही थी। जनता मे वेद के प्रति कोई आदर नही था और लोग देवताओ को वलि नही देते थे। वे असभ्य और असस्कृत थे, और मदिरा पीने एव सव तरह का मास खाने के आदी थे। उनकी स्त्रियाँ विशालकाय, पाण्डुर एव व्यवहार मे नीति-च्युत थी और वहुविवाह करके रहती थी एव पुरुष का उत्तराधिकारी उसका अपना वेटा नही वल्कि उसकी वहन का वेटा होता था।[1] यह आग्रह करने की आवश्यकता

१ लिखते समय क्या लेखक के मन में जट्टो के रीति-रिवाजो का ध्यान था? उक्त उद्धरण महाभारत ८. ३०२० आदि से लिया गया है। महाभारत १. २०३३ मे जर्तिक जाति का उल्लेख मिलता है, और ये लोग सभवतः वर्तमान जट्टो के पुरखा थे।

नही है कि यह वृत्तान्त प्रत्येक वात मे सही था। यह मव शत्रु लोगो का कहना है, किन्तु, सच हो चाहे झूठ, इससे मध्यदेश और पंजाव की आदतो, रीतियो और भाषाओं के वीच की खाई का परिचय अवश्य मिल जाता है।

## साहित्य

पजावी मे वहुत कम साहित्य है। सवसे प्राचीन ग्रथ, जिसको इस भाषा मे लिखा बताया जाता है, सिखो का पवित्र, वेद आदिग्रथ है, किन्तु, यद्यपि इस ग्रथ की पाण्डुलिपियाँ व्यापक रूप से गुरमुखी लिपि मे लिखी जाती हैं, तथापि इसका वहुत थोड़ा भाग वास्तव मे पजावी भाषा मे है। यह नाना कवियो के पदो का संग्रह है जिनमे बहुत से पश्चिमी हिन्दी के किसी रूप मे लिखे गये, और दूसरो ने मराठी तक मे लिखे। सर्वप्रसिद्ध पजाबी अश **जपजी** है जो नानक, जिनका जन्म सन् १४६९ ई० मे हुआ था, के प्रारम्भिक पदो का सग्रह है। विख्यात **जनमसाखी** (नानक का जीवन चरित) लहँदा मे है, पजावी मे नही। वाद के ग्रथो मे हे **साखीनामा** (अंग्रेजी मे सरदार अत्तरसिंह भदौरिया द्वारा अनूदित), मणिसिंह द्वारा रचित एक अन्य **जनमसाखी**, एव छठे गुरु हरगोविन्द (१६०६-१६३८) का जीवन-चरित। इनमे कुछ सभवत लहँदा मे है, किन्तु मैं यह निश्चयपूर्वक नही कह सकता, क्योकि मैंने किसी को भी देखा नहीं है। **वारॉं भाई गुरदासदा** अर्जुन (१५८१-१६०६ ई०) की गुरुआई के समय के पद्यो का सग्रह है जो (अमृतसर, १८७९) मुद्रित हो चुका है। ये पद्य एक विशिष्ट शैली मे लिखे गये हैं जिसे 'वार' कहते है। वार का मूल अर्थ था युद्ध मे मारे गये वीरो के उपलक्ष्य मे शोकगीत, इससे कोई प्रशसात्मक युद्धगीत। इन कविताओ का अभिप्राय है मानव-अन्तर मे होने वाले पुण्य और पाप के युद्ध का वर्णन करना। आदिकालीन लौकिक साहित्य के नमूनो के रूप मे डॉ० थार्नटन[1] ने **पारस भाग** (नैतिक उपदेशो का सग्रह), अकवर द्वारा चित्तौड के घेरे पर एक महाकाव्य और नादिरशाह के आक्रमण पर एक वहुप्रशसित महाकाव्य, का उल्लेख किया है। परवर्ती साहित्य मुख्यत सस्कृत, हिन्दी या फारसी ग्रथो के अनुवाद या अनुकरण मे लिखा गया। इन अनुकर्ताओ मे सवसे प्रसिद्ध हाशिम है जो रणजीतसिंह के समय मे हुआ। **खैरमनुख** वैद्यक की यूनानी पद्धति की पद्यवद्ध निर्देशिका है।

१. देखिए 'पुस्तक-सूची' के अन्तर्गत उल्लिखित लेख।

उपरिलिखित साहित्य के अतिरिक्त पजाब के चारण साहित्य अथवा लोक-साहित्य की ओर कुछ अधिक ध्यान दिलाने की आवश्यकता है। इसके अन्तर्गत कुछ वृत्त है जिन्हे लगभग महाकाव्य कहा जा सकता है। इनमे सबसे महत्त्वपूर्ण वे है जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजा रसालू, हीर-राँझा और मिरजा-साहिवाँ से है। वारिस शाह द्वारा प्रणीत 'हीर और राँझा' की कथा का रूपान्तर शुद्धतम पजाबी का नमूना समझा जाता है। पजाब के लोककाव्य की ओर यूरोपियन विद्वानो का पर्याप्त ध्यान गया है, और यह उचित भी है। इसमे इग्लैंड और स्काटलैंड की सीमा-गाथाओ का पूरा लय और सगीत है। इस विषय मे सर्वप्रसिद्ध कार्य है कर्नल सर रिचर्ड टेम्पल का वृहद् 'पजाब की कथाएँ' (अंग्रेजी मे)।

सीरामपुर के ईसाई प्रचारको ने इजील के नव विधान का पजाबी सस्करण सन् १८१५ मे प्रकाशित किया। तब से बाइबिल के अन्य भागो के कई सस्करण इस भाषा मे निकल चुके है। दूसरा ईसाई साहित्य भी बहुत कुछ है।

## पुस्तक-सूचियां

सीरामपुर के प्रसिद्ध ईसाई प्रचारक, कैरे ने सबसे पहले अपने व्याकरण, प्रकाशित १८१२ ई०, मे पजाबी भाषा का वर्णन किया। इससे पहले का उल्लेख जो मुझे प्राप्त हो सका है, एडेलुग की पत्रिका मिथ्रिडेट्स (१८०८-१८१७) की दो सक्षिप्त सूचनाओ मे हुआ है।

निम्नलिखित सूची पजाबी से सम्बद्ध उन सभी कृतियो की है जो मेरे ध्यान मे आयी है। एक-दो को छोडकर, मैंने भारत मे प्रकाशित पुस्तको को सदर्भित नही किया। इन्हे श्री ब्लुम्हार्ट की सूचियो मे, जिनका उल्लेख नीचे किया जायगा, देखा जा सकता है। अलबत्ता मैं आदिग्रन्थ के सस्करणो का यथेष्ट वृत्त दे रहा हूँ। मैंने पश्चिमी पजाबी या लहँदा, जिसमे जनमसाखी और अन्य ग्रन्थ लिखे गये हैं, की रचनाओ का उल्लेख भी नही किया है। यह नितान्त भिन्न भाषा है जिसका सम्बन्ध सिन्धी और कश्मीरी से है।

### (१) सामान्य (इनमे मूल ग्रन्थ भी सम्मिलित है)

**आदि-ग्रन्थ—श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी**, अनेक सस्करण। मेरा ध्यान निम्नलिखित की ओर गया है। यदि अन्यथा सकेत न किया गया हो, तो वे गुरमुखी लिपि मे हैं।

लाहौर, १८६४, वही, १८६८, वही, १८८१, गुजराँवाला, १८८२; लाहौर, १८८५, वही, १८८७, वही, १८८९, अमृतसर, १८९२, लखनऊ (देव-नागरी लिपि), १८९३।

**संकलन आदि**—आदिग्रंथ से सगृहीत श्लोक। रचयिता, ९वें गुरु तेगबहादुर। लाहौर, १८८७। **पोथी अनन्दु साहिब महला** (सिखो के भक्तिपूर्ण भजन), गुरु अमरदास द्वारा प्रणीत (आदिग्रन्थ के राग रामकली से सकलित पदों के साथ)। लाहौर, १८७३।

**पञ्ज ग्रन्थ आदि**--(आदि ग्रथ से संकलित, सिखो की आठ भक्ति विषयक पुस्तको का सग्रह)। लाहौर, १८७४, गुजराँवाला (फारसी लिपि), १८७५; लाहौर, १८७८, वही, १८७९, गुजराँवाला (फारसी लिपि), १८७९; लाहौर १८८१; वही, १८८२, वही, १८८५, वही, १८८६, अमृतसर (फारसी लिपि), १८९५।

**पोथी रहिरास**—(आदिग्रन्थ और गुरु गोविन्दसिंह के ग्रन्थ से सकलित, सिखो की सायकालीन प्रार्थनाओ का गुटका)। लाहौर, १८६७, १८६९, (आदि ग्रन्थ से अन्य उद्धरणो सहित) १८६९, १८७३, १८७४, (आदि ग्रन्थ से सकलित पदों के साथ, फारसी लिपि) १८७४, १८७५, १८७८, १८७९; अमृतसर, १८९३।

**पोथी जपजी**—(नानक द्वारा प्रणीत, सिख भजनो और प्रार्थनाओ का सग्रह, आदिग्रन्थ का प्रथम अध्याय)। लाहौर, १८६५, १८६८, (फारसी लिपि) १८७१, (फारसी लिपि) १८७२, १८७३, (आदि ग्रन्थ से गृहीत नानक के अन्य पद्यो के साथ) १८७३, १८७४, (फारसी लिपि) १८७४, अमृतसर, १८७५, कराची (खोजा-सिन्धी लिपि मे), १८७५, लाहौर, १८७६, (नानक के अन्य पद्यो के साथ) १८७६, (विहारीलाल द्वारा पजाबी टीका सहित) १८७६, (फारसी लिपि) सियालकोट, १८७६; लाहौर, १८७७, (मणिसिंह की टीका सहित) १८७७, (पण्डित सालग्रामदास की टीका सहित) १८७७, (फारसी लिपि) सियालकोट, १८७७, (फारसी लिपि) लाहौर, १८७८, १८७९, (मणिसिंह की टीका सहित) १८७९, (फारसी लिपि) सियालकोट, १८७९, अमृतसर, १८८२, (हरिप्रकाश की बोध अर्थावली नामक टीका सहित) रावलपिंडी, १८८९, लाहौर,

(विहारीलाल की टीका सहित) १८९१, (मणिसिंह की टीका सहित) १९००।

(जपजी का मूल पाठ ट्रम्प-कृत आदिग्रन्थ के अनुवाद के परिशिष्ट मे दिया गया है।)

**जपजी के अनुवाद।** पाठ फारसी लिपि मे, साथ मे हिन्दुस्तानी अनुवाद और टिप्पणियाँ। वाद मे **जनम-साखी,** या नानक की जीवनी, एव **गुरुविलास**, नानक के उत्तराधिकारियो का इतिवृत्त। लाहौर, १८७०। वही, लाहौर, १८७८, हिन्दुस्तानी मे अन्तारेखीय अनुवादसहित, गुजराँवाला, १८७९। पटियाला के सरदार इत्तरसिंह-कृत भूमिका और हिन्दुस्तानी अनुवादसहित, गुजराँवाला, १८७९। जप-परमार्थ, पजावी पाठ का सम्पादन, साथ मे लक्ष्मणप्रसाद ब्रह्मचारी द्वारा हिन्दी अनूवाद और टिप्पणियाँ, लखनऊ १८८७। एम० मैकालिफ द्वारा लिखित सिखो के नाम एक परिपत्र, दिनाक अमृतसर, सिदम्बर २४, १८९७। इसके साथ सलग्न है जपजी का अग्रेजी मे प्रयोगात्मक अनुवाद। न्यू ऐंग्लो-गुरमुखी प्रेस, अमृतसर से मुद्रित एक पत्र। जपजी का अनुवाद (अग्रेजी), एम० मैकालिफ द्वारा। जर्नल आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, १९००, पृ० ४३ इत्यादि।

**पोथी आसादी वार**—(आदिग्रन्थ के राग आसा से सकलित पद। प्रात कालीन ईशोपासना मे जपजी तथा हजारेदे शव्द के वाद सिखो द्वारा दोहराये जाते हैं)। लाहौर, १८७३, (फारसी लिपि) १८७४, (फारसी लिपि) १८७५, १८७६, १८७७। **दि आसा दी वार। सिखो की प्रात'कालीन प्रार्थना।** कृत एम० मैकालिफ। **इण्डियन एन्टिक्वेरी,** भाग ३० (१९०१), पृ० ५३७ इत्यादि। (आसादी वार का अग्रेजी मे अनुवाद, सक्षिप्त भूमिका सहित।)

आदिग्रन्थ का अनुवाद—

ट्रम्प, डॉ अरनेस्ट—**दि आदि ग्रन्थ, और दि होली स्क्रिप्चर्स आफ दि सिख्स,** मूल गुरमखी से अनुवाद, साथ मे परिचयात्मक निवन्ध। लन्दन, १८७७। पिन्काट के अनुसार (देखिए नीचे) ट्रम्प ने कुल १५,५७५ पदो मे से ५,७१९ का अनुवाद किया था।

आदि ग्रन्थ पर पुस्तकें—

पिनकॉट, फ्रडरिक—**द अरेंजमेन्ट ऑफ दि हिम्ज ऑफ द आदि ग्रन्थ** (आदि

ग्रथ के पदो का क्रम)। जर्नल आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, भाग १८ (१८८६), पृ० ४३७ इत्यादि।

विष्णुदास उदासी—आदि ग्रन्थदा कोश। आदि ग्रथ का शब्दार्थ सग्रह। अमृतसर, १८९२। सिख ग्रन्थ में आनेवाले शब्दो के अर्थ (आदि ग्रन्थ के कठिन शब्दो का पजावी मे सग्रह)। कृत वावा विशनदास। अमृतसर, १८९३।

मैकालिफ, मैक्स आर्थर—दि सिख रिलिजन, इट्स गुरूज, सेक्रिड राइटिंग्स ऐण्ड ऑथर्स (सिख धर्म, उसके गुरु, धार्मिक रचनाएँ और लेखक), ६ भागो मे। आक्सफोर्ड, १९०९।

अन्य पुस्तकें, लेखको के नामो के क्रम से, प्रत्येक लेखक की प्रथम कृति की तिथि के क्रम के साथ—

एडेलुग, जोहन क्रिस्टोफ—Mithridats oder allegemeine Sprachenkunde mit dem vatir unger als Sprachprobe in bey nahe funfhundert Sprachen und mundarten वर्लिन, १८०६-१८१७। भाग १, पृ० १९५ पर लाहौर की स्थानीय वोली का, जिसे पजावी भाषा कहा गया है और जिसके वारे मे नाम और इसके फारसी- मिश्रित होने के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञात नही था, एक इतिवृत्त। पृष्ठ २०१ पर पादरी शुल्ज़ द्वारा रूपान्तरित Gemeine Manjari zn Kasi मे ईश- प्रार्थना है जो पजावी और विहारी का मिश्रित रूप है। भाग ४, पृ० ४८७, फाटर के परिशिष्ट मे इस भाषा का सक्षिप्त वृत्तान्त भी है।

एवट, मेजर, जे०—आन दि वैलड्स ऐण्ड लैजण्ड्स आफ दि पंजाव (पजाव की गाथाएँ और कथाएँ), जर्नल ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ वगाल, वर्ष २३ (१८५४), पृ० ५९ (विपय का सामान्य वृत्तान्त) तथा पृ० १२३ (ए रिफासिमेन्टो ऑन दि लैजण्ड अ.फ रसालू)।

वीम्स, जॉन—आउटलाइन्स ऑफ इडियन फाइलालोजी (भारतीय भापाशास्त्र की रूपरेखा), जिसके साथ भारतीय भापाओ का वितरण प्रदर्शित करनेवाला एक मानचित्र भी है। कलकत्ता, १८६७।

„ —ए कम्पैरिटिव ग्रामर ऑफ दि माडर्न एरियन लैंग्वेजिज ऑफ इण्डिया (भारत की आधुनिक आर्य भाषाओ का तुलनात्मक व्याकरण), अर्थात् हिन्दी, पजावी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, ओड़िया और वगाली। तीन भाग। लन्दन, १८७२-७९।

श्रद्धाराम—**सिखांदे राजदी विथिआ**। सिख शासको और पजाव के वर्तमान प्रशासन का इतिहास। लुधियाना, १८६८। एक और सस्करण, लाहौर, १८९२। मेजर ऐच० कोर्ट द्वारा अनूदित, लाहौर १८८८। देखिए 'व्याकरण' के अन्तर्गत।

टॉलवॉर्ट, टी० डब्लू० एच०—**दि डायलेक्ट ऑफ लुधिआना** (लुधियाना की वोली)। जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ वगाल, वर्ष ३८ (१८६९), भाग १, पृ० ८३ इत्यादि।

हार्नले, डॉ० ए० एफ० आर०, सी० आई० ई०—**एसेज़ इन एड ऑफ कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ दि गौडियन लैंग्वेजिज़** (गौड भाषाओ के तुलनात्मक व्याकरण के सहायतार्थ निवन्ध)। जर्नल ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ वगाल, वर्ष ४१ (१८७२), भाग १, पृ० १२० इत्यादि।

" ,—**दि लोकल डिस्ट्रिब्युशन एण्ड म्युचुअल अफिनिटीज ऑफ दि गौडियन लैंग्वेजिज़** (गौड भाषाओ का स्थानीय वितरण तथा पारस्परिक सम्वन्ध), कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ६७ (१८७८), पृ० ७५२ इत्यादि।

" ,—**ए ग्रामर ऑफ द ईस्टर्न हिन्दी कम्पेयर्ड विद द अदर गौडियन लैंग्वेजिज़** (अन्य गौड भाषाओ से तुलनाकृत पूर्वी हिन्दी का व्याकरण)। एक भाषा-मानचित्र तथा तिथि-तालिका सहित। लन्दन, १८८०।

अनेक लेखक—**दि रोमन उर्दू जर्नल** (पत्रिका)। लाहौर, १८७८-८३ (वर्ष १-६), इसमे पजावी भाषा की अनेक सुसम्पादित पाठ-पुस्तके है।

स्टील, मिसेज एफ० ए०, तथा टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टी० कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक—**फोकलोर इन दि पजाव** (पजाव मे लोकविद्या)। एफ० ए० एस० द्वारा सकलित, एव आर० सी० टी० द्वारा टिप्पणियो से युक्त। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ९ (१८८०), पृ० २०५, २०७, २०९, २८०, ३०२, वर्ष १० (१८८१), पृ० ४०, ८०, १४७, २२८, ३३१, ३४७, वर्ष ११ (१८८२), पृ० ३२, ७३, १६३, १६९, २२६, २२९, वर्ष १२ (१८८३), पृ० १०३, १७५, १७६, १७७।

" ,—**फोकलोर फ्राम कश्मीर** (कश्मीर की लोकविद्या)। एफ० ए० एस० द्वारा सकलित एव आर० सी० टी० द्वारा टिप्पणियो से युक्त। इण्डियन एण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), आर० सी० टी० द्वारा राजा रसालू पर टिप्पणी, पृ० ३४६ इत्यादि पर।

स्टील, मिसेज एफ० ए० तथा टेपल, रि० का०,—**वाइड अवेक स्टोरीज़** (जीती जागती कहानियाँ)। पजाव और कश्मीर की कहानियो का सग्रह। वम्वई, १८८४ (अनेक भाषा सम्वन्धी और अन्य टिप्पणियाँ)

स्टील, मिसेज़ एफ० ए०,—**टेल्ज़ ऑफ दि पंजाब टोल्ड वाइ दि पीपल** (पजाव की कहानियाँ लोगो के मुख से), जान लॉकवुड किप्लिग सी० आई० ई० द्वारा चित्रित एव आर० सी० टेम्पल की टिप्पणियो से युक्त। लन्दन, १८९४।

टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक,— **नोट्स ऑन दि कण्ट्री विट्वीन खोजक पासऐण्ड लुगारी वारखान** (दर्रा खोजक और लुगारी वारखान के वीच के प्रदेश पर टिप्पणियाँ)। जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ वगाल, वर्ष ४७, भाग २, पृ० ११३ इत्यादि।

„ ,—**दि सस्सी पुन्नूं ऑफ हाशिम शाह** (हाशिम शाह का सस्सी पुन्नूं)। दि रोमन-उर्दू जर्नल (दे०), १८८१, वर्ष ४, जुलाई, पृ० १९-३१; अगस्त, पृ० ३४-४३, सितम्वर, पृ० १२-२० (इसमे इस महत्वपूर्ण काव्य का पूरा पजावी पाठ, सावधानी से अक्षरान्तर किया गया है)।

„ ,—**मुहम्मेडन विलीफ इन हिन्दू सुपरस्टिशन** (हिन्दुओ के अन्ध-विश्वासो मे मुसलमानी विश्वास)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १० (१८८१), पृ० ३७१ (इसमे पजावी लोकगाथाओ से उद्धरण दिये गये हैं)।

„ ,—**ए सांग अबाउट सखी सरवर** (सखी सरवर से सम्वन्धित एक गीत)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७३ (१८८१), पृ० २५३ इत्यादि।

„ ,—**नोट्स ऑन सम कॉइन लैजण्ड्स** (सिक्को पर दी गयी गाथाओ पर टिप्पणी) इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १०, १८८१, पृ० ९०।

„ ,—**नोट्स ऑन मलिक उल-मौत** (मलिक-उल-मौत पर टिप्पणी)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८१), पृ० २८९ इत्यादि।

„ ,—**सम हिन्दू सांग्स ऐण्ड कैचिज फ्राम दि विलेजिज़ इन नार्दर्न इण्डिया** (उत्तरी भारत के गाँवो से सगृहीत कुछ हिन्दू गीत और टप्पे)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७४, भाग १ (१८८२), पृ० ३१६ इत्यादि। वर्ष ७५, भाग २ (१८८२), पृ० ४१ इत्यादि।

„ ,—**सम हिन्दू फ्रोकसांग्स फ्राम दि पंजाव** (पजाव के कुछ हिन्दू लोकगीत)। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ वगाल, वर्ष ५१ (१८८२), भाग

१, पृ० १५१ इत्यादि। (भूमिका मे इस भाषा पर भरपूर व्याकरणिक टिप्पणियाँ हैं।)

टेम्पल, लेफ्टीनेंट रिचर्ड कार्नक,—ऑनरिफिक क्लास-नेम्स इन दि पंजाब (पजाव मे आदरसूचक जातिवाचक नाम)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० ११७ इत्यादि।

" ,—ए पंजाब लैजण्ड (पजाव की एक गाथा)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० २८९ इत्यादि।

" ,—सारिका, —मैना KEPKION। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११, १८८२, पृ० २९१ इत्यादि।

" ,—ट्वाईस टोल्ड टेल्स रिगार्डिग दि अखुद ऑफ स्वात (स्वात की अखुद जाति की पुन कथित कहानियाँ)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ११ (१८८२), पृ० ३२५ इत्यादि।

" ,—सांग्स ऑफ दि पीपल (लोकगीत)—दि सिविल ऐण्ड मिलिटरी गज़ट, ४ जुलाई, १८, १९ अगस्त, १३ सितम्बर, १८८२, १९ जनवरी, १०, २४ फरवरी, २१ मार्च, ६ अप्रैल, २६ जुलाई, १८८३। (पजाबी मे, अंग्रेज़ी अनुवाद सहित)।

" ,—फोकलोर ऑफ दि हेडलेस हार्समैन इन नार्दर्न इण्डिया (उत्तरी भारत मे अशीर्ष घुडसवार की लोककथा)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७७ (१८८३), पृ० २६० इत्यादि (इसमे कुछ पजावी पद्य है)।

" ,—सम नोट्स अवाउट राजा रसालू (राजा रसालू के वारे मे कुछ टिप्पणियाँ)। इण्डियन ऐण्टीक्वेरी, वर्ष १२ (१८८३), पृ० ३०९ इत्यादि। देखिए स्टील, मिसेज़ एफ० ए० भी।

" ,—ए डिसर्टेशन ऑन दि प्रापर नेम्स ऑफ पंजावीज़, विद स्पेशल रेफेरस टु दि प्रापर नेम्स आफ विलेजिज़ इन ईस्टर्न पजाव (पजावियो के व्यक्तिवाची नामो पर एक प्रवन्ध, पूर्वी पजाव के नामो के विशिष्ट सन्दर्भ सहित)। वम्वई, १८८३।

" ,—ऐन ऐग्ज़ेमिनेशन ऑफ दि ट्रेड डायलेक्ट ऑफ दि नक्काश ऑर पेन्टर्स ऑन पापिए माशे इन दि पजाव ऐण्ड कश्मीर (पजाव और कश्मीर मे कागजी काम के नक्काशो या चित्रकारो की व्यापारी वोली का परीक्षण)। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी, वगाल, वर्ष ५३ (१८८४), भाग १, पृ० १ इत्यादि।

टेम्पल, लेफ्टीनेन्ट (लेफ्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक,—ऑन रसालू एण्ड सालिवाहन (रसालू और शालिवाहन)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १३ (१८८४), पृ० १७८ इत्यादि।

,, ,—फोक साग्स फ्राम नार्दर्न इण्डिया (उत्तरी भारत के लोकगीत)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७७ (१८८४), पृ० २७० इत्यादि।

,, ,—फोक साग्स फ्राम नार्दर्न इण्डिया (उत्तरी भारत के लोकगीत)। द्वितीय माला। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७८ (१८८४), पृ० २७३ इत्यादि।

,, ,—राजा रसालू। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७९ (१८८४), पृ० ३७९ इत्यादि।

,, ,—दि लैजण्ड्स ऑफ दि पजाब (पजाब की गाथाएँ)। बम्बई तथा लन्दन। भाग १, १८८४, भाग २, १८८५, भाग ३, १९००। दे० नीचे रोज़, एच० ए०।

,, ,—दि डेहली दलाल्ज़ ऐण्ड देइर स्लैंग (दिल्ली के दलाल और उनकी बोली)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १४, १८८५, पृ० १५५ इत्यादि।

,, ,—दि कॉइन्स ऑफ दि माडर्न नेटिव चीफ्स ऑफ दि पजाब (पजाब के आधुनिक देशी राजाओ के सिक्के)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १८, १८८९, पृ० ३२१ इत्यादि।

,, ,—करप्शन्स ऑफ इंग्लिश इन दि पजाब ऐण्ड बर्मा (पजाब और बर्मा मे अग्रेज़ी का विकार)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष २०, १८९१, पृ० ८९।

,, ,—फोकलोर इन दि लैजण्ड्स ऑफ दि पंजाब (पजाब की गाथाओ मे लोक-विद्या)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष २९, १९००, पृ० ७८ इत्यादि, ८९ इत्यादि, १६८ इत्यादि।

,, ,—ऐण्ड पैरी, जे० डब्लू०,—दि हिम्न्ज़ ऑफ दि नांगीपन्थ (नागीपन्थ के भजन)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष १३ (१८८४), पृ० १ इत्यादि।

देखिए फैलन, डब्लू०, रोज़, एच० ए०, तथा स्टील, मिसेज़ एफ० ए० भी।

श्यामाचरण गगूली,—दि लैंग्वेज क्वेस्चन इन दि पजाब (पजाब मे भाषा का प्रश्न)। कलकत्ता रिव्यू, वर्ष ७५ (स० १५०) (१८८२)।

इबेटसन, [सर] डेनियल चार्ल्स जेल्फ,—आउटलाइन्स ऑफ पजाब एथ्नॉग्राफी—धर्म, भाषा और जाति से सम्बन्धित पजाब की जनगणना रिपोर्ट, १८८१, से उद्धरण। कलकत्ता, १८८३। (पचम अध्याय—लोक-भाषाएँ, पृ० १५३ इत्यादि)।

थार्नटन, टामस एच०, सी० एस० आई०—दि वर्नेक्युलर लिट्रेचर ऐण्ड फ़ोकलोर ऑफ दि पजाब (पजाब का देशी साहित्य और लोकविद्या)। जर्नल ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, वर्ष १७ (१८८५), पृ० ३७३ इत्यादि।

मैक्लैगन, ई० डी०—सेन्सस ऑफ इण्डिया (भारत की जनगणना), १८९१। भाग १९, पजाब और उसकी रियासतें। खण्ड १, प्रतिवेदन, कलकत्ता, १८९२। (अध्याय ९, लोगो की भाषाएँ, पृ० २०० इत्यादि।)

भाई हज़ारासिंह, ज्ञानी,—दुल्हन दर्पण (नज़ीर अहमद के हिन्दोस्तानी उपन्यास 'मिरातुल-अरूस' के आधार पर)। अमृतसर, १८९३ (तृतीय सस्करण)।

ब्लूमहार्ट, जे० एफ०,—ब्रिटिश म्युजियम लाइब्रेरी मे हिन्दी, पजाबी, सिन्धी और पश्तो की मुद्रित पुस्तको की सूचियाँ। लन्दन, १८९३।

" ,—इण्डिया आफिस लाइब्रेरी का सूचीपत्र। भाग २, खण्ड ३—हिन्दी, पंजाबी, पश्तो तथा सिन्धी पुस्तकें। लन्दन, १९०२।

रोज़, एच० ए०,—सेन्सस ऑफ इण्डिया (भारत की जनगणना), १९०१, भाग १७। पजाब तथा उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त। खण्ड १, प्रतिवेदन। शिमला, १९०२, अध्याय ६ (भाषा), पृ० २७८ इत्यादि।

" ,—लैजण्ड्स फ्राम दि पजाब (पजाब की गाथाएँ) (सर रिचर्ड टेम्पल की 'पजाबी की गाथाएँ' की शृखला मे)। (मूल और अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, स० १, वर्ष ३५ (१९०६), पृ० ३००, स० २, वर्ष ३७ (१९०८), पृ० १४९; स० ३, वर्ष ३८ (१९०८), पृ० ८१; स० ४, वही, पृष्ठ ३११, वर्ष ३९ (१९१०), पृ० १।

" ,—ए ट्रिप्लेट ऑफ पजाबी सांग्ज़ (पजाबी गीतो की एक त्रिपदी) (मूल तथा अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३८ (१९०९), पृ० ३३।

" ,—दि लैजण्ड (कहानी) खान ख्वास ऐण्ड शेरशाह चौगल्ला (मुगल) ऐट देहली। (मूल तथा अनुवाद)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३८ (१९०९), पृ० ११३।

स्विनर्टन, रेवरेण्ड चार्ल्स,—रोमैण्टिक टेल्स फ्रॉम दि पजाब (पजाब की रोमानी कहानियाँ), अनेक स्रोतो से सगृहीत तथा सम्पादित। लन्दन, १९०३।

यगसन, रेवरेण्ड जे०,—दि चूहड़ाज़ (मेहतर)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३५, (१९०६), पृष्ठ ८२, ३०२, ३३७, वर्ष ३६ (१९०७), पृ० १९,

७१, १०६, १३५। (इसमे मेहतर लोगो के पजावी मे अनेक गीत सकलित हैं।)

## (२) व्याकरण, कोश, छात्रोपयोगी पुस्तके, लोकोक्ति-सग्रह सहित

केरी, डॉ० डब्लू०,—**ए ग्रामर आफ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पजावी भाषा का व्याकरण)। सीरामपुर, १८१२।

लीच, लेफ्टीनेन्ट (मेजर, सी० वी०) रावर्ट,—**एपिटोम ऑफ दि ग्रामर्स ऑफ दि ब्रहुइकी, द वलोचकी ऐण्ड पजावी लैंग्वेजिज़...** (ब्रहुइ, वलोची तथा पजावी भाषाओ के व्याकरण का सार)। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ वगाल, वर्ष ७ (१८३८), पृ० ७११ इत्यादि। पुनर्मुद्रित, कलकत्ता, १८३८। एक और प्रति, वॉम्वे ज्याग्राफिकल सो० की कार्यवाही मे, भाग १ (१८३८)। **ए ग्रामर ऑफ दि पजाबी लैंग्विज** (पजावी भाषा का व्याकरण), बम्वई १८३८। सिन्ध, अफगानिस्तान और पास के देशो मे, दूत के रूप मे सन् १८३५-३६, ३७ मे नियुक्त सर ए० वर्न्स, लेफ्टीनेन्ट लीच, डॉ० लार्ड तथा लेफ्टीनेन्ट वुड द्वारा सरकार को प्रस्तुत किये गये राजनीतिक, भौगोलिक तथा व्यापारिक प्रतिवेदनों और पत्रो की स० १२ के रूप मे, **ग्रामर्स ऑफ दि ब्रहोरीकी, बीलूची एण्ड पंजाबी लैंग्वेजिज़** (ब्रहुई, वलूची और पजावी भाषाओ के व्याकरण) शीर्षक से पुनः मुद्रित। कलकत्ता, १८३९।

जैन्वीयर, रेवेरेण्ड एल०,—**ईडियॅमैटिक सेन्टेन्सिज़ इन इंग्लिश ऐण्ड पंजाबी** (अग्रेजी और पजावी के मुहाविरेदार वाक्य)। लुधियाना, १८४६। दे० न्यूटन, रेवरेण्ड जे० भी।

स्टार्की, केप्टन सैमुअल क्रॉस, तथा वुस्सावा सिंग,—**ए डिक्शनरी, इंग्लिश ऐण्ड पजाबी**। साथ मे व्याकरण की रूपरेखा, अग्रेजी-पजावी वार्तालाप, व्याकरणिक तथा व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ। कृत केप्टन स्टार्की, सहायक वुस्सावा सिंग। कलकत्ता, १८४९।

न्यूटन, रेवरेण्ड जे०,—**ए ग्रामर ऑफ दि पजाबी लैंग्वेज** (पजावी भाषा का व्याकरण), साथ मे परिशिष्ट। लुधियाना, प्रथम सस्करण, १८५१, द्वितीय, १८६६; तृतीय, १८९३। परिशिष्ट १ मे अक और पचाग। परिशिष्ट २ मे पजावी से उद्धरण—(१) पजावी रीति-रिवाज, (२) नानक की जीवनी से एक

उद्धरण, (३) पजावी लोकोक्तियो का, एक देशवासी की व्याख्या सहित, सकलन।

न्यूटन, रेव० जे० तथा जैन्वीयर, रेवरेण्ड एल०,—**ए डिक्शनरी ऑफ दि पंजाबी लैंग्वेज** (पजावी भाषा का कोश), लुधियाना मिशन की एक समिति द्वारा प्रणीत। लुधियाना, १८५४। (इस कोश का आधार न्यूटन का शब्द-सग्रह था, और इसे जैन्वीयर तथा अन्य लोगो ने पूरा किया। पजावी शब्द गुरमुखी और रोमन लिपियो मे, एवं गुरमुखी वर्णमाला के क्रम से, मुद्रित है।)

कनिंघम, सर अलेक्जेण्डर,—**लदाक, फिजिकल, स्टैटिस्टिकल ऐण्ड हिस्टारिकल, विद नोटिसिज ऑफ दि सर्राउडिंग कण्ट्रीज** (लद्दाख, भौगोलिक, सास्यिक तथा ऐतिहासिक एव आस-पास के देशो की सूचनाएँ)। लन्दन, १८५४। १५वें अध्याय मे शब्दावलियाँ है .सिंध से घागरा तक की वोलियाँ पजावी आदि।

कैम्बेल, सर जार्ज,—**द एथनालॉजी ऑफ इण्डिया**, न्यायाधीश कैम्बेल द्वारा। (परिशिष्ट ग, उत्तरी और आर्य शब्दो की तुलनात्मक तालिका पजावी इत्यादि)। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, वर्ष ३५ (१८६६), भाग २, विशेषाक।

,, ,—**स्पेसिमेन्स ऑफ दि लेंग्वेजिज ऑफ इण्डिया** (भारतीय भाषाओ के नमूने) जिसमे बगाल, मध्यप्रान्त और पूर्वी सीमा के आदिवासियो की भाषाओ के नमूने भी सम्मिलित है। कलकत्ता, १८७४। (पृ० २४ इत्यादि पर लाहौर की पजावी का शब्द-सग्रह)।

बिहारीलाल,—**पंजाबी ग्रामर** (पजावी व्याकरण), लाहौर, १८६७।

,, ,—**पंजाबी व्याकरणसार** (पजावी भाषा का प्राथमिक व्याकरण) (पजावी मे)। लुधियाना, १८६९। अन्य सस्करण, लाहौर, १८९५।

बेडन-पावल, वी० एच०,—**हैण्डबुक ऑफ द इकनामिक प्रॉडक्ट्स, ऐण्ड ऑफ दी मैन्युफैक्चर्स एण्ड आर्ट्स ऑफ दी पजाव** (पजाव के आर्थिक उत्पादनो और शिल्प तथा कला की पुस्तिका), जिसके साथ एक सम्मिलित अनुक्रमणिका और पारिभाषिक देशी शब्दो की सूची भी है। दो भाग, रुडकी, १८६८ एव लाहौर १८७२।

लयाल, [सर] जेम्स ब्रॉडवुड,—**रिपोर्ट ऑफ दि लैण्ड-रेवेन्यु सैटलमेन्ट ऑफ दी कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट, पंजाब** (जिला कागडा, पजाव, की भूमिकर-व्यवस्था

का प्रतिवेदन), १८६५-७२। लाहौर, १८७४। (परिशिष्ट ४, शब्द-संग्रह। परिशिष्ट ५, लोकोक्तियाँ।)

ड्रीड, फ्रेडरिक,—दि जम्मू ऍंड कश्मीर टेरिटरीज़ (जम्मू और कश्मीर प्रान्त)। भौगोलिक वृत्तान्त। लन्दन, १८७५। डोगरी का इतिवृत्त, पृ० ४६३ इत्यादि, डोगरी लिपि वर्णित, पृ० ४७१। परिशिष्ट १ (पृ० ५०३ इत्यादि) मे डोगरी व्याकरण।

मुहम्मद अब्दुल गफूर,—ए कम्प्लीट डिक्शनरी ऑफ दि टर्म्स यूज़्ड बाइ दि क्रिमिनल ट्राइब्स (अपराधी जातियो द्वारा प्रयुक्त शब्दो का सम्पूर्ण कोश)। साथ मे प्रत्येक जाति का सक्षिप्त इतिहास और उसके सदस्यो के नाम और निवासस्थान। लाहौर, १८७९, दे० लीटनर, जी, डब्लू०।

लीटनर, जी० डब्लू०,—ए कलेक्शन ऑफ स्पेसिमेन्ज़ ऑफ कमर्शल ऐण्ड अदर एल्फबेट्स ऐण्ड हैण्डराइटिंग्ज़, ऐज़ आलसो ऑफ़ मल्टिप्लिकेशन टेबल करेंट इन वेरियस पार्ट्स ऑफ दि पंजाब, सिंद ऐण्ड दि नार्थ-वेस्ट प्राविन्सिज़ (व्यापारी और अन्य वर्णमाला तथा हस्तलेखो के नमूनो और पजाब, सिंध तथा उत्तर पश्चिमी प्रान्तो के विविध भागो मे प्रचलित पहाडो का सग्रह)। लाहौर, तिथि अज्ञात।

,, ,—ए डिटेल्ड अनैलिसिज़ ऑफ अब्दुलगफूर्स डिक्शनरी ऑफ दि टर्म्स यूज़्ड बाइ क्रिमिनल ट्राइब्ज़ इन दि पजाब (पजाब मे अपराधी जातियो द्वारा प्रयुक्त शब्दो के अब्दुलगफूर के कोश का विस्तृत विश्लेषण)। लाहौर, १८८०। दे० ऊपर मुहम्मद अब्दुल गफूर।

श्रद्धाराम पण्डित,—पंजाबी बातचीत। लुधियाना, १८८४।

वाकर, टी० जी०,—फ़ाइनल रिपोर्ट ऑन दि. .सैटलमेन्ट. . .ऑफ दि लुधिआना डिस्ट्रिक्ट इन दि पजाब (पजाब मे लुधियाना जिले के बन्दोबस्त का अन्तिम प्रतिवेदन)। कलकत्ता, १८८४। (परिशिष्ट १४, शब्दसग्रह तथा लोकोक्तियाँ)।

विल्सन, जे०,—फाइनल रिपोर्ट ऑन दि रिवीजन ऑफ सैटलमेंट ऑफ सिरसा डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब (पजाब के ज़िला सिरसा के बन्दोबस्त के पुनरीक्षण का अन्तिम प्रतिवेदन)। कलकत्ता, १८८४। (परिशिष्ट २ मे ज़िला सिरसा मे बोली जानेवाली पजाबी और बागडी बोलियो का वर्णन, साथ मे पद्य, लोकोक्तियाँ और वचन)।

फैलन, एस० डब्लू०, पी-एच० डी०; टेम्पल, केप्टन (लेफ्टीनेन्ट कर्नल सर) रिचर्ड कार्नक एवं लाला फकीरचन्द वैश,—**ए डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी प्रॉवर्ब्ज** (हिन्दुस्तानी लोकोक्ति कोश), जिसमे अनेक मारवाडी, पजावी, मगही, भोजपुरी तथा तिरहुती लोकोक्तियाँ, वचन, चिह्न, सूक्तियाँ, सिद्धान्त-वाक्य और उपमाएँ सकलित हैं। कृत स्वर्गीय एस० डब्लू० फैलन। सम्पादित तथा सशोधित आर० सी० टेम्पल, साहाय्यकृत् लाला फकीरचद। बनारस तथा लन्दन १८८६।

कोर्ट, मेजर एच०,—**हिस्टरी आफ दि सिक्स** (सिखो का इतिहास), अथवा सिखाँ दे राज दी विखिआ। इसके साथ सक्षिप्त गुरमुखी व्याकरण। लाहौर, १८८८। दे० श्रद्धाराम, शीर्षक १, सामान्य के अन्तर्गत।

टिस्डल, रेवरेण्ड विलियम सेन्ट क्लेअर,—**ए सिम्प्लिफाइड ग्रामर एण्ड रीडिंग बुक ऑफ दि पजाबी लैंग्वेज** (पंजाबी भाषा का सरलीकृत व्याकरण तथा पाठपुस्तक) लन्दन, १८८९।

मैकोनैकी, आर०,—**सिलेक्टिड एग्रिकल्चरल प्रॉवर्ब्ज** (चुनी हुई कृषि सम्बन्धी लोकोक्तियाँ), पंजाब की। टिप्पणियो के साथ सम्पादित। दिल्ली, १८९०।

भानुदत्त पण्डित,—**पंजाबी अखौ तॉं** (पजाबी लोकोक्तियाँ), व्याख्या सहित। लाहौर १८९१।

डेन, एल० डब्लू०,—**फाइनल रिपोर्ट ऑफ दि सैटलमेन्ट ऑफ गुरदासपुर डिस्ट्रिक्ट इन दि पजाब** (पजाब मे ज़िला गुरदासपुर के बन्दोबस्त का अन्तिम प्रतिवेदन)। लाहौर, १८९२। (प्रतिवेदन के पहले एक शब्दसग्रह दिया गया है)।

पर्सर, डब्लू० ई०,—**फाइनल रिपोर्ट ऑफ दि सैटलमेन्ट ऑफ दि जलधर डिस्ट्रिक्ट इन दि पजाब** (पजाब मे ज़िला जालधर के बन्दोबस्त का अन्तिम प्रतिवेदन)। लाहौर, १८९२। (परिशिष्ट १३, लोकोक्तियाँ। परिशिष्ट १४, शब्द-सग्रह)।

भाई मायासिंह,—**दि पजाबी डिक्शनरी** (पजाबी कोश), पजाब सरकार के सरक्षण मे मुशी गुलाबसिंह ऐण्ड सन्स द्वारा निष्पन्न। भाई मायासिंह, सदस्य खालसा कालिज कौसिल द्वारा सगृहीत तथा सम्पादित एव डॉ० एच० एम० क्लार्क, अमृतसर, द्वारा पारित। पजाब टैक्स्ट बुक कमेटी की ओर से। लाहौर, १८९५। पजाबी के शब्द रोमन और गुरमुखी लिपियो मे और अग्रेजी के वर्णक्रम से दिये गये है।

डनलॉफ स्मिथ, जेम्स रावर्ट,—**फाइनल रिपोर्ट ऑफ दि...सैटलमेन्ट आफ दि सियालकोट डिस्ट्रिक्ट इन दि पंजाब** (पजाव मे जिला सियालकोट के वन्दोवस्त . का अन्तिम प्रतिवेदन)। .१८८८-१८९५। लाहौर १८९५। (परिशिष्ट १, शब्द-सग्रह)।

जवाहिरसिंह मुशी,—**ए वोकेब्युलरी ऑफ टू थाउजेण्ड वर्ड्ज फ्राम इग्लिश इन्टू पंजावी** (अग्रेजी से पजावी मे दो हजार शब्दो का सग्रह)। लाहौर, १८९५।

अनाम,—**ए गाइड टु पंजावी** (पजावी निर्देशिका)। लाहौर, १८९६।

मुल (मूल) सिह, हविलदार,—**ए हैण्डबुक टु लर्न पंजावी** (पजावी शिक्षण पुस्तिका)। अमृतसर, १८९७।

सालिगराम, लाला,—**ऐंग्लो-गुरमुखी डिक्शनरी** (अग्रेजी-गुरमुखी कोश)। लाहौर, १८९७।

सालिगराम, लाला,—**ऐंग्लो-गुरमुखी बोलचाल** (अग्रेजी-गुरमुखी वोलचाल) (अग्रेजी के वाक्य पजावी मे)। लाहौर, १९००।

न्यूटन, रेवरेण्ड ई० पी०,—**पजाबी ग्रामर** (पजावी व्याकरण), अभ्यास और शब्द-सग्रह सहित। लुधियाना, १८९८।

ओ' ब्राइन, ई०,—काँगडा गजेटियर मे पिछले सम्करण के परिशिष्ट मे काँगडा वादी की वोली पर टिप्पणियाँ, साथ मे काँगडा जिले के विशिष्ट शव्दो का सग्रह।

ग्राहम वेली, रेवरेण्ड टी०,—**पंजाबी ग्रामर** (पजावी व्याकरण), वज़ीरावाद ज़िले मे वोली जानेवाली पजावी का सक्षिप्त व्याकरण। लाहौर, १९०४।

„ ,—**सप्लीमेन्ट्स टु दि पंजावी डिक्शनरी** (पजावी कोश का परिशिष्ट), स० १, जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ वगाल, भाग ५, न० स० (१९०९), पृ० ४७९।

„ ,—**ए पजावी फोनेटिक रीडर** (पजावी ध्वनिशास्त्रीय पाठपुस्तक), लंदन, १९१४। नीचे दे० कमिग्ज, रेवरेण्ड टी० एफ० भी।

ग्रियर्सन, जी० ए०,—**ऑन दि माडर्न इण्डो-आर्यन एल्फवेट्स ऑफ नार्थवेस्टर्न इण्डिया** (उत्तर-पश्चिमी भारत की आवुनिक भारतीय आर्य लिपियो पर)। जर्नल ऑफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, १९०४, पृ० ६७ इत्यादि।

रोज, एच० ए०,—**सम कन्ट्रिव्युशन्स टु वर्ड्ज ए ग्लॉसरी ऑफ रिलिजस टर्म्स**

यूज्ड इन दि पजाव (पजाव मे प्रयुक्त धार्मिक शब्दावली-सग्रह के विषय मे कुछ योगदान)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३३ (१९०४), पृ० ११८।

रोज़, एच० ए०,—नोट्स ऑन एन्शण्ट ऐडमिनिस्ट्रेटिव टर्म्स ऐण्ड टाइटल्स यूज्ड इन दि पजाव (पजाव मे प्रयुक्त प्राचीन प्रशासकीय शब्दो और उपाधियो पर टिप्पणियाँ)। इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३६ (१९०७), पृ० ३४८, वर्ष ३७ (१९०८), पृ० ७५।

„ ,—कॉण्ट्रिब्यूशन टु पजाबी लेक्सिकॉग्राफी (पजावी कोशकला मे योगदान)। प्रथम माला, इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, वर्ष ३७ (१९०८), पृ० ३६०, वर्ष ३८ (१९०९), पृ० १७, ७४, ९८, द्वितीय माला, वही, पृ० २२१, २६५, २८२, ३३२, वर्ष ३९ (१९१०), पृ० २९; तृतीय माला, वही, पृ० २४२, २४७; वर्ष ४० (१९११), पृ० १९९, २३०, २५८, २७४, २८९, ३०५, वर्ष ४१, (१९१२), पृ० ४१, ९२, १५०, १७६, १९७, २१२, २४२, २६७।

कमिग्ज़, रेवरेण्ड टी० एफ०, एव ग्राहम वेली, रेवरेण्ड टी०,—पंजावी मैनुअल ऐण्ड ग्रामर (पजावी पोथी तथा व्याकरण, उत्तरी पजाव की वोलचाल की पजावी की निर्देशिका), कलकत्ता, १९१२। (इसका विषय प्रमुखत लाहौर से उत्तर और उत्तर पश्चिम मे वोली जानेवाली पजावी है। )

## लिपि

पजावी भाषा सामान्यत गुरमुखी लिपि मे लिखी बतायी जाती है, वास्तव मे, 'गुरमुखी' नाम का प्राय अत्यन्त मिथ्या प्रयोग भाषा के ही लिए किया जाता है। 'गुरमुखी' भाषा ऐसे ही नही है जैसे 'देवनागरी' नाम की कोई भाषा नही है। वस्तुत. अनेक भाषाएँ गुरमुखी मे लिखी गयी हैं। आदिग्रन्थ, जो पूरा उस लिपि मे लिखा गया है, वह पश्चिमी हिन्दी की किसी-न-किसी वोली मे है, और उसमे मराठी तक के कुछ पद है।

पजाव की सही लिपि लण्डा या 'पगु' कहलाती है। यह उत्तरी भारत की महाजनी लिपि से सम्बद्ध है, और स्वर-ध्वनियो के लिए चिह्नो की अपूर्ण पद्धति की दृष्टि से उसमे मिलती-जुलती है। स्वर-चिह्न प्राय छोड दिये जाते हैं। कहा जाता है कि दूसरे सिख गुरु अगद के समय (१५३८-१५५२ ई०) मे, यह लण्डा एकमात्र लिपि थी जो देशी वोली को लिखने के लिए पजाव मे प्रयुक्त होती थी। अगद ने देखा कि

लण्डा मे लिखित सिख पद अशुद्ध रूप मे पढे जा सकते हैं, अत उन्होने देवनागरी लिपि से (जिसका प्रयोग तब केवल सस्कृत लिखने मे होता था) कुछ चिह्न लेकर और सिख मत के धार्मिक ग्रन्थो को लिपिबद्ध करने के योग्य बनाने के विचार से वर्णो के रूपो का संस्कार करके, इसका सुधार किया। उनके द्वारा परिष्कृत होने के कारण, इस लिपि का नाम **गुरमुखी**, अर्थात् गुरु के मुख से नि सृत लिपि, पडा। तब से इस लिपि का प्रयोग सिख ग्रन्थो के लिखने के लिए होता रहा है, और इसका व्यवहार, मुख्यत उस मत के अनुयायियो मे, विस्तार पाता गया है।

दूसरी ओर लण्डा लिपि सारे पजाब मे प्रचलित रही है और दुकानदारो द्वारा विशेष रूप से प्रयुक्त होती है।

लण्डा से वहुत मिलती-जुलती टाकरी या टाकरी लिपि है जो पजाब के उत्तर मे हिमालय मे व्यवहृत होती है और जम्मू की राजलिपि डोगरी जिसका एक सशोधित भेद है। टाकरी हमे उत्तर मे और आगे कश्मीर तक ले जाती है। जैसे गुरमुखी लण्डा का एक परिष्कृत रूप है, ऐसे ही यहाँ कश्मीर मे हिन्दुओ द्वारा सभी कार्यो मे प्रयुक्त शारदा लिपि पायी जाती है। यह टाकरी का एक परिष्कृत भेद है, और इतनी ही पूर्ण है जितनी देवनागरी। इन चार लिपियो का पारस्परिक सम्वन्ध वतलाने के विचार से, मैं अगले पृष्ठ मे उन्हे साथ-साथ समानान्तर स्तम्भो मे, दे रहा हूँ। लण्डा और टाकरी जगह-जगह थोडी-बहुत वदल जाती है, और जिस क्षेत्र मे इनका क्रमशः व्यवहार होता है, मैने उसके भरसक केन्द्रीय स्थलो से ये नमूने लिये हैं।[1]

१. डोगरी का पूर्ण विवरण आगे पृष्ठ ६१ आदि पर दिया गया है। लडा और टाकरी के अन्य भेदो के लिए देखिए डॉ० लाइटनर का पुस्तकसूचियो के अन्तर्गत उल्लिखित 'नमूनो का संग्रह'। 'उत्तर पश्चिमी भारत की वर्तमान भारतीय आर्य लिपियो' पर इन पक्तियो के लेखक के उस लेख से भी तुलना कीजिए जिसका उल्लेख उसी सूची मे किया गया है।

| गुरमुखी | लण्डा | टाकरी | शारदा | नागरी |
|---|---|---|---|---|
| ਅ | | | | अ (आइडा) |
| ੲ | | | | इ (ईडी) |
| ੳ | | | | उ (ऊडा) |
| ਓ | | | | ओ |
| ਸ | | | | स |
| ਹ | | | | ह |
| ਕ | | | | क |
| ਖ | | | | ख |
| ਗ | | | | ग |
| ਘ | | | | घ |
| ਙ | | | | ङ |
| ਚ | | | | च |
| ਛ | | | | छ |
| ਜ | | | | ज |
| ਝ | | | | झ |
| ਞ | | | | ञ |
| ਟ | | | | ट |
| ਠ | | | | ठ |

| गुरमुखी | लण्डा | टाकरी | शारदा | नागरी |
|---|---|---|---|---|
| ਡ | | | | ड |
| ਢ | | | | ढ |
| ਣ | | | | ण |
| ਤ | | | | त |
| ਥ | | | | थ |
| ਦ | | | | द |
| ਧ | | | | ध |
| ਨ | | | | न |
| ਪ | | | | प |
| ਫ | | | | फ |
| ਬ | | | | ब |
| ਭ | | | | भ |
| ਮ | | | | म |
| ਯ | | | | य |
| ਰ | | | | र |
| ਲ | | | | ल |
| ਵ | | | | व |
| ੜ | | | | ड़ |

जब कि शारदा लिपि अपने वर्णों के क्रम मे और स्वरो की प्रतीक-पद्धति मे देवनागरी का ठीक अनुसरण करती है, गुरमुखी, लण्डा और टाकरी के साथ, इन दोनो बातो मे उससे कुछ अलग जा पडती है।

गुरमुखी मे केवल एक सघर्षी व्यजन ਸ है जो देवनागरी मे स है। इसमे देवनागरी श और ष की तरह के कोई वर्ण नही है, क्योकि दोनो की इसमे आवश्यकता नही पडती। जब श ध्वनि का चिह्न देना चाहते हैं, जैसी कि यह अरबी-फारसी से आगत शब्दो मे जान पडती है, तो ਸ के नीचे बिन्दु ल॰ा देते है, अर्थात् ਸ਼।

वर्णमाला के क्रम मे ਸ (स) और ਹ (ह) देवनागरी की तरह दूसरे व्यंजनो के अन्त मे नही बल्कि उनके पहले, और स्वरो के तुरन्त बाद, आते हैं।

गुरमुखी मे स्वरो की प्रतीक-पद्धति कुछ विचित्र है। इसमे तीन चिह्न है—ਅ, ੲ और ੳ, जिन्हे क्रमश आइडा, ईडी और ऊडा कहते हैं। जब स्वर शब्द के आदि मे हो तो इन चिह्नो का प्रयोग स्वरो की मात्राओ की टेक के रूप मे होता है। इन टेको के सहित वे आदि स्वर बनते हैं। ਅ (आइडा) का प्रयोग ਅ (अ), ਆ (आ), ਐ (ऐ) और ਔ (औ) के आदि रूपो की टेक बनाने के लिए होता है, जब कि अन्तिम तीन की मात्राएँ क्रमश ा, ै और ौ होती हैं। देवनागरी की तरह ਅ (अ) की कोई मात्रा नही होती। ੲ (ईडी) का प्रयोग ਇ (इ), ਈ (ई) और ਏ (ए) के आदि रूपो की टेक बनाने के लिए होता है और इनमे क्रमश ਿ, ੀ और ੇ मात्राएँ होती है। ੳ (ऊडा) ਉ और ਊ के आदि रूपो की टेक होता है जबकि ੁ और ੂ क्रमश. मात्राएँ होती हैं। अन्त मे, ੳ (ऊडा) की ऊपर वाली वक्र रेखा मे थोडा परिवर्तन करके, उसका मुँह खोल देने से, ਓ प्राप्त होता है जो शब्द के आदि मे ओ स्वर का काम देता है और इसकी मात्रा का रूप ੋ होता है।

इस प्रकार हमे गुरमुखी वर्णमाला मे लिखे जानेवाले निम्नलिखित स्वर प्राप्त होते हैं—

(शब्द के आदि मे)

| ਅ | ਆ | ਇ | ਈ | ਉ | ਊ | ਏ | ਐ | ਓ | ਔ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |

मात्राएँ

| ਕ | ਕਾ | ਕਿ | ਕੀ | ਕੁ | ਕੂ | ਕੇ | ਕੈ | ਕੋ | ਕੌ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क | का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ |

गुरमुखी व्यजन नीचे दिये जा रहे हैं—

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਸ | स | ਹ | ह | | | | | | |
| ਕ | क | ਖ | ख | ਗ | ग | ਘ | घ | ਙ | ङ |
| ਚ | च | ਛ | छ | ਜ | ज | ਝ | झ | ਞ | ञ |
| ਟ | ट | ਠ | ठ | ਡ | ड | ਢ | ढ | ਣ | ण |
| ਤ | त | ਥ | थ | ਦ | द | ਧ | ध | ਨ | न |
| ਪ | प | ਫ | फ | ਬ | ब | ਭ | भ | ਮ | म |
| ਯ | य | ਰ | र | ਲ | ल | ਵ | व | ੜ | ड़ |

पजावी मे प्रत्येक स्वर और व्यजन का एक निश्चित नाम है। जैसे, मात्राओ मे ा को आ-कन्ना, ि को इ-सिआरी, इत्यादि कहते है। इसी प्रकार, ਸ (स) को सस्सा, ਹ (ह) को हहा, इत्यादि कहते है। यहाँ पर ये नाम देना अनावश्यक है, क्योकि इनका एक तो कोई व्यावहारिक उपयोग नही है, दूसरे इन्हे किसी भी पजावी व्याकरण मे देखा जा सकता है।

अनुनासिक चिह्न दो है, अर्थात् ੰ जिसे टिप्पी कहते हैं और ਂ जिसे बिन्दी कहते हैं। टिप्पी ऐसे अक्षर के ऊपर लिखी जाती है जिसमे ऊ (की मात्रा),

ह्रस्व अ, इ या (मात्रा) उ हो। ਸ (स) से पहले इसका उच्चारण न् होता है। जैसे ਅੰਸ का उच्चारण अन्स-सा होगा। ਹ (ह) अथवा किसी स्वर से पहले अथवा शब्द के अन्त मे, इसी की ध्वनि फ्रेंच शब्द bon मे आये हुए न् की जैसी होती है और इसे स्वर के ऊपर ੰ (रोमन मे ~ ) देकर प्रकट किया गया है। जैसे,

ਸਿੰਹ ਜਿੰਉ ਨੂੰ।

सिंह जिंउ नूं।

किसी दूसरे व्यजन से पहले इसकी ध्वनि उस व्यजन के वर्ग के पचमाक्षर की होती है। जैसे,

ਚੰਗਾ ਪੰਛੀ ਪਿੰਡ ਹਿੰਦੂ ਖੰਨਾ ਅੰਬ ਸੰਮਤ

चङ्गा पञ्छी पिण्ड हिन्दू खन्ना अम्ब सम्मत्

विन्दी दीर्घ स्वरो, आ, ई, ए, ऐ, ओ, औ वाले अक्षरो के ऊपर, चाहे वे आदि मे हो चाहे मात्रा रूप मे, अथवा उ, ऊ के आदि रूप के ऊपर लिखी जाती है (उ, ऊ की मात्राओ के ऊपर टिप्पी होती है)। विन्दी का उच्चारण भी वही है जो फ्रेंच शब्द bon मे आये हुए न् का है और इसे अक्षरान्तर मे— (रोमन मे ~) करके लिखा जाता है। जैसे

ਬਾਂਸ ਅਸੀਂ ਏਲੋਂ।

बाँस, असी, एलो।

प्राय:, जव यह शब्द के अन्त मे या ह और स से पहले न हो, तो इसका उच्चारण टिप्पी की तरह होता है।

पजाबी भाषा को वहुत कम सयुक्त व्यजनो की आवश्यकता है। जो व्यापक रूप से पाये जाते हैं वे नीचे दिये जा रहे हैं—

ਸਟ ਮ੍ਹ ਨ੍ਹ ਰ੍ਹ ਲ੍ਹ ੜ੍ਹ ਗਯ ਸਥ ਤਯ ਸਮ

स्ट, म्ह, न्ह, र्ह, ल्ह, ढ, ग्य, स्थ, त्य, स्म।

जव र सयुक्त व्यजन का दूसरा वर्ण हो तो इसका रूप वक्र डैश का होता है, जैसे

ਸ੍ਰ ਕ੍ਰ ਖ੍ਰ ਗ੍ਰ ਤ੍ਰ (कुछ अधिक व्यापक) ਦ੍ਰ ਪ੍ਰ ਬ੍ਰ ਭ੍ਰ

स्र क्र ख्र ग्र, त्र द्र प्र ब्र भ्र

जब वर्ण का द्वित्व होता है तो ˘ चिह्न, जिसे 'अधिक' कहते हैं, उसके पहले शिरोरेखा के ऊपर लगाया जाता है। जैसे

ਸੱਪ ਗੱਦੀ ਅੱਸੂ ਬਿੱਛੂ ਪੱਥਰ

सप्प गद्दी अस्सू विच्छू पत्थर

अन्य सयुक्त व्यजन बस साथ-साथ रख दिये जाते हैं। जैसे

ਬਕਬਕੀ ਖੁਰਚਣ ਮਾਟਣਾ ਮਾਰਦਾ

वक्वकी खुर्चण माट्णा मार्दा

इनमे प्रथम अक्षर के क, र, ट, र के अन्तर्गत अ का उच्चारण नही होता।

पूर्वी पजाव मे, किन्तु माझ मे नही, एक मूर्धन्य ळ-ध्वनि होती है जो लहँदा, देशी हिन्दोस्तानी, मध्य और पश्चिमी पहाडी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी और ओडिया मे भी होती है। इसका सकेत साधारण वर्ण ਲ (ल) के दाहिने हाथ के निचले कोने में छोटा सा वक्र विन्दु जोड़ देने से होता है। जैसे ਲ਼ (ळ)।

पश्चिमी हिन्दी की तरह इसमे भी शब्द के अन्तिम व्यजन का अन्तर्निष्ठ अ उच्चरित नही होता।

ਵ (व) का उच्चारण अग्रेजी के w की तरह और कभी-कभी v की तरह होता है। व अग्रेजी की तरह ऊपर के दाँतो को निचले होठो पर दवाकर उच्चरित नही होता। अर्थात् दन्त्योष्ठ्य न होकर, यह शुद्ध ओष्ठ्य ध्वनि है, जो दोनो होठो को भीचने से और उनके वीच से श्वास निकालने से होती है। सम्बद्ध भाषाओ मे इस वर्ण की ध्वनि इ और ए (ह्रस्व अथवा दीर्घ) से पहले प्राय v की तरह और अन्य स्वरो से पहले w की तरह होती है। पजावी मे यह नियम तभी लागू होता है जब यह वर्ण शब्द के मध्य में हो, किन्तु शब्द के आदि मे यह नही चलता। यहाँ एकमात्र नियम रिवाज का जान पडता है, अत मैने सक्षिप्त व्याकरण के परिशिष्ट मे भाई मायासिंह के कोश से सगृहीत इस वर्ण से आरम्भ होनेवाले ऐसे शब्दो की एक सूची दे दी है जिनमे व का उच्चारण v होता है। इस वर्ण मे आरम्भ होने-वाले अन्य पजावी शब्दो मे इसका w उच्चारण होता है।[1]

१ दे० पृ० ५८ इत्यादि।

अभी तक हमने सिखो और हिन्दुओ द्वारा व्यवहृत वर्णमाला का उल्लेख किया है। याद रहे कि पजाबी-भाषी क्षेत्र मे मुसलमानो की बहुत बडी जनसख्या है जो पजाबी का उतना ही खुला व्यवहार करते है जितना उनके हिन्दू पडौसी। किन्तु ये लोग भाषा को लिखते समय प्राय फारसी-अरबी लिपि का, जैसी कि वह हिन्दोस्तानी के लिए ढाली गयी है, प्रयोग करते है। इसकी कोई स्थानीय विशेषताएँ नही है।

पूर्वोल्लिखित सभी लिपियो मे (लण्डा को छोडकर) लिखे हुए नमूने अगले पृष्ठो मे मिलेंगे। लण्डा के कोई नमूने नही मिले, और वह लिपि कुछ-एक वाक्यो से अधिक लिखाई के योग्य भी नही है। इसका पढ़ पाना उन लोगो के लिए भी, जो इसे लिखते है इतना कठिन है कि अशिक्षित दुकानदारो मे हिसाब-किताब और इस तरह के काम के अतिरिक्त इसका व्यवहार नही के बराबर होता है।

## व्याकरण

पजाबी व्याकरण, प्रमुखत हिन्दुस्तानी व्याकरण का अनुसरण करता है, इसलिए अधिक टिप्पणी की आवश्यकता नही है। उच्चारण की दृष्टि से, ह और कुछ एक महाप्राण व्यजन मात्र ऐसे वर्ण हैं जिनकी विशेष सूचना देना आवश्यक है। लहँदा मे इनका उच्चारण विचित्र रीति से होता है, और यही बात पजाबी क्षेत्र के पश्चिमी जिलो मे स्पष्ट है। इस उच्चारण का उत्तम वर्णन वह है जो ग्राहम बेली ने अपने वज़ीराबाद की बोली के व्याकरण मे दिया है और जिसका सार-सक्षेप नीचे उद्धृत किया जा रहा है।

इन जिलो मे, जब ह किसी शब्द के आदि मे अथवा बलाघात-युक्त अक्षर से पहले आता है, तो इसकी एक तीव्र कण्ठ्य ध्वनि होती है, जो कुछ-कुछ अरबी के ع ऐन के सबल उच्चारण से मिलती-जुलती है। हम इसकी तुलना अग्रेजी हैम के ग्रामीण उच्चारण अैम से कर सकते है। इस प्रकार हिय्याँ, चारपाई की पाटियाँ, का उच्चारण अ॒य्याँ, और पिहाई, पिसाई का पिअ॒ई होता है।

अन्य स्थितियो मे, अर्थात् जब यह शब्द के आदि मे अथवा बलाघातयुक्त अक्षर से पूर्व नही होता, तब यह कठिनाई से सुना जाता है, या नही ही सुना जाता, किन्तु इसके कारण पूर्ववर्ती स्वर की तान जोर से उठ जाती है और प्राय शब्द का सुर तक बदल जाता है। जैसे, लाह, उतार, ला, लगा, से बहुत भिन्न ध्वनि है यद्यपि

उसमे ह प्राय अश्रवणीय है। इसी प्रकार काह्ला, उतावला, मे पहला -आ- उच्च सुर से बोला जाता है, जबकि काला, श्याम, मे इसका सुर साधारण है, यद्यपि काह्ला का ह ध्वनित नही होता।

यही बातें सघोप महाप्राण व्यजनो घ, झ, ढ, ध, भ, ण्ह, न्ह, म्ह, ढ, ड़्ह, व्ह आदि का अक्षरान्तर दिखाते हुए ह पर लागू होती हैं, किन्तु अघोप महाप्राण व्यजनो ख, छ, ठ, थ, फ या श मे नही। जैसे— भ्रा, भाई, का उच्चारण व्‌रा, घुमाँ, घुमाँव का गुमाँ और चन्हाँ, चनाव नद्री, का चनाँ करके होता है। दूसरी ओर, कूढ मे, जहाँ ढ वलाघातयुक्त स्वर के बाद मे आता है, ह सुनाई नही देता, किन्तु ऊ का सुर कूड़, हल का जोड़, के ऊ की अपेक्षा अधिक ऊँचा है, और बग्घी (उच्चारण वेग्गी) मे बग्गी, गोरी, की अपेक्षा अ का सुर अधिक ऊँचा है।

सज्ञाओ मे, सबसे अधिक ध्यान देने योग्य विशेषताएँ ये हैं कि तिर्यक् बहुवचन के अन्त मे -आँ होता है, सम्बन्ध-कारकीय प्रत्यय दा है, जो कि आकारान्त विशेषणो की भाँति, न केवल लिंग और वचन मे, बल्कि कारक मे भी उस सज्ञा के अनुरूप होता है जिससे उसका सम्बन्ध होता है।

क्रियाओ मे, सहायक क्रियाओ के दो रूप उल्लेखनीय हैं। एक तो है जे, वह है। यह पजाबी क्षेत्र के केवल पश्चिमी जिलो मे सुना जाता है, और इसका सही-सही अर्थ पहले-पहल ग्राहम बेली ने उपरि-सदर्भित अपने वज़ीराबादी व्याकरण मे बताया था। उत्पत्ति की दृष्टि से जे सहायक क्रिया (ए) से युक्त मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम है, और इसका ठीक अर्थ है 'तुम्हे या तुमसे है'। यह इस प्रकार के प्रयोगो मे स्पष्ट है—

**की मिळिआ जे,** शब्दार्थ—क्या मिला तुम्हे है, अर्थात् तुम्हे क्या मिला ? आदर्श पंजाबी मे—तुधनूं की मिलिआ।

**की आखिआ जे,** क्या कहा तुमने ? आदर्श पजाबी—तुसीं की आखेआ, तुमने क्या कहा ? **की जे,** तुम्हे क्या हुआ ?

साधारणतया, मध्यम पुरुष का सकेत अधिक प्रत्यक्ष नही है, और अनुवाद मे, यदि कहना ही पडे तो, इस प्रकार के शब्दो मे कहना होगा कि 'मै तुम्हे पूछता हूँ' या 'मैं तुम्हे कहता हूँ।' जैसे ऊपर वाले की जे का यह अर्थ भी है कि 'मै तुमसे पूछता हू कि क्या हो गया' (किसी को, आवश्यक नही कि तुम्हे)। इसी प्रकार—

ओत्थे दो जे—मैं तुम्हे कहता हूँ कि वहाँ दो है।
मैं आया जे—मैं तुम्हे कहता हूँ कि मै आया हूँ।
साहब जे—मैं तुम्हे कहता हूँ कि साहिब है।

स्पष्ट है कि इन अन्तिम तीन उदाहरणो मे 'मै तुम्हे कहता हूँ कि' व्यवहारत. छोडा जा सकता है, और जे का रूप, जैसा कि उस व्याकरण में है, 'वह है' या 'वे हैं' हो सकता है। तथापि इसका प्रयोग केवल ऐसे वाक्यो मे हो सकता है जैसे ऊपर दिये गये है।

सहायक क्रिया के भूतकाल का सामान्य रूप पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनो के एकवचन के लिए और पुल्लिग बहुवचन के लिए प्राय सी होता है। साधारणत. बताया जाता है कि यह सा का स्त्रीलिंग रूप है, किन्तु अधिक सम्भावना यह है कि यह प्राकृत आसी, संस्कृत आसीत्, वह था, से सम्बद्ध किसी प्राचीन रूप का विकार है। सज्ञार्थक क्रिया के अन्त मे सामान्यत णा होता है (ना नहीं), यद्यपि-ना कुछ क्रियाओ के साथ अवश्य लगता है। भविष्यत् मे कुछ अनियम है। कर्मवाच्य का एक रूप है जो कर्तृवाच्य धातु के साथ -ई- जोडकर बनता है (दे० पृ० १९), किन्तु कुल मिलाकर क्रिया के रूप ग्रामीण हिन्दुस्तानी से मिलते-जुलते है। अत विश्वास किया जाता है कि सलग्न सक्षिप्त व्याकरण के द्वारा आगे आनेवाले नमूनो की भाषा को समझने मे विद्यार्थी को सहायता मिलेगी।

## पंजाबी का संक्षिप्त व्याकरण

१. संज्ञाएँ। लिंग—यह हिन्दुस्तानी की तरह होता है। सबसे अधिक महत्व-पूर्ण अपवाद है 'राह' जो पजाबी मे पुंल्लिग है।

**वचन और कारक**—कर्ता कारक बहुवचन हिन्दुस्तानी के अनुरूप होता है। बहुवचन तिर्यक् -आँ- अन्त्य होता है।

| एकवचन | | बहुवचन | | |
|---|---|---|---|---|
| मूल रूप | तिर्यक् रूप | मूल | तिर्यक् | |
| मुण्डा, लडका | मुण्डे | मुण्डे | मुण्डिआँ | सम्बोधन के प्राय रूप इस प्रकार है—ओ मुण्डिआ (एक व०), ओ मुण्डिओ, ओ वाणीआँ (या वाणीएँ) ओ वाणीओ, ओ भाईआ, ओ भाईओ, ओ कावाँ, ओ कावो (या काओ), ओ पेवा, ओ पेवो; ओ धीए, ओ धीओ, ओ कन्धे, ओ कन्धो; ओ मावें (अथवा माउँ), ओ मावो (अथवा माओ), ओ विध्वा, ओ विध्वाओ। कभी-कभी सम्बोधन के स्थान पर कर्ता का प्रयोग होता है। |
| वाणीआ, बनिया | वाणीएँ | वाणीएँ | वाणीआँ | |
| मनुक्ख, मनुष्य | मनुक्ख | मनुक्ख | मनुक्खाँ | |
| भाई, भाई | भाई | भाई | भाईआँ | |
| काउँ, कौवा | काउँ | काउँ | कावाँ | |
| पिउ, पिता | पिउ | पिउ | पेवाँ | |
| धी, लडकी | धी | धीआँ, धी | धीआँ, धी | |
| कन्ध, दीवार | कन्ध | कन्धाँ | कन्धाँ | |
| माउँ, माँ | माउँ | मावाँ | मावाँ | |
| विध्वा, विधवा | विध्वा | विध्वाँ | विध्वाँ | |

कुछ और कारक भी यदा-कदा मिल जाते है, अर्थात् ईकारान्त कर्तृकारक बहुवचन, जैसे तुसीं लोकीं पाइआ, तुम लोगो ने पाया, मे, एकारान्त अधिकरण कारक एकवचन, जैसे घरे, घर मे, मे, छावें (छाउँ से), छाया मे, मे, ईकारान्त अधिकरण बहु-

वचन, जैसे **गुरमुखी** अक्खरीं, गुरुमुखी अक्षरो मे, अपादान एकवचन–ओ, जैसे **घरो**, घर से, एव अपादान वहुवचन –ई, जैसे **हत्थीं**, हाथो से।

कारकीय परसर्ग निम्नलिखित हैं—

कर्ता—नै (वहुधा लुप्त)

सम्प्रदान-कर्म—नूं

करण-अपादान—ते, तो, थो, थी, दो (से)

सम्वन्ध—दा

अधिकरण—विच्च (मे), पुर (पर), पास, पाह (पास); नाल (साथ)—इनमे वहुत-मे सम्वन्ध-कारक तिर्यक् रूप पुल्लिग के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे **घर-विच्च** अथवा **घरदे विच्च**, घर मे।

**टिप्पणी**—सम्वन्ध-कारकीय 'दे' विभक्ति प्रत्यय है, परसर्ग नही। इसे विना योजक चिह्न के लिखना चाहिए। यथा, **घरदा**, न कि **घर-दा**, घर का। इसी प्रकार कर्ता-कारकीय नै, और सम्प्रदान-कर्म-कारकीय नूं, किन्तु **घर-पुर**, घर पर, योजक चिह्न के साथ लिखना चाहिए। सम्वन्ध कारक की रूपावली के वारे मे देखिए नीचे 'विशेषण'।

**विशेषण**—आ और सम्वन्ध कारकीय परसर्गों मे अन्त होने वाले विशेषणो की संगति लिंग, वचन और रूप मे उनकी विशेष संज्ञाओ के साथ रहती है। जैसे, **निक्का मुण्डा**,[1] अच्छा लडका, **निक्के मुण्डेनूं**, अच्छे लडके को, **ए नेक्किआ मुण्डिआ**, ओ अच्छे लड़के, **निक्के मुण्डे**, अच्छे लडके, **निक्किआँ मुण्डिआँनूं**, अच्छे लडको को, **ए निक्किओ मुण्डिओ**, ओ अच्छे लडको, **निक्की कुडी**, अच्छी लडकी, **निक्की कुड़ीनू**, अच्छी लडकी को, **ए निक्किए कुडीए**, ओ अच्छी लडकी, **निक्कीआँ कुडीआँ**, अच्छी लडकियाँ, **निक्कीआँ कुड़ीआँनू**, अच्छी लडकियो को, **घोडेदा मूंह**, घोडे का मुंह, **घोडेदे मूंहविच**, घोडे के मुंह मे, **घोडेदा अक्ख**, घोडे की आँख, **घोडेदीआँ अक्खां-विच्च**, घोडे की आँखो मे। हिन्दुस्तानी पद्धति वाला सव तिर्यक् रूप पुल्लिग कारको मे –ए और सव स्त्रीलिंग कारको के लिए –ई प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है।

विशेषण की तुलनात्मक स्थितियाँ वैसी ही हैं जैसी अन्य भारतीय भाषाओ मे। एव, इह उस-थो वडा है, यह उससे वडा है, इह **सभनाँ-थो वडा है**, यह सवसे वडा है।

[1] पजाबी में 'निक्का' का अर्थ 'छोटा' होता है, 'अच्छा' नहीं।—अनुवादक

## २. सर्वनाम

आपका सम्बन्धकारकीय रूप आपणा है। आदरसूचक 'आप' के अर्थ में इसका प्रयोग हिन्दुस्तानी से ग्रहण किया गया है। सामान्यत मध्यम पुरुष का आदरसूचक सर्वनाम वहुवचन तुसीं है।

| | मैं | तू | वह | यह (१) | यह (२) | जो (१) | जो (२) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **एकवचन** | | | | | | | |
| कर्ता | हौ (अप्र०) मैं | तूं | उह, ओह, ओहु, अहि | इह, एह | अह, आह, आहि | जो | जिहडा, जेहडे |
| करण | मैं | तै | उन, ओन, उहनै, आदि | इन, एन, इहनै आदि | | जिण, जिहनै आदि | विशेषण की तरह नियमितत रूपान्तरित |
| अपादान | मैं, किन्तु मैंने, मुझसे | तै (ते-ते) | उह, उस, ओस | इह, इस, एस, ऐस | मूल अपरिवर्तित | जिह, जिस | |
| सम्बन्ध | मेरा | तेरा | उहदा, उसदा, आदि | इहदा, इसदा, आदि | | जिहदा, आदि | |
| **बहुवचन** | | | | | | | |
| कर्ता | असी | तुसी | ओह | एह | अह, आह, आहि | जो | |
| करण | असी | तुसी | उन्ही, उन्होनै, आदि | इन्ही, इन्होनै आहि | अहांनै, आदि | जिन्ही, जिन्हानै | |
| अपादान | असा, सा | तुसाँ, तुहाँ* | उन्हाँ, ओन्हाँ | इन्हाँ, एन्हाँ | अहाँ, आहाँ | जिन्हा | |
| सम्बन्ध | असाडा, साडा | तुसाडा, तुहाडा* | उन्हादा, आदि | इन्हादा, आदि | अहाँदा आदि | जिन्हादा | |

* पजावी बोलचाल मे तुहा, तुहाडा के स्थान पर त्वा, त्वाड्डा मिलता है।

| | वह (१) | वह (२) | कौन (१) | कौन (२) | क्या ? | कोई | कुछ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एकवचन कर्ता | सो | तिहड़ा, तेहड़ा | कौण | किहड़ा, केहड़ा | की, किआ | कोई, काई | कुछ, किछ, कुझ, कुज्ज, कुह |
| करण | तिन, आदि | विशेषण की तरह नियमितत. रूपान्तरित | किन, आदि | विशेषण की तरह नियमितत रूपान्तरित | काहनैं | किने, किसेनैं | कासेनैं |
| अपादान | तिह, तिस | | किह, किस | | काह, कास | किसे | कासे |
| सम्बन्ध | तिहदा, आदि | | किहदा, आदि | | काहदा, आदि | किसेदा | कासेदा |
| बहुवचन कर्ता | सो | | कौण | | अव्यवहृत | कौण के बहुवचन की तरह | . . |
| करण | तिन्ही | | किन्ही, आदि | | | | . . |
| अपादान | तिन्हाँ | | किन्हाँ | | | | . . . . |
| सम्बन्ध | तिन्हाँदा | | किन्हाँदा | | | | . . |

३. क्रियाएँ—क. सहायक क्रिया तथा अस्तित्वसूचक क्रिया

वर्तमान काल—मैं हूँ, आदि

| | एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|
| | पु० | स्त्री० | पु० | स्त्री० |
| उ० | हाँ, हाँगा, हैं | हाँ, हागी, हैं | हाँ, हागे, हैंगे | हाँ, हाँगीआँ |
| म० | है, हैगा, एँ | हैं, हैंगी, एँ | हो, हो, होगे, हैगेओ | हो, ले, होगीआँ |
| अ० | है, हैगा, हैसु, हई, ई, ईं, ए, ने, जे। | है, हैगी, हैसु, हई, ई, ईं, ए, ने, जे। | हन, हन-ने, हैंगे, हैन, हैनी, हैनसु, ने, जे। | हन, हनगीआँ, हैंगीआँ, हैन, हैनी, हैनसु, ने, जे |

भूतकाल—मैं था, इत्यादि।

| | एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|---|
| | पु० | स्त्री० | पु० | स्त्री |
| १ २ ३ | सा, सागा, सी, सीगा, था | सी, सीगी, थी | से, सेगे, सी, सीगे, थे | सीआँ, सीगीआँ, थीआँ |
| एव १ | साँ, साँगा, है-साँ | साँ, साँगी, है-साँ | साँ, साँगे, है-से | साँ, साँगीआँ, हैसीआँ |
| २ | है-सी | है-सी | है-से, सौ | है-सीआँ, सीओ |
| ३ | है-सी, साई | है-सी, साई | सन, सन-गे, सैन, सान, हैसन | सन, सन-गीआँ, सैन, सान, हैसन |

है-सॉं आदि के नकारात्मक रूप है—नहीं-सॉं आदि बनते हैं। सी का नकारात्मक नसो अथवा था नसो भी होता है। नसो दोनो लिंगो और दोनो वचनो मे प्रयुक्त होता है।

उक्त रूपो मे से अविकतर मात्र स्थानीय है। सामान्य रूप निम्नलिखित हैं—

| | वर्तमान (उभयलिंग) | | भूतकाल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | एकवचन | | बहुवचन | |
| | एकवचन | बहुवचन | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
| उ० | हाँ | हाँ | सा,सी | सी | साँ, सी, से | सीआँ |
| म० | है | हों, हो | सा, सी | सी | सी, सी, से | सीआँ |
| अ० | है | हन | सा, सी | सी | सन, सी, से | सन, सीआँ |

ख.—कर्तृवाच्य क्रिया

धातु,—घल्ल, भेज

सज्ञार्थक क्रिया (infinitive),— घल्लणा, घल्लण, भेजना

वर्तमान कृदन्त,—घल्लदा, भेजता

भूतकृदन्त,—घल्लिआ, भेजा

कर्तृवाची सज्ञा,—घल्लणवाला, भेजनेवाला

क्रियार्थक सज्ञा (gerund),—घल्लियाँ, भेजना

पूर्वकालिक (अपूर्णकालिक) कृदन्त,—घल्ल, घल्लि, घल्लके (कर, -करके), घल्लि-के (कर, करके)

टिप्पणी—यदि धातु के अन्त मे ण, ड, ळ अथवा र हो तो क्रियार्थक सज्ञा के अन्त मे ना लगता है, णा नही। यथा जाणना, जागना, मारना, मारना।

स्वर अथवा ह मे अन्त होनेवाली धातु का वर्तमान कृदन्त -न्दा लगाकर वनता है। यथा आउन्दा, आता, रहिन्दा, रहता, खान्दा, खाता; गाहुन्दा, निराता, कभी-कभी वर्तमान कृदन्त -ना लगाने से बनता है, जैसे देखदा के स्थान पर देखना, देखता। –इ से अन्त होनेवाली और कुछ दूसरी धातुओ मे -इआ की जगह -आ जोडने से भूतकृदन्त वनता है, जैसे रहिआ, रहा, लभा, पाया। आउ और आहु मे अन्त होने वाली धातुओ मे -उ का लोप हो जाता है, जैसे, आउणा, आना, आइआ, आया; चाहुणा, चाहना, चाहिआ, चाहा। उ वाली अन्य धातुओ मे उ का व हो जाता है; जैसे जीउणा, जीना, जीविआ, जिया। इकारान्त अथवा उकारान्त धातुओ का इ, उ सभाव्य कृदन्त मे लुप्त हो जाता, जैसे रहिणा, रह या रहि, आउणा, आ।

वर्तमान सभाव्य—मैं भेजूं

| | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| उ | घल्ला | घल्लिये |
| म. | घल्लें, घल्ली (अप्र॰) | घल्लो, घल्लो, घल्लिओ (अप्र) |
| अ | घल्ले | घल्लण |

उ मे अन्त होने वाली धातुओ मे उ का व हो जाता है, जैसे आवाँ; अथवा लुप्त हो जाता है, जैसे आआँ मे। अन्यपुरुष एकवचन मे उ तथा अन्यपुरुष वहुवचन में -उण या -आण होता है। जैसे, आवे, आये, या आऊ, वह आये, आवण, आण या

आउण, वे आयें। इ मे अन्त होनेवाली धातुओ मे इ इस काल मे लुप्त हो जाती है, जैसे रहाँ, मैं रहूँ। अन्य पुरुष वहुव० -इन मे अन्त हो सकता है, जैसे रहण या रहिण। अन्य स्वरो मे अन्त होनेवाली धातुओ मे विकल्पत -व लाया जाता है, धोणा, धोना, धोआँ या धोवाँ, मैं धोऊँ। ण अन्त मे हो तो तृतीय वहुव० मे -न- किया जाता है, जैसे जाणना, जानना; जानण, जानें।

आज्ञार्थक भेज, घल्ल, घल्लीं, घल्लें (अप्र०), भेजो, घल्लो, घल्लिओ। घल्लीए, घालिए (मारिए), की तरह के रूप हिन्दुस्तानी से ग्रहण किये गये हैं, शुद्ध पंजावी के नही हैं।

भविष्यत् के रूप वर्तमान सभावनार्थ मे गा (एकवचन पु०), गी (एकव० स्त्री०), गे (वहुव० पु०), गीआँ (वहुव० स्त्री०) जोडने से वनते है। उत्तमपुरुष वहुव० घल्लांगे है। अन्यपुरुष एकव० के वैकल्पिक रूप हैं घल्लूगा, घल्लूगू, घल्लू। क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष उसके कर्ता से मेल खाते है, जैसे हिन्दुस्तानी मे।

कालरचना वर्तमान कृदन्त और भूत कृदन्त के रूपो से होती है, जैसे हिन्दुस्तानी में। यथा जो मैं घल्लदा, यदि मैं भेजता; मै घल्लदा-हाँ, मैं भेजता हूँ, मैं घल्लदा-सी, मैं भेजता था, मैं आइआ, मैं आया, मै घल्लिआ, मैंने भेजा; मैं आइआ-हाँ, मैं आया हूँ; मै घल्लिआ-है, मैंने भेजा है, मै आइआ-सी, मैं आया था, मैं घल्लिआ-सी, मैंने भेजा था, इत्यादि।

सकर्मक क्रियाओ के भूतकृदन्त से वनने वाले कालो का ऐसा ही व्यवहार होता है, जैसा हिन्दुस्तानी मे। सरचना कर्मवाच्य व्यक्तिसूचक भी हो सकती है, अव्यक्तिसूचक भी। जैसे, (व्यक्तिसूचक कर्मवाच्य) उहनें इक्क चिट्ठी लिखी, उसने एक चिट्ठी लिखी, (अव्यक्तिसूचक) उन्हानें कुड़ीनूं मारिआ, उसने लडकी को मारा।

ग. अनियमित क्रियाएँ--

अनियमित भूत कृदन्त

| धातु | भूतकृदन्त |
|---|---|
| सिआण, पहचान | सिआता* |
| सीउ, सी | सीता |
| सौं, सो | सुत्ता* |
| कहि, कह | किहा* |

निम्नोक्त तारांकित शब्द नियमित भी हो सकते हैं, जैसे सिआणिआ। प्राय. सर्वत्र क्रियार्थक सज्ञा (gerund) का रूप नियमित ही होता है। एव, खलो का क्रियार्थक सज्ञा-रूप खलोइआ होता है। तथापि, निम्नलिखित क्रियार्थक सज्ञाएँ अनियमित हैं——

| धातु— | भूतकृदन्त— |
| --- | --- |
| कर, कर | कीता* |
| खलो, खडा हो | खलोता |
| खड, खड़ा हो | खडा |
| खडो, खडा हो | खडाता |
| खा, खा | काह्दा, खावा |
| जण, जन | जाइआ, जैणा* |
| जा, जा | गिआ, गैआ |
| जाण, जान | जात्ता* |
| ठाण, ठान | ठाया* |
| ढहि, ढै, गिर | ढट्ठा, ढिट्ठा* |
| देख, देख | डिट्ठा, दिट्ठा* |
| दे, दे | दित्ता |
| घो, धो | घोता* |
| नहाउ, नहा | नहाता* |
| पहिन, पहन | पैंघा* |
| पहुत, पहुँच, पहुँच | पहुता, पहुन्ता, पुइजा, पहुँचिआ |
| पछाण, पहचान | पछाता,* पछैणा* |
| परो, परो | परोता* |
| पाड़, फाड | पाटा* |
| पी, पी | पीता |
| पीह, पीस | पीठा |
| पुचाउ, पहुँचा | पुचाता* |
| पै, पौ, पड़ | पिआ, पईआ |

| | |
|---|---|
| फस, फँस | फाथा* |
| वन्ह, बाँध | वद्धा* |
| वरस, वरस | वट्ठा* |
| मर, मर | मोइआ* |
| रहि, रह | रिहा* |
| रिन्ह, पका | रिद्धा* |
| रो, रो | रुन्ना* |
| लाह, उतर | लत्था* |
| लिआउ, ला | लिआन्दा,* आन्दा* |
| लै, ले | लिआ, लईआ, लीता, लित्ता |
| सीउ | सीआ |
| जा | जाया, जाइआ |
| दे | दिआ |
| नहाउ | नहाइआ, या नहातिआ |
| पहुत | पहुता, या पहुन्ता |
| पीह | पीठा |
| पै | पिआ, या पईआ |
| लैं | लिआ या लइआ |

दे, दे का वर्तमान कृदन्त दिन्दा वनता है, इसका सभावनार्थ रूप है दिया या देवा; आज्ञार्थक एकवचन है दिह, वहुव० दिओ या देवो।

पैं, पड़, का सभावनार्थ रूप इस प्रकार होता है—

| | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| उ | पवाँ | पैए |
| म | पएँ ,पवे | पओ, पाओ, पवो, पवो |
| अ | पए, पवे | पैण |

लियाउ, ला, से वने भूतकृदन्त लिआन्दा और आन्दा का व्यवहार ऐसा होता है जैसा सकर्मक क्रियाओ का और कर्ता के साथ 'ने' लगता है, किन्तु नियमित कृदन्त लिआइआ का व्यवहार ऐसा होता है जैसा अकर्मक क्रिया का और इसके कर्ता के साथ 'ने' नही लगता।

लैं, ले, से सभावनार्थ वनता है **लवाँ**, जिसका रूपान्तर उपरिलिखित **पवाँ** की तरह होता है।

भूतकृदन्त के निम्नलिखित स्त्रीलिंग रूप अनियमित है—

| पु० | स्त्री० |
|---|---|
| किहा, कहा | कही |
| गिआ, गया | गई |
| रिहा, रहा | रही |
| लिआ, लिया | लई |

**होणा**, होना, का वर्तमान कृदन्त **हुन्दा** वनता है। **आउणा**, आना, क्रिया का अपूर्णकालिक रूप प्राय **आण-के** वनता है।

**घ. कर्मवाच्य**—कर्मवाच्य, हिन्दुस्तानी की तरह भूत कृदन्त के साथ **जाणा**, जाना, जोडकर रूपान्तर करने से वन सकता है। जैसे, **मुण्डा मारा-गिआ**, लडका मारा गया। **कुड़ी मारी-गई**, लडकी मारी गई। अथवा धातु के साथ -ई जोडी जाती है। जैसे ऊ **मारीदा -है**। यह रूप वस्तुत भूतकृदन्त से वनने वाले कालो तक सीमित रहता है, और मुख्यत पश्चिमी जिलो मे सुना जाता है।

**ङ.-प्रेरणार्थक क्रियाएं**—ये वहुत कुछ वैसी ही वनती है जैसी हिन्दुस्तानी मे। प्रेरणार्थक के अतिरिक्त दोहरी प्रेरणार्थक क्रियाएँ होती है। जैसे, **सिखणा**, सीखना, **सिखाउणा**, **सिखलाउणा** या **सिखाळना**, सिखाना, **सिखवाउणा**, सिखवाना। **उठणा** उठना, **उठाउणा**, उठाना, **उठवाउणा**, उठवाना, **जागणा**, जागना, **जगाउणा**, जगाना, **जगवाउणा**, जगवाना, **वैठणा**, वैठना, **बिठाउणा**, **बैठाउणा**, **वैठाळना**, **बिठाळना**, **वठाळना**, **बिठलाउणा**, विठाना, **विठवाउणा**, विठवाना, **तुरना**, चलना, **तोरना**, चलाना, **तुरवाउणा**, चलवाना, **जळना**, जलना, **जाळना**, **जळाउणा**, जलाना, **टुट्टणा** या **तुट्टणा**, टूटना, **तोड़ना**, तोडना, **तुडवाउणा**, तुडवाना।

**च. संयुक्त क्रियाएँ**—ये वैसी ही वनती हैं जैसी हिन्दुस्तानी मे। जैसे **भज्ज जाणा**, भाग जाना, **जा सकणा**, जा सकना, **मैं कम्म कर चुक्किआ**, हाँ, मैं काम कर चुका हूँ, **असीं रोटी खा हटे**, हम रोटी खा हटे, **जाइआ करना**, जाया करना, **जाइआ चाहुणा**, जाया चाहना, **जाणे चाहुणा**, जाने चाहना, **जो तूं रोटी खाणी चाहे**, यदि तू रोटी खाना चाहे, **वालक रोणे लग्गा**, वालक रोने लगा, **जाणे देणा**, जाने देना, **जाणे**

(या जाणा) पाएगा, जाने पायेगा, हस्सदा रहिणा, हँसता रहना, जान्दा रहिणा, जाता रहना (मरना), उह नच्चदे टप्पदे चल्लिआ आउन्दा-सा, वह नाचता-कूदता चला आता था; उह चल्लिआ जान्दा-सा, वह चला जाता था, उह चल्लिआ गिआ, वह चला गया।

छ. नकारात्मक—सामान्य नकारात्मक निपात हैं न, नाँ, नही, नाही, नाहि। आज्ञार्थ मे प्राय ना होता है, किन्तु नाही आदि भी प्रयुक्त होते है। मत का ग्रहण हिन्दुस्तानी से हुआ है और यह शुद्ध पजाबी नही है। सहायक क्रिया के भूतकाल का नकारात्मक रूप नसो, न था, होता है जो लिंग, वचन या पुरुष के लिए परिवर्तित नही होता। कभी-कभी इसी अर्थ मे था नसो मिलता है।

पंजाबी के शब्दो की सूची, जिनके आदि मे व आता है—

वा, वायु
वाच, गाँव के कारीगरो पर लगनेवाला कर
वाचक, पाठक
वचाऊ, वचाव
वचाउणा, वचाना
वचावा, बचानेवाला
वछाई, विछाई
वाछड, वौछाड
वडाणक, गेहूँ का एक प्रकार
वडवोल (वडवोला), वडवोला
वड्डा, वडा
वड्ढ, खेत जहाँ से कटाई हो गयी
वद्ध, वढ
वाद्धा, लाभ
वड्ढी, घूस
वाड्ढी, कटाई और वढई
वड्ढणा, काटना
वाद्धू, फालतू
वडेरा, वडा
वाढा, डेरा डालनेवाला
वढाई, कटाई
वधान, वृद्धि
वधाउणा, वढाना
वधेरा, और अधिक
वाढी, कटाई या घूस
वधीक, अधिक
वाधू, अतिरिक्त
वढवाई, कटवाई
वढवाउणा, कटवाना
वडिआई, वडाई
वडिआउणा, वढाना-चढाना
वडफूलगी (वडफूली)
वाह, वाह!
वहड (वहिड), पाडा
वाही, हल चलाना
वही, वही (खाता)

वहिण, वहाव या विचार
वहिणा, वहना
वहितर, सवारी या बारबरदारी का पशु
वहण, कृष्ट भूमि की ऊपरी परत
वाहणा (वाहुणा), हल चलाना
वैद, वैद्य
वैदण (वैदणी)
वैहण (वैहिण), वहाव
वैहणा, बैठना या वहना
वैर, शत्रुता
वैरन (वैरी), शत्रु
वैरान (वैरानी), उजाड़
वैस, वैश्य
वाज, आवाज़
वजाणा (वजौणा), वजाना
वज्ज-वजाके, धूम-धाम से
वजणा, वजना
वकालत
वकम, सैपन (रगाई के लिए)
वाकम्वा (वखूम्वा), इस नाम का पेड
वकमी, सैपन का
वकील
वक्ख, अलग
वक्कोदी, व्यानेवाली (गाय या घोडी)
वक्खो-वक्खी (वक्खरा), अलग-अलग
वल, वल
वाल, वाल, (समीर)
वला, वल्ली
वलों, की ओर, (से)
वलाइत (वलैत), दे० विलाइत
वलान, चारदीवारी
वली, सन्त
वलणा, घेरना
वल्टोह (वल्टोहा, -हू,-ही), वटलोही
वण, एक पेड का नाम
वण्ज, वाणिज्य
वञ्झ, बाँस
वाँड (वाण), वाण (अथवा बाँध)
वडैच, एक जाट जाति
वर्गा, जैसा अथवा वल्ली
वरगलाणा (वरगलौणा), वहकाना
वारी, खिडकी अथवा वारी
वडी, वडी (सज्ञा)
वरिआम, वीर
वरिआमगी, वीरता
वर्का, पन्ना
वर्म, दुःख या पीडा
वर्मा, (वढई का) वरमा
वर्मी, वामी अथवा छोटा वरमा
वर्त, व्रत या भाग
वर्तारा, वर्ताव या भाग
वर्ताउणा, वाँटना
वर्तावा, वर्ताव या विभाजक
वसाऊ, वसाऊ (गाँव)
वसाख, दे० विसाख
वसोआ, वैशाख मे पडनेवाला एक हिन्दू त्यौहार
वस्त, वस्तु

वाट, बाट (राह)
वट्ट, बाट (तौल), वैर तथा मेड
वत्त, फिर, नमी
वटवाणी ,पोंछने का ढेला
वयाह, विवाह
वयाह्णा (वयाहुणा), ब्याहना
वयाह्ता, विवाहिता
वयाकर्न, व्याकरण
वयाकरनी, वैयाकरण
वयापक, व्यापक
वयापी, व्यापी
वेचणा, वेचना
वेदात
वेखणा, देखना
वेल, वेल (लता)
वेला, समय, क्षण
वेलना (वेलणा), वेलना
वेलणी, वेलना (स०)
वेढा, आँगन
वेसाख, दे० विसाख
वेसाखी, दे० विसाखी
विआहणा, दे० व्याह्णा
विआह्ता, दे० वयाह्ता
वीच, व्यवधान
विचार
विच्च, मे
विचोला, विचोलिया
विदा
विद्दिआ (विद्द्या), विद्या
विगडना, विगडना
विगाडना, विगाडना
विगाड़ू, विगाडनेवाला
विगडाऊ, विगाड, विगाडनेवाली
विगडाउणा, विगडाना
विकाऊ, विकाऊ
विकाउणा, विकाना
विख, विष
विलाइत (विलैत, वलैत, वलाइत), देश (या इग्लैंड)
विलाइती, विदेशी या अग्रेज़ी
विकणा, विकना
विङ्गा, टेढा
वीर, भाई
विराणा, वीराना
विर्द, आदत, अभ्यास
विर्क, एक जाट गोत्र
विरला, विरल
विरोध
विरोधी
विर्त, वृत्त (गुमाश्तो का)
विसाह, विश्वास
विसाख (वसाख, वेसाख), वैशाख
विसाखी (वसोआ, वेसाखी), वैशाखी
विष्टा
विस्सरणा, भूलना
विट्ठ, बीट
विट्ठणा, वीट करना
वुहार, व्यवहार

# डोगरा या डोगरी

## प्रदेश

पजाबी की डोगरा या डोगरी बोली का नाम, जम्मू रियासत के तलहटी वाले भाग के डोगर या डुगर नाम से लिया गया है। जम्मू रियासत के इस भाग के उत्तर की ओर जम्मू का पहाडी प्रदेश है जो इसे कश्मीर से अलग करता है, जहाँ पर विविध बोलियाँ, जैसे डोगरी और कश्मीरी की मध्यवर्ती रामबनी और पोगुली बोली जाती हैं। ये बोलियाँ अनेक बातो मे डोगरी से बहुत कुछ मिलती हैं, किन्तु मैंने इन्हे कश्मीरी के साथ वर्गीकृत किया है, क्योकि इनमे नियमित रूप मे क्रिया से सयुक्त सार्वनामिक प्रत्ययो का प्रयोग पाया जाता है जो कि उस भाषा की विशेषता है। जम्मू रियासत के उत्तर-पूर्व की पहाडियो मे भद्रवाह पडता है, जिसकी भाषा भद्रवाही पहाडी का एक रूप है। जम्मू के पूर्व मे चम्बा की रियासत है। चम्बा की मुख्य भाषा चमेआली भी पहाडी का ही एक रूप है, किन्तु एक मिश्रित प्रकार की भाषा, जिसे भटेआली कहते हैं और जो डोगरी पर आधारित है, रियासत के पश्चिम मे, जम्मू की सीमा के निकट, बोली जाती है। जम्मू के दक्षिण मे पजाब के सियालकोट और गुरदासपुर जिले पडते हैं जिनकी मुख्य भाषा पजाबी है। तो भी डोगरी इन जिलो की उत्तरी सीमा के साथ-साथ बोली जाती है। जम्मू के दक्षिण-पूर्व मे कांगडा का जिला है, यहाँ पजाबी की एक बोली बोली जाती है जो कि डोगरी से अधिक सम्बद्ध है। जम्मू नगर मे पश्चिम की ओर अनतिदूर चनाव नदी बहती है जिसके पार नौशहरा प्रदेश पड़ता है। डोगरी चनाव के पार कुछ मील तक फैली हुई है। और आगे हम पर्वतीय बोलियो तक जा पहुँचते है जिनका सम्बन्ध लहँदा के उत्तरी रूप से है।

## नाम की व्युत्पत्ति

'डोगर' शब्द सामान्य रूप मे सस्कृत द्विगर्त का विकृत रूप बताया जाता है। किन्तु आधुनिक काल मे यह व्युत्पत्ति यूरोप के विद्वानो द्वारा स्वीकृत नहीं की गयी। इसके विपरीत, इस प्रदेश का प्राचीन नाम दुर्गर जान पडता है, जिससे प्राकृत दोग्गर के माध्यम से, 'डोगर' विकसित हुआ है।

### भाषागत सीमाएं

जैसा कि पूर्वोक्त टिप्पणियो से आकलित किया गया होगा, डोगरी दक्षिण की ओर पजाबी, पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर पहाडी, उत्तर मे अर्ध-कश्मीरी पर्वतीय बोलियो और पश्चिम मे लहँदा द्वारा घिरी हुई है।

### उपबोलियाँ

प्रतिवेदनो मे वर्णित डोगरी की तीन उपबोलियाँ है। ये हैं कण्डिआली, काँगड़ी बोली और भटेआली। कण्डिआली आदर्श पजाबी और गुरदासपुर के उत्तरपूर्व में पहाडियो पर बोली जाने वाली डोगरी का मिश्रण है। काँगडी बोली काँगडा जिले के प्रधान तहसीली केन्द्रो की मुख्य भाषा है, और भटेआली पश्चिमी चम्बा मे बोली जाती है। कण्डिआली की तरह, काँगडी बोली डोगरी और आदर्श पजाबी का मिश्रित रूप है, जिसमे कुछ अपनी विशेषताएँ भी है, एव भटेआली डोगरी, काँगडी और चमेआली का सम्मिश्रण है।

### बोलनेवालों की संख्या

जिन इलाको मे डोगरी देशी बोली है, वहाँ पर इसके बोलने वालो की अनुमानित सख्या इस प्रकार है—

| | |
|---|---|
| डोगरी विशिष्ट— | |
| जम्मू और पडोस | ४,३४,००० |
| गुरदासपुर . . . . | ६०,००० |
| सियालकोट . . . . . | ७४,७२७ |
| | ५,६८,७२७ |
| कण्डिआली (गुरदासपुर) . . | १०,०००, |
| काँगडी बोली . . . . | ६,३६,५०० |
| भटेआली . | १४,००० |
| कुल जोड | १२,२९,२२७ |

१. दे० 'राजतरंगिणी', डॉ० स्टाइन का अनुवाद, भाग २, पृ० ४३२। ध्यान देने की बात यह है कि 'डोगर' के आदि का 'द' मूर्धन्य हो गया है। यह लहँदा प्रभाव का एक उदाहरण है जिसकी कुछ बोलियो मे आदि 'द' का प्राय. मूर्धन्य रूप हो जाता है, इस प्रकार शाहपुर की थली मे दे (देना) डे हो जाता है।

ऊपर की तालिका मे जम्मू के आँकडे केवल अनुमानित है और सन् १९०१ की जनगणना के तथ्यो पर आधारित हैं, क्योकि सन् १८९१ मे उस रियासत की भाषागत जनगणना नही हुई थी। गुरदासपुर और सियालकोट के आँकडे अधिक शुद्ध है क्योकि इनको स्थानीय अधिकारियो ने सन् १८९१ की जनगणना के आधार पर तैयार किया है। भटेआली के आँकडे वे है जो चम्वा के अधिकारियो द्वारा भेजे गये हैं। गुरदासपुर मे डोगरी लगभग सारी तलहटी मे वोली जाती है, और सियालकोट मे यह जफरवाल के उत्तर और पश्चिम मे जफरवाल तहसील के ११६ गाँवो मे और सियालकोट तहसील के सारे इलाका वजवत मे वोली जाती है।

अपने क्षेत्र मे बाहर डोगरी वोलने वालो की सख्या के वारे मे कोई जानकारी उपलब्ध नही है।

## वोली की विशेपताएँ

डोगरी आदर्श पजावी से वहुत कुछ मिलती-जुलती है। मुख्य अन्तर इस बात मे है कि सज्ञा के तिर्यक् रूप मे परिवर्तन होता है और कर्म-सम्प्रदान कारक मे एक भिन्न परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। शव्दभडार भी थोडा वहुत भिन्न है जिस पर लहँदा और (विशेपत ) कश्मीरी का प्रभाव है। तिर्यक् रूप के विषय मे, सव पुल्लिग सज्ञाओ के साथ कर्ता एकवचन मे ह्रस्व ए या ऐ जुडता है और स्त्रीलिंग के साथ **आ**; इस प्रकार उत्तरी लहँदा का अनुसरण किया जाता है। कर्म-सम्प्रदान कारक के लिए पजावी नूं की जगह, सामान्य प्रत्यय **की** या **गी** होता है, काँगडी मे एक वैकल्पिक प्रत्यय **जो** होता है। आदर्श पजावी के सामान्य **सा** या **सी**, **था**, के स्थान पर डोगरी '**था**' शव्द को प्राथमिकता देती है।

## साहित्य

जितना कि मुझे ज्ञात है, डोगरी की एकमात्र पुस्तक, जो मुद्रित हो गयी है, वह 'जम्वू या डोगरी' मे इजील के नवविधान का उत्था है, जिसे सीरामपुर के ईसाई प्रचारको ने सन् १८२६ मे प्रकाशित किया था। डोगरी मे सस्कृत पुस्तको के कुछ अनुवाद भी वताये जाते हैं, जिनमे एक, लीलावती (गणित ग्रन्थ) का उल्लेख डॉ० वुह्लर ने किया है।[1]

१ 'डिटेल्ड रिपोर्ट आफ ए टअर इन सर्च आफ सस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स मेड इन काश्मीर, राजपूताना ऐण्ड सेन्ट्रल इण्डिया', वम्वई, १८७७, पृ० ४।

डोगरी बोली का इससे पहले का एकमात्र इतिवृत्त जो मेरे देखने मे आया है निम्नलिखित मे है—

एड्रीऊ, फ्रेडरिक,—**दि जम्मू ऐण्ड कश्मीर टेरिटरीज़** (जम्मू और कश्मीर के प्रदेश)। भौगोलिक इतिवृत्त। लन्दन, १८७५। डोगरी का वर्णन, पृ० ४६३ इत्यादि। डोगरी वर्णमाला का वर्णन, पृ० ४७१। प्रथम परिशिष्ट (पृ० ५०३ इत्यादि) डोगरी व्याकरण।

## लिपि

डोगरी की अपनी एक वर्णमाला है जो पजाब के हिमालय मे प्रचलित टाकरी वर्णमाला से सम्बद्ध है। कोई तीस-चालीस वर्ष पूर्व, जम्मू और कश्मीर के तत्कालीन महाराज ने प्रचलित टाकरी का एक सशोधित रूप परिष्कृत कराया था, ताकि इसे देवनागरी और गुरमुखी के अधिक समकक्ष लाया जा सके। यह परिमार्जित डोगरी सरकारी कागजात मे प्रयुक्त होती है, किन्तु यह सामान्यत टाकरी लिपि को हटा नही पायी, जिसे कि निम्नलिखित नमूनो मे प्रयुक्त किया गया है। यह लिपि अत्यन्त अपूर्ण है। चाहे सिद्धान्तत इसमे देवनागरी के कुछ-एक वर्णों को छोडकर, जो देशी बोली मे नही पाये जाते, सब वर्ण हैं, किन्तु स्वर इतनी शिथिलता से लिखे जाते है कि लगभग यह कहा जा सकता है कि कोई स्वर-चिह्न किसी स्वर-ध्वनि के लिए विना विवेक के लगाया जा सकता है। विशेषतया, ए और इ, एव ओ और उ प्राय. समाकुलित रहते है। कभी-कभी हम देखते है कि स्वरो का नितान्त लोप कर दिया जाता है जिससे डोगरी प्रलेखो को पढ पाना सरल कार्य नही होता।

डोगरी लेखन की एक और विशेषता भी है जिसे समझने की आवश्यकता है। वह है शब्द के मध्य या अन्त मे दीर्घ स्वरो के लिए मात्राओ के स्थान पर आदि स्वरों का प्रचुर प्रयोग। यह ऐसा है जैसा हम देवनागरी मे दआ लिखें यद्यपि उससे हमारा अभिप्राय हो दा। नमूनो का परीक्षण करने पर प्रत्येक पक्ति मे इस तरह के उदाहरण मिलेंगे। इसका सकेत करने के लिए, अक्षरान्तर करते समय, मैंने प्रत्येक ऐसी स्वर-मात्रा के पहले, जिसको उक्त रूप मे लिखा गया है, एक उद्धरण चिह्न लगा दिया है। अर्थात् दआ को दा' और इा को दा ही अक्षरान्तरित किया है।

पाठ की सुविधा के लिए मैंने, जहाँ कही शब्द की वर्तनी अशुद्ध थी, कडाई से तद्वत् अक्षरान्तर किया है और फिर उसके तुरन्त आगे कोष्ठक के भीतर शुद्ध वर्तनी दे दी है। तो भी, मैंने दीर्घ स्वर के लिए ह्रस्व और ह्रस्व के लिए दीर्घ स्वर के प्रायिक प्रयोग की पूर्णतया उपेक्षा की है। अक्षरान्तर मे मै ऐसे स्थलो को चुपके से लाघ गया हूँ। डोगरी अपनी लिपि के टाइप मे कभी मुद्रित नही हुई। अत मै इन नमूनो को, जैसे मुझे प्राप्त हुए वैसे ही देगी वर्णमाला की अनुलिपि मे प्रस्तुत कर रहा हूँ। अलवत्ता पास की चम्वा रियासत मे व्यवहृत टाकरी के टाइप मिल जाते है। इसका डोगरी लिपि से घनिष्ठ सम्वन्ध भी है, और इसलिए हस्तलेख की अनुलिपि की अपेक्षा टाइप से मुद्रित शब्दो को पढना अधिक सरल है। मैंने प्रत्येक नमूने को चम्वा के टाकरी टाइप मे (शुद्ध वर्तनी मे) भी मुद्रित करा दिया है।

चम्वा की मुद्रित टाकरी वर्णमाला नीचे दी जा रही है—

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ औ

व्यजन

क ख ग घ ङ

च छ ज झ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ व म म

य र ल व

स ह ड़ ळ श

संयुक्त अक्षर

| या | थि | ही | सु | पू | अथवा | हू | ते | है | यो | यौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

| र | छच | प्र | त्र | म्ह |
|---|---|---|---|---|

अंक

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

द्वित्व वर्ण नही लिखे जाते, उन्हे पाठक की समझ पर छोड दिया जाता है। जैसे दित्ता, दिया, लिखा तो जाता है दिता, दिता, किन्तु पढा जाता है दित्ता।

डोगरा वर्ण, जैसे कि नमूनो मे प्रयुक्त हुए है, निम्नलिखित हैं—

स्वर

(आदि मे आनेवाले रूप)

| अ | आ | इयाई | उऊ | या | एएऐ | ओऔ |
|---|---|---|---|---|---|---|

मात्राएँ

| क | का | कि | की | कु | कू | के | कै | को | कौ | कं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

**टिप्पणी**--स्वरो और अनुस्वार के लिखने मे काफी लापरवाही बरतने दी जाती है। प्राय इन्हे छोड ही दिया जाता है। दीर्घ और ह्रस्व स्वर प्राय. आपस मे वदल जाते हैं। दीर्घ मात्राओ की जगह वहुधा आदि मे आने वाले स्वर प्रयुक्त किये जाते है, जैसे —

की जगह , दा, की जगह तू।

इ की जगह प्राय ए, और उ की जगह ओ वर्ण लिखा जाता है।

व्यजन

क, ख, ग, घ, ङ,

च, छ, ज, झ, ञ,

ट, ठ, ड, ढ, ण

त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म,

य, र, ल, व,

श, स, ह, ड।

**टिप्पणी**—ज के लिए वही चिह्न है जो य के लिए, और व के लिए वही जो व के लिए। वास्तव मे ऊष्म (सघर्षी) व्यजन एक ही है—स वर्ण। जव फारसी ध्वनि श को अकित करना आवश्यक होता है, तो छ का चिह्न प्रयुक्त होता है।

तुलना की सुविधा के लिए, मैं आगे गुरमुखी, कांगडी और डोगरी लिपिमालाओ के वर्णों के प्रचलित लिखित रूप दे रहा हूँ —

| गुरमुखी | कांगडी | डोगरी | देवना० |
|---|---|---|---|
| ਅ | | | अ 'आडडा' |
| ੲ | | | इ 'ईडी' |
| ੳ | | | उ 'ऊडा' |
| ਓ | | | ओ |
| ਸ | | | स |
| ਹ | | | ह |
| ਕ | | | क |
| ਖ | | | ख |
| ਗ | | | ग |
| ਘ | | | घ |
| ਙ | | | ङ |
| ਚ | | | च |
| ਛ | | | छ |
| ਜ | | | ज |
| ਝ | | | झ |
| ਞ | ... | | ञ |
| ਟ | | | ट |
| ਠ | | | ठ |

| गुरमुखी | कांगडी | डोगरी | देवना० |
|---|---|---|---|
| ਡ | | | ड |
| ਢ | | | ढ |
| ਣ | | | ण |
| ਤ | | | त |
| ਥ | | | थ |
| ਦ | | | द |
| ਧ | | | ध |
| ਨ | | | न |
| ਪ | | | प |
| ਫ | | | फ |
| ਬ | | | ब |
| ਭ | | | भ |
| ਮ | | | म |
| ਯ | ... | | य |
| ਰ | | | र |
| ਲ | | | ल |
| ਵ | | | व |
| ੜ | | | ड़ |

## डोगरी व्याकरण

व्याकरण की दृष्टि से डोगरी आदर्श पजावी से वहुत कुछ मिलती-जुलती है। निम्नलिखित प्रमुख अन्तर द्रष्टव्य हैं—

उच्चारण मे, ए और ऐ मे कोई भेद नही लगता। ये दो स्वर परस्पर वदल कर लगते जान पडते हैं। कभी एक लिखा जाता है कभी दूसरा। शब्द के अन्त मे (विशेषत सज्ञाओ के रूपान्तर मे) दोनो ह्रस्व उच्चरित होते हैं और दोनो की एक ही ध्वनि होती है जो किसी और स्वर की अपेक्षा ह्रस्व अ के अधिक निकट लगती है। व्याकरण के ढाचे मे, जो आगे दिया गया है, मैने इस अन्त्य ध्वनि को ए से चिह्नित किया है, किन्तु ऐ अथवा आ भी समान रूप से ठीक होगे। इसी प्रकार एँ को प्राय ऐ या आँ लिखा गया है। जो व्यजनान्त है उन सव सज्ञाओ का भी एक एकवचन तिर्यक् रूप होता है जो कर्ता कारक से भिन्न है। पुल्लिग सज्ञाओ के वारे मे, इसके तिर्यक् रूप का सामान्यत ऐसे अनिश्चित ह्रस्व स्वर मे अन्त होता है जो कभी तो ए लिखा जाता है, कभी ऐ, और कभी आ। इनका वर्णन अभी-अभी ऊपर किया गया है। स्त्रीलिंग तिर्यक् एकवचन रूप का प्रत्यय आ है। ये सव प्रत्यय लहँदा की उत्तरी वोलियो मे और पश्चिमी पहाडी मे भी होते हैं। तिर्यक् वहुवचन का प्रत्यय एँ, ऐं, या आँ है। कर्म सम्प्रदान का परसर्ग साधारणतया की या गी एव कभी-कभार पजावी नूं होता है। कभी-कभी दे (सम्वन्व कारकीय प्रत्यय दा का अधिकरण) सम्प्रदान के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे जाएदाती वालेदे जाई, सम्पत्ति वाले के पास जाकर, मे। अन्य परसर्ग पजावी मे प्रयुक्त परसर्गों से मेल खाते हैं।

सर्वनामो के वारे मे कोई विशेष टिप्पणी देने की आवश्यकता नही है। अलवत्ता उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष के सर्वनामो के कर्म-सम्प्रदान रूप की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है। 'मुझे' के लिए मिकी, मिगी या मी है, 'तुझे' के लिए तुकी या तुगी है; और 'उसे' के लिए उसी। इसी प्रकार 'इस' का कर्म-सम्प्रदान इसी है। क्रियाओ के रूपान्तर मे कुछ-एक अनियम हैं। भूत कृदन्त के एक वैकल्पिक रूप का -दा मे अन्त होता है। जैसे मोईदा, मरा, गोआचादा, खोया, चाहीदा-है, चाहिए (स्त्री०), गिआदा-था, गया था। भूतकृदन्त मे इस तरह का सम्वन्व-कारकीय परसर्ग का योग अन्य पहाडी भाषाओ मे भी मिलता है, उदाहरणार्थ पूर्वी और पश्चिमी पहाडी मे। भविष्यत् मे कुछ ऐसे रूप हैं जो आदर्श पजावी के लिए अपरिचित है। चे या चै अक्षर

आज्ञार्थ मे जोडा जाता है। जैसे खाचै, खाये; मनाचै, मनायें। खांदेन, वे खाते थे शब्द मे अन्त्य न सार्वनामिक प्रत्यय है जिसका अर्थ है 'वे' और जो कश्मीरी के अनुकरण मे क्रिया के साथ जोडा जाता है। यदा-कदा नपुसक कृदन्त के उदाहरण मिल जाते है, जैसे चूमिआँ, चूमा गया।

आशा है कि उपर्युक्त टिप्पणियाँ विद्यार्थी के लिए, आगे दिये गये व्याकरण के ढाँचे की सहायता से, डोगरी नमूने पढ़ पाने मे पर्याप्त होगी।

## डोगरी व्याकरण का ढाँचा

### १. सज्ञा

लिग—यह पजाबी के अनुसार होता है।

वचन और कारक—

| एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|
| मूल | तिर्यक् | मूल | तिर्यक् |
| पुल्लिग | | | |
| लौहडा, लडका | लौहडे | लौहडे | लौहडें |
| बब्बा, पिता | बब्बे | बब्बाँ, बब्बे | बब्बाँ, बब्बै |
| डङ्गर, बैल | डङ्गरे | डङ्गर | डङ्गरें |
| स्त्रीलिंग | | | |
| बकरी, बकरी | बकरीआ | बकरीआँ | बकरीएँ |

तिर्यक् एकवचन का -ए प्रत्यय और तिर्यक् बहुवचन का -एँ प्रत्यय ह्रस्व हैं। इन्हे प्राय क्रम से ऐ या आ और ऐं या आँ लिखा जाता है। जैसे सहबेदा, सहबैदा, या सहबादा, साहब का। जैसे भी लिखा जाये, उच्चारण क्रमश. ह्रस्व अ या आ के समान होता है।

दो कारक बिना परसर्ग के बनते है—सम्बोधन और (विकल्पत) कर्म-सम्प्रदान। निम्नलिखित रूप सम्बोधन के हैं—एकवचन, लौहडेआ या आ लौहडा, डङ्गरा या आ डङ्गर; बकरिआ या आ बकरी, बहुवचन, आ लौहडें, आ बब्बै; आ डङ्गरें; आ बकरीआं।

कर्म-सम्प्रदान के वैकल्पिक रूप हैं—एकवचन, लौहड़ेई, बब्बेई, डङ्गरेई, बकरीआई, बहुवचन, लौहड़ेंई; ;बब्बैंई डङ्गरेंई,; बकरीएंई।

परसर्ग ये हैं—कर्म-सम्प्र० की या गी, कछ, को; करण कने, द्वारा, अपा० थ्वाँ, थें, कछा, से, सम्बन्ध दा, जैसे आदर्श पजाबी मे, तिर्यक् पु० दे भी, अधि० विच, मे, पास, पास, पर, पर; कर्तृ० ने या नैं, ने।

विशेषण इस प्रकार रूपान्तरित होते है। पु० एकवचन मूल काला, तिर्यक् काले, बहुवचन मूल काले; तिर्यक् काले; स्त्री० एकवचन मूल काली; तिर्यक् कालीआ; बहुवचन मूल कालीआँ; तिर्यक् कालीएँ। शेष स्थितियो मे विशेषण का व्यवहार वैसा ही होता है जैसा आदर्श पजाबी मे।

## २. सर्वनाम

| | मैं | तूं |
|---|---|---|
| एकवचन | | |
| कर्ता | आऊँ, मैं, मे | तूँ |
| करण | मैं, मे | तैं, तें, तुध |
| कर्म-सम्प्रदान | मि-की, मि-गी, मी | तु-की, तुगी |
| सम्बन्ध | मेरा | तेरा |
| अपादान | मेरे-थ्वाँ | तेरे-थ्वाँ |
| अधिकरण | मेरे-विच | तेरे-विच |
| बहुवचन | | |
| कर्ता | अस | तुस |
| करण | असें | तुसे |
| कर्म-सम्प्रदान | असें-की, -गी, -ई, असें | तुसे-की, -गी, -ई, तुसे |
| सम्बन्ध | साड़ा | तुसाडा, थ्वाडा |
| अपादान | साडे-थ्वाँ | तुसें-थ्वाँ |
| अधिकरण | साडे-विच | तुसें-विच |

| | वह | यह | वही | यही | जो | सो | कौन ? | क्या ? | कोई | कुछ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एकवचन | | | | | | | | | | |
| कर्ता | ओ, ओह | एए, एह, एहे | ऊअइ | ईअइ | जो | सेह | कुन, कौन | केह | कोई | किछ, किश |
| कर्म-सम्प्र० | उसी | इसी | उस्से-की | उस्से-की | जिसी | तिसी | कुसी | कुसा-की | कुसे-की | कुसे-की |
| तिर्यक् | उस, उह | इस, इह | उस्से | . इस्से | जिस | तिस | कुस, कुह | कुस | कुसे | कुसे |
| बहुवचन कर्ता | ओ, ओह | ए, एह | ऊअइ | ईअइ | जो | सेह | कुन, कौन | केह | कोई | किछ, किस |
| तिर्यक् | उन, उने, उँ | इन, इने, इ | उन्नेई | इन्नेई | जिने | जिने | कुने | कुने | कुने | किनिआँ, किने |

कोका, कौन-सा नियमितत विशेषण की तरह रूपान्तरित होता है। निजवाची सर्वनाम है अपूं; सम्बन्ध अपना; कर्म-सम्प्र० अपूं-की, -गी, अपा० अपने-थ्वां; अधि० अपने-विच, करण अपूं। एकवचन वहुवचन मे कोई भेद नही है।

३. क्रियाएँ—क सहायक क्रियाएँ

वर्तमान काल 'मैं हूँ' इत्यादि—

| | एकवचन | वहुवचन | |
|---|---|---|---|
| उत्तम | हाँ, आं | हे, हे, ऐ, एँ | भूतकाल था या सा होता है, जो सामान्य रूप से विशेपण की तरह व्यवहृत होता है। जैसे पु० वहुव० थे, स्त्री० एकव० थी, स्त्री० वहुव० थिआँ। 'मै था' का साँ होता है। |
| मध्यम | हैं, हे, एँ, एँ | हो, ओ | |
| अन्य | है, हे, ऐ, ए | है, हे, ऐं, एँ, हैन | |

ख. कर्तृवाच्य क्रिया

धातु—मार।

सज्ञार्थक क्रिया—मारना।

वर्तमान कृदन्त—मारदा या मारना, मारता।

भूत कृदन्त—(१) मारिआ, मारा, स्त्री० मारी; वहुव० पु० मारे, स्त्री० मारिआं।

(२) मारिअदा या मारीदा आदि

पूर्वकालिक कृदन्त—मारी-के, मारीए, या मारीऐ, मारकर।

कर्तृवाचक सज्ञा—मारनेवाला।

| | वर्तमान सभावनार्थ या निश्चयार्थ मैं मारूँ, आदि | | भविष्यत् मैं मारूँगा, आदि | |
|---|---|---|---|---|
| | एकव० | वहुव० | एकव० | वहुव० |
| उत्तम | माराँ | मारे, मारचे | मारड | मारन, मारगे (स्त्री० -गिआँ) |
| मध्यम | मारें | मारो | मारगा (स्त्री -गी) | मारगिओ, मारगे ( ,, ,, ) |
| अन्य | मारे | मारें, मारेन | मारग | मारगा, मारगन, मारङ्गे, मारङ्गन |

मारगा (-गी) के स्थान पर मारघा (-घी) और मारगे (-गिआँ) के स्थान पर मारघे (-घिआँ) भी हो सकता है।

आज्ञार्थक मार, मारो, मारचे, मारचै, मैं हम, तू, तुम, वह, वे मारें।

| कृदन्तीय काल | अनियमित भूत कृदन्त |
|---|---|
| आऊँ मारदा, या मारना, मैं मारता | होना, भूत कृ० होआ या हुआ; वर्तकृ० हुन्दा |
| आऊँ मारदा-आँ, मारना-आँ, मैं मारता हूँ | जाना, भूतकृ० गिआ |
| आऊँ मारदा-साँ, मारना-साँ, मैं मारता था | करना, भूतकृ० कीता या करिआ |
| मे मारिआ, मैं ने मारा | देना, भूतकृ० दित्ता |
| मे मारिआ-ए, मैं ने मारा है | लेना, भूत कृ० लित्ता। |
| मे मारिआ-सा, मैं ने मारा था। | |

कर्मवाच्य जाना लगाने से बनता है, जैसे पंजाबी में।

प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप पंजाबी की तरह बनते हैं।

# आदर्श पंजाबी

जिस आदर्श पंजाबी का विवरण पहले व्याकरणिक ढाँचे के अंतर्गत दिया गया है, उसके स्पष्टीकरण के लिए नीचे ब्रिटिश ऐंड फारेन बाइबिल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित सन्त लूक के सुसमाचार से उद्धृत अपव्ययी पुत्र की कथा दे रहा हूँ। अनुवाद बहुत बढ़िया है, लेकिन इसे सर्वथा इस रूप मे माझा की पंजाबी का प्रतिनिधि नही मानना होगा। व्याकरणिक ढाँचे वाला आदर्श लुधियाना ज़िले के पोवाध मे बोली जानेवाली पंजाबी का थोडा-बहुत परिमार्जित रूप है, जो अमृतसर की पंजाबी से कुछ भिन्न है।[1]

[सं० १]

भारतीय आर्य परिवार — केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

(ब्रिटिश ऐंड फारेन बाइबिल सोसाइटी, १८९०)

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸਨ। ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾ ਵਿੱਚੋਂ ਛੋਟੇਨੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮਾਲਦਾ ਜਿਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮੈਨੂੰ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਸੋ ਮੈਨੂੰ ਦੇ ਦਿਓ। ਅਤੇ ਉਸਨੈ ਉਨਾਨੂੰ ਪੂੰਜੀ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ। ਅਰ ਥੋੜੇ ਦਿਨਾ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁੱਤ ਸਭੋ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਦੂਰ ਦੇਸਨੂੰ ਚੱਲਿਆ ਗਿਆ ਅਰ ਓੱਥੇ ਆਪਣਾ ਮਾਲ ਬਦ ਚਲਣੀ ਨਾਲ਼ ਉੜਾ ਦਿੱਤਾ। ਅਤੇ ਜਾ ਉਹ ਸਭ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁੱਕਿਆ ਤਾ ਉਸ ਦੇਸ ਵਿੱਚ ਵਡਾ ਕਾਲ਼ ਪੈ ਗਿਆਂ ਅਤੇ ਉਹ ਮੁਤਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ। ਅਰ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਿਣਵਾਲ਼ੇਦੇ ਕੋਲ਼ ਜਾ ਰਿਹਾ ਅਤੇ ਉਸਨੈ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣਿਆ ਖੇਤਾ ਵਿੱਚ ਸੂਰਾਦੇ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘੱਲਿਆ। ਅਰ ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਛਿੱਲੜਾ ਨਾਲ਼ ਜੇਹੜੇ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸਨ ਆਪਣਾ ਢਿੱਡ ਭਰਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਨੇ ਉਸਨੂੰ ਕੁਛ ਨਾ ਦਿੱਤਾ। ਪਰ ਉਹਨੈ ਸੁਰਤ ਵਿੱਚ ਆਣਕੇ ਕਿਹਾ ਭਈ ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਕਿੰਨੇਹੀ ਕਾਮਿਆਂਨੂੰ ਵਾਫ਼ਰ ਰੋਟੀਆ ਹਨ ਅਤੇ ਮੈਂ ਐੱਥੇ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾ। ਮੈਂ ਉੱਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ਼ ਜਾਵਾਗਾ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਆਖਾਗਾ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮੈਂ ਅਸਮਾਨਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗ ਨਹੀ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆ ਕਾਮਿਆ ਵਿੱਚੋਂ ਇਕ ਜਿਹਾ ਰੱਖ। ਸੋ ਉਹ ਉੱਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ਼ ਗਿਆ। ਪਰ ਉਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਕਿ ਉਹਦੇ ਪਿਉਨੇ ਉਸਨੂੰ ਡਿੱਠਾ ਅਤੇ ਉਹਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਅਰ ਦੌੜ ਕੇ ਗਲ਼ੇ ਲਾ ਲਿਆ ਅਤੇ ਉਹਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ। ਅਰ ਪੁੱਤ ਨੇ ਉਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਤਾ ਜੀ ਮੈਂ ਅਸਮਾਨਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ

1. दे० 'पोवाधी' पृ० ८६-८७

ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾ॥ ਪਰ ਪਿਤਾਨੈ ਆਪਣੇ ਚਾਕਰਾਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਭਥੋ ਚੰਗੇ ਬਸਤ੍ ਛੇਤੀ ਕੱਢਕੇ ਇਹਨੂੰ ਪਹਿਨਾਓ ਅਰ ਇਹਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਅੰਗੂਠੀ ਅਰ ਪੈਰੀਂ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ। ਅਤੇ ਖਾਂਦੇ ਹੋਏ ਅਸੀਂ ਖੁਸੀ ਕਰିਏ ਕਿੰਉ ਜੋ ਮੇਰਾ ਇਹ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਜੀ ਪਿਆ ਹੈ। ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਲੱਭਿਆ ਹੈ। ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਉਹਦਾ ਵਡਾ ਪੁੱਤ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਸੀ ਅਰ ਜਾ ਉਹ ਆਣਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਅੱਪੜਿਆ ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ। ਤਦ ਨੌਕਰਾ ਵਿੱਚੋਂ ਇਕਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕੋਲ੍, ਸੱਦਕੇ ਪੁੱਛਿਆ ਭਈ ਇਹ ਕੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸਨੇ ਉਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਤੇਰਾ ਭਰਾਉ ਆਇਆ ਹੈ ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਉਨੈ ਵਡਾ ਪਰੋਜਾ ਪਰੋਸਿਆ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਜੋ ਉਹਨੂੰ ਚੰਗਾ ਭਲਾ ਪਾਇਆ। ਪਰ ਉਹ ਗੁੱਸੇ ਹੋਇਆ ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣਨੂੰ ਉਹਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ। ਸੋ ਉਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਉਸਨੂੰ ਮਨਾਉਣ ਲੱਗਾ। ਪਰ ਓਨ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਉੱਤਰ ਦਿੱਤਾ ਵੇਖ ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰਿਹਾ ਥੋ ਤੇਰੀ ਟਹਿਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਮੋੜਿਆ ਅਰ ਤੈਂ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੋਰਾ ਬੀ ਨਾ ਦਿੱਤਾ ਜੋ ਮੈਂ ਆਪਣਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ੍ ਖੁਸੀ ਕਰਾ। ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਇਹ ਪੁੱਤ ਆਇਆ ਜਿਹਨੈ ਕੰਜਰੀਆਂਦੇ ਮੂੰਹ ਤੇਰੀ ਪੂੰਜੀ ਉਡਾ ਦਿੱਤੀ ਤੈਂ ਉਹਦੇ ਲਈ ਵਡਾ ਪਰੋਸਾ ਪਰੋਸਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਓਨ ਉਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਬੱਚਾ ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ੍ ਹੈਂ ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸਭੋ ਕੁਛ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਪਰ ਖੁਸੀ ਕਰਨੀ ਅਤੇ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ ਕਿੰਉਕਿ ਤੇਰਾ ਇਹ ਭਰਾਓ ਮੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਫੇਰ ਜੀ ਪਿਆ ਹੈ ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਲੱਭਿਆ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त सन। अते उन्हाँ-विच्चो छोटेनै पिउनूँ आखिया, 'पिता-जी, मालदा जिहड़ा हिस्सा मैनूँ पहुँचदा-है सो मैनूँ दे-दिओ। अते उसनै उन्हांनूँ पूँजी वण्ड दित्ती। अर थोड़े दिनां पिच्छो, छोटा पुत्त, सभो कुछ कट्ठा कर-के, दूर देसनूँ चलिआ गिआ, अर ओथे आपणा माल बद-चलनी-नाल उडा-दित्ता। अते जा उह सभ खरच कर-चुकिआ, तां उस देस-विच्च वडा काल पै-गिआ, अते उह मुताज होण लगा। अर उह उस देसदे किसे रहिण-वालेदे कोल जा रिहा, अते उसनै उहनूँ आपणिआँ खेता-विच्च सूरादे चारण-लई घल्लिया। अर उह उन्हाँ छिलड़ाँ-नाल जेहड़े सूर खान्दे सन आपणा ढिड्ड भरना चाहुन्दा-सी, पर किनें उसनूँ कुछ ना दित्ता। पर उहनै सुरत-विच्च

आण-के किहा, भई! मेरे पिउदे किन्ने-ही काम्मिआंनूँ वाफर रोटीआँ हन, अते मैं ऐत्थे भुक्खा मरदा-हाँ। मैं उट्ठ-के आपणे पिउ कोल जावांगा, अते उस-नूँ आखागा, "पिता-जी, मैं अस्मानदा अर तेरे अग्गे गुनाह कीता -है; हुण मैं इस जोग नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ, मैंनूँ आपणिआँ काम्मिआँ बिच्चो इक्क जिहा रक्ख।" सो उह उट्ठके आपणे पिउ कोल् गिआ। पर उह् अजे दूर सी, कि उह्दे पिउनै उसनूँ डिट्ठा, अते उह्नूँ तरस आइआ, अर दौड़-के गले ला-लिआ, अते उह्नूँ चुम्मिआ। अर पुत्तनै उह्नूँ आखिआ, 'पिता-जी, अस्मानदा अर तेरे अग्गे गुनाह् कीता है, हुण मै इस जोग नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ। पर पिता-नै आपणे चाकरानूँ किहा कि, 'सभ-थो चगे वस्त्र छेती कड्ढ-के, इहनूँ पहिनाओ, अर इह्दे हत्थ-विच्च अँगूठी अर पैरीं जुत्ती पाओ; अते खान्दे-होए असीं खुसी करिये। किउ जो मेरा इह पुत्त मोइआ सी, अते फेर जी-पिआ है; गुआच गिआ-सी, अते फेर लभ्भिआ-है।' सो उह लग्गे खुसी करन।

पर उह्दा वडा पुत्त खेत-विच्च सी, अर जाँ उह आण-के घरदे नेडे अप्पडिआ, ताँ राग-नाच दी अवाज सुणी। तद नौकरा-विच्चो इक्कनूँ आपणे कोल सद्द-के, पुच्छिआ 'भई, इह की है?' अते उसनै उह्नूँ आखिआ 'तेरा भराउ आइया-है, अर तेरे पिउनै वडा परोसा परोसिआ-है, इस-लई जो उह्नूँ भला चंगा पाइआ।' पर उह गुस्से होइआ, अते अन्दर जाणनूँ उह्दा जी ना कीता। सो उह्दा पिउ बाहर आण-के उसनूँ मनाउण लग्गा, पर उन आपणे पिउनूँ उत्तर दित्ता, 'वेख, मैं ऐंने वरिहाँ-थो तेरी टहिल करदा-हाँ, अते तेरा हुकम कदे नहीं मोड़िआ, अर तैं मैंनूँ कदे इक्क पठोरा बी ना दित्ता, जो मैं आपणिआँ वेलीआँ-नाल् खुसी कराँ। पर जद तेरा इह पुत्त आइआ, जिह्नै कज्जरीआँदे मूँह तेरी पूंजी उडा-दित्ती, तै उह्दे लई वडा परोसा परोसिआ-है।' पर ओन उसनूँ आखिआ, "बच्चा, तूँ सदा मेरे नाल् है, अते मेरा सभो कुछ तेरा है। पर खुसी करनी, अते अनन्द होणा जोग सी, किउ कि तेरा इह भराउ मोइआ सी, अते फेर जी-पिआ है; अर गुआच गिआ-सी, अते हुण लभ्भिआ-है।"

## (हिन्दी अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। और उनमे से छोटे ने बाप से कहा 'पिता जी, सम्पत्ति का जो अश मुझे पहुँचता है सो मुझे दे दो।' और उसने उनको पूँजी बाँट दी। थोडे दिनों के पश्चात्, छोटा पुत्र, सब कुछ इकट्ठा करके, दूर देश को चला गया, और

वहाँ अपनी सम्पत्ति वदचलनी से उडा दी। और जव वह सव खर्च कर चुका, तो उस देश मे वडा अकाल पड गया, और वह मोहताज होने लगा। और वह उस देश के किसी रहने वाले के पास जा रहा। और उसने उसको अपने खेतो मे सूअरो के चराने के लिए भेजा। और वह उन छिलको मे जो सूअर खाते थे अपना पेट भरना चाहता था, पर किसी ने उसको कुछ न दिया। पर उसने होश मे आकर कहा, 'भाई ! मेरे वाप के कितने ही कमियो को फालतू रोटियाँ (मिलती) हैं, और मैं यहाँ भूखा मरता हूँ। मैं उठकर अपने वाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, "पिताजी, मैं आकाश (भगवान्) का और तेरे आगे पाप किया है, अव मैं इस योग्य नही कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझको अपने कमियो मे से एक के समान रख।" सो वह उठकर अपने वाप के पास गया। पर वह अभी दूर था, कि उसके वाप ने उसे देखा, और उसे दया आयी, और दौड कर गले लगा लिया, और उसे चूमा। और पुत्र ने उसे कहा, "पिताजी, आकाश (भगवान्) का और तेरे आगे पाप किया है, अव मैं इस योग्य नही कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ।' पर पिता ने अपने सेवको से कहा कि, 'सव से अच्छे वस्त्र शीघ्र निकाल कर इसे पहिनाओ, और इसके हाथ मे अँगूठी और पाँव मे जूता पहनाओ, और खाते हुए हम आनन्द मनायें। क्योकि मेरा यह पुत्र मर गया था, और फिर जी पडा है, खो गया था, और फिर मिला है।' सो वे लगे आनन्द मनाने।

पर उसका ज्येष्ठ पुत्र खेत मे था, और जव वह आकर घर के निकट पहुँचा, राग-नाच की आवाज़ सुनी। तव नौकरो मे से एक को अपने पास वुलाकर पूछा, "भाई, यह क्या है?" और उसने उसे कहा, "तेरा भाई आया है, और तेरे वाप ने वडा भोज दिया है, इसलिए कि उसे भला-चगा पाया है।" पर वह क्रुद्ध हुआ, और भीतर जाने को उसका जी न किया। सो उसका वाप वाहर आकर उसे मनाने लगा, पर उसने अपने वाप को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्षो से तेरी सेवा करता हूँ, और तेरी आज्ञा का उल्लघन कभी नही किया, और तूने मुझे कभी एक मेमना भी नही दिया कि, मैं अपने साथियो के साथ आनन्द मनाता। पर जव तेरा यह पुत्र आया, जिसने वेश्याओ मे तेरी पूँजी उडा दी, तूने उसके लिए वडा भोज किया है।' पर उसने उसे कहा, "वच्चा, तू सदा मेरे साथ है, और मेरा सव कुछ तेरा है, पर खुशी करनी और आनन्द मनाना चाहिए था, क्योकि तेरा भाई मरा हुआ था, और फिर जी पडा है, और खो गया था, और अव मिला है।"

# माझी

माझी पजाब के माझा क्षेत्र की वोली है। इसको गलती से प्राय माझी कहते हैं, जैसे माझा को प्राय गलती से माझा कह देते हैं। माझा, या मध्यदेश, रावी और व्यास-सहित सतलुज नदियो के बीच के दोआव मे पड़ता है। अत इसमे अमृतसर और गुरदासपुर[1] के जिले तथा लाहौर जिले का अविकतर भाग सम्मिलित है। इस सर्वेक्षण के निमित्त अनुमानित माझी वोलने वालो की सख्या नीचे दी जा रही है—

| | | |
|---|---|---|
| लाहौर | | १०,३३,८२४ |
| अमृतसर | | ९,९३,०५४ |
| गुरदासपुर | | ८,००,७५० |
| | योग | २८,०७,६२८ |

माझी पजावी निम्सदेह इस भाषा का शुद्धतम रूप है, किन्तु यह वह आदर्श नही है जिसे वहुत से व्याकरणो मे अपनाया गया है। जैसा कि ऊपर (पृष्ठ ४-५ पर) स्पष्ट किया गया है, इनका मुख्य आवार लुवियाना की वोली है जो कि दक्षिणपूर्व की ओर पायी जाती है। माझी की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं जिनका अभी वर्णन किया जायगा। सवसे प्रमुख मूर्वन्य ळ का नितान्त अभाव है।

माझी के नमूनो के रूप मे अमृतसर से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर, उसी जगह से एक लोकगीत का खण्ड, और लाहौर से एक और लोक-गीत दिया जा रहा है।

कथा के भाषान्तर को गुरमुखी हस्तलेखन के नमूने के तौर पर, प्राप्त प्रति की अनुलिपि मे, और साथ ही गुरमुखी टाइप मे और उसके वाद सावारण अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दे रहा हूँ। दूसरा नमूना गुरमुखी टाइप मे अक्षरान्तर और अनु-

१. गुरदासपुर का एक कोना रावी के पश्चिम मे पड़ता है, किन्तु उसे वर्तमान सदर्भ मे, माझा का एक भाग समझा जा सकता है।

वाद सहित दिया जा रहा है। तीसरा गुरमुखी और फारसी लिपि मे भी अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दिया जा रहा है।

लुधियाना के आदर्श की तुलना मे प्रमुख भेदकारी बाते, जो नमूनो मे परिलक्षित हुई है, निम्नलिखित हैं—

मूर्धन्य ळ का उच्चारण अमृतसर मे कभी नही होता। इसकी जगह सदा साधारण दन्त्य ल लगाया जाता है, जैसे नाल, साथ, नाळ नही। -ड- वर्ण का प्राय द्वित्व होता है; जैसे तुहाडा, तुम्हारा, के लिए तुहाड्डा; वडा, बडा, के लिए वड्डा; दुराडा या दुराड्डा, दूर। दूसरी ओर, लुधियाना की आदर्श बोली मे जिन वर्णों का द्वित्व होता है, उनका अमृतसर मे प्राय द्वित्व नही होता। जैसे उट्ठ-के, उठकर, के लिए उठ-के, विच, मे, विच्च नही, किन्तु विच्चो, मे से, लगिआ, जुडा, किन्तु लग्गा, आरभ किया, लभ-पिआ, प्राप्त हुआ, लब्भ-पिआ नही, अपरिआ, पहुँचा, अप्परिआ नही।

अनुनासिकीकरण बहुधा होता है। जैसे अपणाँ धन, अपना धन, आँउन्दी-है, आती है, भरना चाँहुन्दा-सी, भरना चाहता था, जाँवाँगा, जाऊँगा, चुम्मिआँ, चूमा गया, मनाइए, मनायें। इन आनुनासिक रूपो मे से कुछ प्राचीन नपुसक लिंग के अवशेष हैं।

सज्ञा के रूपान्तर मे, विच, मे, परसर्ग का आदि व- प्राय लुप्त होता है और परसर्ग का शेष प्रत्यय के रूप मे मुख्य शब्द के साथ जोडा जाता है, जैसे घर-विच, घर मे, के स्थान पर घरिच। करण कारक का परसर्ग नै या नै है। प्राचीन नपुसकलिंग के अवशेष उपरि-उद्धृत अपणाँ धन, चुम्मिआँ आदि मे देखिए।

इहदी हत्थीं, इसके हाथो, जैसे वाक्याशो मे ससर्ग के कारण मिथ्या- लिंग का प्रयोग द्रष्टव्य है। यह भी ध्यान रहे कि हत्थीं एक वचन मे प्रयुक्त हुआ है।

सर्वनामो मे असीं, हम, और तुसीं, तुम, की अनुनासिकता हटाकर असी, तुसी व्यवहृत होते हैं। दूसरे रूप जो व्याकरणो मे नही मिलते, मैंनै, मैंने, साड्डा, हमारा, तैंनै, तुझने, तुहाड्डा, तुम्हारा, हैं। तूँ, तू, का तिर्यक् एकवचन प्राय तुध होता है। अन्यपुरुष सर्वनाम का तिर्यक् बहुवचन उनाँ है, उन्हाँ नही।

सहायक क्रिया मे हैं, हन मिलते हैं और दोनो का अर्थ है 'हम हैं','वे हैं।' भूत काल के निम्नलिखित रूप होते हैं—

| | एकव० | बहुव० |
|---|---|---|
| उत्तम पु० | साँ | साँ |
| मध्यम पु० | सैं | सौं |
| अन्य पु० | सी | से |

समापिका क्रियाओ के वर्तमान कृदन्त का -दा के स्थान पर -ना मे अन्त होता है। जैसे मारना-हाँ, मैं मारता हूँ।

अनियमित रूपो मे उल्लेखनीय हैं देउ, दो, देह, दे, जाह, जा, जाँवाँगा, जाऊँगा; आँउन्दा या आन्दा, आता।

एक महत्त्वपूर्ण प्रसग मे ये नमूने माझा की बोली का आकलन नही करते, और वह है क्रिया के भूतकाल के साथ पुरुषवाची प्रत्ययो का यदाकदा प्रयोग। वस्तुतः यह लक्षण भाषाओ के बाहरी वृत्त का है, और जैसा कि व्याकरणो मे विवेचित किया गया है, पजाबी से सम्बद्ध नही है। साथ ही, यह नियमित रूप से लहँदा मे पाया जाता है, और जैसा कि इस प्रकरण की भूमिका मे कहा गया है, पजाबी की तह मे लहँदा आधार है, जिस पर भीतरी वर्ग की भाषा, जो कि केन्द्रीय और पूर्वीय पजाब मे स्थापित हो गयी है, छायी हुई है। जैसे ही हम प्राचीन सरस्वती से पश्चिम की ओर चलते हैं, लहँदा आधार अधिकाधिक उभरने लगता है, और इसी लिए कभी-कभी माझी मे ये प्रत्यय मिल जाते हैं। माझी मे ये केवल सकर्मक क्रियाओ के अन्य पुरुष मे पाये जाते हैं, और एकवचन उस, ओस, या ओसु के लिए अथवा बहुवचन ओने के लिए होते हैं। इस प्रकार नियमित उस आखिया, उसने कहा, के स्थान पर हमे प्राय आखिओस, एव उन्हां (अथवा उन्नाँ) आखिआ, उन्होने कहा, के स्थान पर आखिओने सुनने मे आता है। इसी तरह, दित्तोस, उसने दिया, कहिओस, उसने कहा, कीतोसु, उसने किया, मन्निउस, उसने माना, दित्तोने, उन्होने दिया, कीतोने, उन्होंने किया।

[ स० २ ]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

माझी बोली (जिला अमृतसर)

### पहला उदाहरण

(गुरुमुखी हस्तलेख)

१६ ਇੱਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ੍ਰ ਸੇ॥ ਅਤੇ ਛੋਟੇ ਨੇ, ਉਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਆਖਿਆ,
ਬਾਪੂ ਜੀ, ਮਾਲ ਦੀ ਵੰਡ ਜਿਹੜੀ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਦੇਉ॥ ਅਤੇ ਉਸ ਨੇ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ
ਜਾਇਦਾਦ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ॥ ਅਰ ਥੋੜ੍ਹੇ ਦਿਨਾਂ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁੱਤ ਸੱਭੋ ਕੁਝ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ
ਦੁਰਾਡੇ ਦੇਸ ਨੂੰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ, ਅਰ ਓਥੇ ਆਪਣਾ ਧਨ ਵੈਲਦਾਰੀ ਵਿੱਚ
ਗੁਆ ਦਿੱਤਾ॥ ਅਤੇ ਜਦੋਂ ਸੱਭੋ ਕੁਝ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁਕਿਆ, ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸ ਵਿੱਚ ਵੱਡਾ
ਕਾਲ ਆ ਪਿਆ॥ ਅਰ ਓਹ ਮੁਤਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ॥ ਅਤੇ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸ ਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਣ
ਵਾਲੇ ਦੇ ਕੋਲ ਜਾ ਕੇ ਕਾਮਾਂ ਰਹਿ ਪਿਆ॥ ਅਰ ਓਸ ਨੇ ਉਹ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ
ਪੈਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘੱਲਿਆ॥ ਅਰ ਜਿਹੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸੀ
ਉਹ ਉਨਾ ਨਾਲ ਆਪਣਾਂ ਢਿੱਡ ਭਰਨਾਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ॥ ਪਰ ਕਿਸੇ ਓਸ ਨੂੰ ਨਾਂ
ਦਿੱਤੇ॥ ਅਰ ਜਦ ਸੁਰਤ ਵਿੱਚ ਆਇਆ, ਤੇ ਆਖਿਆ, ਮੇਰੇ ਪਿਉ ਦੇ ਕਿੰਨੇ
ਹੀ ਕਾਮਿਆਂ ਨੂੰ ਵਾਫਰ ਰੋਟੀਆਂ ਹਨ, ਅਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ॥ ਮੈਂ
ਉਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਜਾਵਾਂਗਾ, ਅਰ ਓਸ ਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ, ਬਾਪੂ ਜੀ ਮੈਂ
ਰੱਬ ਦਾ ਅਤੇ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ॥ ਅਰ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ
ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ॥ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆਂ ਕਾਮਿਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਜਿਹਾ
ਰੱਖ॥ ਸੋ ਓਹ ਉਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਆਇਆ॥ ਪਰ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਜੋ ਉਹਦੇ
ਪਿਉ ਨੇ ਓਹ ਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਤੇ ਓਸ ਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਦੌੜ ਕੇ ਗਲ ਲਗਿਆ ਅਰ ਓਹ ਨੂੰ
ਚੁੰਮਿਆ। ਅਤੇ ਪੁੱਤ ਨੇ ਓਹ ਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂ ਜੀ ਮੈਂ ਰੱਬ ਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁਨਾਹ
ਕੀਤਾ ਹੈ, ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ॥ ਪਰ ਪਿਉ ਨੇ ਆਪਣੇ

ਚਾਕਰਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ, ਸਭਤੋਂ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਕੇ ਇਹ ਨੂੰ ਪੁਆਓ, ਅਰ
ਇਹਦੀ ਹੱਥੀਂ ਛਾਪ ਤੇ ਪੈਰੀਂ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ, ਅਤੇ ਖਾਈਏ ਤੇ ਖੁਸੀਆ ਮਨਾਂਈ
ਏ॥ ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਊ ਪਿਆ ਹੈ; ਗੁਆਚ
ਗਿਆ ਸੀ, ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ॥ ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀਆਂ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁੱਤ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੀ। ਜਦ ਓਹ ਆਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ
ਅਪੜਿਆ, ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚ ਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ॥ ਤਦ ਨੌਕਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ
ਨੂੰ ਸੱਦ ਕੇ ਪੁੱਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਹੈ॥ ਅਤੇ ਓਸ ਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਤੇਰਾ
ਭਰਾ ਆਇਆ ਹੈ, ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਉ ਨੇ ਮਹਮਾਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ॥ ਕਿਉਂ ਜੋ ਓਸਨੂੰ
ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਪਾਇਆ॥ ਅਰ ਓਹ ਗੁੱਸੇ ਹੋਇਆ, ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣ
ਨੂੰ ਓਸਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ॥ ਤਾਂ ਓਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਓਹਨੂੰ ਮਨਾ
ਉਣ ਲੱਗਾ॥ ਅਰ ਓਹਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਨੂੰ ਉੱਤਰ ਵਿਚ ਆਖਿਆ, ਵੇਖ
ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰਿਆਂ ਥੋਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ, ਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀ
ਮੋੜਿਆ॥ ਪਰ ਤੈਂ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੋਰਾ ਬੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਮੈਂ ਆਪ-
-ਣਿਆਂ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਕਰਦਾ॥ ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ ਆ-
ਇਆ, ਜਿਸਨੇ ਤੇਰਾ ਸਾਰਾ ਧਨ ਕੰਜਰੀਆਂ ਨਾਲ ਉੜਾਇੱਤਾ, ਤੈਂ
ਓਹਦੇ ਲਈ ਮਹਮਾਨੀ ਕੀਤੀ॥ ਪਰ ਓਹਨੇ ਓਸਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਪੁੱਤ
ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੈਂ, ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸੱਭੋ ਕੁੱਝ ਤੇਰਾ ਹੈ॥ ਪਰ ਖੁਸੀ
ਕਰਨੀ ਅਰ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ॥ ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਤੇਰਾ ਭਰਾ
ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਊ ਪਿਆ ਹੈ; ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ
ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ॥

(गुरमुखी मुद्रित रूप)

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸੇ। ਅਤੇ ਛੋਟੇਨੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂਜੀ, ਮਾਲਦੀ ਵੰਡ ਜਿਹੜੀ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਦੇਉ। ਅਤੇ ਉਸਨੈ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਆਪਣੀ ਜਦਾਤ ਵੰਡ ਦਿੱਤੀ। ਅਰ ਥੋੜੇ ਦਿਨਾ ਪਿੱਛੋਂ ਛੋਟਾ ਪੁੱਤ ਸੱਬੋ ਕੁਜ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਦੁਰਾਡੇ ਦੇਸਨੂੰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ, ਅਰ ਉੱਥੇ ਆਪਣਾ ਧਨ ਵੈਲਦਾਰੀ ਵਿਚ ਗੁਆ ਦਿੱਤਾ। ਅਤੇ ਜੱਦੋਂ ਸੱਬੋ ਕੁਜ ਖਰਚ ਕਰ ਚੁਕਿਆ, ਤਾ ਓਸ ਦੇਸ ਵਿੱਚ ਵੱਡਾ ਕਾਲ ਆ ਪਿਆ। ਅਰ ਓਹ ਮੁਤਾਜ ਹੋਣ ਲੱਗਾ। ਅਤੇ ਉਹ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਕਿਸੇ ਰਹਣਵਾਲੇਦੇ ਕੋਲ ਜਾਕੇ ਕਾਂਮਾਂ ਰਹਿ ਪਿਆ। ਅਰ ਓਸਨੈ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣੀਆ ਪੈਲੀਆਂ ਵਿਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਲਈ ਘੱਲਿਆ। ਅਰ ਜਿਹੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸੀ ਉਹ ਉਨਾਂ ਨਾਲ ਆਪਣਾਂ ਢਿੱਡ ਭਰਨਾ ਚਾਂਹੁੰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਨੇ ਓਸਨੂੰ ਨਾ ਦਿੱਤੇ। ਅਰ ਜਦ ਸੁਰਤ ਵਿਚ ਆਇਆ, ਤੇ ਆਖਿਆ, ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਕਿੰਨੇ ਹੀ ਕਾਮਿਆਨੂੰ ਵਾਫ਼ਰ ਰੋਟੀਆ ਹਨ, ਅਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਜਾਵਾਂਗਾ, ਅਰ ਓਸਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ। ਬਾਪੂਜੀ ਮੈਂ ਰੱਬਦਾ ਅਤੇ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁੱਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਰ ਹੁਣ ਮੈ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਿਆ ਕਾਂਮਿਆ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਜਿਹਾ ਰੱਖ। ਸੋ ਓਹ ਉਠਕੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉ ਕੋਲ ਆਇਆ। ਪਰ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਸੀ ਜੋ ਉਹਦੇ ਪਿਉਨੈ ਓਹਨੂੰ ਵੇਖਿਆ ਤੇ ਓਸਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਦੌੜ ਕੇ ਗਲ ਲਗਿਆ ਅਰ ਉਹਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ। ਅਤੇ ਪੁੱਤਨੈ ਉਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਬਾਪੂਜੀ ਮੈ ਰੱਬਦਾ ਅਰ ਤੇਰੇ ਅੱਗੇ ਗੁੱਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸ ਜੋਗਾ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫੇਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਸਦਾਵਾਂ। ਪੋਰ ਪਿਉਨੈ ਆਪਣੇ ਚਾਕਰਾਂਨੂੰ ਕਿਹਾ, ਸਭਤੋਂ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਕੇ ਇਹਨੂੰ ਪੁਆਓ, ਅਰ ਇਹਦੀ ਹੱਥੀਂ ਛਾਪ ਤੇ ਪੈਰੀ ਜੁੱਤੀ ਪਾਓ। ਅਤੇ ਖਾਈਯੇ ਤੇ ਖੁਸੀਆ ਮਨਾਂਈਯੇ। ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੁੱਤ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜਿਊ ਪਿਆ ਹੈ, ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ, ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ। ਸੋ ਓਹ ਲੱਗੇ ਖੁਸੀਆਂ ਕਰਨ॥

ਪਰ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁੱਤ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੀ। ਜਦ ਓਹ ਆਕੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਅਪੜਿਆ, ਤਾਂ ਰਾਗ ਨਾਚਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਣੀ। ਤਦ ਨੌਕਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕਨੂੰ ਸੱਦ ਕੇ ਪੁੱਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਗਲ ਹੈ। ਅਤੇ ਓਸਨੈ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ, ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਆਇਆ ਹੈ, ਅਰ ਤੇਰੇ ਪਿਓਨੈ

ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ ਹੈ । ਕਿਉਂ ਜੋ ਓਸਨੂੰ ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਪਾਇਆ । ਅਰ ਓਹ ਗੁੱਸੇ ਹੋਇਆ, ਅਤੇ ਅੰਦਰ ਜਾਣਨੂੰ ਓਸਦਾ ਜੀ ਨਾ ਕੀਤਾ। ਤਾ ਉਹਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਆਣਕੇ ਉਹਨੂੰ ਮਨਾਉਣ ਲੱਗਾ। ਅਰ ਉਹਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿਉਨੂੰ ਉੱਤਰ ਵਿਚ ਆਖਿਆ, ਵੇਖ ਮੈਂ ਐਨੇ ਵਰ੍ਹਿਆ ਥੋਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ, ਤੇ ਤੇਰਾ ਹੁਕਮ ਕਦੇ ਨਹੀ ਮੋੜਿਆ । ਪਰ ਤੈ ਮੈਨੂੰ ਕਦੇ ਇੱਕ ਪਠੋਰਾ ਬੀ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਮੈਂ ਆਪਣਿਆ ਬੇਲੀਆਂ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਕਰਦਾ। ਪਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ ਆਇਆ, ਜਿਸਨੇ ਤੇਰਾ ਸਾਰਾ ਧਨ ਕੰਜਰੀਆਂ ਨਾਲ ਉਡਾ ਦਿੱਤਾ, ਤੈਂ ਉਹਦੇ ਲਈ ਮਮਾਨੀ ਕੀਤੀ। ਪਰ ਉਹਨੇ ਓਸਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪੁੱਤ ਤੂੰ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੈਂ ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਸੱਬੋ ਕੁੱਜ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਪਰ ਖੁਸੀ ਕਰਨੀ ਅਰ ਅਨੰਦ ਹੋਣਾ ਜੋਗ ਸੀ । ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਮੋਇਆ ਸੀ ਤੇ ਫੇਰ ਜੀਉ ਪਿਆ ਹੈ, ਅਰ ਗੁਆਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਲਭ ਪਿਆ ਹੈ ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त से। अते छोटेनै उनाँ विच्चो आपणे पिउनूँ आखिआ, 'बापू-जी, मालवी वण्ड जिह्ड़ी मैनूँ आउन्दी-है देउ।' अते उसनै उनानूँ आपणी जदात वण्ड दित्ती। अर थोडे दिनाँ पिच्छो छोटा पुत्त सव्वो कुज कट्ठा कर-के दुराडे देसनूँ चलिआ-गिआ, अर ओत्थे आपणाँ धन बैलदारी विच गुआ-दित्ता। अते जद्दो सव्वो कुज खरच कर चुकिआ, ताँ उस देस विच वड्डा काल आ-पिआ, अर ओह् मुताज होण लग्गा। अते ओह् उस देसदे किसे रहण-वालेदे कोल जा-के काम्भाँ रहि-पिआ। अर ओसनै उहनूँ आपणीआँ पैलीआँ विच सूर चारण-लई घल्लिआ। अर जिह्ड़े छिल्लड़ सूर खान्दे-सी उह उनाँ नाल आपणाँ ढिड्ड भरनां चाँहुन्दा-सी, पर किने ओसनूँ नाँ दित्ते। अर जद सुरत विच आइआ, ते आखिआ, 'मेरे पिउदे किन्ने-ही काम्मिआंनूँ वाफर रोटीआँ हन, अर मैं भुक्खा मरदा हाँ। मै उठ-के आपणे पिउ कोल जांवागा, अर ओसनूँ आखांगा, 'बापू-जी, मैं रव्व-दा अते तेरे अग्गे गुन्नाह् कीता-है, हुण मैं इस्त जोगा नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ।' मैनूँ आपणिआँ कामिआ विच्चों इक्क जिहा रक्ख। सो उह उठके आपणे पिउ कोल आइआ। पर ओह अजे दूर सी जो उहदे पिउनै उहनूँ वेखिआ ते उसनूँ तरस आइआ, दौड के गल लगिआ भर उहनूँ चुम्मिआ। अते पुत्तनै उहनूँ आखिआ, "बापू जी, मै रव्वदा अते तेरे अग्गे गुन्नाह् कीता है, हुण मैं इस जोगा नहीं जो फेर तेरा पुत्त सदावाँ।" पर पिउनै आपणे चाकरांनूँ

किहा, 'सब-तो चंगे लीड़े कढ-के इह नूं पुआउ अर इहदी हत्थीं छाप, ते पैरीं जुत्ती पाओ, अते खाईये ते खुसीआँ मनाईये; किउँ जो इह मेरा पुत्त मोइआ सी, ते फेर जिऊ-पिआ है, गुआच गिआ सी, ते लभ-पिआ-है।' सो ओह लगे खुसीआँ करन।

पर ओहदा वड्ढा पुत्त पैली विच सी। जद ओह आ-के घरदे नेड़े अपड़िआ, ताँ राग नाचदी अवाज सुणी। तद नौकरा विच्चो इक्कनूं सद्द-के पुच्छिआ, 'इह की गल्ल है?' अते ओसनै ओहनूं आखिआ, 'तेरा भरा आइआ-है, अर तेरे पिउनै ममानी कीती है, किउँ-जो ओसनूं राजी-बाजी पाइआ।' अर ओह गुस्से होइआ, अते अन्दर जाणनूं ओसदा जी ना कीता। ताँ उहदा पिउ बाहर आण-के उहनूं मनाउण लग्गा। अर उहनै आपणे पिउनूं उत्तर विच आखिआ, 'वेख, मैं ऐने वरिहाँ-थो तेरी टहल

उहनै आपणे पिउनूं उत्तर विच आखिआ, 'वेख, मै ऐने वरिहाँ-थो तेरी टहल

करदा-हाँ, ते तेरा हुकम कदे नहीं मोड़िआ। पर तैं मैंनूं कदे इक्क पठोरा बी नां दित्ता, जो मै आपणिआँ बेलीआँ नाल खुसी करदा। पर जद तेरा एह पुत आइआ, जिसनै तेरा सारा धन कंजरीआ नाल उडा-दित्ता, तैं उहदे लइ ममानी कीती।' पर उहनै ओसनूं आखिआ, 'पुत्त, तूं सदा मेरे नाल है, अते मेरा सब्बो कुज्ज तेरा है। पर खुसी करनी, अर अनन्द होणा जोग सी, किऊँ-जो इह तेरा भरा मोइआ सी, ते फेर जीऊ-पिआ है, अर गुआच पिआ-सी, ते लभ-पिआ-है।'

(हिन्दी अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। और छोटे ने, उनमे से, अपने बाप को कहा, 'बापू जी, सम्पत्ति की बाँट जो मुझे आती है, दो।' और उसने उनको अपनी सम्पत्ति बाँट दी। और थोडे दिनो बाद छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर के देश को चला गया, और वहाँ अपना धन बदचलनी मे खो दिया। और जब सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश मे बडा अकाल आ पड़ा, और वह मोहताज (दरिद्र) होने लगा। और वह उस देश के किसी रहने वाले के पास जाकर कर्मी (बन) रहने लगा। और उसने उसको अपने खेतो मे सूअर चराने के लिए भेजा। और जो छिलके सूअर खाते थे वह उनसे अपना पेट भरना चाहता था; पर किसी ने उसको न दिये। और जब होश मे आया, तो कहा, 'मेरे बाप के (यहाँ) कितने ही कर्मियो को फालतू रोटियाँ (मिलती) है, और मैं भूखा मरता हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा, और उसको कहूँका, 'बापू जी, मैंने परमेश्वर का और तेरे आगे पाप किया है, अब मैं इस योग्य नही कि

फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ। मुझे अपने कमियो मे एक के समान रख।' सो वह उठकर अपने वाप के पास आया। पर वह अभी दूर था कि उसके वाप ने उसे देखा और उसको दया आयी। दौडकर गले लगाया और उसे चूमा। और पुत्र ने उसे कहा, 'वापूजी, मैं परमेश्वर का और तेरे आगे पाप किया है, अव मैं इस योग्य नही कि फिर तेरा पुत्र कहलाऊँ।' पर वाप ने अपने नौकरो को कहा, 'सव से अच्छे कपडे निकाल कर इसे पहनाओ, और इसके हाथ मे अँगूठी, और पैरो मे जूता पहनाओ, और खायें और खुशियाँ मनायें, क्योकि यह मेरा पुत्र मर गया था, और फिर जी पडा है, खो गया था, और मिल गया है।' सो वे लगे आनन्द करने।

पर उसका वडा पुत्र खेत मे था। जव वह आकर घर के निकट पहुँचा, तो राग-नाच की आवाज़ सुनी। तव नौकरो मे से एक को वुलाकर पूछा, "यह क्या वात है?" और उसने उसको कहा, 'तेरा भाई आया है, और तेरे वाप ने महिमानी (भोज) की है, क्योकि उसे कुशलपूर्वक पाया।' और वह क्रुद्ध हुआ और भीतर जाने को उसका जी न किया। तव उसका वाप वाहर आकर उसे मनाने लगा। और उसने वाप को उत्तर मे कहा, 'देख, मैं इतने वरसो से तेरी सेवा करता हूँ, और तेरी आज्ञा का कभी उल्लघन नही किया। पर तूने मुझे कभी एक मेमना भी नही दिया, कि मैं अपने साथियो के साथ खुशी मनाता। पर जव तेरा यह पुत्र आया, जिसने तेरा सारा धन वेश्याओ के सग उडा दिया, तूने उसके लिए महिमानी की।' पर उसने उसे कहा, 'वेटा, तू सदा मेरे साथ है, और मेरा सव कुछ तेरा है। पर खुशी मनाना, और आनन्द करना चाहिए था, क्योकि यह तेरा भाई मर गया था, और फिर जी पडा है, और खो गया था, और मिल गया है।'

[स० ३]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

माझी बोली (जिला अमृतसर)

### दूसरा उदाहरण

ਗੱਲਾਂ ਸੁਣਕੇ ਸਾਹਬਾਂਦੀਯਾਂ ਕਾਂ ਜਾਂਦੇ ਸਰਮਾ ।
ਭੁਖਿਆਂ ਕੂੰਜਾਂ ਮਾਰੀਆ ਪਰੀਂ ਨ ਉੱਡਾ ਜਾ ॥ ੧ ॥
ਮੋਇਆਂਦਾ ਮਾਸ ਨ ਛੱਡਦੇ ਪੌਂਹਰ ਕੇ ਲੈਂਦੇ ਖਾ ।
ਨਾਲ ਜਰਾਨਾ ਜੱਟਦੇ ਨਾ ਲਈ ਪੱਗ ਵਟਾ ॥ ੨ ॥
ਚੰਗੀ ਕਰ ਬਹਾਲੀਏ ਪੇੜੇ ਲਏ ਚੁਰਾ ।
ਸੋਹਣੀ ਸੂਰਤ ਬਾਵਰੀ ਜਲ ਕੇ ਹੋਣੀ ਸਵਾਹ ॥ ੩ ॥
ਉਹਦਾ ਬੁਰਾ ਨ ਤੱਕੀਏ ਜਿਹਦਾ ਲਈਏ ਲੂਣ ਖਾ ।
ਜੇ ਧੀ ਹੁੰਦੀ ਅਸੀਲਦੀ ਜੰਡ ਨਾਲ ਲੈਂਦੀ ਫਾਹ ॥ ੪ ॥
ਮੋਇਆ ਮਿਰਜਾ ਸੁਣ ਕੇ ਬੈਠੀ ਕੰਡ ਭੁਵਾ ।
ਗੌਰ ਪੁਛੈਂਦੀ ਤੁਧਨੂੰ ਮੈਥੇ ਜਾਣਾ ਆ ॥ ੫ ॥
ਝੂਠੇ ਘਰਨੂੰ ਛੱਡ ਦੇ ਸੱਚੇ ਵਲ ਜਾ ।
ਛੇਕੜਦਾ ਘੋਲ ਹੈ ਪਿੰਡੇ ਪਾਨੀ ਪਾ ॥ ੬ ॥
ਜਟ ਮਰ ਗਿਆ ਤੂੰ ਜੀਉਂਦੀ ਲੱਖ ਲਾਨਤ ਤੇਰੇ ਛਾ ।
ਕਾਂਵਾਂ ਬੈਲੀ ਮਾਰੀਆਂ ਸਾਹਬਾਂ ਮਰੀ ਕਟਾਰੀ ਖਾ ॥ ੭ ॥
ਲੋਥਾਂ ਪਈਆਂ ਰਹੀਆ ਹੇਠਾ ਜੰਡਦੇ ਬੁਤ ਵੜੇ ਭਿਸਤੀਂ ਜਾ।
ਕੋਈ ਮੁਸਾਫ਼ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਕਿਨੇ ਨ ਮਾਰੀ ਧਾ ॥ ੮ ॥
ਭਾਈ ਰੁੰਦੇ ਬੌਹੜਦੇ ਦੁਖ ਲੈਂਦੇ ਵੰਡਾ ।
ਬਾਝ ਭਰਾਵਾਂ ਜਟ ਮਾਰਿਆ ਕਿਨੇਂ ਨ ਕੀਤੀ ਹਮਰਾ ॥ ੯ ॥

ਬੌਹੜੀਓ ਮਿਰਜਿਆ ॥

(नागरी रूपान्तर)

गल्ला सुण-के साह्वाँदीयाँ काँ जान्दे सरमा।
'भुक्खिआँ चुंज्जा मारीआँ, परीं न उड्डा जा॥१॥
मोइआँदा मास न छड्ड-दे, पौंह्च-के लैन्दे-खा।
नाल जराना जटदे, ना लई पग्ग वटा॥२॥
चंगी कर वहाली-ए, पेड़े लए चुरा।
मोहनी सूरत, बावरी, जल-के होणी सवाह॥३॥
उहदा वुरा न तक्कीए, जिह्दा लईए लूण खा।
जे धी हुदी असीलदी जड नाल लेंदी फाह॥४॥
मोइआ मिर्जा सुण-के, वैठी कण्ड भुवा।
गोर पुछेंदी "तुधनूं मैं-थे जाणा - आ"॥५॥
झूठे घरनूं छड्ड-दे, सच्चे वल जा।
छेकड़लदा घोल है, पिण्डे पानी पा॥६॥
जट मर-गिआ, तूं जीउन्दी, लक्ख लानत तेरे भा।
कांवा बोली मारीआँ, साह्वाँ मरी कटारी खा॥७॥
लोयाँ पईआँ रहीआँ हेठाँ जण्डदे, वुत वड़े भिरतीं जा।
'कोई मुसाफर मर-गिआ', किने न मारी धा॥८॥
भाई हुन्दे वौंह्डदे दुख लैन्दे वण्डा।
वाझ भारावाँ जट मारिआ किने न कीती हम-रा॥९॥

बौह्ड़ीओ मिर्जिआ!

(दूसरे उदाहरण का अनुवाद)

(मिर्जा जाट की प्रेमिका साहिवाँ देखती है कि उसकी लाश जण्ड पेड के नीचे पड़ी है और उसे कौवे नोच रहे हैं। वह उन्हे झिडकती है, तो—)

वातें सुनकर साहिवाँ की कौवे जाते लजा (कहने लगे)।
'भूखे चोचें मारते थे, (हमसे) परो से उडा नही जाता था॥१॥

(हम) मरो का मास नही छोडते पहुँचकर लेते है खा।
साथ जाट के न मैत्री थी, न पगडी वदली थी।।२।।
अच्छी समझकर विठाई गई, (पर तूने तो) पेडे लिये चुरा।[1]
सुन्दर रूप, अरी वावरी, जलकर होगा राख।।३।।
उसका वुरा न देखिए, जिसका लीजिए नमक खा।
जो वेटी होती (तू) अभिजात की, जंड (पेड) के साथ लेती फाँसी।।४।।
मर गया मिर्ज़ा, (यह) सुनकर, (तू) वैठी पीठ घुमा!
कब्र पुकारती है (तुझे) कि आखिर 'तुझे मुझ मे आ जाना है'।।५।।
झूठे (इस ससार के) घर को छोड़ दे, सच्चे घर की ओर चल।
अन्तिम सघर्ष है (शेष), शरीर पर पानी डाल ले[2]।।६।।
जाट मर गया, (और) तू जीती है। लाख लानत तेरे ऊपर।'
(इस प्रकार) कौवो ने उपालम्भ दिये तो साहिवाँ ने कटार खाकर जान दे दी।।७।।
(दोनो की) लोथे पडी रही नीचे जण्ड के, आत्माएँ पहुँची स्वर्ग मे जा।
'कोई यात्री मर गया', (यह समझ) किसी ने दुहाई तक नही दी।।८।।
(यदि उसके) भाई होते तो पहुँचते, दुःख लेते वाँट।
विन भाइयो जाट मारा गया, किसी ने नही की सहानुभूति।।९।।
लौट आओ, मिर्ज़ा!

—०—

निम्नलिखित गाथा कुँवर नौनिहालसिंह के सन् १८३७ वाले विवाह से संवंधित है। इसमे उल्लिखित खडकसिंह महाराज रणजीतसिंह के उत्तराधिकारी थे जिन्होने

१. कौवे यह कहना चाहते हैं कि मिर्ज़ा का उनसे कोई प्यार नहीं था, पर साहिवाँ से तो था। वह उसके लिए जान क्यो नहीं दे देती? मिर्ज़ा समझता था कि साहिवाँ वफादार है किन्तु वह तो वेवफाई कर रही है, क्योकि अभी तक जीवित है। प्रेमी ने उसे तंदूर की मालिकिन वनाया था, लेकिन वह कच्चे आटे के पेड़े (लोई) ही खाने लग पड़ी। उसे अपनी जान न्यौछावर कर देनी चाहिए थी। आखिर एक दिन मरना तो है ही।

२. यहाँ मुसलमानो की उस प्रथा की ओर संकेत है जिसके अनुसार शव को दफनाने से पहले नहलाया जाता है।

तीन महीने राज्य किया। उन्हे १८४० ई० मे उनके पुत्र नौनिहालसिह ने गद्दी से हटा दिया। खडकसिह रणक्षेत्र मे नही, शय्या पर मरे। यह शका की जाती रही कि उन्हे विष देकर मार डाला गया।

नौनिहालसिह का विवाह शामसिह अटारीवाला की पुत्री जसकौर से हुआ था। शामसिह ने सन् १८४६ मे अँग्रेजो के विरुद्ध लड़ते हुए सोबराउँ के मैदान मे वीरगति ाप्त की। इस घटना को चौथे पद्य मे 'काला भाग्य' कहा गया है।

जिस दिन खडकसिह का दाहकर्म हुआ उसी दिन नौनिहालसिह की एक तोरण के नीचे दब जाने से मृत्यु हो गयी।

[स० ४]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

# पंजाबी

माझी बोली (जिला लाहौर)

## तीसरा उदाहरण

(गुरमुखी लिपि)

ਚੜ੍ਹਿਆ ਚੇਤ੍ਰ ਪਈ ਪੁਹਾਰ। ਯਾਰੋ ਵੱਡੀ ਹੋਈ ਸਰਕਾਰ। ਧਮਕੇ ਕਾਬੁਲ ਤੇ ਕੰਧਾਰ ਡੇਰੇ ਘੱਤੇ ਅਟਕੋਂ ਪਾਰ ॥

ਵੱਡਾ ਖੜਕ ਸਿੰਘ ਸਰਦਾਰ। ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਬੈਠਾ ਮੌਤ ਵਿਸਾਰ। ਉ ਵੀ ਚੜ੍ਹਿਆ ਨਾਲ ਕਰਾਰ। ਓੜਕ ਚੱਲਣਾ ॥

ਚੇਤੋਂ ਫੇਰ ਆਈ ਵਸਾਖੀ। ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਵੱਡੀ ਮਸਤਾਕੀ। ਸੁੰਦਰ ਬਨ ਬਨ ਆਵਨ ਹਾਥੀ। ਨਜਰਾ ਲੈ ਲੈ ਮਿਲਨ ਸੁਗਾਤੀਂ। ਸੂਬੇ ਰਲ ਮਿਲ ਕਰਨ ਜਮਾਤੀਂ। ਮੁੱਢੋਂ ਸਰਕਾਰਦੇ ॥

ਬੈਠੇ ਫੇਰ ਅਟਾਰੀ ਵਾਲੇ। ਚੰਗੇ ਚੰਗੇ ਸੱਦ ਬਹਾਲੇ। ਉਨਾਦੇ ਲੇਖ ਜੋ ਹੋ ਗਏ ਕਾਲੇ। ਵਰੇ ਤੋਰਨ ਡੋਲਾ ਵਾਲੇ। ਢਿੱਲ ਨ ਲਾਂਵਦੇ ॥

ਰਾਣੀ ਜਸਕੌਰ ਘਰ ਜੰਮੀ। ਜੀਵੇ ਜੀਦੇ ਬੌਹਤ ਸਰਮੀਂ। ਉੱਦੇ ਲੇਖ ਤੇ ਵਿੱਤ ਕਰਮੀਂ। ਛਰ ਛਰ ਥਾਲ ਵਗਾਵਣ ਵੰਮੀ। ਕਰਨ ਖੈਰਾਇਤਾ ॥

ਵਸਾਖੋਂ ਫੇਰ ਹੋਈ ਚਤਰਾਈ। ਬੇਟੀ ਸ਼ਾਮ ਸਿੰਘ ਘਰ ਜਾਈ। ਲਾਗੀ ਢੂੰਡ ਕਰਨ ਕੁੜਮਾਈ। ਮੁਲਕ ਇਨਾਮ ਜੋ ਖਾਈ ਦਾਈ। ਮੁੱਢੋਂ ਸਰਕਾਰਦੇ ॥

ਹੁਣ ਜੇਠ ਮਹੀਨਾ ਚੜ੍ਹਿਆ। ਕੌਰ ਸਜਾਦਾ ਖਾਰੇ ਚੜ੍ਹਿਆ। ਰਲ ਮਿਲ ਭਾਬੀਆਂ ਸਾਕੂ ਫੜਿਆ। ਓਨੂੰ ਰੂਪ ਸਵਾਯਾ ਚੜ੍ਹਿਆ। ਰਾਣੀ ਜਸਕੌਰ ਦਿਲ ਹਰਿਆ। ਸਗਨ ਮਨਾਂਉਂਦੇ ॥

ਅੱਗੋ ਹੋਈ ਜਜ ਤਿਆਰ। ਚੜ੍ਹਿਆ ਮਾਝੇਦਾ ਸਰਦਾਰ। ਤਾਜ਼ੀ ਸੋਹਨੇ ਜਿਉਂ ਗੁਲਜ਼ਾਰ। ਘੋੜੇ ਕੁੱਦਣ ਕੁਲ ਬਾਜ਼ਾਰ। ਲਾੜੇ ਪਹਨੀ ਫੇਰ ਤਲਵਾਰ। ਘੋੜੇ ਚੜ੍ਹਿਆ ਸਨ ਹਥਿਆਰ। ਜੰਜ ਸੁਹਾਂਉਂਦੀ।

ਪਹਨ ਪੁਸ਼ਾਕਾ ਬੈਠਾ ਨ੍ਹਾਕੇ। ਦਿੱਤਾ ਤਿਲਕ ਪਰੋਹਤ ਆਕੇ। ਸੇਹਰਾ ਬਾਪ ਪਹਨਾਵੇ ਆਕੇ। ਗਾਵਣ ਸੱਯਾਂ ਮੰਗਲ ਜਾਕੇ। ਸਗਨ ਮਨਾਂਉਂਦੀਆਂ॥

ਹੋਈ ਜੰਜ ਤਿਆਰ। ਸੂਬੇ ਚੜ੍ਹੇ ਬੇਸੁਮਾਰ। ਪਹਨ ਪੁਸ਼ਾਕਾ ਸਨ ਤਲਵਾਰ। ਵੰਛਣ ਮੁਹਰਾ ਬੇਸੁਮਾਰ। ਲਾਗੀ ਲੇਕਰ ਹੋਏ ਨਿਹਾਲ। ਸੱਯਦ ਸਾਧੂ ਸਨ ਪਰਵਾਰ। ਲੇਨ ਖੈਰਾਇਤਾਂ ਨਾਮ ਗੁਵਾਰ। ਦੇਨ ਅਸੀਸ ਭਰੇ ਭੰਡਾਰ। ਸਾਹਬ ਧਿਆਉਂਦੇ॥

(फारसी लिपि)

چڑھیا حیدر بنی بہار - یارو وڈي هوئی سرکار - دھمکے کابل تے قندھار - ڈیرے گھتے اٹکوں پار ٭

وڈا کھڑک سنگھ سردار - توں کیوں بیٹھا موت وسار - آو وی چڑھیا نال قرار - اوڑک جلدا ٭

جیہیں پھر انی وساکھی - تے سرکار وڈي مستاکی - سندر سن سن آوں ھاسی - بدراں لے لے ملن سوغاتیں - ھوے رل مل چڑھن جماعتیں - مڈھو سرکار ٭

بیٹھے پھر آتاری والے - چنگے چنگے سد بہالے - اناں دِ لیکھہ جو ھوگئے کالے - تکے بورن بولاں والے - ڈھل نہ لاوندے ٭

راني جس کور لہر جمی - بیوین دیندے بہت شرمیں - اُچے لیکھہ تے چت کرمیں - پھر پھر بہال وگاوں دمیں - کرن حیراناں -

وساکھوں پھر ھوئي چترائی - بیٹی شام سنگھہ گھر جائی - لاگي ڈھونڈھہ کرن کڑمائی - ملک انعام جو کھاندی دائی - مڈھو سرکار دے ٭

PANJABI.

من جیٹھہ مہینہ چڑھیا - کور سعادہ کہارے چڑھیا - رل مل
سہاییان سالو پھڑیا - اوں نوں روپ سوایا چڑھیا - راني جسکور دل ھریا -
شگن مناوندے *

اگے ھوئی جنج تیار - چڑھیا ماجھو سردار - جانجی سوھنے جیوں گلزار -
گھوڑے گدن کل نارار - لاڑي پہنی پھر تلوار - گھوڑے چڑھیا سن ھتھیار
جنج سہاوندی *

پہن پوشاکاں بیٹھا بہاے - دنا تلک پروھت آے - سہرہ باپ
پہناوے آے - گاون سیاں منگل جاے - شگن مناوندیاں *

ھوئی جنج تیار - ھوے چڑھے بے شمار - پہن پوشاکاں سن تلوار - ونڈن
مہران بے شمار - لاگی لیکر ھوئی نہال - سید سادھو سن پروار - لین
حیرانیاں نام عفار - دین اسیس بھرے بھنڈار - صاحب دھیاوندے *

(नागरी रूपान्तर)

चढ़िआ चेत्र पई पुहार। यारो वड्डी होई सरकार।
धमके काबुल ते कन्धार। डेरे घते अटको पार॥
वड्डा खडक सिंघ सरदार। तूं किउं बैठा मौत विसार।
उ वी चढ़िआ नाल करार। ओड़क चल्लना॥
चेतो फेर आई वसाखी। ते सरकार वड्डी मस्ताकी।
सुन्दर बन बन आवन हाथी। नजरां लै लै मिलन सुगातीं।
सूबे रल-मिल चढ़न जमातीं। मुड्ढो सरकार दे॥
बैठे फेर अटारी वाले। चंगे चंगे सद्द बहाले।

उनांदे लेख जो हो-गए काले। टके तोरन तोलाँवाले।
ढिल्ल ना लाँवन्दे॥
राणी जस-कौर घर जम्मी। नीवें दीदे वौहत सरमीं।
उच्चे लेख ते चित्त-करमीं। भर भर थाल वगावण दम्मीं।
करन खैराइताँ॥
वसाखो फेर होई चतराई। बेटी शार्मासंघ घर जाई।
लागी ढूण्ढ करन कुड़माई। मुल्क इनाम जो खान्दी दाई।
मुड्ढो सरकारदे॥
हुण जेठ महीना चढिआ। कौर सजादा खारे चढिआ।
रलमिल भावीआँ सालू फड़िआ। ओनूँ रूप सवाया चढ़िआ।
राणी जसकौर दिल हरिआ। सगन मनांउन्दे॥
अग्गे होई जञ्ज तिआर। चढ़िआ माझेदा सरदार।
जाँजी सोहने जिउँ गुलजार। घोड़े कुद्दण कुल बाजार।
लाड़े पहनी फेर तलवार। घोड़े चढ़िआ सन हथिआर। जञ्ज सुहाँउन्दी॥
पहन पुसाकाँ वैठा न्हाके। दित्ता तिलक परोहत आके।
सेहरा वाप पहनावे आके। गावण सख्याँ मगल जाके।
सगन मनाँउन्दीआँ॥
होई जञ्ज तिआर। सूवे चढ़े वे-सुमार।
पहन पुसाकाँ सन तलवार। वण्डण मुहराँ वे-सुमार।
लागी ले-कर होए निहाल। सय्यद साधू सन परवार।
लेन खैराइताँ नाम गफार। देन असीस 'भरे भण्डार'। साहव घियाउन्दे॥

(तीसरे उदाहरण का अनुवाद)

चैत आया और फुहारें पडी। मित्रो, वडी (शक्तिशाली) है (सिख) सरकार। दहलता है कावुल और कन्धार। (और इसके) डेरे जा लगे हैं अटक[1] के पार।

१. अटक का अर्थ यहाँ सिन्ध नदी है जिसके किनारे पर अटक शहर बसा हुआ है। इसके विपरीत 'राजा रसालू' के एक गीत में नदी का नाम शहर के लिए आया है; "सिन्ध तो मेरी नगरी, अटक है मेरा ठाँव।"

खडकसिंह एक वहुत वडा सरदार है। तू क्यो (घर मे) वैठ गया है मौत को भूलकर। वह भी चढा था दृढता के साथ। अन्त मे (तो सब को) चलना ही है।

चैत के वाद फिर आया वैशाख। और सरकार वहुत प्रसन्न है। वन-ठनकर सुन्दर हाथी आते है। लोग नजराने और उपहार ले-लेकर मिलते है। सरदार लोग मिल-जुलकर चढाई करते हैं अपनी सेना के साथ, सरकार के आरम्भ करने पर।

फिर वैठे है अटारी[1] के लोग। अच्छे-अच्छे वुलाकर वैठाये गये है। उनका भाग्य काला हो गया है। टके दे रहे है एक-एक तोला के। देर नही लगाते।

रानी जसकौर (अटारी वाले शामसिंह के) घर पैदा हुई। आँखें नीची किये, वहुत लजीली थी। ऊँचा भाग्य और करम था उसका। भर-भर थाल फेंके गये (उसके जन्म पर) दाम। दान देते थे।

(वर खोजने वाले[2] जा कहने लगे) 'वैशाख मे जन्म होने से वह चतुर है श्याम-सिंह की वेटी।' ऐसे लोगो ने (वर) ढूढकर सगाई कर दी। दाई को एक प्रदेश इनाम मे मिला जिसका वह भोग करने लगी। सरकार से (मिला)।

अव जेठ महीना आया। कुँवर शाहजादा (नौनिहाल) डाले पर चढा।[3] भाभियो ने मिलकर उसका लाल दुपट्टा पकडा, (जिससे) उसका सौन्दर्य वढ गया। रानी जसकौर मोहित हो गयी। सव सगुन मनाने लगे।

इसके वाद वरात तैयार हुई। माझा का सरदार वरात लेकर चला। वराती ऐसे सुन्दर थे जैसे वाग होता है। घोडे सारे वाजारो मे उछलने-कूदने लगे। दूल्हा

१. अमृतसर के पास एक गाँव का नाम। 'अटारीवाला' वंश-नाम है। शाम-सिंह और उसके संवधियो को 'अटारीवाला' कहते हैं।

२. विवाह-शादी पर नेग लेनेवालो को लागी या लाग्गी कहते हैं। प्राय वे छोटी जातियो के लोग होते हैं। यहाँ विशेषत. विचौलियो की ओर संकेत है जो शादियाँ तय करते है।

३. यह विवाह का वर्णन है। एक दिन दूल्हा और दुलहिन डाले (टोकरे) पर वैठकर स्नान करते हैं। एक दूसरी रस्म मे दूल्हा की सवधी स्त्रियाँ उसका दुपट्टा पकड़ लेती हैं और तब तक नहीं छोड़तीं जव तक नेग नहीं पा लेतीं।

ने फिर तलवार पहनी। हथियारों समेत घोड़े पर चढ़ा। बरात सुशोभित हुई।[1]

नहाकर (दूल्हा) पोशाकें पहन बैठ गया। पुरोहित ने आकर तिलक लगाया। पिता ने आकर सेहरा पहनाया। सखियाँ जाकर मंगल गाने लगी। (और) सगुन मनाने लगी।

(वापसी के लिए) बरात तैयार हो गयी। असख्य सरदार चढे, तलवारो के साथ पोशाकें पहनकर। असख्य अशरफियाँ बाँटने लगे। लाग पाने वाले सम्पन्न हो गये, सय्यद और साधु अपने-अपने परिवारो समेत। दयालु परमात्मा के नाम पर दान लेते थे। 'तुम्हारे भडार भरे रहे' कहकर आशीर्वाद देते थे और भगवान् का ध्यान करते थे।

१. घटना-क्रम ठीक नहीं है। बरात दुलहिन के घर जाती है तो दूल्हा हथियारबंद होकर और घोडे पर सवार होकर जाता है, जबकि एक लड़का, शाहबाला के रूप मे, उसके पीछे बैठा होता है। यह रस्म उस पद्धति की यादगार है जब दुलहिन को भगा लाते थे और बलात्कार से विवाह कर लेते थे।

# जलंधर दोआब की पंजाबी

जलधर दोआव, या व्यास और सतलुज नदियो के वीच के प्रदेश मे जलंधर और होशियारपुर के दो जिले तथा कपूरथला की रियासत सम्मिलित है। इस क्षेत्र की पजावी का स्थानीय नाम दोआवी है, किन्तु इसमे और लुधियाना की आदर्श पजावी मे शायद कोई अन्तर नही है।

होशियारपुर के उत्तर और पूर्व की ओर पहाडो मे एक वोली है जिसका स्थानीय नाम पहाडी है, जो परीक्षण करने पर लगभग साधारण दोआवी के समान निकलती है; उसमे शिमला की पहाडी रियासतो और काँगडा मे वोले जाने वाले मुहावरो का थोड़ा सा सम्मिश्रण अवश्य है। यह वोली पास की कहलूर (या विलासपुर) और मंगल की शिमला पहाड वाली रियासतो मे वोली जाती है, और वही इसे कहलूरी या विलासपुरी कहते हैं। इस तरह नाना रूपो सहित दोआवी के वोलने वालो के निम्नलिखित अनुमानित आँकडे प्राप्त होते है—

| | | |
|---|---|---|
| साधारण दोआवी | | |
| जलधर | ९,०५,८१७ | |
| कपूरथला | २,९६,९७६ | |
| होशियारपुर | ८,४८,६५५ | |
| | | २०,५१,४४८ |
| होशियारपुरी पहाडी | १,१४,५४० | |
| कहलूर की कहलूरी | ९१,७०० | |
| मगल की कहलूरी | १,०८१ | |
| | | २,०७,३२१ |
| | कुल जोड | २,२५८,७६९ |

सामान्य दोआवी के नमूने के रूप मे होशियारपुर से प्राप्त दो ग्रामीणो के बीच मे हुआ वार्तालाप दिया जा रहा है। वोली की कुछ विशेषताओ पर निम्नलिखित टिप्पणियाँ प्रमुखत इस नमूने पर और साथ ही दोआब के अन्य भागो से प्राप्त नमूनो पर आधारित हैं।

वर्तनी मनमानी है। जैसे—हमे दो-दो रूप मिलते है, विच मी, विच, मे, मी, हुन्दा भी और होन्दा, होता, भी। य वर्ण दूसरे स्वर के वाद की -इ- के वाद प्राय जोडा जाता है अथवा इस -इ- की जगह लगाया जाता है। जैसे होइया या होया, हुआ, होन्दियाँ, होती (स्त्री० वहुव०)। अनेक जगह ई की जगह इ लगता है, जैसे होईआँ की जगह होइआँ (स्त्री० वहुव०), हुई। मूर्धन्य व्यजन मनमाने ढग से प्रयुक्त होते है, जैसे वळ्द, वैल, किन्तु नाल, साथ, नाळ नही। इसी प्रकार होना, होणा नही, आना, बीजना, वोना। शब्द के अन्त मे आने वाले द्वित्वीकृत व्यजन सरल हो जाते हैं, जैसे विच, मे, विच्च नही, किन्तु विच्चो, मे से, गल, वात, गल्ल नही, किन्तु वहुव० गल्लाँ, हथ, हाथ, हत्थ नही, घट, घट्ट नही।

कमीन-कान मे कान सम्प्रदान के चिह्न के रूप मे प्रयुक्त हुआ है। तुलना कीजिए लहँदा कन से। 'कुछ' के लिए कुज है, कुझ नही। जैसा कि अमृतसर मे है, 'इन्हे' के लिए इनाँ है, इन्हाँ नही।

सहायक क्रिया के वर्तमान काल मे उत्तम पुरुष एकवचन का है रूप पजाव के इस भाग की विशिष्टता है।

सकुचित रूप गैय्याँ, गईं, (वहुव० स्त्री०) उल्लेखनीय है।

विच, मे, के आदि व्यजन का लोप कर दिया जाता है, जैसे अमृतसर और लुधियाना मे।

[सं० ५]
भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

जलंधर दोआब की बोली (जिला होशियारपुर)

ਭਾਨੇ ਤੇ ਵਰਯਾਮੇ ਵਿਚ 'ਏਹ ਗੱਲਾਂ ਹੁੰਦਿਯਾ ਸੀ॥

ਭਾਨਾ—ਭਾਈ ਦੱਸੋ ਕਿੱਥੋਂ ਆਨਾ ਹੋਯਾ॥

ਵਰਯਾਮਾ—ਮੁੰਡੇਦੇ ਸੌਹਰਿਆ ਵਲ ਗਏ ਸੀ। ਔਥੇ ਇੱਕ ਬਲ੍ਹਦਦੀ ਦਸ ਪੌਂਦੀ ਸੀ। ਬਲ੍ਹਦ ਤਾ ਚੰਗਾ ਹੈ ਪਰ ਮਾਰ ਖੁੰਡ ਹੈਗਾ। ਓਹਦੇ ਸੋਲਾਯਾ ਵਾਗ ਸਿੰਗ ਹਨ। ਰੰਗ ਗੋਰਾ। ਦੌਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਮੁੱਲ ਬੱਡਾ ਮੰਗਦੇ ਹਨ ਚਾਲੀ ਰੁਪੈਏ। ਏਹ ਮੁੱਲ ਖਰਚਨਦੀ ਫੁਰਸਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਈ ਕੀ ਕਰਿਯੇ। ਪੈਲੀ ਕੁਜ ਨਾ ਨਿਕਲੀ। ਤਿਨ ਕਨਾਲ ਜਮੀਨ ਬਿੱਚੋ ਚਾਰ ਪੂਲਿਆ ਹੋਇਆ। ਏਹਦੇ ਵਿੱਚੋ ਕੀ ਖਾਈਏ ਤੇ ਕੀ ਵਰਤਾਈਏ। ਜੇਹਦੇ ਨਾਲ਼ ਕਮੀਨ ਕਾਨ ਬੀ ਬਰੋ ਨਹੀਂ ਸਾਨੇ। ਓਹ ਗਲ਼ ਹੋਈ।

ਗਾਉਂਦੋਦਾ ਸਿੰਘ ਪਾਟਾ।
ਪੱਲੇ ਨ ਪਿਯਾ ਸੇਰ ਆਟਾ।
ਕਰਮ ਹੀਨ ਖੇਤੀ ਕਰੇ।
ਬਲ੍ਹਦ ਮਰੇ ਦੋਟਾ ਪੜੇ।

ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਮਰ ਭਰਕੇ ਇਨਾ ਚਾਰ ਪੂਲਿਆਦਾ ਮੂੰਹ ਦੇਖਿਆ। ਪਾਨੀ ਸਿੰਜਦਿਯਾਦੇ ਹਥ ਅੰਬ ਗੇਏ ਤਾ ਸੰਘਾ ਬੈਹ ਗਿਯਾ। ਅੱਗੇ ਰਬਦੀ ਕੀ ਮਰਜੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਕ ਗਰੀਬੀ ਦੂਜੀ ਬਰਖੁਰਦਾਰੀ। ਜੇ ਪੂਲਿਯਾ ਥੋੜ੍ਹਿਯਾ ਸੀ, ਤਾ ਝਾੜ ਬੀ ਘਟ ਝੜਿਆ ਦਾਨਾ ਪਤਲਾ ਹੈ। ਖਬਰਾ ਦਾਨਿਯਾਨੂੰ ਕੀ ਹੋਇਆ। ਰਬਦਿਆ ਗੱਲਾ ਲਖਿਯਾਂ ਨਹੀ ਜਾਂਦਿਆ। ਭਾਨਾ ਭਾਈ ਫੱਗਣ ਮਹੀਨੇ ਜੇਹੜਾ ਝੋਲਾ ਵੱਗਿਆ ਸੀ। ਓਹਦੇ ਨਾਲ਼ ਕਣਕਾ ਪਤਲਿਆ ਪੈ ਗੀਯਾ। ਕਣਕਾ ਕੀ ਕਰਨ ਜਦ ਉੱਪਰਲਾ ਚੁਪਕਰ ਬੈਠਾ। ਜਹਦੀ ਹਾੜੀ ਬੀਜੀ ਤਦਦੀ ਓਹਨੇ ਕੁਜ ਖਬਰ ਜ਼ਿਮੀਦਾਰਾਦੀ ਨਾ ਲਿੱਤੀ ਕਿ ਜਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਮਰ ਗਏ। ਮੀਂਹ ਬਿਨਾ ਕੁਜ ਨਹੀ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਇੱਕ ਕਮਾਊਂਦੀ ਕਮਾਈ ਬਿਨਾ ਬਰਕਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਦੂਜੇ ਕਣਕਦੇ ਪਤਲਾ ਹੋਨੇਦੀ ਏਹ ਬੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਬਾਬੇ ਬੁਡਢੇਦੇ ਪੈਨ ਤੋਂ ਹਲਦੀ ਬਾਹੀ ਘਟ ਹੋਈ। ਭਾਈ ਕਣਕ ਤਾ ਚੰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਜੇ ਕਰ ਬਾਹੀ ਖਰੀ ਹੁੰਦੀ। ਬਾਰਾ ਸੀਦਾ ਬਾਹ ਕੇ ਦੇਖ ਕਣਕਦਾ ਝਾੜ। ਜਿਯੋ ਜਿਯੋ ਬਾਹੈ ਕਣਕਨੂੰ ਤਿਯੋ ਤ੍ਰਿਯੋ ਦੇਵੇ ਸਵਾਦ॥

ਕਣਕ ਕਮਾਦੀ ਸੰਘਣੀ ਡਾਂਗੋ ਡਾਂਗ ਕਪਾਹ

ਕੰਬਲਦਾ ਝੁੰਬ ਮਾਰਕੇ ਛੱਲਿਆ ਵਿੱਚੀ ਜਾਹ॥

ਸੋ ਛਾਈ ਕਣਕਦਾ ਬਾਹਣਾ ਬੀਜਣਾ ਔਖਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਬਾਹੀ ਬੀਜੀ ਚੰਗੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਝਾੜ ਬੀ ਅੱਛਾ ਹੋਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਕਣਕ ਬੀ ਮੋਟੀ ਹੋਂਦੀ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

भाने ते वर्यामि-विच एह गल्लां हुन्दिआँ-सी।

भाना—भाई, दस्सो कित्थो आना होया।

वर्यामा—मुण्डेदे सौहरिआँ-वल गए-सी। औथे इक्क बळ्ददी दस पोदी-सी। बळ्द तां चङ्गा है, पर मार-खुण्ड हैगा। ओहदे सोलायाँ वांग सिंग हन, रङ्ग गोरा, दोदा है। पर मुल्ल वड्डा मङ्गदे हन। चाली रुपैए। एह मुल्लखर्च नदी फुर्सत नहीं है। भाई, की करिये? पैली कुज ना निकली। तिन कनाल जमीन विच्चो चार पूलिआँ होइआँ। एहदे विच्चो की खाईए ते की वर्ताईए, जेहदे नाल कमीन-कान बी बरो नहीं साने? ओह गल होई,

गाँउन्दीदा संघ पाटा। पल्ले न पियर सेर आटा।।
करम हीन खेती करे। बळ्द मरे, टोटा पड़े।।

छे महीने मर-भर-के इना चार पूलिआँदा मूँह देखिआ। पाणी सिञ्जदियाँदे हथ अव-गए, ताँ संघा वैह-गिया। अगो रवदी की मरजी होई! इक गरीबी, दूजी वर-खुरदारी। जे पूलियाँ थोड़ियाँ सी, ताँ झाड़ वी घट झड़िआ। दाना पतला है। खबरा दानियाँनूँ की होइआ? रवदिआँ गल्लाँ लखियाँ नहीं जान्दिआँ। भाना, भाई, फग्गण महीने जेहड़ा झोला वग्गिआ-सी, ओहदे नाल कणकाँ पतलियाँ पै-गैय्याँ। कणकाँ की करन, जद उप्पर-ला चुप-कर वैठा। जव-दी हाड़ी वीजी, तद-दी ओहने कुज खवर जिमीदारांदी ना लित्ती, कि जिन्दे हन कि मर गए। मींह बिन कुज नहीं हो सकदा। इक, कमाऊदी कमाई विनां वरकत नहीं हुन्दी। दूजे, कणकदे पतला होने दी एह बी गल है, कि वावे बुड्ढेदे पैन-तो हलदी वाही घट होई। भाई, कणक ताँ चङ्गी हुन्दी, जेकर वाही खरी हुन्दी। "वाराँ सीवाँ वाह-के, देख कणकदा झाड़। जियो-जियो वाहै कणकनूँ, तियों-तियो देवे सवाद।"

**कणक कमावी संघनी, डाँगो-डाँग कपाह।**
**कम्बलदा मुम्ब मार-के, छल्लिआँ विच्ची जाह॥**

**सो भाई, कणकदा वाहना वीजना औखा है। जेकर वाही बीजी चङ्गी जावे, तां झाड़ वी अच्छा होन्दा-है, ते कणक वी मोटी होंवी है॥**

(अनुवाद)

भाना और वर्यामा के वीच मे यह वार्तालाप हो रहा था—

भाना—भाई, वताओ, कहाँ से आना हुआ?

वर्यामा—लडके की ससुराल की ओर गया था। वहाँ एक वैल की वावत सुना गया था। वैल तो अच्छा है, पर है मारू। उसके सूजो की तरह सीग है, रग गोरा, दो दाँत वाला है। पर मूल्य भारी मागते हैं। चालीस रुपये, इतना पैसा खर्च करने की फुर्सत नही है। भाई, क्या करें? खेती कुछ नही निकली। तीन कनाल[1] जमीन मे से चार पूले प्राप्त हुए। इसमे से क्या खायें और क्या वाँटें? इससे तो कर्मियो का खाना तक पूरा न पडेगा। वही बात हुई कि—

'गानेवाली का गला फटा, पल्ले मे सेर भर आटा भी न पडा।'

भाग्यहीन खेती करे (तो उसके) वैल मर जाते हैं, घाटा उठाना पडता है।

छ महीने मैं मरा-भरा (और अन्त मे) इन चार पूलो का मुँह देखा। पानी सीचते-सीचते हाथ सुन्न हो गये, और गला वैठ गया। आगे भगवान् की इच्छा (यह) हुई। एक गरीवी, दूसरी (यह) विपत्ति। जो थोडे-से पूले (मिले) थे, उनमे भी दाने कम झडे। दाना विरला है। न जाने दानो को क्या हो गया? परमेश्वर की वातें जानी नही जाती। भाना, भाई, फागुन महीने मे जो बर्फीली हवा वही थी, उससे गेहूँ विरल पड गये। गेहूँ क्या करें, जव ऊपर वाला (भगवान्) चुप वैठा है। जवमे असाढी (फसल) वोई है, तवसे उसने कुछ खवर काश्तकारो की नही ली, कि जीवित हैं या मर गये। वर्षा के विना कुछ नही हो सकता। एक तो, कमानेवाले की कमाई के विना शुभ नही होता। दूसरे, गेहूँ के विरल होने का यह भी कारण है कि वूढे वावा के (वीमार) पड जाने के कारण हल भी कम चला। भाई, गेहूँ की फसल तो अच्छी होती, यदि हल वढिया चलाया जाता। वारह वार हल चलाने का (परिणाम) देख (अपना) गेहू का झाड। ज्यो-ज्यो गेहूँ के लिए हल चलाये, त्यो-त्यो मजा दे।

१. एक कनाल भूमि ४३५·५ वर्ग गज के बरावर होती है।

'गेहूँ और गन्ना घना वोना चाहिए, कपास एक-एक लाठी की दूरी पर।
कम्बल लपेटकर (आदमी वीच मे से जा सके) इतनी दूरी पर मक्की हो॥'

सो, भाई, गेहूँ का हल चलाना और वोना कठिन कार्य है। यदि हल अच्छा चला हो, वोया अच्छी तरह गया हो, तो झाड भी अच्छा होता है, और गेहूँ भी मोटा होता है।

# कहलूरी अथवा बिलासपुरी

शिमला की पहाडी रियासतो की अधिकतर भाषाएँ पश्चिमी पहाडी के नाना रूप हैं। दूर पश्चिम की रियासतें हैं कहलूर, मगल, नालागढ और मैलोग। अन्तिम दो रियासतो के पश्चिम मे भाषा पोवाधी पजाबी है, और इसका वर्णन अलग शीर्षक देकर किया जायगा। इनके पूर्वी भागो की बोली हण्डूरी पहाडी है। कहलूर और मगल की रियासतो की बोली को कहलूरी या (कहलूर का प्रमुख नगर बिलासपुर होने के कारण) बिलासपुरी कहते हैं। कहलूर होशियारपुर ज़िले के तुरन्त पूर्व मे पडता है। उस ज़िले के सलग्न पहाडी भाग मे एक बोली बोली जाती है जिसका स्थानीय नाम मात्र 'पहाडी' है। यह कहलूरी ही है।[1]

कहलूरी को अभी तक पश्चिमी पहाडी का एक रूप कहा जाता रहा है। किन्तु नमूने का परीक्षण करने से लगता है कि ऐसा नही है। यह केवल अनगढ पजाबी ही है, होशियारपुर मे बोली जाने वाली भाषा के समान। बोलनेवालो की अनुमानित सख्या नीचे दी जाती है—

| | |
|---|---|
| कहलूर रियासत . | ९१,७०० |
| मगल रियासत . . . . | १,०८१ |
| होशियारपुर जिला . . . | १,१४,५४० |
| योग | २,०७,३२१ |

इस बोली के पूरे नमूने देना अनावश्यक है। अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से कुछ लिप्यन्तरित वाक्य इसकी प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं।

१ होशियारपुर के उत्तरपूर्व की ओर, यह बोली काँगड़ा के कुछ-कुछ निकट पड़ती है। इस प्रकार इसमे काँगड़ी सम्प्रदान का परसर्ग जो पाया जाता है।

[सं० ६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

कहलूरी बोली (मंगल राज्य, जिला शिमला)

एकी मानूँदे दो पुत्त थे। लौहके पुत्ते अपणे बुड्ढेनो गलाया, 'जो जादाद मेरे वणदे आओदी, सो मन्नो दई-दे।' तिने सो जादाद अपणे दुइ पुत्ताँनूँ वण्डी दित्ती। जदे लौहके पुत्ते अपणा वण्डा लै-लीआ, ता दूर पर देसाँनूँ चली-गया। ऊथी जाई-के, तिने अपणी जादाद बे-अरथ गँवाई-दित्ती। जद ओ सारी जादादाँ गँवाई बैठा, ताँ ऊस मुलखदे-विच वड़ा काल पया। ओ वड़ा कङ्गाल होई-गया। ताँ ओ ऊस मुलखदे रैहनेवाले दे कने रैह्णे लगा, तिने अपणी जिमीनाँ-विच उसनूँ सूराँनूँ चारने भेजा। सो सूराँदी खुराकदे वन्ने-हूए सटकाँ-कन्ने अपणा पेट भरदा-था, तिस-नूँ होर कोई किछ ना देदा-था।

(अनुवाद)

एक मनुष्य के दो पुत्र थे। छोटे पुत्र ने अपने बूढे (बाप) से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे हिस्से मे आती है, वह मुझे दे दे।' उसने वह सम्पत्ति अपने दोनो पुत्रो को बाँट दी। जब छोटे पुत्र ने अपना बँटवारा ले लिया, तो दूर परदेश को चला गया। वहाँ जाकर उसने अपनी सम्पत्ति व्यर्थ खो दी। जब वह सारी सम्पत्ति खो बैठा, तो उस देश मे बडा अकाल पडा। वह बहुत कंगाल हो गया। तब वह उस देश के रहने वाले (किसी आदमी) के पास रहने लगा, उसने अपने खेतो मे उसे सूअरो को चराने भेजा। वह सूअरो के खाने से बचे हुए छिलको से अपना पेट भरता था, उसको और कोई कुछ न देता था।

# पोवाधी

'पोवाव' का अर्थ है 'पूरव', और पोवाधी पंजाबी वह पजाबी है जो पूर्वी पजाव के उस भाग मे वोली जाती है जिसे पोवाध कहते है।

अम्वाला ज़िले मे रोपड से लेकर व्यास के सगम तक, सतलुज नदी कुछ-कुछ पूर्व से पश्चिम की ओर वहती चलती है। इसके उत्तर मे जलवर दोआव पडता है। इसके दक्षिण मे लुधियाना और फीरोज़पुर के ज़िले है। फीरोज़पुर का पूरा ज़िला और लुधियाना का अधिकतर भाग मालवा नाम के क्षेत्र मे आते हैं। किन्तु लुधियाना का वह भाग जो नदी के निकट स्थित है, पोवाध कहलाता है। पोवाव वहुत आगे पूर्व तक फैला हुआ है। अम्वाला मे मोटे तौर पर यह घग्घर नदी तक पहुँचा हुआ है और उसके पार की भाषा हिन्दुस्तानी है। दक्षिण मे इसके अन्तर्गत पटियाला, नाभा और जीद रियासतो के वे भाग हैं, जो मोटे तौर पर ७६° पूर्वी देशातर रेखा के पूर्व मे उस प्रदेश तक, जहाँ हिन्दुस्तानी और वाँगरू वोली जाती हैं, पडते है। इस क्षेत्र मे हिसार ज़िले के कुछ सीमान्तवर्ती भाग भी सम्मिलित है। पछाडा मुसलमान, जो इस इलाके मे से वहती हुई घग्घर नदी के किनारे-किनारे वसे हुए है, पंजावी की एक अन्य वोली वोलते है जिसे राठी कहते है। उसका वर्णन अलग से किया जायगा।

इस क्षेत्र के दक्षिण मे हिसार का जिला है जिसकी प्रमुख भाषाएँ है वाँगरू और वागडी। केवल घग्घर के साथ-साथ और सिरसा तहसील के एक भाग मे पजावी पायी जाती है। उपर्युक्त अपवादो को छोडकर ७६° पूर्वी देशातर रेखा के पश्चिम का प्रदेश, सतलुज और व्यास के सगम तक, मालवा या जगल नाम से प्रसिद्ध है। इसकी अपनी वोली मालवाई नाम से विदित है जिसका वर्णन उपयुक्त स्थान पर किया जायगा।

पोवाधी पजावी वोलनेवालो की अनुमानित सख्या नीचे दी जा रही है—

| | |
|---|---|
| हिसार | १,४८,३५२ |
| अम्वाला | ३,३७,१२३ |
| कलसिया रियासत | १८,९३३ |

| | |
|---|---|
| नालागढ रियासत (पश्चिमार्ध) . . . | ३९,५४५ |
| मैलोग रियासत (पश्चिमार्ध) . . . . | ३,१९३ |
| पटियाला रियासत . . . . . | ८,३७,००० |
| जीद रियासत . . . . . . | १३,००० |
| कुल जोड | १३,९७,१४६ |

कलसिया के आँकडे अम्बाला ज़िले की सीमा के अन्तर्गत डेरा बस्सी के निकट के बोलने वालो के है। नालागढ और मैलोग शिमला की दो पहाडी रियासते है जो अम्बाला ज़िले के निकट पडती हैं। पजाबी उनके पश्चिमी भागो मे बोली जाती है। उनके पूर्वी क्षेत्रो मे जो भाषा है वह पश्चिमी पहाडी का हण्डूरी रूप है।

जैसा कि अपेक्षित है, पोवाधी का अमृतसर की आदर्श भाषा से प्रमुख अन्तर यह है कि यह पूर्वी अम्बाला और करनाल मे बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की बोलियो के पास पडती है। ज्यो-ज्यो हम पूर्व की ओर आगे बढते हैं त्यो-त्यो यह हिन्दुस्तानी या बाँगरू से अधिकाधिक सक्रान्त होती जाती है। सामान्य रूप से इनके बीच मे कोई स्पष्ट रेखा नही है, और भाषाएँ अज्ञात रूप से एक दूसरी मे विलीन होती जाती हैं। दूर पश्चिम की पोवाधी—वह जो पोवाध क्षेत्र मे बोली जाती है—लगभग वही है जो आदर्श भाषा, और यही वह भाषा है, जो अमृतसर की पजाबी की अपेक्षा, वस्तुत पजाबी भाषा के व्याकरणो का आधार रही है। पोवाधी के इस रूप के उदाहरण देने की आवश्यकता नही है।

पोवाधी के लिए मैं जीद रियासत के थाना कुलरन से दो नमूने दे रहा हूँ, पहला है अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर और दूसरा एक लोककथा। मैं देवनागरी लिपि मे लिखित, पश्चिमी अम्बाला से एक लोककथा, और फारसी लिपि मे लिखित, पटियाला रियासत के थाना करमगढ से दूसरी लोककथा भी दे रहा हूँ। आगे के पृष्ठो पर अम्बाला के शब्दो और वाक्यो की एक सूची मिलेगी। ये नमूने पोवाध क्षेत्र मे होनेवाले पजाबी के परिवर्तनो को अच्छी तरह प्रदर्शित करते हैं।

इनमे बहुत-से तत्त्व पडोस की पश्चिमी हिन्दी के प्रभाव के कारण है, जैसे अग्गे की जगह आगे, और आखणा की जगह कहना आदि शब्दो का छिटपुट प्रयोग। इसी प्रकार स्वर-मध्यग व के लिए म का व्यवहार भी पाया जाता है, जैसे आवाँगा, आऊँगा, के लिए आमांगा मे।

पश्चिमी हिन्दी वोलियो और राजस्थानी की तरह सम्प्रदान वनाने के लिए इसमे अधिकरणार्थक सवध कारक का प्रयोग पाया जाता है, जैसे ईहदे पाओ, इसको (ईहदे) पहनाओ (पाओ)।

सर्वनामो मे, पजावी के शुद्ध रूपो के साथ-साथ हमाँनूँ, हमको, तुमाँनूँ, तुम को, रूप मिलते है, और निजवाचक सर्वनाम सम्वन्ध कारक अपणा है, आपणा नही। मद का प्रयोग 'तव' और 'जव' दोनो के लिए होता है, ठीक ऐसे जैसे पश्चिमी हिन्दी वोलियो मे और राजस्थानी मे।

क्रियाओ मे सी की अपेक्षा था, वह था, अधिक व्यापक है, यद्यपि प्रयुक्त दोनो होते हैं। उत्तम पुरुष वहुवचन के अन्त मे कभी-कभी -आँ के स्थान पर पश्चिमी हिन्दी का -एँ आता है, जैसे होवैं, हम हो, छकें, हम खायें।

अन्य विशेषताएँ जिनकी खोज पश्चिमी हिन्दी के प्रभाव से सीधे नही हो सकती निम्नलिखित है—भलद (पटियाला), वैल, मे महाप्राणत्व। चुम्मिआँ, चूमा गया, जैसे शब्दो मे (कभी-कभी आदर्श पजावी मे भी पाया जानेवाला) भावे प्रयोग। विच्च, मे, का उच्चारण विचच करके। इस शब्द के आदि अक्षर का वहुधा लोप, जैसे खूह-विच्चो, कुएँ मे से, की जगह खूहचो, अथवा उन्हाँचो, उनमे से। सर्वनामो मे कभी-कभी तोहाडा, तुम्हारा, का और अन्यपुरुष सर्वनाम के तिर्यक् रूप के लिए ओह का प्रयोग। एवं महाप्राण का वहुधा विपर्यय, जैसे उहनूँ के लिए उन्हूँ, उनको, ओहदा के लिए ओधा, उसका, इहदा के लिए ईधा, इसका, जेहडा के लिए जेढ़ा, जो। अस्तित्ववाची क्रिया मे वर्तमानकाल का मध्यम पुरुष वहुवचन हो, तुम हो, की जगह प्राय: ओ होता है।

[सं० ७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना कुलरन, जींद राज्य)

### पहला उदाहरण

ਇੱਕ ਮਨੁੱਖਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਥੇ। ਉਨ੍ਹਾਂਚੋਂ ਲੌਢੇਨੇ ਪੇਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਕਿ ਓ ਪੇਓ ਮਾਲਦਾ ਹਿੱਸਾ ਜੋ ਮੈਨੂੰ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਮੈਨੂੰ ਦੇ। ਜਦ ਓਹਨੇ ਮਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਬੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜ੍ਹੇ ਦਿਨਾ ਬਿੱਚੋਂ ਲੌਢੇ ਪੁੱਤਨੇ ਸਾਰਾ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇੱਕ ਦੂਰਦੇ ਦੇਸਦਾ ਪੈਂਡਾ ਕਰਿਆ ਔਰ ਉੱਥੇ ਅਪਣਾ ਮਾਲ ਬਿਕਰਮੀ ਬਿੱਚ ਖੋਇਆ। ਔਰ ਜਦ ਸਾਰਾ ਗੁਮਾ ਚੁੱਕਾ ਉਸ ਦੇਸ ਬਿੱਚ ਬੜਾ ਮੰਦਵਾੜਾ ਪਿਆ ਓਹ ਕੰਗਾਲ ਹੋਣੇ ਲੱਗਿਆ। ਜਦ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਦਿੱਕ ਰਾਜੇਦੇ ਜਾ ਲੱਗਿਆ। ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਖੇਤਾ ਬਿੱਚ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਭੇਜਾ ਔਰ ਓਹਨੂੰ ਆਸ ਥੀ ਕਿ ਇਨ ਛਿਲਕ ਤੇ ਜੋ ਸੂਰ ਖਾਦੇ ਹਨ ਅਪਣਾ ਢਿੱਡ ਭਰੇ, ਕੋਈ ਉਸਨੂੰ ਨ ਦਿੰਦਾ ਥਾ। ਜੋ ਸੋਝੀ ਬਿੱਚ ਆ ਕੇ ਕਹਾ—ਮੇਰੇ ਪੇਓਦੇ ਬਹੁਤੇ ਮਿਹਨਤੀਆਨੂੰ ਬਾਲ੍ਹੀ ਰੋਟੀ ਹੈ, ਔਰ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈ ਉੱਠਕੇ ਅਪਣੇ ਪੇਓ ਕੋਲੇ ਜਾਊਂਗਾ ਔਰ ਉਨ੍ਹੂੰ ਕਹੂੰਗਾ ਓ ਪੇਓ ਮੈਨੇ ਰੱਬਦਾ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਬੁਰਾ ਕਰਿਆ ਹੈ। ਹੋਰ ਹਣ ਇਸ ਲੈਕ ਨਹੀ ਜੋ ਫਿਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਕਹਾਊਂ ਮੈਨੂੰ ਅਪਣੇ ਮਿਹਣਤੀਆ ਬਿੱਚੋਂ ਇੱਕਦੇ ਬਰਾਬੰਰ ਕਰ। ਫਿਰ ਉੱਠਕੇ ਅਪਣੇ ਪੇਓ ਕੋਲ ਚੱਲਿਆ। ਓਹ ਅੱਜੇ ਦੂਰ ਥਾ ਓਹਨੂੰ ਦੇਖਕੇ ਓਹਦੇ ਪੇਓਨੈਂ ਤਰਸ ਆਇਆ ਹੋਰ ਭੱਜਕੇ ਓਹਨੂੰ ਗਲ ਲਾ ਲਿਆ ਹੋਰ ਬਾਲ੍ਹਾ ਚੁੰਮਿਆ। ਪੁੱਤਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ ਓ ਪੇਓ ਮੈਨੇ ਰੱਬਦਾ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਬੁਰਾ ਕਰਿਆ, ਹੋਰ ਹੁਣ ਇਸ ਲੈਕ ਨਹੀਂ ਜੋ ਫਿਰ ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਕਹਾਊਂ। ਪੇਓਨੇ ਅਪਣੇ ਨੌਕਰਾਨੂੰ ਕਹਾ, ਚੰਗੇ ਤੇ ਚੰਗੇ ਕਪੜੇ ਕੱਢ ਲਿਆਓ, ਇਹਦੇ ਪਾਓ। ਹੋਰ ਈਹਦੇ ਹੱਥ ਬਿੱਚ ਛਾਪ, ਹੋਰ ਪੈਰਾ ਬਿੱਚ ਜੁੱਤੇ ਪਾਓ, ਹੋਰ ਅਸੀ ਛਕੇ ਹੋਰ ਖੁਸੀ ਹੋਵੈਂ ਕਿਉਂਕਰ ਮੇਰਾ ਏਹ ਪੁੱਤ ਮਰ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਜੀਵਿਆ ਹੈ, ਖੋਇਆ ਗਿਆ ਥਾ ਹਣ ਮਿਲਿਆ ਹੈ। ਫਿਰ ਓਹ ਖੁਸੀ ਕਰਨ ਲੱਗੇ॥

ਓਹਦਾ ਬੜਾ ਪੁੱਤ ਖੇਤ ਬਿੱਚ ਥਾ। ਜਦ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਇਆ, ਗਾਓਦੇ ਹੋਰ ਨੱਚਦਿਆਂਦੀ ਅਬਾਜ ਸੁਣੀ। ਫਿਰ ਇੱਕ ਨੌਕਰਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਪੁਛਿਆ, ਇਹ ਕੀ ਹੈ। ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ, ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਆਇਆ ਹੈ, ਹੋਰ ਤੇਰੇ ਪੇਓਨੇ ਬੜੀ ਰੋਟੀ ਕਰੀ ਹੈ, ਕਿਸ ਬਾਸਤੇ ਜੋ ਓਹਨੂੰ ਭਲਾ ਚੰਗਾ ਥਿਆਇਆ। ਓਹਨੇ ਗੁੱਸੇ ਹੋਕੇ ਨ ਚਾਹਾ ਜੁ ਅੰਦਰ ਜਾਵੇ। ਫਿਰ ਓਹਦੇ ਪੇਓਨੇ ਬਾਹਰ ਆਕੇ ਓਹਨੂੰ ਮਨਾਇਆ। ਓਹਨੇ ਪੇਓ ਤੇ ਜਬਾਬ ਦਿੱਤਾ

ਦੇਗਾ ਇਤਨੇ ਬਰ੍ਹੇ ਤੇ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਟੈਹਲ ਕਰਦਾ ਹਾ, ਔਰ ਕਦੇ ਤੇਰੇ ਕਹਣੇਦੇ ਬਾਹਰ ਨਹੀ ਚੱਲਾ, ਪਰ ਤੈਂ ਕਦੇ ਬੱਕਰੀਦਾ ਮੇਮਨਾ ਮੈਨੂੰ ਨਹੀ ਦਿੱਤਾ, ਜੋ ਅਪਣੇ ਮਿਤਰਾਂਦੇ ਨਾਲ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਾ, ਹੋਰ ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁੱਤ ਆਇਆ, ਜਿਹਨੇ ਤੇਰਾ ਮਾਲ ਕੰਜਰੀਆ ਵਿੱਚ ਖੋਇਆ, ਤੈਂ ਓਧੇ ਵਾਸਤੇ ਬੜੀ ਰੋਟੀ ਕਰੀ, ਓਹਨੇ ਓਹਨੂੰ ਕਹਾ, ਓ ਪੁੱਤ ਤੂ ਨਿਤ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੈ, ਹੋਰ ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੇਰਾ ਹੈ ਓਹ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਖੁਸੀ ਹੋਣਾ ਔਰ ਖੁਸ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਏ ਥਾ, ਕਿਉਂਕਰ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਮਰ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਜੀਵਿਆ ਹੈ, ਹੋਰ ਖੋਇਆ ਗਿਆ ਥਾ ਹੁਣ ਥਿਆਇਆ ਹੈ ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक्क मनुक्खदे दो पुत्त थे। उन्हाँचो लौढेने पेओनूं आखिआ कि 'ओ पेओ, मालदा हिस्सा जो मैं-नूं पहुचदा है, मैंनूं दे।' जद ओहने माल उन्हांनूं वण्ड दित्ता। थोड़े दिना-विच्चो लौढे पुत्तने सारा कट्ठा कर-के इक्क दूरदे देसदा पैंडा करिआ, और उत्थे अपणा माल विकरमी-विच्च खोइआ। और जद सारा गुमा-चुक्का, उस देस-विच वड़ा मंदवाड़ा पिआ, ओह कङ्गाल होणे लग्गिआ। जद उस देसदे इक्क राजेदे जा लग्गि-आ। ओहने ओहनूं खेता-विच्च सूर चारण भेजा। और ओहनूं आस थी कि, इन छिलकां-ते जो सूर खान्दे-हन अपणा ढिड्ड भरे; कोई उसनूं न दिन्दा था। जो सोझी-विच्च आ-के कहा, 'मेरे पेओदे बहुते मिहनतीआँनूं बाल्ही रोटी है, और मै भुक्खा मरदा-हाँ; मै उट्ठ -के अपणे पेओ-कोले जाऊँगा, और उन्हू कहूंगा, "ओ पेओ, मैंने रबदा तेरे कोल बुरा करिआ है होर हुण इस लैक नहीं जो फिर तेरा पुत्त कहाउँ, मैंनूं अपणे मिहनतीआँ-विच्चो इक्कदे बराबर कर।' फिर उट्ठ-के अपणे पेओ कोल चल्लिआ। ओह अज्जे दूर था, ओहनूं देख-के ओहदे पेओनूं तरस आइआ, होर भज्ज-के ओहनूं गल ला लिआ, होर बाल्हा चुम्मिआ। पुत्तने ओहनूं कहा, 'ओ पेओ, मैंने रबदा तेरे कोल बुरा करिआ होर हुण इस लैक नहीं जो फिर तेरा पुत्त कहाऊँ।' पेओने अपणे नौकरानूं कहा, 'चङ्गे ते चङ्गे कपड़े कड्ढ लिआओ, इहदे पाओ, होर ईंघे हत्थ-विच्च छाप, होर पैंरा-विच्च जुत्ते पाओ, होर असी छकें, होर खुसी होवें। किउँकर मेरा एह पुत्त मर-गिआ था, हुण जीविआ-है; खोइआ-गिआ था, हुण मिलिआ-है।' फिर ओह खुसी करन लग्गे।

ओहदा वडा पुत्त खेत-विच्च था। जद घरदे नेड़े आइआ, गाँओदे होर नच्चदि-आँदी अवाज सुणी। फिर इक्क नौकरनूं बुला-के पुछिआ, 'इह की है?' ओहने ओहनूं

कहा, 'तेरा भाई आइआ है; होर तेरे पेओने वड़ी रोटी करी है, किस वास्ते जो ओहनूँ भला-चङ्गा थिआइआ।' ओहने गुस्से हो-के न चाहा जो अन्दर जावे। फिर ओहदे पेओने बाहर आ-के ओहनूँ मनाइआ। ओहने पेओते जवाब दित्ता, 'देगाँ, इतने वहें-ते मै तेरी टैहल करदा-हाँ, और कदे तेरे कहणेदे बाहर नहीं चल्ला; पर तै कदे बकरीदा मेमना मैनू नहीं दित्ता, जो अपणे मित्राटे नाल खुसी मनावाँ। होर जद तेरा एह पुत्त आइआ जिहने तेरा माल कन्जरीआँ-विच्च खोइया, तै ओधे वास्ते वड़ी रोटी करी।' ओहने ओहनूँ कहा, 'ओ पुत्त, तू नित मेरे कोल है, होर जेढ़ा मेरा है ओह तेरा है; फिर खुसी होणा और खुस होणा चाहिए था, किउँकर तेरा भाई मर गिआ-था, हुण जीविआ-है होर खोइआ-गिआ-था, हुण थि-आइआ -है।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो वेटे थे। उनमे से छोटे ने बाप से कहा कि 'हे वाप, सम्पत्ति का अश जो मुझे आता है, मुझे दे।' जब उसने सम्पत्ति उन्हे बॉट दी, थोडे दिनो मे छोटे वेटे ने सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर के देश की यात्रा की और वहाँ अपनी सम्पत्ति वदचलनी मे खो दी। और जब सब कुछ खो चुका, उस देश मे वडा अकाल पडा, वह कगाल होने लगा। तब उस देश के एक राजा के यहाँ जा लगा। उसने उसे खेतो मे सूअर चराने भेजा। और उसे इच्छा थी कि इन छिलको से जो सूअर खाते है अपना पेट भरे, कोई उसे नही देता था। तब होश मे आकर कहा, मेरे वाप के बहुत-से श्रमियो को भरपूर रोटी (मिलती) है, और मैं भूखा मरता हूँ; मैं उठकर अपने वाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, "हे वाप, मैंने भगवान् का तेरे पास बुरा किया है, और अब इस लायक नही कि फिर तेरा वेटा कहलाऊँ, मुझे अपने श्रमियो मे से एक के समान कर।" फिर उठकर अपने वाप के पास चला। वह अभी दूर था, उसे देखकर उसके वाप को दया आयी, और दौडकर उसे गले लगा लिया, और वहुत चूमा। वेटे ने उसे कहा, "हे वाप, मैंने भगवान् का तेरे पास वुरा किया, और अब इस लायक नही कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ।" वाप ने अपने नौकरो से कहा, 'अच्छे से अच्छे कपडे निकाल लाओ, इसको पहनाओ, और इसके हाथ मे अँगूठी और पैरो मे जूता पहनाओ और हम लोग खायें और खुशी मनायें, क्योकि मेरा यह वेटा मर गया था, अब जिया है; खो गया था, अब मिला है।' फिर वे खुशी मनाने लगे।

उसका वडा वेटा खेत मे था। जब घर के निकट आया, गाने और नाचने वालो की आवाज सुनी। फिर एक नौकर को वुलाकर पूछा, 'यह क्या है?' उसने उसे कहा, 'तेरा भाई आया है और तेरे वाप ने वडा भोज किया है, इसलिए कि उसको भला-चंगा पाया है।' उसने क्रुद्ध होकर नही चाहा कि भीतर जाये। फिर उसके वाप ने वाहर आकर उसे मनाया। उसने वाप को जवाव दिया, 'देख तो, इतने वरसो से मैं तेरी सेवा करता हूँ, और कभी तेरे कहे से वाहर नही चला, पर तूने कभी वकरी का मेमना मुझे नही दिया कि अपने मित्रो के साथ खुशी मनाऊँ। और जब तेरा यह वेटा आया जिसने तेरी सम्पत्ति वेश्याओ मे खो दी, तूने उसके लिए वडा भोज किया।' उसने उसे कहा, 'हे पुत्र, तू सदा मेरे पास है, और जो कुछ मेरा है वह तेरा है, फिर तो खुशी मनाना और खुश होना चाहिए था, क्योकि तेरा भाई मर गया था, अव जिया है, और खो गया था, अव मिला है।'

[स० ८]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना कुलरन, जींद राज्य)

### दूसरा उदाहरण

ਇਕ ਆਦਮੀ ਧਾੜਵੀ ਥਾ। ਓਹ ਸਾਡੇ ਦੇਸ ਆਗਿਆ। ਓਧੇ ਮੁੜਦੇ ਹੁਏਦੇ ਮਨ ਬਿਚ ਆਈ ਚਾਰ ਪੰਜ ਰੁਪਏਦੀ ਰੂੰ ਲੇ ਚੱਲਾਂ। ਮੁੜ ਕੇ ਪਿੰਡ ਬਿਚ ਰੂੰ ਲੈਣ ਬੜ ਗਿਆ। ਇਕ ਬੁੱਢੀ ਬੈਠੀ ਕਤਦੀਂ ਥੀ। ਓਹਨੂੰ ਰੂੰ ਪੂਛੀ। ਓਹਨੇ ਆਖਿਆ ਹੈ ਭਾਈ ਏਹ ਬਾਣੀਏਨੂ ਬੋਲ ਮਾਰ ਲਿਆ। ਓਹ ਬਾਣੀਏਨੂੰ ਬੁਲਾ ਲਾਇਆ। ਓਹ ਬੁੱਢੀ ਬੋਲੀ ਏਨੂੰ ਰੂੰ ਜੋਖ ਦੇ॥ ਧਾੜਵੀ ਬੋਲਿਆ ਬੁੱਢੀ ਏਹਨੂੰ ਚਾਰ ਪੰਜ ਆਨੇ ਦੇ ਕੇ ਜੋ ਮੈਂ ਬੱਧ ਤੁਲਾ ਲੂੰ। ਤੂਹੀ ਕਿਉ ਨਹੀ ਜੋਖ ਦਿੰਦੀ। ਫਿਰ ਝੀਖੇਗੀ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਲੇ ਜਾ ਭਾਈ ਮੈਂ ਅਗੈਤ ਬਿਚ ਲੂੰਗੀ। ਓਹ ਕਹਿੰਦਾ ਅਗੈਤ ਕਿਹਨੇ ਦੇਖਾ ਹੈ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਮੈ ਦੇਖ ਆਈ ਹਾ। ਓਹ ਕਹਿੰਦਾ ਤੂੰ ਕਿੱਕਰ ਦੇਖ ਆਈ। ਬੁੱਢੀ ਕਹਿੰਦੀ ਧੀ ਜਮਾਈ ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ਹ ਬਸਦੇ ਥੇ। ਮੇਰੀ ਮੈਹ ਸੂਣੀ ਥੀ। ਓਨ੍ਹਾਦੀ ਸੂਈ ਹੁਈ ਥੀ। ਮੈਨੇ ਧੀਨੂੰ ਆਖਿਆ ਸੇਰ ਘੇਓ ਉਧਾਰਾ ਦੇ ਦੇ। ਜਿੱਦਣ ਮੇਰੇ ਦੂਧ ਹੋਗਿਆ ਤੈਨੂੰ ਦੇ ਦੂੰਗੀ। ਧੀਨੇ ਘੇਓ ਦੇ ਦਿੱਤਾ। ਫਿਰ ਓਹ ਮਰ ਗਈ। ਮੈ ਕੁਮਾਰੀਆ ਗਈ। ਓੱਥੇ ਗਈ ਹੁਈ ਧੀਨੇ ਫੜ ਲਈ। ਕਹਾ ਕਿ ਮੇਰਾ ਸੇਰ ਘੇਓ ਉਧਾਰਾ ਦਿੱਤਾ ਹੋਇਆ ਦੇ ਦੇ। ਮੈਨੇ ਕਹਾ ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ਹ ਕੀ ਹੈ। ਜਮਾਈਨੂੰ ਦੇ ਦੂੰਗੀ। ਮੇਰੇ ਕੋਲ੍ਹ ਬਸਦਾ ਹੈ। ਧੀ ਬੋਲੀ ਓਧਾ ਕੁਛ ਵਾਸਤਾ ਨਹੀਂ। ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੈਂ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਓਹ ਮੇਰਾ ਦੇ ਦੇ। ਫਿਰ ਸੇਰ ਭਰ ਮਾਸ ਪੱਟ ਬਿਚੋ ਮੇਰਾ ਲੈ ਕੇ ਖੈੜ੍ਹਾ ਛੱਡਿਆ। ਏਹ ਦੇਖਲੈ ਟੋਹਣਾਂ ਪੱਟ ਬਿਚ ਸਕੀ ਧੀਦਾ ਪਾਇਆ ਹੂਆ ਹੈ। ਤੂ ਰੂੰ ਬੱਧ ਘੱਟ ਲੈ ਜਾ ਅਗੈਤ ਲੈ ਲੂੰਗੀ। ਧਾੜਵੀਨੂੰ ਏਹ ਗਲ ਸੁਣ ਕੇ ਗਿਆਨ ਆ ਗਿਆ। ਰੂੰ ਲਿੱਤੀ ਨਹੀ। ਅਪਣੇ ਘਰਨੂੰ ਚੱਲਾ ਗਿਆ। ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਜੇੜ੍ਹਾ ਮਾਲ ਲੁਟਿਆ ਕਸੁਟਿਆ ਥਾ ਬਾਮਣਾਂ ਫਕੀਰਾਨੂੰ ਪੁੰਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਧਾੜਵੀਦਾ ਕੰਮ ਛੱਡ ਦਿੱਤਾ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक आदमी घाड़वी था। ओह् साडे देस आ-गिया। ओघे मुड़दे-हुएदे मन-बिच आई 'चार पञ्ज रुपएदी रूँ ले चल्लाँ।' मुड़-के पिण्ड-बिच रूँ लैण वड-गिआ। इक बुड्ढी बैठी कतदी-थी, ओहनूँ रूँ पूछी। ओहने आखिआ, 'हे भाई, एह् बाणीएनूँ बोल मार लिआ।' ओह् बाणीएनूँ बुला लाइआ। ओह् बुड्ढी बोली, 'एनूँ रूँ जोख दे।' घाडवी बोलिआ, 'बुड्ढी, एहनूँ चार पञ्ज आने देके जो मैं बद्ध तुला लूँ। तू-ही किउँ नहीं जोख दिन्दी, फिर झीखेंगी।' बुड्ढी कहिन्दी, 'ले-जा, भाई, मैं अगत-बिच लूँगी।' ओह् कहिन्दा, 'अगन्त किहने देखा है?' बुड्ढी कहिन्दो, 'मै देख आई-हाँ।' ओह् कहिन्दा, 'तूँ किक्कर देख आई?' बुड्ढी कहिन्दी, 'धी जमाई मेरे कोल वसदे-थे; मेरी मैंह् सूणी थी, उन्हादी सूई-हुई थी; मैंने धीनूँ आखिआ, "सेर घेओ उधारा दे-दे; जिद्दण मेरे दुध हो-गिआ, तैनूँ दे-दूँगी।" धीने घेओ दे-दित्ता। फिर ओह् मर-गई। मैं कुमरीआँ गई; ओत्थे गई-हुई धीने फड़-लई; कहा कि, "मेरा सेर घेओ उधारा दित्ता-होइआ, दे-दे।" मैंने कहा, "मेरे कोल की है? जमाईनूँ दे-दूँगी; मेरे कोल वसदा है।" धी बोली, "ओघा कुछ वास्ता नहीं। जेढा मैं दित्ता है, ओह मेरा दे-दे।" फिर सेर भर मास पट्ट विचो मेरा लै-के खैढा छड्डिआ। एह् देख-लै, टोहणाँ पट्ट-बिच सकी धीदा पाइआ-हुआ है। तू रूँ बद्ध-घट्ट लै-जा, अगन्त लै-लूँगी।' घाडवीनूँ एह् गल सुण-के गिआन आ-गिआ; रू लित्ती नहीं; अपणे घरनूँ चल्ला-गिआ। घर जा-के जेढा माल लूटिआ कसूटिआ था, बामणां फकीराँनूँ पुन्न कर दित्ता, घाड़वीदा कम्म छड्ड दित्ता।

(अनुवाद)

एक आदमी बटमार था। वह हमारे देश आ गया। वापसी पर उसके मन मे आया, 'चार-पाँच रुपये की रूई ले चलूँ।' लौटकर गाँव मे रूई लेने घुस गया। एक बुढिया बैठी कात रही थी, उससे रूई (के बारे मे) पूछा। उसने कहा, 'हे भाई, इस बनिये को बुला ला।' वह बनिये को बुला लाया। वह बुढिया बोली, 'इसे रूई तोल दे।' बटमार बोला, 'बुढिया, इसे चार-पाँच आने देकर यदि मै अधिक तुलवा लूँ (तो क्या)? तू ही क्यो नही तोल देती, फिर झीखेगी।' बुढिया कहती है, 'ले जा, भाई, मैं अगले लोक मे लूंगी।' वह कहता है, 'अगला लोक किसने देखा है?' बुढिया कहती है, 'मैं देख आई हूँ।' वह कहता है, 'तू कैसे देख आई?' बुढिया कहती है, 'लडकी और दामाद मेरे पास रहते थे, मेरी भैंस ब्याने वाली थी, उनकी ब्यायी हुई

थी, मैंने लडकी से कहा, "सेर भर घी उधार मे दे दे, जब मेरे दूध हो गया (तो) तुझे दे दूंगी।" बेटी ने घी दे दिया। तब वह मर गई। मैं प्रेतलोक गई, वहाँ गई हुई बेटी ने पकड़ लिया; कहा कि "मेरा एक सेर घी उधार मे दिया हुआ दे दे।" मैंने कहा, "मेरे पास क्या है? दामाद को दे दूंगी, मेरे पास (ही तो) रहता है।" लड़की बोली, "उसका कोई मतलब नही। जो मैंने दिया है, वह मेरा दे दे।" तब सेर भर मेरा मास मेरी जाँघ मे से लेकर जान छोडी। यह देख ले, गड्ढा जाँघ मे (जो) सगी बेटी का किया हुआ है। तू रूई कम-बेश ले जा, अगले लोक मे ले लूंगी।' बटमार को यह सुनकर ज्ञान आ गया; रूई ली नही, अपने घर को चला गया। घर जाकर जो माल-धन लूटा-खसोटा था, ब्राह्मणो-फकीरो को दान दे दिया, बटमार का काम छोड़ दिया।

पोवाधी का निम्नलिखित उदाहरण अम्बाला से प्राप्त हुआ है। इसे मूलतः देवनागरी अक्षरो मे लिखा गया और वैसे ही यहाँ दिया जा रहा है।

[स० ९]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

पोवाधी बोली (जिला अम्बाला)

इक जुलाहेदी अद्धी रातनूं अक्ख खुल गई। अपणी जुलाही नूं केहा के मैंनूं डोडे मल के दे। तीमीने केहा के मैं-ते हुण नहीं उठ हुन्दी। जुलाहे ने फेर केहा के हुण तूं मैंनूं डोडे मल के देवे ताँ मैं तैंनूं हजार हजार रुपयें-दिआं चार वाताँ सुणावाँ। जुलाही ने डोडे मल के दित्ते ओर हुक्का भर के दित्ता। जुलाहा वाते सुणावन लग्गिआ। उस वेल्हे शहरदे बादशाहदा पुत्त गली विच्च जांदा था। जुलाहेदी गल्ल सुण कर सोचिआ के इसदिआँ गल्लाँ सुण के जाणा है के एह केहिआँ गल्लाँ सुणोदा है। जुलाहेने चार गल्लाँ सुणाइआं। १. जेहड़ा आदमी अपणी मुटियार तीमीनूं

पेओके छड्डे ओह अहमक है। २ जो अपणे ते वडे दे नाल यारी लावे ओह अहमक है। ३ जो विण पुछे पच वणे ओह अहमक है। ४ जो घर मे हुदे सुदे लड़ वन्न्ह के न तुरे ओह अहमक है। जुलाहा वातॉं सुणा के सो गिआ।

(अनुवाद)

एक जुलाहे की आधी रात को आँख खुल गयी। अपनी जुलाहिन से कहा कि मुझे (पोस्त की) छीमी मलकर दे। स्त्री ने कहा कि मुझसे अब उठा नही जाता। जुलाहे ने फिर कहा कि अब तू मुझे छीमी मलकर दे[1] तो मैं तुझे हजार-हजार रुपये की चार बाते सुनाऊँ। जुलाहिन ने छीमी मलकर दी और हुक्का भरकर दिया। जुलाहा बाते सुनाने लगा। उस समय शहर के बादशाह का बेटा[2] गली मे जा रहा था। जुलाहे की बात सुनकर सोचने लगा कि इसकी बातें सुनकर जाना होगा कि यह कैसी बाते सुनाता है। जुलाहे ने चार बातें सुनायी। १ जो आदमी अपनी जवान स्त्री को मायके छोडे वह मूर्ख है। २ जो अपने से बडे के साथ मैत्री करे, वह मूर्ख है। ३ जो बिना पूछे पच बने वह मूर्ख है। ४. जो घर मे (धन) रहते बिना पल्ले बाँधे (यात्रा पर) चल पडे, वह मूर्ख है। जुलाहा बातें सुनाकर सो गया।

१. पोस्त की छीमी पानी मे मलकर एक पेय बनाया जाता है।

२ जुलाहे को भारतीय लोककथाओ मे मूर्ख माना जाता है, लेकिन शाहजादा उसकी बातें सुनकर बाद मे लाभान्वित होता है।

[स० १०]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

पोवाधी बोली (थाना करमगढ, पटियाला राज्य)

(फारसी लिपि)

دیکھو کھتے ھتھہ نال مّنا دے وکھیا ہے سجے ھتھہ وچہ پرانی ہے -
سامنے درخت دے ھیٹھ حقہ ار پانی دا گھڑا پیا ہے - اوہے ھی اک ھلدڈا
بیٹھا ہے - کرساں بچارہ تھوڑي جی رات تے اوٹھیا ہے - ھل اور بہلداں
نوں لیکے تڑے تڑے کھیت پر آن بہونچیا ہے - جد سورج سر پر آوندا
ہے - تاں گھروالي روٹی لیوندي ہے - ایہہ ھل کھول دندا ہے - بہلداں
نوں چارہ پوندا ہے - اپ ھتھہ مدہہ دھوے ٹھنڈا ھوندا ہے - روٹی کھاندا
ہے - حقہ پیندا ہے - بہلداں نوں پانی پلوندا ہے - پیکے تھوڑا جیہا چر ارام
لیندا ہے - گھروالي ساگ، سوگ لیکے چلي جاندي ہے - کم نتہا ھوندا ہے -
تاں بچارہ اِسي دھندے وچہ دن پورا کردندا ہے - نہیں تاں ھور کم کار
کردا ہے - جد سورج چھپن لگدا ہے تاں ھل اور بہلداں نوں لیکے گھر
آوندا ہے - سر پر چارہ دي گٹھڑي لیوندا ہے - بہلداں دے آگے چارہ پوندا
ہے - گھروالي دھار کڈھدی ہے - روٹي پکوندي ہے - ایہہ کھوسي کھوسی نال
بچاں وچہ بیٹھہ کے کھاندا ہے - پھیر ایہے جیہے سواد نال پیر پسار کے
سوندا ہے اک بادشاہاں نوں پھلاں دي چھیجاں پر بھی نصیب نہیں *

(नागरी रूपान्तर)

देखो, खव्वे हत्थ नाल मुन्ना दव रक्खिआ-है, सज्जे हत्थ विच पुरानी है। सामने दरख्तदे हेठ हुक्का अर पनीदा घड़ा पिआ -है। उत्थे-ही इक्क मुण्डा वैठा है। किरसान विचारा थोड़ा-जी रात-ते उठिआ-है। हल और भल्दाँनूं ले-के, तडके-तड़के खेत-पर आन पहुँचिआ है। जद सूरज सिर-पर आउन्दा है, ताँ घर-वाली रोट्टी लिओंदी है। एह हल खोल-दिन्दा-है। भल्दाँ-नूं चारा पौन्दा-है। आप हाथ मुँह धो-के ठण्डा होन्दा-है। रोट्टी खान्दा-है। हुक्का पींदा-है। भल्दाँ-नूं पानी पलोन्दा-है। पै-के थोड़ा-जेहा चिर अराम लिन्दा-है। घर-वाली साग-सूग ले-के चली जान्दी है। कम्म वुहता होन्दा -है। ताँ विचारा इसी धन्धे-विच्च दिन पूरा कर-दिन्दा-है। नहीं-ताँ होर कम्म-कार करदा-है। जव सूरज छिपन लगदा-है, ताँ हल और भल्दाँ-नूं ले-के घर आउन्दा-है। सिर-पर चारा दी गठरी लिऔन्दा-है। भल्दाँ-दे आगे चारा पौंदा-है। घर-वाली धार कड्ढदी-है। रोट्टी पकौन्दी-है। एह खुसी-खुसी वाल-वच्चाँ-विच्च वैठ-के खान्दा है। फिर एहे जेहे सुवाद नाल पैर पसार-के-सोन्दा है, इक बादशाहाँ-नूं फुल्लाँ-दी छीजाँ-पर भी नसीव नहीं।

(अनुवाद)

देखो, वाये हाथ से (हल के) हत्थे को दवा रखा है, दाहिने हाथ मे चावुक है। सामने पेड के नीचे हुक्का और पानी का घडा पडा है। वही एक लडका वैठा है। किसान वेचारा थोडी-सी (वची) रात से उठा हुआ है। हल और बैलो को लेकर तडके-तडके खेत पर आ पहुँचा है। जव सूरज सिर पर आता है, तो घर वाली रोटी लाती है। यह हल खोल देता है। वैलो को चारा डालता है। आप हाथ-मुँह धोकर ठण्डा होता है। रोटी खाता है। हुक्का पीता है। वैलो को पानी पिलाता है। लेटकर थोड़ी सी देर आराम लेता है। घर वाली साग-वाग लेकर चली जाती है। काम वहुत होता है तो वेचारा इसी धन्धे मे दिन पूरा कर देता है, नही तो और कामकाज करता है। जव सूरज छिपने लगता है, तव हल और वैलो को लेकर घर आता है। सिर पर चारे की गठरी लाता है। वैलो के आगे चारा डालता है। घर वाली दूध दुहती है। रोटी पकाती है। यह खुशी-खुशी वाल-वच्चो मे वैठकर खाता है। फिर ऐसे मजे के साथ पैर पसार कर सोता है, कि वादशाहो को फूलो की सेज पर भी नसीव (भाग्य मे) नही।

# राठी

वे मुसलमान जातियाँ, जो पश्चिम से आयी हुई वतायी जाती हैं, और जो अव ज़िला हिसार मे घग्घर वादी मे वस गयी है, पछाडा या पछाही एव राठ या निष्ठुर कही जाती है। जैसा कि उनके इस दूसरे नाम से द्योतित होता है, वे लोग वडे क्रूर होते हैं। उनकी भाषा पछाडी या राठी नाम से विदित है। ऐसी ही भाषा जीद रियासत के थाना कुलरन मे घग्घर की वादी मे बोली जाती है। यहाँ पर उसे जाण्ड या नैली कहते है। नैली सम्भवत नाली ही है जो कि घग्घर वादी का स्थानीय नाम है। मैं जाण्ड नाम की व्युत्पत्ति नही जानता, हो न हो इसका सम्वन्ध जण्ड (झाड़ी) से है जो कि इस जगली इलाके मे खूब उगती है।

किसी भी नाम से पुकारे, पछाडी, राठी, जाण्ड या नैली, है यह वही भाषा, अर्थात् पोवाघी पजावी, जिसमे इसके तुरन्त पूर्व मे बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली के भारी सम्मिश्रण हैं। उच्चारण मे अनुनासिक ध्वनियो का रुझान है। यत्र-तत्र इसके तुरन्त पश्चिम मे वोली जाने वाली मालवाई पजावी से गृहीत कोई रूप मिल जाता है।

बोलने वालो की सख्या इस प्रकार बतायी गयी है—

| | |
|---|---|
| हिसार (राठी) . . . . | ३६,४९० |
| जीद (जाण्ड) . . . | २,५०० |
| योग | ३८,९९० |

मैं इस बोली के तीन नमूने दे रहा हूँ,—हिसार से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा का एक भाग और एक लोककथा, और जीद से एक दूसरी लोककथा। इनसे इस वोली की सम्मिश्रित विशेषता का परिचय मिल जाता है। जैसा कि अपेक्षित है, जीद के नमूने मे दूसरो की अपेक्षा पश्चिमी हिन्दी का प्रभाव अधिक है।

इस मिश्रित भाषा की अधिक विस्तार से चर्चा करना अनावश्यक है। इस वात का ध्यान रखना पर्याप्त होगा कि सम्वन्ध कारक कभी तो-का जोडने से बनता है

और कभी -दा जोडने से। सम्वन्व कारक मेरे का तिर्यक् रूप (या अधिकरण) 'मुझको' के अर्थ मे प्रयुक्त होता है, अत जाट-के, जाट को। सम्प्रदान का चिह्न है नूँ या ने। कभी कभी बाँगरू साँ, मैं हूँ, सै, वह है, मिलता है। -गी वर्तमान काल मे भी प्रयुक्त होता है भविष्यत् मे भी। जैसे आएगी, वह आती है, मालवाई भविष्यत् जाँसाँ, जाऊँगा, भी चलता है। घल्लणा, भेजना, का भूतकृदन्त घत्ता है, घल्लिआ नही।

चाँहाँदा, चाहता; आऊँदाँ, आता, जाँसाँ, जाऊँगा, मे अनुनासिक उच्चारण और (दूसरे नमूने के) वढ़े के स्थान पर बधे मे ढ या ढ़ के लिए दन्त्य ध का प्रयोग उल्लेखनीय है।

[स० ११]

**भारतीय आर्य परिवार** **केन्द्रीय वर्ग**

## पंजाबी

**राठी बोली** **(जिला हिसार)**

### पहला उदाहरण

इक आदमी ते दोय पुत्र सन। उन्हाँ-चूँ लोडा पुत्रने आपदे पेवनूँ आख्या केड़ा माल मेंनूँ आउँदाँ है मैंनूँ दे। पेवने माल लोडे पुत्रनूँ वड दित्ता। थोडे दियाँ मगरूँ सारा माल इकट्ठा करके परदेस जाँदा रहा। उथें वद-खोई व भेडे कामाँ विच सारा माल गँवाँ दित्ता। सारा माल गवाँ बेठा के कुछ न रहा। उस देस विच बुरा काल पया। वुह बुख मरण लगा। फेर उस देसदे सिरदार कोलो गोला जा लग्या। उस सिरदार ने आपदे खेतडाँदे विच सूराँदा छेड़ू कर दित्ता। कडे वुह छिल सूर खाँदे वुह छिल भी उसनूँ नाँ थियाये। वुह चाँहाँदा सी के यह छिल मेंनूँ थियाँ जाँय तो उसदे नाल ढिड भर लेवाँ। वुह छिल भी उसनूँ कोई नं ही देदाँ सी।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो पुत्र थे। उनमे मे छोटे पुत्र ने अपने बाप से कहा जो माल मुझे आता है मुझे दे। बाप ने माल छोटे पुत्र को बाँट दिया। थोड़े दिनो बाद सारा माल इकट्ठा करके परदेस जाता रहा। वहाँ बद-चलनी और बुरे कामो मे सारा माल गँवा दिया। सारा माल गँवा बैठा तो कुछ न रहा। उस देस मे बुरा अकाल पडा। वह भूखो मरने लगा। तब उस देश के सरदार के पास नौकर जा लगा। उस सरदार ने अपने खेतो मे सूअरो का चरवाहा रख लिया। जो छिलके सूअर खाते वे छिलके भी उसको न मिलते थे। वह चाहता था कि ये छिलके मुझे मिल जायँ तो उनसे पेट भर लूँ। वे छिलके भी उसे कोई नही देता था।

[स० १२]

**भारतीय आर्य परिवार** **केन्द्रीय वर्ग**

## पंजाबी

**राठी बोली** **(जिला हिसार)**

### दूसरा उदाहरण

एक जाट के एक जाटनी थी। जाट जद खेत मे बग जाँदा तो पाछे ते मोहन-भोग चूर्मा कर के खाँदी। और साँझनै जाट जद आँदा जाटनी जाटनै कहँदी मै तो मरुँगी मेरे तो रोग हो गया। सिर दूखे। पेट दूखे। पैर फूटें। किसे वैदनै या स्यानेनै दिखा ओपरी पूछा करा। जद जाट मन मे सोची इसका मास और गुल्ला तो रोज बधे और यिह कहे मेरे रोग लाग गया। यह केह बान सै। एक दिन जाट पर्स मे सो गया। खेत न गया। थोड़ी वार पाछे घरॉ गया। तो जाटनी मोहन-भोग करदी पाई। जद जाटनै सोची इसका इलाज बधे तो ठीक लागे। जद जाट एक फकीर पा गया और कहा मेरी जाटनी मस्ती होई आएगी, मोहन-भोग

या चूर्मा तो खावे और जद साझनै खेत ते मै आऊँ मेरे जीनै कलह वनावे। जद फकीरनै कही तौ चार सूत की कूकडी लीआ, मै तन्नै मत्र के दे दूंगा। तो जाट चार कूकडी फकीरनै दे आया। तो फकीर वें कूकडी पढ के जाटनै दे दी। जाटने सुफे के चारो कोनिओमे चारो कूकडी घर दी। जाट कूकडी धर के वाहिर चला गया और कह गया मै किसे वैदने बुलान जाँसूँ। रात पडे आऊँगा। जाट तो चला गया तो जाटनी पाछै ते सुफे मे वडी। जद एक कूकडी बोली कि आई है। जद दूसरी वोली कि आन दे। जद तीसरी बोली कि डरी नही। जद चौथी बोली डरे तो खाये क्यो। इसे तरियां जाटनी चार या पाच वार वडी तो कूकडियाँ इसे तराँ बोली। जद जाटनी भैभक हो के खाट मे ढै पडी। इतने मे जाट आ गया और कहा कि वैद तो तडके आवेगा। आज कोई नही आँदा। जद जाटनी बोली तै नपूता यह वला काढ। मै तो आछी सूँ। जद जाट चारो कूकडियाँ काढ कर फकीरनै दे आया।

(अनुवाद)

एक जाट की एक जाटिनी थी। जाट जब खेत मे चला जाता तो पीछे से मोहन-भोग और चूरमा वनाकर खाती। और साँझ को जाट जब आता जाटिनी जाट से कहती, 'मै तो मर रही हूँ। मुझे रोग हो गया (है)। सिर मे दर्द है। पेट मे दर्द है। पाँव फट गये है। किसी वैद्य या हकीम को दिखा के जादू-टोना कराओ।' तब जाट ने मन मे सोचा (कि) इसका मास और हाड तो नित्य वढता जाता है और यह कहती है मेरे रोग लग गया है। यह क्या ढग है। एक दिन जाट चौपाल मे सो गया—खेत मे नही गया। थोडी देर वाद घर जा पहुँचा तो जाटिनी मोहनभोग वना रही थी। तव जाट ने सोचा (कि) इससे इसका इलाज हो जाय तो अच्छा हो। तव जाट एक फकीर के पास गया और कहा कि मेरी जाटिनी मस्तानी हो रही है, मोहनभोग या चूरमा तो खाती है और जब सांझ को मैं खेत से आता हूँ तो मेरे जी के लिए कल्ह पैदा करती है। तव फकीर ने कहा, 'तू चार सूत की अटी ले आ, मैं तुझे मन्त्रित करके

वह दूँगा।' तो जाट चार अटियाँ फकीर को दे आया। तो फकीर ने वे अटियाँ (मन्त्र) पढकर जाट को दे दी। जाट ने कमरे के चारो कोनो मे चारो अटियाँ रख दी। जाट अटियाँ रखकर वाहर चला गया और कह गया, 'मैं किसी वैद्य को वुलाने जाता हूँ। रात पडने पर आऊँगा।' जाट तो चला गया, तव जाटिनी वाद मे कमरे मे घुसी। तव एक अटी वोली कि 'आई है ।' इसके वाद दूसरी वोली कि 'आने दो।' इसके वाद तीसरी वोली कि '(यह) डरी नही।' तो चौथी वोली, 'डरे तो खाये क्यो।' इसी तरह जाटिनी चार या पाँच वार भीतर गयी तो अटियाँ इसी तरह से वोलीं। तव जाटिनी भयभीत होकर खाट मे गिर पडी। इतने मे जाट आ गया और वोला कि वैद्य तो सुवह आयेगा। आज कोई नही आता। तव जाटिनी वोली, 'नपूते, इस वला को निकाल। मैं तो अच्छी-भली हूँ। तव जाट चारो अटियाँ निकालकर फकीर को दे आया।

[स० १३]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

जाण्ड बोली (जींद राज्य)

### तीसरा उदाहरण

ਇਕ ਰਾਜੇ ਕਾ ਛੋਰਾ ਬਿਯਾਹ ਨ ਕਰਾਵੇ। ਰਾਜਾ ਅੋਹਲਕਾਰਾਨੂੰ ਕਹਣ ਲਗਿਆ, ਇਨੂੰ ਸਮਝਾਓ ਬਿਯਾਹ ਕਰਾਵੇ, ਐਹਲਕਾਰਾਨੇ ਤੀਵੀਆਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਜਿਸ ਜਾਗਾ ਵਾਹਿ ਲੰਘਿਆ ਕਰਦਾ ਲਾ ਦੀਆ। ਇਕ ਬਚਿੱਤਰ ਕੋਰ ਧੀ ਜੱਟ ਕੀ ਤਸਵੀਰ ਪਸੰਦ ਕਰਕੇ ਵਾਹਿਨੇ ਹਾ ਕਰ ਲੀ ਉਨੂੰ ਬਿਯਾਹਣ ਚੜ੍ਹ ਗਏ। ਇੱਕ ਭਠਿਯਾਰੀ ਛੋਰੇਦੀ ਯਾਰ ਥੀ ਵਾਹਿ ਭੀ ਗੈਲ ਚਲੀ ਗਈ ਉੱਨੇ ਕਹਿਆ ਪਹਿਲਾ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰਨੂੰ ਮੈ ਦੇਖ ਆਵਾ। ਦੇਖਕੇ ਕਹ ਦੀਆ ਵਾਹਿ ਬਦਸਕਲ ਹੈ ਤੂੰ ਅੱਖਾ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਫੇਰੇ ਲਈਂ। ਉੱਨੇ ਅੱਖਾਂ ਦੁਖਦੀਆ-ਦਾ ਬਹਾਨਾ ਕਰਕੇ ਪੱਟੀ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਫੇਰੇ ਲੇ ਲੀਏ। ਬਿਯਾਹ ਕੇ ਜਦ ਅਪਣੇ ਘਰ ਆਏ ਰਾਤ-ਨੂੰ ਵਾਹਿ ਉਸਕੇ ਪਾਸ ਗਈ। ਛੋਰੇਨੇ ਅੱਖਾ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਕਹ ਦੀਆ ਪਾਦੀਆ ਪੈ ਰੌਹ। ਤਿਨ ਦਿਨ ਵਾਂਹਿ ਇਸੀ ਤਰਾਂ ਪਾਦੀਆ ਪੈ ਦੀ ਰਹੀ। ਉੱਨੇ ਦਲੀਲ ਕਰੀ ਅੱਖਾ ਖੁਲਾਵਾ। ਵਾਹਿ ਰੋਜ ਸਰਾਏ ਮੈਂ ਭਠਿਯਾਰੀ ਕੇ ਪਾਸ ਰਹਾ ਕਰਦਾ। ਬਚਿੱਤਰ ਕੋਰ ਦਹੀ ਬੇਚਣ ਵਾਲੀ ਗੁੱਜਰੀ ਬਣਕੇ ਉਸ ਸਰਾਏਂ ਮਾਂਹਿ ਗਈ। ਵਾਂਹਿ ਸਕਲ ਦੇਖਕੇ ਬਹੁਤ ਤੜਫਿਆ ਪੁਛਣ ਲਗਿਆ ਜੋ ਕੋਈ ਰੱਖੇ ਤੂੰ ਰਹਿ ਜਾਏ। ਉਨੇ ਕਹਾ ਹਾ। ਛੋਰੇਨੇ ਕਹਾ ਤੇਰਾ ਡੇਰਾ ਕਿੱਥਾ। ਉੱਨੇ ਕਹਾ ਪਾਦੀ ਕੀ ਸਰਾਂਇ ਮਾਂਹਿ ਵਾਹਿ ਪੁਛਦਾ ਫਿਰਾ ਪਤਾ ਨਹੀ ਲਗਿਆ। ਰੋ ਪਿੱਟ ਕੇ ਘਰ ਮਾ ਆਣ ਬੜਾ। ਰਾਤਨੂੰ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਜਦ ਗਈ ਫਿਰ ਅੱਖਾ ਬੰਨ੍ਹ ਲਈਆ। ਵਾਂਹਿ ਪਾਂਦੀਆਂ ਪੈ ਰਹੀ। ਤੜਕੇ ਉੱਠਕੇ ਕਹਣ ਲਗੀ ਅੋਹਮਕ ਥਾ ਸਮਝਾ ਨਹੀ। ਘੋੜੇ ਪਰ ਚੜ੍ਹਕੇ ਆਦਮੀ ਕੀ ਸਕਲ ਮਾਹਿ ਵਾਹਿ ਸਰਾਂਇ ਮਾਹਿ ਫਿਰੇ ਗੋਈ। ਓਨ੍ਹੇ ਪੁਛਿਆ। ਉਰੇ ਰਾਜੇ ਕਾ ਛੋਰਾ ਹੈ। ਅਰਦਲੀਆਨੇ ਕਹ ਦੀਆ ਹੈਗਾ। ਉੱਨੇਂ ਕਹਾ ਕਹ ਦੇਓ ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿ ਬੁਲਾਵੇ ਹੈ। ਵਾਂਹਿ ਉਸਕੇ ਪਾਸ ਆ ਗਿਆ। ਦੋਏਂ ਘੋੜਿਆਂ ਪਰ ਚੜ੍ਹਕੇ ਸਕਾਰਨੂੰ ਚਲੇ ਗਏ। ਦਾਬਨ ਮਾਹਿ ਜਾਕੇ ਸਕਾਰ ਮਾਰਿਆ। ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿਨੇ ਸਕਾਰ ਪਕੜਿਆ ਵਾਹਿ ਹਲਾਲ ਕਰਨ ਲਗਿਆ। ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿਕੀ ਉਂਗਲੀ ਵੱਢ ਗਈ ਛੋਰੇਨੇ ਅਪਣੇ ਸਾਫੇ ਬਿੱਚੋ ਕਪੜਾ ਫਾੜਕੇ ਉਂਗਲੀ ਬਨ੍ਹ ਦੱਈ ਔਰ ਕਹਣ ਲਗਿਆ ਮੇਰਾ ਕਲੇਜਾ ਕਟ ਗਿਆ। ਦੋਏ ਸਹਰਨੂੰ ਚਲੇ ਆਏ। ਪਹਿਲਾ ਛੋਰੇਦਾ ਘੋੜਾ ਡਜਾ ਕਰ ਦਾਖ ਕੇ ਉਨੂੰ ਖੜਾ ਕਰਕੇ ਬਚਿੱਤਰ ਸਾਹਿਨੇ ਘੋੜਾ ਦਬੱਲਿਆ ਔਰ ਘਰ ਮਾਂਹਿ ਆਨ ਬੜਿਆ। ਵਾਹਿ ਉਡੀਕ ਕੇ ਸਰਾਂਇ ਮੌਹ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਸੰਝਨੋ ਜਦ ਘਰ ਆਏ ਬਚਿੱਤਰ ਕੌਰ ਕਹਣ ਲਗੀ ਕਿੱਥੇ ਪਦਾ।

(नागरी रूपान्तर)

इक राजे-का छोरा बियाह न करावे। राजा ऐहलकारांनूँ कहण लगिआ, 'इन्नूँ समझाओ, बियाह करावे।' ऐहलकारांने तीवीआँदीआँ तस्वीरां जिस जागा वाहि लघिआ-करदा ला-दीआँ इक बचित्तर कौर, धी जट्ट-की तस्वीर पसिन्द कर-के वाहिनें 'हाँ' कर-ली। उन्नूँ बियाहण चढ-गए। इक्क भठियारी छोरेदी यार थी, वाहि भी गैल चलि-गई। उन्ने कहिआ, 'पहिलाँ बचित्तर कौरनूँ मैं देख आवाँ।' देख-के कह-दीआ, 'वाहि बद सकल है, तूँ अक्खाँ बन्ह -के फेरे लईं। उन्ने अक्खाँ दुखदीआँदा वहाना कर-के पट्टी बन्ह-के फेरे ले-लीए। बियाह-के जद अपणे घर आए, रातनूँ वाहि उसके पास गई। छोरेने अक्खाँ बन्ह-के कह-दीआ, 'पाँदीआँ पै रौह।' तिन दिन वाहि इसी तराँ पाँवीआँ पैंदी रही। उन्ने दलील करी, 'अक्खाँ खुलावाँ।' वाहि रोज सराएँ-मैं भठियारी-के पास रहा-करदा। बचित्तर कौर दहीं वेचण-वाली गुज्जरी वण-के उस सराएँ-माँहि गई। वाहि सकल देख-के बहुत तडफिआ। पुछण लगिआ, 'जो कोई रक्खे, तूँ रहि-जाएँ?' उनने कहा, 'हाँ।' छोरेने कहा, 'तेरा डेरा कित्थाँ?' उनने कहा, 'पाँदी-की सराँइ-माँहि।' वाहि पुछदा फिरा, पता नहीं लगिआ। रो-पिट्ट-के घर-माँ आण-बडा। रात-नूँ बचित्तर कौर जद गई, फिर अक्खाँ बन्ह-लईआँ। वाहि पाँदिआँ पै रही। तडके उट्ठ-के कहण लगी, 'ऐहमक था। समझा नहीं।' घोडे-पर चढ-के आदमी-की सकल-माँहि वाहि सराँइ-माँहि फिर गई। ओन्हे पुच्छिआ, 'उरे राजे-का छोरा है?' अर्दलीआँ ने कह-दीआ, 'हैगा।' उन्ने कहा, 'कह-देओ बचित्तर-साहि बुलावे है।' वाहि उस-के पास आ-गिआ। दोए घोडिआँ-पर चढके सकारनूँ चले गए। दाबन-माँहि जा-के सकार मारिआ। बचित्तर-साहिने सकार पकडिआ। वाहि हलाल करन लगिआ। बचित्तर-साहि-की उँगली बड्ढ-गई। छोरेने अपणे साफे विच्चो कपडा फाड-के उँगली बन्ह दई, और कहण लगिआ, 'मेरा कलेजा कट गिआ।' दोए सहरनूँ चले-आए। पहिला छोरेदा घोडा भजा-कर देख-के उन्नूँ खडा करके बचित्तर-साहिने घोडा दबल्लिआ, और घर-माँहि आण-बडिआ। वाहि उडीक-के सराँइ-माँहि चला-गिआ। सञ्झनो जद घर आए, बचित्तर कौर कहण लगी, 'कित्थे पवाँ?' उन्ने कहा, 'पाँदिआँ।' बचित्तर कौर ने कहिआ, 'ऐ दुस्मन, जद मेरी उँगली बड्ढी-थी तेरा कालजा बड्ढा-था, अब तूँ कहता हैं मैनूँ पाँदिआँ पै रहो।' उसी वकत उन्ने पट्टी अक्खाँ-की खोल-लई। सकल-को देखताई रोइआ और कहा कि 'इतने-दिन मैनूँ भठियारी ने धोखे-माँहि रक्खिआ।'

(अनुवाद)

एक राजा का बेटा विवाह नही करता था। राजा कर्मचारियो से कहने लगा, 'इसे समझाओ, विवाह कराये।' कर्मचारियो ने स्त्रियो के चित्र जिस जगह से वह होकर जाया करता था लगा दिये। एक विचित्रकौर, जाट की लडकी का चित्र पसद करके उसने 'हाँ' कर ली। उसे ब्याह लाने चल पडे। एक भटियारिन लडके की यार थी, वह भी सग मे चली गयी। उसने कहा, 'पहले विचित्रकौर को मैं देख आऊँ।' देखकर कह दिया, 'वह कुरूप है, तू आँखो (पर पट्टी) बाँधकर भाँवरे लेना।' उसने आँखे दुखने का बहाना करके पट्टी बाँधकर भाँवरे ले लिये। विवाह करके जब अपने घर आये, रात को वह उसके पास गयी। लडके ने आँखे बाँधकर कह दिया, 'पाँयते लेट जाओ।' तीन दिन वह इसी तरह पाँयते लेटती रही। उसने विचार किया, 'आँखें खुलवाऊँ।' वह नित्य सराय मे भटियारिन के पास रहा करता था। विचित्र-कौर दही बेचने वाली गूजरी बनकर उस सराय मे गई। उसकी शक्ल देखकर वह तडपने लगा। पूछने लगा, 'जो (तुझे) कोई रखे, तो (क्या) तू रह जायेगी ?' उसने कहा, 'हाँ'। लडके ने कहा, 'तेरा डेरा कहाँ है ?' वह बोली, 'पाँयते की सराय मे।' वह पूछता फिरा (किन्तु) पता नही चला। रो-पीट कर घर में आ घुसा। रात को विचित्रकौर जब गयी, तो उसने फिर आँखे बाँध ली। वह पाँयते लेट गयी। सुबह उठकर कहने लगी, 'मूर्ख था, समझा नही।' घोडे पर चढकर पुरुष के वेष मे वह सराय मे घूम-फिर गयी। उसने पूछा, 'यहाँ क्या राजा का लडका है ?' अरदलियो ने कह दिया, 'है।' उसने कहा, 'कह दो (कि) विचित्र शाह बुलाता है।' वह उसके पास आ गया। दोनो घोडो पर चढकर शिकार को चले गये। वन मे जाकर शिकार मारा। विचित्र शाह ने शिकार पकडा। वह उसे हलाल करने लगा। विचित्र शाह की उगली कट गयी। लडके ने अपनी पगडी से चिथडा फाड कर उगली बाँध दी और कहने लगा, 'मेरा कलेजा (हृदय) कट गया।' दोनो शहर को चले आये। जब पहले लडके का घोडा दौडा जाता देखा तो उसे खडा करके विचित्र शाह ने अपना घोडा दौडाया, और घर मे आ पहुँचा। उसकी प्रतीक्षा करके सराय मे चला गया। साँझ को जब घर आये, विचित्र कौर कहने लगी, 'कहाँ लेटूँ ?' उसने कहा, 'पाँयते।' विचित्र कौर ने कहा, 'हे शत्रु, जब मेरी उगली कटी थी, तब तो तेरा हृदय कट गया था, अब तू मुझे कहता है (कि) पाँयते लेट रहो।' उसी समय उसने पट्टी आँखो की खोल ली। रूप को देखते ही रोया और बोला कि 'इतने दिन मुझे भटियारिन ने धोखे मे रखा।'

# मालवाई

मालवा सतलुज नदी के पूर्व की ओर सिख जट्टो के पुराने वसे हुए शुष्क प्रदेश का नाम है। इसमे फीरोजपुर के व्रिटिश ज़िले का सम्पूर्ण भाग और लुधियाना का अधिकांश सम्मिलित है। फरीदकोट और मलेर-कोटला की रियासतें और पटियाला, नाभा और जीद रियासतो के भाग भी इसके अन्तर्गत है। इनके अतिरिक्त कलसिया रियासत की चिरक तहसील को भी, जो फीरोज़पुर ज़िले मे पडती है, सम्मिलित कर लेना चाहिए। लुधियाना मे, मालवा के उत्तर की ओर, सतलुज की दक्षिण दिशा मे स्थित उर्वरा भूमि, जहाँ गन्ने की उपज होती है, पोवाध नाम से ज्ञात है। पोवाध, जैसा कि हमने पहले ही देखा, दूर दक्षिण-पूर्व की ओर फैला हुआ है और अम्वाला के एक भाग तथा फुलकियाँ रियासतो के पूर्व को घेरे हुए है। हम कह सकते हैं कि मालवा की पश्चिमी सीमा सतलुज है। इसकी उत्तरी सीमा लुधियाना मे पोवाध प्रदेश और (फीरोज़पुर मे) पुन: सतलुज है। इसकी पूर्वी सीमा मोटे तौर पर ७६° पूर्वी देशान्तर रेखा मानी जा सकती है, जिसके पूर्व मे पोवाधी पजावी वोली जाती है।

मालवा के दक्षिण में, फीरोजपुर ज़िले के दक्षिणी भाग मे और हिसार की सिरसा तहसील मे रोही या जगल पडता है। सतलुज और घग्घर की घाटियो के वीच का यह वह विशाल शुष्क क्षेत्र है जो हाल तक सिखो के लिए उस तरह से था जिस तरह से अमरीका और आस्ट्रेलिया के आदि उपनिवेशियो के लिए वहाँ के जगल और झाड़-झखाड थे।[1] मालवा की ओर से जगल के भीतर कृषि वढती जा रही है और जैसे जैसे ये क्षेत्र आवाद हो रहे हैं वैसे-वैसे ये मालवा का भाग समझे जा रहे हैं। इस प्रकार जगल का क्षेत्र लगातार घटता जा रहा है। जगल के दक्षिण की ओर वीकानेर का वागडी-भाषी देश पडता है। वागडी और पजावी की एक मिश्रित वोली जिसे मैं भट्टिआनी कहता हूँ, फीरोज़पुर के धुर दक्षिण मे वोली जाती है, और इसके अतिरिक्त

१. देखिए सिरसा वन्दोवस्त रिपोर्ट, १८७९-८३, पृ० ३०।

उस जिले मे सतलुज के बायें किनारे के साथ-साथ उत्तर की ओर राठौरी नाम से फैली हुई है।

मालवा और जगल क्षेत्रो की भाषा लगभग एक ही है। इसे मालवाई, या मालवा की भापा, जगली या जगल की भाषा और जटकी कहा जाता है, क्योकि इसके वोलने वालो मे अधिकतर जट्ट हैं। अन्तिम नाम का प्रयोग बचाना चाहिए, ताकि एक नितान्त भिन्न जटकी से, जो लहँदा का एक रूप है, कोई भ्रान्ति न हो।

विविध नामो के अन्तर्गत मालवाई के वोलनेवालो की अनुमानित सख्या आगे दी जा रही है—

| स्थान | वोलने वालो की सख्या |
|---|---|
| फीरोज़पुर | ७,०९,००० |
| लुधियाना | ६,४०,००० |
| फरीदकोट | १,१०,००० |
| मलेरकोटला | ७५,२९५ |
| पटियाला | ३,३४,५०० |
| नामा | २,०७,७७१ |
| जीद | ४४,०२१ |
| कलसिया | ९,४६७ |
| योग | २१,३०,०५४ |

ये आँकडे कुछ अधिक हैं, क्योकि लुधियाना के आँकडो मे पोवाध क्षेत्र के रहने वाले भी सम्मिलित हैं जिनका अनुमान अलग से नही किया गया। किन्तु अधिकता महत्त्वपूर्ण नही है।

व्याकरणो वाली आदर्श पजाबी से मालवाई बहुत भिन्न नही है। वस्तुत यदि हमें नमूनो से निर्णय करना हो तो भापा का आदर्श रूप सर्वत्र प्रयुक्त होता है, सिवाय इसके कि जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर वढते है मूर्धन्य ण और ळ लुप्त होते जाते हैं, और अनियमित रूप सदा नही लगते वल्कि विकल्प मे व्यवहृत होते हैं।

मालवाई की प्रमुख विशेषता यह है कि जैसे-जैसे हम दक्षिण की ओर चलते हैं,

मूर्द्धन्य ण और ळ की जगह क्रमश दन्त्य न और ल व्यवहृत होते हैं। इस प्रकार फीरोज़-पुर मे **जाना** है, जाणा नही, **हुन**, अव, है, हुण नही, **नाल**, साथ, है, नाळ नही, **कोल**, पास है, कोळ नही। ब और व वर्ण परस्पर परिवर्तनीय हैं। जैसे **वेख**, देख, के लिए **वेख**, **विच** या **बिच**। यह अतिम शव्द मालवाई के एक और लक्षण का परिचय देता है, कि शव्द के अन्तिम व्यजन का द्वित्व नही होता। जैसे **विच**, मे, विच्च नहीं, (किन्तु **विच्चो**, मे से, जिसमे च अन्त्य नही है), **इक**, एक, इक्क नही। कभी-कभी मध्यग व्यजनो का भी द्वित्व नही होता, जैसे **घलिआ** (घल्लिआ नही), भेजा, **जुती** (जुत्ती नही), जूता, **नचन्दी** (नच्चन्दी नही), नाचती, जो सव फीरोज़पुर के हैं। यह वात उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर के रहते इस प्रकार की द्वित्वहीनता पिशाच भाषाओ की विशिष्टता है। जव दो स्वरो के वीच मे -इ- आये तो उसे, और जगहो की तरह, य करके लिखा जाता है। जैसे **आइआ** की जगह **आया**। किन्तु यह वहुत कुछ वर्तनी का विषय है। दो स्वरो के वीच का व वहुधा म मे परिर्वातत हो जाता है। जैसे **होवांगा** की जगह **होमागा**, हूँगा। ऐसा पोवाधी मे भी होता है।

सर्वनामो मे, **आपां** 'हम' के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। यह राजस्थानी से ग्रहण किया गया है, पर अव वदल गया है। राजस्थानी और गुजराती मे **आपां** का अर्थ है 'हम और तुम'। इस प्रकार एक प्रचलित उदाहरण दे, यदि आप अपने रसोइया से कहे कि 'हम आठ वजे खाना खायेंगे', तो आप को **आपा** का प्रयोग नही करना चाहिए, वरना इसका अर्थ यह होगा कि आप रसोइया को भी खाने पर वुला रहे हैं। मालवाई मे अर्थ का ऐसा कोई प्रतिवन्ध नहीं जान पडता। न्यूटन इसके प्रयोग का एक उदाहरण देते हैं—**मालवे देस-ते आपाँ आए-हाँ**, मालवा देश से हम आये है।

नामा के नमूने मे मध्यम पुरुष वहुवचन का **थोनूं**, तुमको, रूप उल्लेखनीय है। फीरोज़पुर मे मानक **आपणाँ** के स्थान पर **आवदा** का नियमित व्यवहार 'अपना' के अर्थ मे होता है। ह्रस्व आदि अ और दन्त्य न वाला **अपना** भी सारे क्षेत्र मे सामान्य रूप से प्रयुक्त होता है।

दूसरे सर्वनामो मे स की जगह प्राय त लगता है, जैसे (न्यूटन के उदाहरण) **उत** (उस के लिए) **वेले**, उस समय, **इत करके**, इस कारण से, **किते वल**, किसी ओर, **कित कम्म**, किस काम।

'कुछ' के लिए कुछ या कुश है। वास्तव मे छ का उच्चारण अनेक शव्दो मे वहुधा श होता जान पडता है।

क्रियाओ मे मध्यम पुरुष एकवचन की अनुनासिकता प्राय लुप्त हो जाती है और वह पश्चिमी हिन्दी का रूप ग्रहण करता है। जैसे हैं की जगह है, तू है।

खडा होना या सक्षिप्त रूप खड़ोना होता है। लहँदा मे भी ऐसा ही है।

पश्चिमी हिन्दी से गृहीत अन्य प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(१) यदा-कदा अकर्मक क्रिया के भूत काल के कर्ता के स्थान पर करण कारक का प्रयोग, जैसे (फीरोज़पुर), छोटे पुत्र ने गिआ, छोटा लडका गया।

(२) यदा-कदा सम्बन्ध कारक के लिए 'का' का प्रयोग, जैसे सतां (दिनादी की जगह) दिना-की मुहिलत, सात दिन का विलम्ब, गल-का अन्तरा, वात की व्याख्या।

मालवाई के नमूने निम्नलिखित दिये जा रहे है—

(१) लुधियाना से प्राप्त अपव्ययी पुत्र की कथा के एक भाग का रूपान्तर।

(२) लुधियाना से प्राप्त दो ग्रामीणो का वार्तालाप।

(३) फीरोज़पुर की तहसील मुक्तसर से उक्त कथा का दूसरा रूपान्तर।

(४) फाज़िल्का तहसील, फीरोज़पुर से एक लोककथा।

(५) नाभा रियासत के ज़िला फूल से एक लोककथा।

(६) थाना गोविन्दगढ, पटियाला से एक छोटा-सा परिच्छेद।

पहले पाँच नमूने गुरमुखी लिपि मे हैं, और छठा फारसी लिपि मे।

इसलिए कि लुधियाना के नमूनो मे कुछ स्थानीय विशेषताएँ हैं, उन्हे मैं पहले दे रहा हूँ और साथ ही उन वातो का विवरण भी जो इस क्षेत्र मे विशेषत लागू होती है।

लुधियाना मे ग्रामीण लोग व्यजन मे अन्त होने वाले शब्दो मे -उ जोडने के शौकीन होते हैं। उदाहरण, चिरु, चिर, मालु, सम्पत्ति, धनु, धन; कहीकु, कितना; परु, परन्तु; कुछ या कुछु; बिआज या बिआजु, व्याज, दुधु, दूध। ऐसा पश्चिमी हिन्दी की व्रजभाखा वोली मे भी होता है।

वर्तनी मे स्वरो के वीच मे -इ- की जगह -य- लगता है, जैसे होइआ, हुआ, की जगह होया।

संज्ञाओ के रूपान्तर मे विच्च, मे, चि हो जाता है और सीधे सज्ञा के साथ परसर्ग के रूप मे जुड जाता है। जैसे मुलकचि, देश मे, लुच्चपनेचि, वदमाशी मे, खेताचि, खेतो मे। इसी प्रकार विचवो, मे से, चो हो जाता है। जैसे उन्हाचो, उनमे से।

प्रथम दो पुरुषवाची सर्वनाम तिर्यक् वहुवचन मे प्राय हमा और तुमा रूप ग्रहण करते हैं। जैसे, हमानूं, हमको, तुमानूं, तुमको। पडोस की पोवाधी मे जहाँ पजावी

हिन्दुस्तानी मे विलीन होती है, ये और अधिक व्यापक हैं। तुहाडा के लिए थुआडा, तुम्हारा, और ओहदा के लिए ओधा, उसका, मे महाप्राण का विचित्र विपर्यय है। नाभा के नमूने मे, थोनूं, तुम को, से तुलना कीजिए। निजवाची सर्वनाम का सम्बन्ध कारक अपणा होता है, आपणा नही। यह भी पूर्वी रूप है।

देणा, देना, क्रिया का उत्तम पुरुष बहुवचन भविष्यत्काल देमागे, हम देंगे, बनता है। यह एक और पूर्वी विशेषता है।

लुधियाना की ग्रामीण बोली के नमूनो मे मैं अपव्ययी पुत्र की कथा के रूपान्तर का एक अश और दो ग्रामीणो के बीच वार्तालाप दे रहा हूँ।

[स० १४ ]

**भारतीय आर्य परिवार** | **केन्द्रीय वर्ग**

## पंजाबी

**मालवाई बोली** | **(जिला लुधियाना)**

### पहला उदाहरण

ਕਿਸੇ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁੱਤ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂਚੋ ਛੋਟੇ ਪੁੱਤਨੇ ਬਾਪਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪੇਓ ਮਾਲਦਾ ਜੇਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਵੰਡ ਦੇ। ਉਹਨੇ ਅਪਣੇ ਜੀਉਂਦਿਆ ਓਧਾ ਹਿੱਸਾ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜ੍ਹਾਈ ਚਿਰੁ ਹੋਯਾ ਸੀ ਛੋਟਾ ਸਭ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇੱਕ ਦੂਜੇ ਦੇਸਨੂੰ ਚਲਿਯਾ ਗਿਆ। ਓਥੇ ਜਾਕੇ ਸਾਰਾ ਮਾਲੁ ਧਨੁ ਲੁਚਪਣੇਚਿ ਉਡਾ ਦਿੱਤਾ। ਜਦ ਸਾਰਾ ਮੁੱਕ ਚੁੱਕਿਆ ਉਸ ਮੁਲਕਚਿ ਕਾਲ੍ਹ ਪੈ ਗਿਆ। ਤਾਂ ਉਸ ਦੇਸਦੇ ਇੱਕ ਸ਼ਹਿਰੀ ਨਾਲ੍ਹ ਜਾ ਰਲਿਆ। ਓਹਨੇ ਉਸਨੂੰ ਅਪਣਿਆਂ ਖੇਤਾਂਚਿ ਸੂਰ ਚਾਰਣ ਘੱਲ ਦਿੱਤਾ। ਓਧਾ ਜੀ ਕੀਤਾ ਜੇੜ੍ਹੇ ਛਿਲਕੇ ਸੂਰ ਖਾਉਂਦੇ ਹਨ ਮੈ ਭੀ ਓਹ ਖਾਕੇ ਢਿੱਡ ਭਰ ਲਾਂ ਪਰ ਓਹਨੂੰ ਖਾਣਨੂੰ ਕਿਸੇਨੇ ਛਿਲਕੇ ਭੀ ਨਾ ਦਿੱਤੇ॥

(नागरी रूपान्तर)

किसे आदमीदे दो पुत्त सी। उन्हाँचो छोटे पुत्तने बापनूं आखिआ, 'पेओ, मालदा जेहडा हिस्सा मैनूं आउन्दा-है, वण्ड दे।' उहने अपणे जीउदियाँ ओधा हिस्सा वण्ड दित्ता। थोड़ा-ई चिरु होया-सी छोटा सभ कुछ कट्ठा कर-के इक्क दूजे देसनूं चलिया-गिआ। ओथे जा-के सारा मालु-धनु लुच्चपणेचि उडा-दित्ता। जद सारा मुक्क-चुकि-

आ, उस मुल्कचि काल् पै-गिआ। तां उस देसदे इक्क सहिरी नाल जा रलिआ। ओहने उसनूं अपणिआं खेतांचि सूर चारण घल्ल-दित्ता। ओहदा जी कीता, जेढ़े-छिलके सूर खाउन्दे-हन, मैं भी ओह खा-के ढिड्ड भर-लां, पर ओहनूं खाननूं किसेने छिलके भी नां-दित्ते।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो पुत्र थे। उनमे से छोटे पुत्र ने बाप से कहा, 'पिता, सम्पत्ति का जो अश मुझे आता है, बाँट दे।' उसने अपने जीते जी उसका भाग बाँट दिया। थोडी ही देर हुई थी, छोटा सब कुछ इकट्ठा करके एक दूसरे देश को चला गया। वहाँ जाकर सारा माल-धन बदमाशी मे उडा दिया। जब सारा समाप्त हो चुका, उस देश में अकाल पड़ गया। तब उस देश के एक शहरी के साथ जा मिला। उसने उसको अपने खेतो मे सूअर चराने भेज दिया। उसके जी मे आया, 'जो छिलके सूअर खाते हैं, मैं भी वे खाकर पेट भर लूँ'; पर उसे खाने को किसी ने छिलके भी न दिये।

[सं० १५]

भारतीय आर्य परिवार — केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

मालवाई बोली — (जिला लुधियाना)

### दूसरा उदाहरण

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਕਿਓਂ ਭਾਈ ਫਸਲ ਕਹੀਕੁ ਹੋਈ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਭਾਈ ਕਾਹਦੀ ਫਸਲ ਹੈ ਮੰਦਵਾੜੇਨੇ ਮਾਰ ਲਏ। ਹਾੜ੍ਹੀਦੀ ਬਿਜਾਈ ਤਾਂ ਚੰਗੀ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਪਰੁ ਪਿੱਛੋਂ ਬਰਖਾ ਨਾ ਹੋਈ। ਕਣਕ ਭੁਲਿ ਗਈ। ਛੋਲਿਆਂਨੂੰ ਬੁੱਲਾ ਮਾਰ ਗਿਆ। ਸਰੋਂਨੂੰ ਉਡੀਂ ਖਾ ਗਈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਤੁਆਡੇ ਫੱਸੀ ਨਹੀਂ ਲਗਦੀ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਮੇਰੇ ਘੁਮਾਰਨੂੰ ਫੱਸੀ ਲਗਦੀ ਸੀ। ਬੇਲ੍ਹੇ ਸਿਰ ਗੁਦਾਵਰਨੇ ਪਾਣੀ ਨਾ ਦਿੱਤਾ। ਓਹ ਬੀ ਪਾਣੀ ਬਿਨਾ ਹੌਲ਼ੀ ਹੋਈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਹੁਣ ਕੀ ਹਾਲ ਹੋਊ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਕੁਛ ਸਰਕਾਰਦਾ ਕਰਾਇਆ ਦੇਮਾਂਗੇ ਕੁਛ ਟੱਬਰ ਪਾਲ੍ਹਾਂਗੇ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਕੁਛ ਕਿਸੀ ਮਹਾਜਨਦਾ ਦੇਣਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਮੂੰ ਦੇ ਬਿਆਹਨੂੰ ਦਸ ਕੌਡਾ ਲਈਆਂ ਸੀ। ਉੱਤੋਂ ਬਿਆਜੁ ਪੈ ਗਿਆ ਕੁਛੁ ਫਸਲ ਨਾ ਲੱਗੀ। ਸਾਹਦੀ ਪੰਡ ਭਾਰੀ ਹੋ ਗਈ। ਹੁਣ ਕੁਛ ਦੇਣਨੂੰ ਨਹੀਂ। ਬਿਆਜ ਨਾਲ੍ਹ ਲੁਆ ਦੇਮਾਂਗੇ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਖੁੱਲਾ ਦੇਣਾ ਹੈ ਕਿ ਭੂਏ ਗੈਹਣੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਚਾਰਕ ਘੁਮਾ ਗੈਹਣੇ ਹੈ। ਖੁੱਲਾ ਬਿਆਜੁ ਬੀ ਹੈ, ਪਰੁ ਹੁਣ ਮੰਦਵਾੜੇ ਕਰਕੇ ਕੋਈ ਖੁੱਲਾ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਮੈ ਮੈਹ ਖਰੀਦਣੀ ਹੈ। ਤੁਆਡੇ ਪਿੰਡ ਕਿਸੇ ਕੋਲ੍ਹੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ-ਸੂਣ ਵਾਲੀ ਮੈਹ ਇੱਕ ਜੱਟ ਕੋਲ੍ਹ ਹੈ, ਪਰੁ ਰੁਪਈਆ ਬੌਹਤਾ ਮੰਗਦਾ ਹੈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ-ਦੁਧੁ ਘਿਉ ਕਿੰਨਾਕੁ ਹੈ। ਸੂਏ ਕੌਥੇ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ–ਤੀਜੇ ਸੂਏ ਸੂਣਾ ਹੈ। ਦੋ ਸੇਰ ਮਖਣੀ ਹੈ ਬੀਹ ਵਾਈ ਸੇਰ ਦੁਧੁ ਹੈ। ਸੱਤਰ ਰੁਪੈਈਏ ਓਹਨੂੰ ਦੇ ਰਹੇ, ਪਰੁ ਓਹੁ ਅੱਸੀ ਮੰਗਦਾ ਹੈ॥

ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ–ਐਂਨਾ ਮੁੱਲੁ ਨਹੀਂ ਲਾਉਂਦੇ। ਕੋਈ ਚਾਲੀ ਪੰਜਾਹ ਵਾਲੀਦੀ ਲੋੜ ਹੈ॥

ਨਥਾ ਸਿੰਘ–ਕਿਤੇ ਹੋਰ ਦੇਖ ਲਓ॥

(नागरी रूपान्तर)

बूटा सिंघ—किओ, भाई, फ़सल कट्टीकु होई है?

नथा सिंघ—भाई, काहदी फसल है? मन्दवाडे ने मार लए। हाडीदी विजाई ताँ चङ्गी हो-गई-सी, पर पिच्छो बरखा ना होई; कणक हुलि-गई, छोलिआँनूँ बुल्ला मार-गिआ। सरोंनूँ सुण्डी खा-गई।

बूटा सिंघ—थुआडे कस्सी नहीं लगदी।

नथा सिंघ—मेरे घुमाँ-क-नूँ कस्सी लगदी सी; वेले-सिर गुदावरने पाणी ना दित्ता; ओह वी पाणी विना हौली होई।

बूटा सिंघ—हुण की हाल होऊ।

नथा सिंघ—कुछु सरकारदा कराइआ देमांगे, कुछु टब्बर पालांगे।

बूटा सिंघ—कुछु किसी महाजनदा देणा तां नहीं?

नथा सिंघ—मुण्डेदे विआहनूँ दस कौडाँ लईआँ-सी, उत्तो बिआजु पैगिआ; कुछु फसल ना लग्गी। साहदी पण्ड भारी हो-गई। हुण कुछ देणनूँ नहीं। विआज नाल लुआ-देमांगे।

बूटा सिंघ—खुल्ला देणा है, कि भुएँ गैहणे है?

नथा सिंघ—चार-क घुमाँ गैहणे है, खुल्ला विआजु वी है, परु हुण मन्दवाडे कर-के कोई खुल्ला नहीं दिन्दा।

बूटा सिंघ—मैं मैह खरीदणी है, थुआडे पिण्ड किसे कोले है?

नथा सिंघ—सूण वाली मैह इक्क जट्ट कोल है, परु रुपैइआ बौहता मगदा है।

बूटा सिंघ—दुधु घिउ किन्ना-कु है? सूए कोंथे है?

नथा सिंघ—तीजे सूए सूणा-है। दो सेर मखणी है, बीह वाई सेर दुधु है। सत्तर रुपैइए ओहनूँ दे-रहे, परु ओहु अस्सी मंगदा है।

बूटा सिंघ—ऐंना मुल्लु नहीं लाउदे। कोई चाली पजाह-वालीदी लोड़ है।

नथा सिंघ—किते होर देख लओ।

(अनुवाद)

बूटासिह—क्यो, भाई, फसल कैसी हुई है?

नथासिह—भाई, किस की फसल है? मन्देपन ने मार दिया है। असाढ़ी बुवाई तो अच्छी हो गयी थी पर पीछे वर्षा न हुई, गेहूँ दग्ध हो गयी, चनो को बर्फीली हवा ने मार दिया। सरसो को घुन खा गया।

बूटासिह—आपके यहाँ नहर नही पडती?

नथासिह—मेरे यहाँ घुमाँव[1]-भर (जमीन) को नहर पडती है, समय पर गरदावर (कानूनगो) ने पानी नही दिया, वह भी पानी बिना हलकी पड़ गयी।

बूटासिह—अब क्या होगा?

नथासिह—कुछ सरकार का कर देंगे, कुछ (मे) कुटुम्ब पालेंगे।

बूटासिह—कुछ किसी महाजन का देना तो नही?

नथासिह—लडके के विवाह के लिए दस कौडियाँ ली थी। ऊपर से ब्याज पड गया, कुछ फसल न हुई। सेठ का बोझ भारी हो गया। अब कुछ देने को नही है। (बाद मे) ब्याज के साथ दे देंगे।

बूटासिह—खुला देना है, या भूमि गिरवी है?

नथासिह—चार-एक घुमाँव गिरवी है, खुला ब्याज भी है, पर अब मन्देपन के कारण कोई खुला (ऋण) नही देता।

बूटासिह—मुझे भैंस खरीदनी है, (क्या) तुम्हारे गाँव मे किसी के पास है?

नथासिह—ब्याने वाली भैंस एक जाट के पास है, पर रुपया बहुत माँगता है।

बूटासिह—दूध घी कितना-कुछ है? कितनी बार की ब्याई है?

नथासिह—तीसरी बार ब्याने वाली है। दो सेर मक्खन है; बीस बाईस सेर दूध है। सत्तर रुपये उसे देता रहा, पर वह अस्सी माँगता है।

बूटासिह—इतना मूल्य (हम) नही लगा सकते। कोई चालीस-पचास वाली की आवश्यकता है।

नथासिह—कहीं और देख लो।

लुधियाना के बाहर बोली जाने वाली मालवाई की विशेषताएँ बहुत कम रह जाती हैं, जैसा कि निम्नलिखित नमूने से स्पष्ट हो जायगा।

१. ३० वर्ग गज का एक मरला और १६ मरले का एक घुमांव (खेत)।

[स० १६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

मालवाई बोली (जिला फीरोजपुर, तहसील मुक्तसर)

ਇਕ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁਤ੍ਰ ਸੀਗੇ। ਉਨ੍ਹਾ ਵਿਚੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਬਾਪੂ ਜੇਹੜਾ ਹਿੱਸਾ ਮਾਲਦਾ ਮੈਨੂੰ ਆਂਵਦਾ ਹੈ, ਓਹ ਮੈਨੂੰ ਦੇ ਦੇ। ਤਾਂ ਓਹਨੇ ਮਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂਨੂੰ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਥੋੜੇ ਦਿਨਾ ਪਿਛੋਂ ਛੋਟੇ ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਸਭ ਕੁਛ ਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਇਕ ਦੂਰ ਵਲਾਯਤਨੂੰ ਉੱਠ ਗਿਆ। ਤੇ ਓਥੇ ਆਂਵਦਾ ਮਾਲ ਭੈੜੇ ਲਛਨਾ ਵਿਚ ਗਵਾਯਾ। ਜਦਾ ਸਭ ਕੁਛ ਲਗ ਗਿਆ ਤਾ ਓਥੋਂਦੇ ਇਕ ਸਰਦਾਰ ਕੋਲ ਗਿਆ। ਓਸਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਂਵਦੀ ਪੈਲੀ ਵਿਚ ਸੂਰ ਚਰਾਵਨ ਘਲਿਆ। ਤੇ ਓਹ ਤਰਸਦਾ ਸੀ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾ ਛਿੱਲਾਂ-ਨਾਲ ਜੋ ਸੂਰ ਖਾਂਦੇ ਸਨ ਆਂਵਦਾ ਢਿਡ ਭਰੇ। ਓਹਨੂੰ ਕੋਈ ਖਾਨਨੂੰ ਨਹੀ ਦੇਂਦਾ ਸੀ। ਤਦ ਓਹਨੂੰ ਸੁਰਤ ਆਈ ਤੇ ਆਖਨ ਲੱਗਾ। ਜੋ ਮੇਰੇ ਪਿਓਦੇ ਸੀਰੀਆਨੂੰ ਵੀ ਰੋਟੀਦੀ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀ, ਤੇ ਮੈਂ ਭੁੱਖਾ ਮਰਦਾ ਹਾ। ਮੈਂ ਉੱਠਕੇ ਆਂਵਦੇ ਪਿਓ ਕੋਲ ਜਾਵਾਂਗਾ ਤੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ ਜੋ ਪਿਓ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਤੇ ਰਬਦਾ ਗੁਨਾਹੀ ਹਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਹੁਨ ਸਜਦਾ ਨਹਾਂ ਜੋ ਤੇਰਾ ਪੁਤ ਸਦਾਵਾ। ਮੈਨੂੰ ਆਂਵਦੇ ਸੀਰੀਆਂ ਵਿਚ ਰਖ ਲੈ। ਫੇਰ ਓਹ ਟੁਰਕੇ ਆਂਵਦੇ ਪਿਓ ਕੋਲ ਜਾ ਨਿਕਲਿਆ। ਤੇ ਓਹ ਅਜੇ ਦੂਰ ਹੀ ਸੀ ਜੋ ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੂੰ ਓਸ ਤੇ ਤਰਸ ਆਯਾ, ਤੇ ਭਜਕੇ ਓਹਨੂੰ ਗਲ ਲਾ ਲਿਆ ਤੇ ਓਹਨੂੰ ਚੁੰਮਿਆ। ਪੁਤ੍ਰਨੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਬਾਪੂ ਮੈਂ ਰਬਦਾ ਤੇ ਤੇਰਾ ਗੁਨਾਹੀ ਹਾ। ਮੈਨੂੰ ਹੁਨ ਲੈਕੀ ਨਹੀ ਜੋ ਹੁਨ ਤੇਰਾ ਪੁਤ ਸਦਾਵਾ। ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੇ ਆਂਵਦਿਆ ਸੀਰੀਆਨੂੰ ਆਖਿਆ ਭਈ ਚੰਗੇ ਤੋ ਚੰਗੇ ਲੀੜੇ ਕਢ ਲਿਆਓ ਤੇ ਏਹਨੂੰ ਪਨ੍ਹਾਓ ਤੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਮੁੰਦਰੀ ਤੇ ਪੈਰਾਂ ਵਿਚ ਜੁਤੀ ਪਵਾਓ। ਅਸੀ ਖਾਈਏ ਤੇ ਮੌਜਾ ਕਰੀਏ ਜੋ ਏਹ ਮੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਨ ਜੀਆ ਹੈ ਗਵਾਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਨ ਲਭਿਆ ਹੈ। ਫੇਰ ਓਹ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਵਨ ਲੱਗੇ॥

ਤੇ ਓਹਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁਤ੍ਰ ਖੇਤ ਸੀ। ਜੋ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਯਾ ਤਾ ਗਾਵਨ ਤੇ ਨਚਨ-ਦੀ ਅਵਾਜ ਸੁਨੀ। ਤੇ ਇਕ ਸੀਰੀਨੂੰ ਬੁਲਾਕੇ ਪੁਛਿਆ ਜੋ ਏਹ ਕੀ ਹੈ। ਓਸਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਤੇਰਾ ਭਰਾ ਆਯਾ ਹੈ, ਤੇ ਤੇਰੇ ਪਿਓਨੇ ਰੋਟੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜੋ ਭਲਾ ਚੰਗਾ ਘਰ ਆਯਾ ਹੈ। ਓਹਦੇ ਜੀ ਵਿਚ ਗੁੱਸਾ ਆਯਾ ਜੋ ਘਰ ਨ ਵੜਾਂ। ਫੇਰ ਓਹਦੇ ਪਿਓਨੇ ਆਕੇ

ਮਨਾਯਾ। ਓਸਨੇ ਆਵਦੇ ਪਿਓਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਦੇਖ ਐਨੇਂ ਵਰਹੇ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਟਹਲ ਕੀਤੀ ਤੇ ਕਦੇ ਤੇਰਾ ਮੋੜ ਨਾ ਕੀਤਾ ਪਰ ਤੂੰ ਕਦੀ ਇਕ ਬਕਰੀਦਾ ਪਠੋਰਾ ਵੀ ਮੈਨੂੰ ਨਾ ਦਿੱਤਾ ਜੋ ਕਦੀ ਆਵਦੇ ਬੇਲੀਆ ਵਿੱਚ ਬਹਕੇ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਾ। ਜਦ ਤੇਰਾ ਏਹ ਪੁਤ੍ਰ ਆਯਾ ਜਿਨਹੇ ਤੇਰਾ ਮਾਲ ਕੰਜਰਾ ਵਿਚ ਉੜਾਯਾ ਸੀ ਤਾ ਤੂੰ ਵੱਡੀ ਰੋਟੀ ਕੀਤੀ। ਤਦ ਓਸਦੇ ਪਿਓਨੇ ਓਹਨੂੰ ਆਖਿਆ ਜੋ ਪੁਤ੍ਰ ਤੂੰ ਤਾ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੈ। ਜੋ ਕੁਝ ਮੇਰਾ ਹੈ ਸੋ ਤੇਰਾ ਹੈ। ਫੇਰ ਖੁਸੀ ਮਨਾਵਣਾ ਤੇ ਖੁਸੀ ਹੋਵਨਾਂ ਚੰਗੀ ਗਲ ਸੀ ਜੋ ਏਹ ਤੇਰਾ ਭਾਈ ਮਰ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਮੁੜਕੇ ਜੀਆਂ ਹੈ ਤੇ ਗੁਵਾਚ ਗਿਆ ਸੀ ਤੇ ਹੁਨ ਹੱਥ ਆਯਾ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक आदमीदे दो पुत्र सीगे। उन्हाँ विचो छोटे पुत्रने पिओनूं आखिआ जो 'बापू, जेहड़ा हिसा मालदा मैनूं आँवदा-हे, ओह मैंनूं दे-दे।' ताँ ओहने माल उन्हाँनूं वण्ड दित्ता। थोडे दिना पिछो छोटे पुत्रने सब कुछ कट्ठा कर-के, इक दूर वलायतनूं उट्ठ गिआ, ते ओथे आवदा माल भैंडे लछनां विच गवायां। जदाँ सब कुछ लग-गिआ, ताँ ओथोंदे इक सरदार कोल गिआ। ओसने ओहनूं आवदी पैली विच सूर चरावन घलिआ। ते ओह तरसदा सी जो उन्हाँ छिल्ला-नाल जो सूर खान्दे-सन, आवदा ढिड भरे। ओहनू कोई खाननूं नहीं देन्दा-सी। तद ओहनूं सुरत आई, ते आखन लग्गा जो, मेरे पिओदे सीराआँनूं वी रोटी दी परवाह नाहीं, ते मैं भुक्खा मरदा-हाँ। मैं उट्ठ-के आवदे पिओ कोल जावागा, ते ओहनू आखागा जो, "पिओ, मैं तेरा ते रबदा गुनाही हाँ। मैंनूं हुन सजदा नहीं जो तेरा पुत सदावाँ। मैंनूं आवदे सीरीआँ विच रख-लै।" फेर ओह टुर-के आवदे पिओ कोल जा निकल्या। ते ओह अजे दूर-ही सी, जो ओहदे पिओनूं ओस-ते तर्स आया, ते भज-के ओहनूं गल ला-लिआ, ते ओहनूं चुम्या। पुत्रने पिओनूं आखिआ जो, "बापू, मैं रबदा ते तेरा गुनाही हाँ, मैनूँ हुन लैकी नहीं जो हुन तेरा पुत सदावाँ।" ओहदे पिओने आवदिआँ सीरीआँनूं आखिआ, "भई, चगे-तो चंगे लीडे कढ लिआओ, ते एहनूं पन्हाओ, ते हत्थ विच मुंदरी, ते पैराँ विच जुती पवाओ; असी खाइए ते मौजाँ करिए, जो एह मेरा पुत्र मर-गिआ-सी, ते हुन जीआ है; गवाच गिया-सी, ते हुन लभ्या-है।" फेर ओह खुसी मनावन लग्गे।

ते ओहदा वड्डा पुत्र खेत सी। जो घरदे नेड़े आया, ताँ गावन ते नचनदी अवाज

सुनी। ते इक सीरीनूँ बुला-के पुछिआ जो, 'एह् की है?' ओसने ओह्नूँ आखिआ जो, 'तेरा भरा आया-है। ते तेरे पिओने रोटी कीती-है। जो भला-चङ्गा घर आया-है।' ओह्दे जी विच गुस्सा आया जो, 'घर न वडाँ।' फेर ओह्दे पिओने आ-के मनाया। उसने आवदे पिओनूं आखिआ जो, 'देख, एनें वर्हें मै तेरी टहल कीती, ते कदे तेरा मोड़ न कीता; पर तू कदी इक बकरीदा पठोरा वी मैनूँ ना दित्ता, जो कदी आवदे बीलीआँ विच वह-के खुसी मनावाँ। जद तेरा एह् पुत्र आया जिन्हें तेरा माल कन्जरां विच उडाया-सी, ताँ तूँ वड्डी रोटी कीती।' तद ओसदे पिओने ओह्नूँ आखिआ जो, 'पुत्र तूँ ताँ सदा मेरे कोल है। जो कुश मेरा है, सो तेरा है। फेर खुसी मनावना ते खुसी होवना चगी गल सी; जो एह् तेरा भाई मर-गिआ-सी, ते मुड़-के जम्मिआ-है; ते गुवाच गिआ सी, ते हुन हत्थ आया-है।'

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमे से छोटे बेटे ने बाप से कहा कि 'बापू, जो अश सपत्ति का मुझे आता है, वह मुझे दे दे।' तब उसने सपत्ति उनको बाँट दी। थोडे दिन पीछे छोटा बेटा सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को उठ गया, और वहाँ अपनी सम्पत्ति बुरे लच्छनो मे खो दी। जब सब कुछ चुक गया, तो वहाँ के एक सरदार के पास गया। उसने उसे अपने खेत मे सूअर चराने भेजा। और वह तरसता था कि उन छिलको से जो सूअर खाते थे, अपना पेट भरे। उसे कोई खाने को नही देता था। तब उसको होश आया, और कहने लगा कि 'मेरे बाप के मजदूरो को भी रोटी की परवाह नही, और मै भूखा मर रहा हूँ। मैं उठके अपने बाप के पास जाऊँगा, और उसे कहूँगा कि बाप, मैं तेरा और परमेश्वर का पापी हूँ। मझे अब सजता नही कि तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने मजदूरो मे रख ले।' फिर वह चलकर अपने बाप के पास जा निकला। और वह अभी दूर ही था कि उसके बाप को उस पर दया आयी, और दौडकर उसको गले लगा लिया और उसे चूमा। बेटे ने बाप से कहा कि 'बापू, मैं भगवान् का और तेरा पापी हूँ, मैं अब (इस) लायक नही कि अब तेरा बेटा कहलाऊँ।' उसके बाप ने अपने मजदूरो से कहा, 'भाई, अच्छे-मे-अच्छे कपडे निकाल लाओ, और इसे पहनाओ, और हाथ मे अँगूठी, और पाँव मे जूता पहनाओ। हम खाये और मौज करे, कि यह मेरा बेटा मर गया था, और अब जिया है, खो गया था, और अब मिला है।' फिर वे खुशी मनाने लगे।

और उसका बडा लडका खेत मे था। जब घर के निकट आया, तो गाने और

नाचने की आवाज सुनी और एक मजदूर को बुलाकर पूछा कि 'यह क्या है?' उसने उसे कहा कि 'तेरा भाई आया है और तेरे बाप ने भोज किया है कि भला-चंगा घर आया है।' उसके जी में क्रोध आया कि 'घर के भीतर न जाऊँ!' फिर उसके बाप ने आकर मनाया। उसने अपने बाप को कहा कि 'देख, इतने बरस मैंने तेरी सेवा की, और कभी तेरा कहा नहीं मोड़ा, पर तूने कभी एक बकरी का मेमना भी मुझे नहीं दिया कि कभी अपने साथियों में बैठकर खुशी मनाऊँ। जब तेरा यह बेटा आया, जिसने तेरी सम्पत्ति बदमाशों में उड़ा दी थी, तब तूने बड़ा भोज किया।' तब उसके बाप ने उसे कहा कि 'बेटा, तू तो सदा मेरे साथ है। जो कुछ मेरा है, सो तेरा है। फिर खुशी मनाना और खुश होना अच्छी बात थी, क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था और (इसका) पुनर्जन्म हुआ है, और खो गया था और अब हाथ आया है।'

[सं० १७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

# पंजाबी

मालवाई बोली (जिला फीरोज़पुर, तह० फाजिलका)

ਕੋਈ ਰਾਜਾ ਸਕਾਰਨੂੰ ਟੁਰਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਰਾਹ ਬਿਚ ਇਕ ਜਟ ਟਿੱਬੇ ਉੱਤੇ ਹਲ ਬਾਹੌਂਦਾ ਸੀ। ਤੇ ਉਹਦੀ ਉਮਰ ਸਤਰ ਅਸੀ ਬਰੇਦੀ ਸੀ। ਰਾਜਾ ਉਸਨੂੰ ਬੇਖਕੇ ਬੋਲਿਆ ਜਟ ਤੂੰ ਬੜਾ ਉੱਕਾ। ਜਟ ਬੋਲਿਆ ਕੇ ਰਾਜਾ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਉੱਕਾ। ਇਕ ਚਲਾਇਆ ਤੀਰ ਇਕ ਚਲਾਇਆ ਤੁੱਕਾ। ਰਾਜਾ ਸੁਨਕੇ ਆਪਨੇ ਰਾਹ ਲੱਗਾ ਤੇ ਜਦੋਂ ਆਪਨੇ ਘਰ ਪੁੰਹਚ ਪਿਆ ਤੇ ਦਰਵਾਰ ਲਾਂਇਆ ਆਪਨੇ ਵਜੀਰ ਕੋਲੋਂ ਇਸ ਬਾਤਦਾ ਅੰਤਰਾ ਪੁਛਿਆ। ਵਜੀਰ ਸੁਨਕੇ ਸੋਚਾ ਬਿਚ ਪੈ ਗਿਆ। ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਜਵਾਬ ਉਹਦੀ ਸਮਝ ਬਿਚ ਨਾ ਆਇਆ ਤਾਂ ਸਤਾ ਦਿਨਾ ਕੀ ਮੁਹਿਲਤ ਮੰਗ ਲਈ, ਤੇ ਜਿਸ ਪਾਸੇ ਰਾਜਾ ਓਸ ਦਿਨ ਗਿਆ ਸੀ ਪੁਛ ਪੁਛਾ ਕੇ ਓਸੇ ਪਾਸੇ ਵਜੀਰ ਬੀ ਟੁਰ ਪਿਆ। ਚਲਦੇ ਚਲਦੇ ਰਾਹਿ ਬਿਚ ਓਹ ਜਟ ਓਸੇ ਤਰਾ ਹਲਵਾਹੀ ਕਰਦਾ ਮਿਲਿਆ। ਵਜੀਰ ਨੇ ਸੋਚ ਕੀਤੀ ਬਈ ਹੋਵੇ ਨਾ ਤਾ ਏਹ ਜਟ ਹੈ ਜੀਹਦੀ ਗਲ ਰਾਜੇਨੇ ਮੇਰੇ ਕੋਲੋ ਪੁਛੀ ਹੈ। ਤੇ ਵਜੀਰ ਓਥੇ ਖੜੋ ਗਿਆ। ਜਟ ਕੋਲੋ ਵਜੀਰਨੇ ਰਾਜੇਦੇ ਆਨਦਾ ਹਾਲ ਪੁਛਿਆ। ਜਟਨੇ ਆਖਿਆ ਰਾਜਾ ਜਰੂਰ ਆਇਆ ਥੀ। ਗਲ ਬੀ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਏਹੋ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਵਜੀਰਨੇ ਜਟ ਕੋਲੋ ਏਸ ਗਲਕਾ ਅੰਤਰਾ ਪੁਛਿਆ। ਜਟ ਕਹਿਨ ਲੱਗਾ ਅੰਤਰਾ ਤਾਂ ਦੱਸੂੰਗਾ ਜੇ ਤੂੰ ਮੇਰੀ ਪਾਨੀ ਪੀਨਵਾਲੀ ਝਾਰੀ ਤੇ ਹੁੱਕਾ ਰੁਪੀਆਂ ਕਾ ਭਰ ਦੇ। ਵਜੀਰਨੇ ਹੁੱਕਾ ਤੇ ਝਾਰੀ ਰੁਪੀਆ ਨਾਲ ਭਰ ਦਿੱਤੀ। ਜਟਨੇ ਅੰਤਰਾ ਮਨ ਭਾਉਂਦਾ ਵਜੀਰਨੂੰ ਆਖ ਸੁਨਾਇਆ। ਵਜੀਰਨੇ ਜਾਕੇ ਰਾਜੇਨੂੰ ਸੁਨਾਇਆ ਤੇ ਅੰਤਰਾ ਠੀਕ ਠੀਕ ਰਾਜੇਦੇ ਮਨ ਲੱਗਾ। ਪਰ ਰਾਜੇਨੇ ਸੋਚ ਕੀਤੀ ਕੇ ਜਟ ਬਿਨਾ ਏਸਦਾ ਅੰਤਰਾ ਕਿਸੇਨੂੰ ਮਲੂਮ ਨਹੀ ਸੀ। ਵਜੀਰਨੇ ਓਸੇ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛ ਕੇ ਦੱਸਿਆ ਹੈ। ਏਹ ਸੋਚ ਕੇ ਰਾਜਾ ਜਟ ਕੋਲੋ ਜਾਕੇ ਕਹਿਨ ਲੱਗਾ ਜਟ ਤੂੰ ਬੜਾ ਉੱਕਾ। ਜਟ ਬੋਲਿਆ ਰਾਜਾ ਮੈ ਨਹੀ ਉੱਕਾ। ਇਕ ਭਰਾਈ ਝਾਰੀ ਤੇ ਇਕ ਭਰਾਇਆ ਹੁੱਕਾ। ਰਾਜਾ ਸੁਨਕੇ ਰਾਜੀ ਹੂਆ। ਇਸ ਅਕਲਦਾ ਇਨਾਮ ਦੇ ਕੇ ਘਰਨੂੰ ਮੁੜ ਗਿਆ॥

(नागरी रूपान्तर)

कोई राजा सकारनूँ टुरिआ जांदा-सी। राह-विच इक जट टिब्बे-उत्ते हल वाहोदा सी, ते उहदी उमर सत्तर असीं बरेदी सी। राजा उसनूँ वेख-के बोलिआ, 'जट, नूँ वडा उक्का।' जट बोलिया के, 'राजा, मैं नहीं उक्का। इक चलाइआ तीर, इक चलाइआ तुक्का।' राजा सुन-के आपने राह लग्गा, ते जदो आपने घर पहुँच-पिआ, ते दरवार लाइआ, आपने वजीर कोलो इस बात दा अन्तरा पुछिआ। वजीर सुन-के सोचाँ-विच पै-गिआ। जदों कोई जवाब उहदी समझ-विच ना आइआ, ताँ सतां दिनाँ-की मुहिलत मङ्ग-लइ, ते जिस पासे राजा ओस दिन गिआ-सी, पुछ-पुछा-के ओसे पासे वजीर बी टुर-पिआ। चलदे-चलदे राहि-विच ओह जट ओसे तरा हल-वाही करदा मिलिया। वजीरने सोच कीती, 'बई, होवे ना ताँ एहो जट है जीहदी गल राजेने मेरे कोलो पुछी-है।' ते वजीर ओथे खडो गिआ। जट कोलो वजीरने राजेदे आनदा हाल पुछिआ। जटने आखिआ, 'राजा जरूर आइआ सी, गल बी मेरे नाल एहो कीती-सी।' वजीर ने जट कोलो एस गल-का अन्तरा पुछिआ। जट कहिन लग्गा, 'अन्तरा ताँ दस्सूँगा जे तूँ मेरी पानी पीन-वाली झारी ते हुक्का रुपीआँ-का भर-दै।' वजीर ने हुक्का ते झारी रुपीआं नाल भर-दित्ती। जटने अन्तरा मन-भाओंदा वजीरनूँ आख सुनाइआ। वजीर ने जा-के राजेनूँ सुनाइआ, ते अन्तरा ठीक-ठीक राजेदे मन लग्गा। पर राजेने सोच कीती के, 'जट बिना एसदा अन्तरा किसेनूँ मलूम नहीं सी। वजीर ने ओसे कोलो पुछ-के दस्सिआ-है।' एह सोच-के राजा जट-कोलो जा-के कहिन लग्गा, 'जट, तूँ वड़ा उक्का।' जट बोलिआ, 'राजा, मैं नहीं उक्का। इक भराई झारी ते इक भराइआ हुक्का।' राजा सुन-के राजी हूआ; इस अकलदा इनाम दे-के घर-नूँ मुड़-गिआ।

(अनुवाद)

कोई राजा शिकार को चला जा रहा था। रास्ते मे एक जाट टीले के ऊपर[1] हल चला रहा था, और उसकी उम्र सत्तर-अस्मी बरस की थी। राजा उसको देखकर बोला, 'जाट, तू बडा मूर्ख (है)।' जाट बोला कि 'राजा, मैं नही मूर्ख। एक चलाया

१ टीला या टिब्बा पर हल तो आसानी से चलाया जा सकता है लेकिन उमसे कोई लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि फसल हाथ नहीं लग सकती। इस सबंध मे कई लोकोक्तियाँ हैं, जैसे दे० मैकोनैसी की पुस्तक मे स० ६९ और ७१।

तीर, एक चलाया तुक्का।' राजा सुनकर अपनी राह हो लिया, और जब अपने घर पहुँच गया, और दरबार लगाया, अपने मन्त्री से इस बात का अर्थ पूछा। मन्त्री सुनकर सोच में पड गया। जब कोई उत्तर उसकी समझ मे न आया, तो सात दिन की अवधि माग ली, और जिस ओर राजा उस दिन गया था, पूछ-पुछाकर उसी ओर मन्त्री भी चल पडा। चलते चलते रास्ते मे वह जाट उसी तरह हल चलाता मिला। मन्त्री ने विचार किया, 'भाई, हो न हो, यही जाट है जिसकी बात राजा ने मुझसे पूछी है।' और मन्त्री वहाँ खडा हो गया। जाट से मन्त्री ने राजा के आने का वृत्तान्त पूछा। जाट ने कहा, 'राजा अवश्य आया था, बात भी मेरे साथ यही की थी।' मन्त्री ने जाट से इस बात का अर्थ पूछा। जाट कहने लगा, 'अर्थ तब बताऊँगा जब तू मेरी पानी पीने वाली सुराही और हुक्का रुपयो से भर दे।' मन्त्री ने हुक्का और सुराही रुपयो से भर दी। जाट ने अर्थ मन-भाता मन्त्री को कह सुनाया। मन्त्री ने जाकर राजा को सुनाया, और अर्थ ठीक-ठीक राजा के मन लगा। पर राजा ने विचार किया कि 'जाट के बिना इसका अर्थ किसी को मालूम नही था। मन्त्री ने उससे पूछकर बताया है।' यह सोचकर राजा जाट से जाकर कहने लगा, 'जाट, तू बडा मूर्ख (है)!' जाट बोला, 'राजा मैं नही मूर्ख, एक तो (रुपयो से) सुराही भरा ली और एक भरा लिया हुक्का।'[1] राजा सुनकर प्रसन्न हुआ, इस बुद्धिमत्ता का (उसे) इनाम देकर घर को लौट गया।

१. जट्ट की तुकबंदी ध्यान देने योग्य है—

इक चलाया तीर, इक चलाया तुक्का।
इक भराई झारी, इक भराया हुक्का॥

[सं० १८]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

मालवाई बोली (नाभा राज्य, जिला फूल)

ਇਕ ਰਾਜੇਦੇ ਸਤ ਧੀਆਂ ਸਨ। ਇਕ ਦਿਨ ਰਾਜੇਨੇ ਓਹਨਾਂਨੂੰ ਆਖਿਆ ਧੀਓ ਤੁਸੀਂ ਕੀਦਾ ਭਾਗ ਖਾਂਦੀਆ ਹੋ। ਛੀਆਂਨੇ ਆਖਿਆ ਅਸੀ ਬਾਪੂ ਤੇਰਾ ਭਾਗ ਖਾਦੀਆਂ ਹਾ ਤੇ ਸਤਮੀਨੇ ਆਖਿਆ ਮੈ ਤਾ ਅਪਨਾ ਭਾਗ ਖਾਂਦੀ ਹਾ। ਤਾ ਰਾਜੇਨੇ ਆਖਿਆ ਮਿ ਥੋਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਿਯਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹਾ। ਛੀਆਨੇ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਸਾਨੂੰ ਖੰਡ ਬਰਗਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਤੇ ਸਤਮੀਨੇ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਮੈਨੂੰ ਨੂਨ ਬਰਗਾ ਪਿਆਰਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। ਤਾ ਰਾਜੇਨੇ ਹਰਖ ਕੇ ਆਖਿਆ ਏਹਨੂੰ ਕਿਸੇ ਲੰਗੜੇ ਲੂਲੇ ਨਾਲ ਬਿਹਾ ਦੇਓ ਦੇਖੋ ਫਿਰ ਕਿਕੂੰ ਅਪਨਾ ਭਾਗ ਖਾਊਗੀ। ਤਾਂ ਓਹ ਇਕ ਲੰਗੜੇ ਨਾਲ ਬਿਹਾ ਦਿੱਤੀ। ਓਹ ਵਿਚਾਰੀ ਲੰਗੜੇਨੂੰ ਖਾਰੀ ਵਿਚ ਪਾ ਕੇ ਮੰਗਦੀ ਖਾਦੀ ਪਈ ਫਿਰਦੀ। ਇਕ ਦਿਨ ਖਾਰੀਨੂੰ ਇਕ ਛੱਪੜ ਤੇ ਕੰਢੇ ਤੇ ਧਰ ਕੇ ਆਪ ਮੰਗਨ ਚਲੀ ਗਈ। ਤਾਂ ਲੰਗੜੇਨੇ ਕੀ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਕਾਲੇ ਕਾ ਛੱਪੜ ਵਿਚ ਬੜ ਕੇ ਬੱਗੇ ਹੋ ਹੋ ਨਿਕਲਦੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਤਾ ਓਨਾਦੀ ਰੀਸਮਰੀਸੀ ਲਗੜਾ ਬੀ ਰੁੜ੍ਹਦਾ ਪੈਂਦਾ ਛੱਪੜ ਵਿਚ ਜਾ ਡਿੱਗਾ ਤੇ ਓਹ ਨੌਂ ਬਰ ਨੌਂ ਹੋ ਗਿਆ। ਤਾ ਜਦ ਓਹਦੀ ਬਹੂ ਮੰਗ ਤੰਗ ਕੇ ਆਈ ਤਾ ਓਹ ਆਉਂਦੀਨੂੰ ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਹੋ ਕੇ ਖੜ ਗਿਆ॥

(नागरी रूपान्तर)

इक राजेदे सत धीआँ सन। इक दिन राजेने उन्हाँनूँ आखिआ, 'धीओ, तुसीं कीदा भाग खादीआँ-हो?' छीआँने आखिआ, 'असी, बापू, तेरा भाग खांदीआँ-हाँ।' ते सतमीने आखिआ, 'मैं तां अपना भाग खाँदी-हाँ।' तां राजेने आखिआ, 'मैं थोनूँ किहा-जिया पिआरा लगदा-हाँ?' छीआँने आखिआ, 'तूँ, सानूँ खण्ड-वर्गा पिआरा लगदा-है।' ते सतमीने आखिआ, 'तूँ मैंनूँ नून वर्गा पिआरा लगदा है।' तां राजेने हरख-कै आखिआ, 'एहनूँ किसे लङ्गड़े-लूले-नाल विहा-देओ। देखो फिर किकूँ अपना भाग खाऊगी।' तां ओह इक लङ्गड़े-नाल विहा-दित्ती। ओह विचारी लङ्गड़ेनूँ खारी-विच पा-के मङ्गदी खाँदी पई फिरदी। इक दिन खारीनूँ इक छप्पड़-ते कण्ढे-ते धर-कै

आप मङ्गन चली-गई; ताँ लङ्गड़ेने की देखिआ, कि काले काँ छप्पड़-विच बड़-के वग्गे हो-हो निकलदे-आओंदे -हन। ताँ ओनाँदी रीसम-रीसी लङ्गडा वी रुढ़दा पंदा छप्पड़-विच जा डिग्गा; ते ओह नौं-वर-नौं हो गिआ। ताँ जद ओहदी वहू मङ्ग-तङ्ग-के आई; ताँ ओह आउंदीनूँ राजी-वाजी हो-के खड-गिआ।

(अनुवाद)

[निम्नलिखित कथा सारे भारतवर्ष मे प्रचलित है। इसका दूसरा पाठान्तर इस सर्वेक्षण के भाग ५, खण्ड २, पृ० ३०९ (अग्रेजी) मे मिलेगा। ध्यान देने की वात यह है कि इसका आरम्भ वादशाह लियर की कहानी से कितना मिलता-जुलता है।]

एक राजा की सात लडकियाँ थी। एक दिन राजा ने उनको कहा, 'वेटियो, तुम किसका भाग्य खाती हो?' छओ ने कहा, 'हम, वापू, तेरा भाग्य खाती है।' और सातवी ने कहा, 'मैं तो अपना भाग्य खाती हूँ।' तव राजा ने कहा, 'मैं तुम्हे कैसा प्यारा लगता हूँ?' छओ ने कहा, 'तू हमे खाँड जैसा प्यारा लगता है।' और सातवी ने कहा, 'तू मुझे नमक जैसा प्यारा लगता है।' तव राजा ने क्रुद्ध होकर कहा, 'इसको किसी लँगड़े-लूले के साथ व्याह दो। देखो फिर किस तरह अपना भाग्य खायेगी।' तव वह एक लँगडे के साथ व्याह दी गयी। वह वेचारी लँगडे को डाले मे डालकर माँगती-खाती फिरती थी। एक दिन डाले को एक तालाब के किनारे पर रखकर आप माँगने चली गयी, तो लँगडे ने देखा कि काले कौवे तालाव मे घुसकर गोरे हो-होकर निकलते आते हैं। तव उनकी रीस मे लँगडा भी वहता-घिसटता तालाव मे जा गिरा, और वह (तुरन्त) नया से नया हो गया। तव जव उसकी वहू माग-वाग कर आयी, तो वह (उसके) आते ही राजी-खुशी होकर खडा हो गया।

[सं० १९]

भारतीय आर्य परिवार

केन्द्रीय वर्ग

# पंजाबी

मालवाई बोली

(पटियाला राज्य, थाना गोविन्दगढ़)

دیکھو کھنے هتّهه نال هتّهي دے چھڈی هے ستّے هتّهه وچه براسی
هے - سوئیں رُوکھه دے هیٹه حقّه اور حل دا نوڑا دهرا هے - اوتھے اک منڈا
بیٹھا هے - هالی بچاره یه بهنی نال آئها هے - هل اور بلداں نوں لیکے
موٹھه اسمیرے کهیت وچه پهونچا هے - سکهر دوپهرے تیویں روٹی
لیاوندي هے - ایه جوتا ڈهال دیندا هے - بلداں نوں ککهه پاوندا هے - آپ
هتّهه موٹهه دهو ٹهنڈا هو کے روٹي کهاندا هے حُقّه پیندا هے - بلداں نوں
پاني پلاوندا هے تهوڑا چر پے رهندا هے - تیویں ساگ لے جاندی هے -
بهاهلا کم هوندا هے - تاں بچاره اسي دهندے وچه آتهن کر دیندا هے - نهیں
تاں تهوڑ کم دهندا کردا هے - دن چهپے هل اور بلداں نوں لیکے گهر
آوندا هے - تیویں دا بهار لیاوندا هے - بلداں موهرے پاوندا هے - تیویں دهار
کڈهدي هے - روٹي پکاوندي هے - ایه چار نال مُنڈے کُڑیاں وچه بیٹھه کے
کهاندا هے - پهر اس موج نال لتّاں پسار کے سوندا هے که بادشاهاں نوں
پهلاں دے بچهاوے اوے بهي نهیں تهیاوندي *

(नागरी रूपान्तर)

देखो, खब्बे हत्थ-नाल हत्थी दव छड्डी-है, सज्जे हत्थ-विछ पुरानी है। सोहे रोखदे हेठ हुक्का और जलदा तौड़ा धरा-है। उत्थे इक मुण्डा बैठा है। हाली विचारा पुह फटी नाल उठा-है। हल और बल्दाँनूं ले-के, मूँह-अँधेरे खेत-विछ फउँचा-है। सिखर दो-पहरे तीवीं रोटी लियाउँदी-है। एह जोत्ता ढाल दिदा-है। बल्दाँनूं कख पाउँदा-है। आप हत्थ मूँह धो ठण्डा हो-के रोटी खाँदा-है, हुक्का पींदा-है। बल्दाँनूं पानी पलाउँदा-है। थोड़ा चिर पै रहन्दा-है। तीवीं साग ले जाँदी-है। भाहला कम्म हूँदा-है ताँ विचारा इसी धन्दे-विछ आत्थन कर दिदा-है। नहीं-ताँ होर कम्म धन्दा करदा-है। चहींदा भार लियाउँदा-है। बल्दाँ मूहरे पाउँदा-है। तीवीं धार कडदी है। रोटी पकाउँदी-है। एह चाओ-नाल मुंडे-कुड्यॉ-विछ बैठ-के खाँदा है। फिर इस मौज-नाल लत्ता निसाल-के सोदा-है, कि बादशाहाँनूं फुल्लादे विछाउने-उत्ते भी नहीं थिआउँदी।

(अनुवाद)

देखो, बाये हाथ मे हत्था दबा रखा है, दाहिने हाथ मे चाबुक है। सामने पेड के नीचे हुक्का और पानी का बरतन रखा है। वहाँ एक लडका बैठा है। किसान बेचारा पौ फटते ही उठा है। हल और बैलो को लेकर मुँह अँधेरे खेत मे (जा) पहुँचा है। भरे दोपहर मे स्त्री खाना लाती है। यह हल खोल देता है। बैलो को तिनके डालता है। खुद हाथ-मुँह धो, ठण्डा होकर खाना खाता है, हुक्का पीता है, बैलो को पानी पिलाता है। थोडी देर लेट जाता है। स्त्री साग ले जाती है। बहुत काम होता है तो बेचारा इसी धन्धे मे शाम कर देता है। नही तो और काम धन्धा करता है। चरी का बोझा लाता है। बैलो के आगे डालता है। स्त्री दूध दुहती है। खाना पकाती है। यह चाव के साथ लडके-लडकियो मे बैठकर खाता है। फिर ऐसी मौज से टागें पसार कर सोता है कि जो बादशाहो को फूलो की सेज पर भी नही मिलती।

# भट्टिआनी

भाटी (या जैसा कि पजाब मे कहा जाता है, भट्टी) राजपूत जाति का एक मुसलमान कवीला है जो पजाब और उत्तर-पश्चिमी राजपूताना मे व्यापक रूप मे विखेरा पाया जाता है। ये लोग उत्तरी वीकानेर और फीरोजपुर जिले के उस भाग मे जो उससे सटा हुआ है, विशेषत प्रवल है। देश के इस भाग को भट्टिआना कहा जाता है और इसके प्रमुख नगरो मे भटनेर का प्रसिद्ध गढ है। १९वी शती के आरम्भ मे देश के इस भाग मे भट्टियो के महत्त्व के कारण भट्टी शब्द इस क्षेत्र के रहने वाले सभी मुसलमानो पर लागू हो गया और उनका नाम राठ या पछाडा का लगभग पर्याय वन गया—यह नाम घग्घर घाटी के (एक भिन्न जाति के) पछाडा मुसलमानो को दिया गया था।[१]

हमने देखा कि पछाडा मुसलमानो द्वारा वोली जाने वाली पजावी की वोली का एक नाम राठी भी था, और जैसा कि अभी स्पष्ट किया गया है, यही नाम वीकानेर के भट्टियो की वोली को दिया गया है, जवकि फीरोजपुर के भट्टियो की वोली को स्थानीय स्तर पर राठौरी नाम से जाना जाता है। ये दो राठी वोलियाँ एक नही है, क्योकि जैसा कि हमने देखा, पछाडा मुसलमानो की राठी पश्चिमी हिन्दी के साथ पोवाधी पजावी का मिश्रित रूप है, और भट्टियो की राठी या राठौरी उत्तरी वीकानेर की वागडी के साथ मालवाई पजावी का मिश्रण है।

यह तो जाना गया होगा कि राठी एक जातीय भाषा है। फीरोज़पुर की फाज़िल्का तहसील के दक्षिण मे सव लोग (भट्टी हो या नही) एक भाषा वोलते है जिसे स्थानीय ढग से वागडी कहा जाता है। किन्तु भापा के इस रूप के नमूने की, जो फीरोजपुर से प्राप्त हुए हैं, परीक्षा करने से लगता है कि यह वागडी है ही नही। यह विल्कुल वही वोली है जो वागड़ी की प्रधानता लिये हुए, वागडी और पजावी का मिश्रण, भट्टी राठी है।

१. सिरसा वन्दोवस्त रिपोर्ट, १८७९-८३, पृ० ८९।

फीरोज़पुर के भट्टी कई (प्राय: उपजातियो के) नामो से पाये जाते हैं, जैसे वट्टू, जोया, रस्सीवट्ट या राठौर। अन्तिम नाम के कारण इस जिले मे उनकी वोली को राठौरी नाम दिया गया है। यह सतलुज के दक्षिण तट के ऊपर-ऊपर काफी दूर तक फाज़िल्का और ममदोत तहसीलो मे वोली जाती है, और यह वही वोली है जो वीकानेर की राठी और फाजिल्का की 'वागडी'—केवल वागडी से अधिक मिश्रित विकृत पजावी है। इन दो भाषा-रूपो का अनुपात स्थानभेद से भिन्न-भिन्न है, किन्तु इन तीनो क्षेत्रो मे भाषा का सामान्य लक्षण एक ही है, और इसलिए कि इस मिश्रित भाषा के भेदो के लिए किसी सामान्य नाम की आवश्यकता है ही, मैने इसे, इसके केन्द्रीय स्थल भट्टिआना से, भट्टिआनी कहा है। भट्टिआनी नाना नामो के अन्तर्गत इसके वोलने वालो की सख्या निम्नलिखित वतायी गयी है—

| | |
|---|---|
| वीकानेर की राठी | २२,००० |
| फीरोजपुर (फाजिल्का) की वागडी | ५६,००० |
| फीरोज़पुर की राठौरी | ३८,००० |
| कुल भट्टिआनी | १,१६,००० |

सन् १८२४ मे सीरामपुर के ईसाई प्रचारको ने वाइविल के नव विधान का अनुवाद इस वोली मे किया था जिसे उन्होने 'भटनेर भाषा' कहा है। भट्टिआनी के नमूनो में मैं वीकानेर की राठी मे अपव्ययी पुत्र की कथा का सम्पूर्ण रूपान्तर, और तथा कथित वागडी एव फीरोज़पुर की राठौरी मे उसके अग, दे रहा हूँ। अत मे, तुलना के लिए, मैं एक वैसा ही अश सन् १८२४ के सीरामपुर के भटनेरी उल्था से दे रहा हूँ।

## वीकानेर की राठी

पूर्वोक्त टिप्पणियो की पुष्टि नीचे दिये गये अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से हो जायगी। यह वोली पजावी और वागडी का सम्मिश्रण है जिसमे यत्र-तत्र पश्चिम मे वोली जानेवाली लहँदा से उधार लिया गया मुहावरा मिल जाता है। हेंक, एक, लहँदा है, दे (पुल्लिग वहुव०), के, पजावी है, और हा (पुल्लिग वहुव०), थे, वागडी है। इसी प्रकार अन्यत्र जासाँ, जाऊँगा, वागडी का भविष्यत् रूप है जिसमे विभक्ति पजावी की जुडी है, भाज-गे, दौडकर, वागडी है, खाँदे हा, वे खाते थे, आवा पजावी है तो आधा वागडी, तुसाडा, तुम्हारा, पजावी है, एव थारो, तुम्हारा, वागड़ी है। अधिक विस्तार मे जाने की आवश्यकता नही जान पडती।

[सं० २०]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

भट्टिआनी (राठी) बोली (बीकानेर राज्य)

हेक आदमीदे दोय पूत हा। उसदे छोटे पूत पिऊनूं आखा हे पिऊ माल विच जेडा मेरा हिसा होवे मैनूं देहे। उसनूं तदाँ माल वाँट दीता। ढेर दहाडे नही हुए छोटा पूत सब कुज उठा करने दूर देस जादा रहा ओर उथे लुचपणे विचे आपणा माल गमा दीता। ओर वो सभो कुज भजा चुका तब उस देस विचे डाढा काल पया ओर वो गरीब हो गया। ओर वो उस देसदे रैणवालेदा नोकर हो गया। ओर उसने तिसनूं अपने खेत्र विच सूरनूं चरावणनूं घाला। ओर उसने उन छीलडा नाल अपणा डिढ भरणा चाता था जिनाँनूं सूर खादे-हा। ओर कोई उसनूं कुज नाही देता-हा। जदाँ उसनूं चेता आया ओर उसै अखा के मेरे पिऊदे कितने मेहेनतीओनूं फादल टिकिया बणदी थी ओर असाँ भूख नाल मरदा हाँ। मै उठीने पीऊ नाल जासाँ ओर उसनूं अखसाँ हे बाबा मैने बेहेस्तनूं काण्ड कीती ओर तुसाडे आगे गुना कीता। असाँ फिर तुसाडा पूत कहावणे के लायक नही हू। आपदे मेहेनतीआ विच हेकदी जागे मैनूं कर लो। तदाँ वो उठते आपदे पीऊदे पासे गिया। मगर वो दूर हा तदाँ पिऊ उसनूं देखते तरस कीता। ओर भाजगे उसनूं गले नाल लगाते उसनूं चूमा। पुत्र उसदे बापनूं अखा हे पिऊ मैने बेहेस्तने काण्ड कीती ओर आपदे सामने गुना कीता ओर फिर थारे पुत्र तेरा कुहावण लायक नही हूँ। मुड उसदे पिऊने आपदे नोकराँनूं अखा पुत्रनूं थीगडे अछे पधावो ओर उसदे हथ विच मुदडी ओर पेरो जूती घतावो ओर आपा खाते मजे करे। क्यूंके पुत्र मेरा मुया हा मरते मुड आया। खडी गया हा मड लाभ्या है। तदाँ वो मजे करण लगे।

उसदा वडा पुत्र खेत्रेच हा। जदाँ वो अमदा हुया घरदे कोल आया तदाँ वाजते नचणदा खड़का सुणा। आपदे नोकराँ विचूँ हेक नोकरनूँ आपदे कोल सदते अखा के... ...[1] उस अखा तेरा भीरा आया है आपदे पिऊने चगा खाँणा कीता है इस वास्ते जो उसनूँ भल चंगा लाद्या है। उसने कावड कीती। उस घर विच आवण न चाया। इस वास्ते उसदा पिऊ वाहार आते उसनूँ मनावण लगा। उस पिऊनू जवाव दीता की वेखो मै इते वराँ-तूँ तुहाडी खिदमत करदा-हा। आपदे हुकमनूँ कदे अदुल न कीता। आप मैनूँ कदे हेक लेला भी न दीता के मै आपदे बेलीआँ नाल खुसी करदा हा। मगर आपदा ए पुत्र जो कजरीआंदे नाल रलते आपदा सव कुज भेजा-देता जू आया उसदे वास्ते आप चंगा खाँणा कीता। पिऊ उसनूँ अखा पुत्र तूँ नित मेरे नाल रहेदा-है। जो कुज मेरा वो सवो कुज तेरा है। मगर डाढी खुसी करणी ठीक हाई। क्यूके तेरा भीरा मुया हुवा मुड़ जी आया-है, खिडी गया-हा मुड लाभ गया-है।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो पुत्र थे। उसके छोटे पुत्र ने पिता को कहा, हे, पिता, सम्पत्ति मे जो मेरा हिस्सा हो मुझे दे। उसको तव सम्पत्ति बाँट दी। वहुत दिन नही हुए थे, छोटा पुत्र सव कुछ उठाकर दूर देश जाता रहा और वहाँ वदमाशी मे अपनी सम्पत्ति गँवा दी। और (जव) वह सव कुछ लगा चुका तव उस देश मे प्रवल अकाल पडा और वह गरीव हो गया। और वह उस देश के रहनेवाले का नौकर हो गया। और उसने उसको अपने खेत मे सूअरो को चराने भेजा। और उसने उन छिलको से अपना पेट भरना चाहा जिनको सूअर खाते थे। और कोई उसको कुछ नही देता था। जव उसको होश आया और उसने कहा कि मेरे वाप के कितने श्रमियो को फालतू रोटियाँ मिलती थी और हम भूख से मरते है। मैं उठकर वाप के पास जाऊँगा और उसे कहूँगा, 'हे वावा, मैंने स्वर्ग की ओर पीठ की और तुम्हारे आगे पाप किया। मैं फिर तुम्हारा पुत्र कहलाने लायक नही हूँ। अपने श्रमियो मे एक की जगह मुझे रख लो।' तव वह

१. मूल पाठ मे ये शब्द नहीं मिलते।

उठकर अपने वाप के पास गया। किन्तु अब दूर था तव वाप ने उसे देखते ही दया की और दौडकर उसे गले लगाकर उसे चूमा। पुत्र ने अपने बाप को कहा, 'हे पिता, मैंने स्वर्ग की ओर पीठ की और आपके सामने पाप किया और फिर 'तुम्हारा पुत्र कहलाने लायक नही हूँ।' तव उसके वाप ने अपने नौकरो को कहा कि पुत्र को कपडे अच्छे पहनाओ और उसके हाथ मे अँगूठी और पाँवो मे जूता पहनाओ और हम लोग खाते हुए मजे करें। क्योकि पुत्र मेरा मर गया था, मरते लौट आया। खो गया था फिर मिला है। तव वे मजे करने लगे।

उसका वडा वेटा खेत मे था। जव वह आता हुआ घर के पास आया तव (गाने) वजाने (और) नाचने का शब्द सुना। अपने नौकरो मे से एक नौकर को अपने पास वुलाकर कहा कि । उसने कहा तेरा भाई आया है, आपके पिता ने अच्छा भोज किया है इसलिए कि उसको भला चगा पा लिया है। उसने क्रोध किया। उसने घर मे आना न चाहा। इसलिए उसका वाप वाहर आकर उसे मनाने लगा। उसने वाप को उत्तर दिया कि देखो, मैं इतने वरसो से तुम्हारी सेवा करता था। आपकी आज्ञा का कभी उल्लघन नही किया। आपने मुझे कभी एक मेमना भी नही दिया कि मैं अपने साथियो के साथ मौज करता। किन्तु आपका यह वेटा जिसने वेश्याओ के साथ मिलकर आपका सव कुछ खो दिया जव आया (तो) उसके लिए आपने अच्छा भोज किया। वाप ने उसको कहा, 'वेटा, तू नित्य मेरे साथ रहता है। जो कुछ मेरा है वह सव कुछ तेरा है। पर वहुत मौज करना ठीक था। क्योकि तेरा भाई मरा हुआ फिर जी गया है, खो गया था फिर मिल गया है।

## फीरोज़पुर की तथाकथित वागड़ी

वीकानेर की सीमा के आस-पास पजाव के ज़िला फीरोज़पुर की तहसील फाज़िल्का मे वागडी वोलनेवालो की सख्या छप्पन हज़ार वतायी गयी है। प्रेषित नमूनो के परीक्षण से पता चलता है कि इस वोली मे वागडी के विशिष्ट लक्षणो मे एक भी नही पाया जाता, जैसे सवंध कारक का गो इत्यादि। वीकानेर की राठी की तरह यह भी पजावी का विकृत रूप है जिसमे वागडी के कुछ रूप घुल-मिल गये हैं। इस मिश्रित वोली का कोई महत्त्व नहीं समझा जाता, इसलिए, उदाहरणार्थ, अपव्ययी पुत्र की कथा से एक सक्षिप्त उद्धरण दे देना पर्याप्त होगा। मूल उदाहरण फारसी और गुरमुखी अक्षरो मे लिखा गया था।

[सं० २१]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

भट्टिआनी (तथाकथित वागडी) बोली (फीरोज़पुर, तहसील फाज़िल्का)

एक मानस-रा दे वेटा हा। वाँ मिआँ छोडो बेटो वाप-ने कहिओ, 'ओ वाप माल-रा हिसा जिका आवे मि-न्ने दे।' जणा पाछे वि-ने माल-रा पाँती वाँट-दीनी। थोरे पाछे छोटकीओ वेटो सगलो धन-माल भेलो कर-के दूर देस-ने उठ-गिओ। जठे आपनो माल हरामकारी मै खो-दीओ। जणा सगलो माल खो-दीनो, बी देस-रे एक भागवान-के जा-लागिओ। वा-ने अपने खेत-मै सूर चराव भेजिओ। बै-रे जी डवकिओ कि ऐ छूतका-हूँ खा-लिओ, जिका सूर खै-है, कि बी-न्ने ऐसो भी को-मिले-नी।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो वेटे थे। उनमे छोटा वेटा (ने) वाप से कहा, हे वाप, सम्पत्ति का अंश जो आये मुझे दे।' तव पीछे उसने सम्पत्ति का हिस्सा बाँट दिया। थोडा (समय) पीछे छोटा वेटा सारी धन-सम्पत्ति वटोरकर दूर देश को उठ गया। वहाँ अपनी सम्पत्ति हरामकारी मे खो दी। जव सारी सम्पत्ति खो दी, उस देश के एक भाग्यवान के यहाँ जा लगा। उसने अपने खेत मे सूअर चराने भेजा। उसके जी (मे) उठा कि ये छिल्के भी खा लू, जिनको सूअर खाते हैं, किन्तु उसको ऐसा भी कोई नही देता (था)।

## फीरोज़पुर की राठौरी

तथाकथित वागडी की अपेक्षा फीरोज़पुर की राठौरी कही अधिक सम्मिश्रित वोली है। वाहरी तत्त्व वास्तविक वागडी न होकर कुछ-कुछ वीकानेरी हैं, जैसा कि छँ, है, के प्रयोग मे प्रकट है। अपव्ययी पुत्र की कथा की आरम्भिक पक्तियाँ दे देना पर्याप्त होगा।

[सं० २२]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

भट्टिआनी (राठौरी) बोली (फीरोज़पुर, तहसील फाज़िल्का)

इक्के गुवा-रे दी बेटा सी। ओन-मा-ले छोटा बेटा बापेने किओ, 'माले मान्हे जुतना हिस्सो मनें आवा -छै, ऊ मने देओ।' ई माल वण्ड दीनो-छै। थोडा दिने-मै सारो माल कट्ठो करते दूर देसने ले-गिओ। अपनो माल भैडी लच्छे-मै उत्ते गाल-दीनो। जदे गाल-दीनो, उत्ते देसे साहूकारे धोरे नोकर हो-गिओ-छी। उन्ने कहिओ 'जा-के सूरन्ने वाही-मही चरा लिआ।' ओह्-रो जी कीदो ऊनहूँ छिलडूंने खाते अपना ढिड भर-लै, जिन्हूनूँ सूर खाते। ऊने अस भी नही मिलते।

(अनुवाद)

एक गँवार के दो बेटे थे। उनमे से छोटे बेटे ने बाप को कहा, 'सम्पत्ति मे से जितना हिस्सा मुझे आता है, वह मुझे दो।' इसने सम्पत्ति बाँट दी। थोडे दिन मे सारी सम्पत्ति इकट्ठी करके दूर देश को ले गया। अपनी सम्पत्ति बद-चलनी मे वहॉ नष्ट कर दी। जब नष्ट कर दी, वहाँ देश के अमीर के पास नौकर हो गया। उसने कहा, 'जाकर सूअरो को खेत मे चरा ला।' उसका जी किया उन्ही छिलको को खाकर अपना पेट भर ले जिनको सूअर खाते (थे)। (किन्तु) उसको ऐसे भी नही मिलते (थे)।

## भटनेरी

अन्त मे उसी कथा के भाषान्तर से एक वैसा ही उद्धरण दे रहा हूँ जो सीरामपुर वाले सन् १८२४ के अनुवाद मे प्राप्त है। इससे स्पष्ट हो जायगा कि इसके सामान्य लक्षण वही है जो पिछले नमूनो मे भी हैं।

[स० २३]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

भट्टिआनी (भटनेरी) बोली (सीरामपुर मिशन, १८२४)

कँइ मानखदे दोय गभरु हुन्दा। फेर वाँ-मॉय-ता छोटोडे भायजीनूँ आख्या, 'हे भायजी, मायादी जो पाँती पडदी, वा असे दो।' फेर उँ वाँदे कोल मायादी पाँत्याँ किती। फेर घणा दन न हुयाँ-ता छोटोडो गभरु आपरो सारो भेलो करर दूर देशनूँ परो-गयो। फेर उथे जङ्ग-रस-मे जीर अपणी माया उडाय-दी। तद उँदी सारी खुट-गयाँ-ता उँ देश मे घणो करडो काल पडियो। फेर उँ घटाव-मे पडन लग्यो। फिर उँ जायर उँ देश दे काई वस्तीवालेदे नाल मिल-गयो। फेर उँ शूवर चरावण लिये अपणे खेत मे उँनू पठ्यो। फेर शूवर जो खाँवदा-हुन्दा उँ छावडाँ-ता उँ अपणो पेट भरन चायो। फेर कँई उँनू न दिया।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो लडके थे। तव उनमे से छोटे ने वाप को कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति का जो अश पडता है, वह हमे दो।' फिर उसने उनके पास सम्पत्ति के हिस्से किये। तव वहुत दिन नही हुए थे छोटा लडका अपना सव (कुछ) वटोर करके दूर देश को चला गया। तव वहाँ वदमाशी मे जीकर अपनी सम्पत्ति उडा दी। तव उसकी सव (सम्पत्ति) समाप्त हो गयी तो उस देश मे वहुत कडा अकाल पडा। तव वह गिरावट मे पडने लगा। तव वह जाकर उस देश के किसी रहने वाले के साथ मिल गया। फिर उसने सूअर चराने के लिए अपने खेत मे उसे भेजा। तव सूअर जो खाते थे उन छिलको से उसने अपना पेट भरना चाहा। तव (भी) किसी ने उसको न दिये।

# लहँदा में विलीयमान पंजाबी

लाहौर का जिला रावी नदी के दोनों ओर स्थित है। पूर्वी ओर (रावी और सतलुज के बीच बारी दोआब मे) पजाबी की जो बोली बोली जाती है वह माझी है। रावी के पश्चिम मे (रावी और चनाब के बीच रचना दोआब में) पजाबी की लाहौरी बोली पर लहँदा के बढ़ते हुए प्रभाव के चिह्न दिखाई देते है।

यह पहले ही कह दिया गया है कि प्राचीन भाषा का वह रूप, जिससे लहँदा का विकास हुआ है, किसी समय मे अवश्यमेव अपने वर्तमान क्षेत्र से बाहर दूर तक पूर्व की ओर फैला हुआ था। पूर्वी पजाब मे यह भाषा केन्द्रीय वर्ग की एक भाषा द्वारा आच्छादित हो गयी है, और परिणामस्वरूप वह भाषा बनी है जिसे पजाबी कहा जाता है। ज्यो-ज्यो हम गगा-दोआब से पश्चिम की ओर बढते है त्यो त्यो मूल लहँदा-आधार के अवशेष अधिकाधिक स्पष्ट होते जाते है। हमे पहले ही कुछ उल्लेखनीय निदर्शन माझी बोली से प्राप्त हुए है जो निश्चित पजाबी का उत्कृष्ट और शुद्धतम रूप है। जब हम रावी पार करके रचना दोआब मे आते है तो लहँदा-आधार और अधिक स्पष्ट होता जाता है, और लहँदा और पजाबी के बीच की परम्परागत सीमा-रेखा गुजरात जिले को पार करके उस दोआब के बीचोबीच चनाब नदी पर गुजरावाला मे रामनगर के निकट से शुरू होकर और मटगुमरी जिले के उत्तरी कोने की ओर ठीक दक्षिण मे बढती हुई लगभग उत्तर-दक्षिण जाती है। वहा से यह सीधे दक्षिण की ओर (रास्ते मे रावी पार करती हुई) सतलुज के किनारे मटगुमरी जिले के दक्षिणी कोने तक चली जाती है। इस पकार मटगुमरी जिले का एक भाग, जो इस परम्परागत रेखा के पूर्व मे स्थित है, बारी दोआब मे पडता है, किन्तु भाषा की दृष्टि से वह रचना दोआब के उत्तरपूर्व मे है।

उपरिकथित रेखा शुद्ध रूप से परम्परागत है जिसे इस सर्वेक्षण के लिए अपनाया गया है। भारत मे सर्वत्र भाषाओं के परस्पर विलीन होने के उदाहरण मिलते हैं, किन्तु भारत मे कही भी विलयन इतना क्रमिक नही होता जितना लहँदा और पजाबी

के बीच में। केन्द्रीय वर्ग की भाषा की लहर जो पहले धुर पूर्वी लहँदा पर छायी थी, धीरे-धीरे जैसे ही हम पश्चिम की ओर बढते हैं, अपना बल खोती गयी और इस प्रकार लहँदा का आधार अधिकाधिक सुस्पष्ट होता गया है। यह लहर उपरिवर्णित रेखा के पश्चिम की ओर फैल गयी, किन्तु उस समय तक वह इतनी छिछली और क्षीण हो गयी कि यह भाषा अब लहँदा छापवाली पजाबी नही रही बल्कि पजाबी छापवाली लहँदा हो गयी। मोटे तौर पर हम इस रेखा को इन दो स्थितियो की सीमा के रूप मे रख सकते है, किन्तु इस रेखा के समीपस्थ प्रदेश मे, दोनो ओर, स्थानीय बोली इतनी अनिश्चित है कि उसे समान यथातथ्यता के साथ किसी भाषा के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है, और अनेक अधिकारी विद्वान् दावा कर सकते है कि गुजरावाला और मटगुमरी के तुरन्त पश्चिम की भाषा पजाबी है, लहँदा नही। ऐसे दावा का मैं विरोध नही करता। विषय की परिस्थिति ऐसे विरोध को असगत बना देती है। दूसरी ओर, जो रेखा मैंने खीची है वह सुविधाजनक है और मोटे तौर पर पजाबी की पश्चिमी सीमा का परिचय देती है।

इस रेखा के पूर्व की ओर पहले तो गुजरात जिले का उत्तरपूर्वी आधा भाग है, फिर रचना दोआब मे सियालकोट का जिला, गुजरावाला का आधा जिला, लाहौर का रावी पार का भाग और मटगुमरी का छोटा सा हिस्सा है। रावी पार करके बारी दोआब के भीतर, इस रेखा के पूर्व की ओर, मटगुमरी जिले का पूर्वी आधा भाग, जिसमे मोटे तौर पर दीपालपुर और पाकपट्टन तहसीले है, आता है। इस समूचे क्षेत्र मे भाषा एक ही है,—लहँदा का प्रबल अन्त प्रवाह लिये हुए पजाबी। मै तीन नमूने दे रहा हूँ—एक पश्चिमी लाहौर से, दूसरा इस क्षेत्र के उत्तर मे सियालकोट से और एक और धुर दक्षिण मे मटगुमरी के अन्तर्गत पाकपट्टन से।

जब सीमा-रेखा मंटगुमरी के दक्षिणी कोने पर सतलुज को स्पर्श करती है, तो वह कुछ मीलो तक उस नदी का अनुसरण करती है और बहावलपुर को पार करती हुई उस रियासत के उत्तर-पूर्वी कोने को अपने भीतर ले लेती है। यहाँ की भाषा वही है जो पाकपट्टन की, अत उसके किसी नमूने की आवश्यकता नही है। यहाँ लहँदा मे विलीन होती हुई पंजाबी का विवेचन समाप्त होता है।

हम इस मिश्रित बोली के बोलने वालो की सख्या का अनुमान ही कर सकते हैं, जैसा कि नीचे दी गयी तालिका मे। गुजराँवाला के आँकडो मे प्रान्त के दूसरे भागो से चनाव नहर कालोनी मे आकर बसे हुए पजाबी बोलनेवाले लगभग १,५५,००० लोग

सम्मिलित हैं। उनमे अधिकतर लोग माझी बोलते है। जो आँकडे दिये गये हैं उन्हे स्थानीय अधिकारियो ने पजाब मे बोली जानेवाली भाषाओ की कच्ची सूची प्रकाशित होने के बाद संशोधित किया है। इसी प्रकार बहावलपुर के आँकडे भी सशोधित रूप मे है—

| | |
|---|---|
| उत्तर-पूर्वी गुजरात | ४,५७,२०० |
| सियालकोट . . . | १०,१०,००० |
| पूर्वी गुजरावाला . . . | ५,०५,००० |
| रावी-पार लाहौर . . | १७,३९८ |
| पूर्वी मंटगुमरी . | २,९२,४२६ |
| उत्तरी बहावलपुर . . | १,५०,००० |
| कुल योग | २४,३२,०२४ |

ऊपर दिये गये लाहौर के आँकडे बहुत कम लगते है, किन्तु मेरे पास इन्हे जाँचने का कोई साधन नही है, और सभव है इस कमी की पूर्ति माझी बोलनेवाले चनाव के नहरी आबादकारो की संख्या से हो जाती हो।

पुस्तक-सूची

ग्राहम बेली, पादरी टी०,—पजाबी व्याकरण। वजीराबाद (अर्थात् उत्तरी गुजरावाला) मे बोली जानेवाली पजाबी का सक्षिप्त व्याकरण (अग्रेजी)। लाहौर, १९०४।

कम्मिग्स, पादरी टी० एफ०, तथा ग्राहम बेली, पादरी टी०,—पंजाबी नियम-पुस्तक तथा व्याकरण। उत्तरी पजाब की बोलचाल की पजाबी की निर्देशिका (अग्रेजी)। कलकत्ता, १९१२। (उत्तरी पजाब के अन्तर्गत सियालकोट, गुजरावाला, लाहौर, गुजरात और आसपास के जिलो के भागो को लेकर, फीरोजपुर जिला सम्मिलित है।)

## पश्चिमी लाहौर की पंजाबी

लाहौर ज़िले के पश्चिमी भाग के भीतर ज्यो ही हम रावी पार करके जाते हैं, तो हमे पजाबी का लहँदा आधार बहुत अधिक प्रबल रूप से मिलने लगता है। कुछ

स्थानीय विशेषताएँ भी हैं। लाहौर ज़िले के इस भाग की बोली के नमूने के तौर पर मैं अपव्ययी पुत्र की कथा का रूपान्तर दे रहा हूँ जिसमे कुछ निर्देशात्मक रूप भी पाये जाते हैं।

उच्चारण मे मूर्धन्य ळ का नितान्त अभाव देखा जा सकता है, जैसा कि माझा की पजावी मे भी है। मूर्धन्य ण मनमाने ढग से प्रयुक्त होता है। यथा, हम एक ही वाक्य मे गावन भी पाते हैं नच्चण भी। स्वर-मान भी कुछ शव्दो मे अनियमित है। रह, रह, धातु की वर्तनी कभी तो रह, कभी रिह और कभी रैह है। इसकी तुलना शाहपुर की लहँदा के रेह से कीजिए।

सज्ञा के रूपान्तर मे हम देखते है कि करण कारक का परसर्ग ने है, नँ नही, और प्राय इसका व्यवहार नही किया जाता (जैसे लहँदा मे)। ने को यदा-कदा सम्प्रदान के नूँ के स्थान पर भी प्रयुक्त करते हैं। जैसे नौकर-ने आखिआ, उसने नौकर को कहा।

सर्वनामो मे, हमें करण एकवचन एव कर्ता के लिए तूँ का प्रयोग मिलता है। जैसे तूँ निआज़ दित्ती, तूने दावत दी। असाँ और तुसाँ का प्रयोग प्राय कर्ता के लिए, 'हम' और 'तुम' के अर्थ मे होता है। 'वह' के लिए सामान्य शव्द लहँदा का ओ है, और तिर्यक् एकवचन उस या उन। इहदे, इसके, के स्थान पर इंघे मे हमे महाप्राण का विपर्यय मिलता है। 'अपना' के लिए आपना है, आपणा नही। सम्वन्धवोधक सर्वनाम जेडा है (तुलना कीजिए लहँदा जेहड़ा), 'क्या' के लिए कीह है।

अस्तित्वसूचक क्रिया नियमितत लहँदा के रूप ग्रहण करती है, जैसे हिन, वे हैं, आहा या हा, वह था। कभी-कभी हमे जे, वह है या वे हैं के अर्थ मे प्रयुक्त मिलता है। समापिका क्रिया मे हमे भविष्यत् के दोनो रूप मिलते है, लहँदा का जैसे उठिसाँ-(गा), उठूँगा, मे और पजावी का जैसे रहाँगा, रहूँगा मे।

यदा-कदा हमे क्रियाओ से जुडे सार्वनामिक प्रत्ययो के उदाहरण भी मिल जाते हैं, ऐसे जैसे लहँदा मे। जैसे, दित्तोई, तू ने दिया। लहँदा वर्तमान कृदन्त भी सामान्य है। जैसे, करेंदा (करदा के स्थान पर), करता।

हमे लहँदा नकारात्मक सहायक क्रिया के उदाहरण भी मिलते है, जैसे नहाँ, वह न था, मे।

कुछ-एक लहँदा के अभिव्यक्ति-पद भी हैं। इस प्रकार का प्रयोग है चा, उठा, धातु, जो क्रिया के अर्थ पर वल देने के लिए उससे पूर्व लगता है। जैसे चा-कीता,

किया; चा-जान, जान ले। इसी प्रकार के (नमूने मे आनेवाले दूसरो के अलावा) विशिष्ट लहँदा अभिव्यक्ति-पदो मे हम उद्धृत कर सकते हैं हिक्क, एक; थिगडा, गुदडी, कावीर, क्रुद्ध, हत्थो, विपरीत।

न्यूटन अपने 'पजाबी व्याकरण' के पृष्ठ ३३ पर कहते हैं कि लाहौर जिले मे ने-शब्द बहुधा बेकार मे प्रयुक्त होता है। जैसे, इह वी आख दित्ता-सा ने, उसने यह भी कहा था। मुझे इसका कोई उदाहरण नमूने मे नही मिला। प्रश्न यह है कि ऐसे प्रसग मे ने, जे की तरह, सार्वनामिक प्रत्यय तो नही है? लहँदा मे मध्यम पुरुष और अन्यपुरुष बहुवचन के लिए ने है, और यह नितान्त सम्भव है कि लाहौर मे इसका प्रयोग एकवचन के लिए होता है। कश्मीरी मे, जो कि लहँदा से बहुत कुछ सम्बद्ध है, अन्यपुरुष सर्वनाम के एकवचन के लिए अन का प्रयोग होता है।

[सं० २४]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

रचना दुआब के उत्तर-पूर्व की बोली (जिला लाहौर, तहसील शरकपुर)

ਹਿੱਕ ਆਦਮੀਦੇ ਦੋ ਪੁਤ੍ਰ ਆਹੇ ਉਨ੍ਹਾ ਵਿੱਚੋ ਪਿਉਨੂੰ ਨਿੱਕੇ ਆਖਿਆ ਪਿਉ ਜੋ ਮੇਰਾ ਹਿੱਸਾ ਰਿਜ਼ਕ ਵਿੱਚ ਹੈ ਓ ਵੰਡ ਦੇ। ਉਸਨੇ ਅਪਨਾ ਮਾਲ ਦੁਹਾਂਨੂੰ ਵੰਡ ਦਿੱਤਾ। ਬਾਹਲੇ ਦਿਨ ਅਜਾ ਨਹੀ ਹੋਏ ਨਿੱਕੇਨੇ ਸਾਰਾ ਮਾਲ ਇਕੱਠਾ ਚਾ ਕੀਤਾ ਕਿਸੀ ਦੂਰ ਮੁਲਕ ਲੇ ਕੇ ਵਾਢਾ ਰਹਾ ਤੇ ਉਥਾ ਭੈੜੇ ਕੰਮਾ ਵਿੱਚ ਮਾਲ ਵਿੰਞਾਇਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਹੱਛੇ ਮਾਲ ਉਸਨੇ ਲਾ ਲਿਆ ਵੱਤ ਉਸ ਮੁਲਕਦੇ ਵਿੱਚ ਬੋਹ ਕਾਲ ਪੈ ਗਿਆ। ਵੱਤ ਉਸਨੂੰ ਲੋੜ ਪਵਨ ਲੱਗੀ। ਵੱਤ ਓ ਗਿਆ ਉਸ ਮੁਲਕਦੇ ਹਿੱਕ ਸ਼ਾਹਰਦੇ ਆਦਮੀਦੇ ਨਾਲ ਨੌਕਰ ਰਾਹ ਪਿਆ। ਉਸਨੇ ਉਸਨੂੰ ਸੂਰਾਨੂੰ ਚਾਰਾਵਾਨ ਵਾਸਤੇ ਪੈਲੀਆ ਵਿੱਚ ਘੱਲਿਆ। ਜੇੜੇ ਛਿੱਲੜ ਸੂਰ ਖਾਵੇ ਆਹੇ ਓ ਵੀ ਢਿੱਢ ਰਾਜ਼ੀ ਹੋਕਰ ਭਰ ਲੈਂਦਾ। ਜਦ ਉਨਨੂੰ ਸੁਰਤ ਆਈ ਉਸ ਆਖਿਆ ਮੇਰੇ ਪਿਉਦੇ ਨੌਕਰ ਕਈ ਹਿਨ ਓ ਰੱਜ ਕੇ ਖਾ ਛੀ ਲੈਂਦੇ ਹਿਨ ਤੇ ਵਧਿਆ ਛੀ ਰਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੈ ਭੁੱਖ ਨਾਲ ਪਿਆ ਮਰਨਾ ਹਾ। ਮੈ ਉਠਿਸਾਗਾ ਤੇ ਵੱਧ ਪਿਉ ਕੋਲ ਵਾਦਾ ਰਹਾਗਾ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਆਖਾਂਗਾ ਪਿਉ ਮੈਂ ਖੁਦਾਦਾ ਗੁਨਾਹ ਛੀ ਕੀਤਾ ਤੇ ਤੇਰਾ ਛੀ ਕੀਤਾ ਮੈਂ ਇਸ ਗਲ ਜੋਗਾ ਨਹੀ ਰੈਹ ਗਿਆ ਜੋ ਤੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮੈਂ ਸਦੀਵਾ। ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਅਪਨਾ ਹਿੱਕ ਨੌਕਰ ਚਾ ਜਾਨ। ਵੱਤ ਓ ਉਠਿਆ ਤੇ ਅਪਨੇ ਪਿਉ ਵਲੇ ਗਿਆ। ਅਜਾ ਓ ਢੇਰ ਦੂਰ ਆਹਾ ਉਨਦੇ ਪਿਉ ਉਸਨੂੰ ਵੇਖ ਲਿਆ ਉਨਨੂੰ ਤਰਸ ਆਇਆ ਤੇ ਭੱਜ ਵਗ ਗਿਆ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਗਲ ਵਿਚ ਲਾ ਲਿਆ ਤੇ ਚੁੰਮ ਲਿਆ। ਪੁਤ੍ਰ ਉਨਨੂੰ ਆਖਿਆ ਪਿਉ ਮੈਂ ਖੁਦਾਦਾ ਗੁਨਾਹ ਛੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੇਰਾ ਛੀ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੇ ਹੁਨ ਤੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਸਦੀਵਾ ਜੋਗਾ ਨਹੀ। ਵੱਤ ਪਿਉਨੇ ਅਪਣੇ ਨੌਕਰਾਨੂੰ ਆਖਿਆ ਚੰਗੇ ਥਿਗੜੇ ਕੱਢ ਲੇ ਆਓ ਤੇ ਉਨਨੂੰ ਪਾ ਦੇਓ ਈਧੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਮੁੰਦਰੀ ਘੱਤੋ ਤੇ ਪੈਰਾਂ ਵਿੱਚ ਜੁੱਤੀ ਪਵਾਓ। ਆਓ ਖਾ ਲਈਏ ਤੇ ਰਾਜ਼ੀ ਹੋਈਏ ਦੋ ਮੇਰਾ ਪੁਤ੍ਰ ਮਰ ਗਿਆ ਹਾ ਜੀਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਤੇ ਖੜੀ ਗਿਆ ਆਹਾ ਤੇ ਲੱਭ ਪਿਆ। ਤੇ ਓ ਖੁਸ਼ ਹੋਵਨ ਲੱਗੇ॥

ਤੇ ਉਦਾ ਵੱਡਾ ਪੁਤ੍ਰ ਪੇਹਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਗਿਆ ਆਹਾ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਓ ਆਇਆ ਤੇ ਘਰਦੇ ਨੇੜੇ ਆਇਆ ਉਸਨੇ ਗਾਵਨ ਤੇ ਨੱਚਣ ਸੁਣਿਆ। ਉਸ ਹਿੱਕ ਨੌਕਰਨੇ ਆਖਿਆ ਤੇ ਪੁਛਿਆ ਤੇ ਕੀਹ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਉਨਨੂੰ ਆਖਿਆ ਤੇਰਾ ਭਿਰਾ ਆਇਆ ਹੈ ਤੇਰੇ ਪਿਉਨੇ ਨਿਆਜ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਭਿਰਾ ਖੈਰ ਮੇਹਰ ਨਾਲ ਆਇਆ ਹੇ। ਓ ਕਾਵੀਰ

ਹੋਇਆ ਤੇ ਅੰਦਰ ਨਹਾ ਜਾਦਾ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਉੰਦਾ ਪਿਉ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਆਇਆ ਅਤੇ ਉਦੀ ਮਿੰਨਤ ਕੀਤੀ। ਉਸ ਪਿਉਨੂੰ ਆਖਿਆ 'ਦੇਖ ਮੈ ਬੋਹੰ ਵਰ੍ਹੇ ਤੇਰੀ ਖਿਦਮਤ ਕਰੇਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹਾ ਤੇਰਾ ਆਖਿਆ ਕਦਾ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਸਿੱਟਿਆ ਤੇ ਹਿੱਕ ਲੇਲਾ ਵੀ ਨਾ ਦਿੱਤੋਈ ਅਪਨਿਆ ਬੇਲੀਆ ਨਾਲ ਮੈਂ ਖੁਸ਼ੀ ਕਰੇ ਦਾ। ਜਿਦੋਂ ਤੇਰਾ ਏ ਪੁਤ੍ਰ ਆਇਆ ਹੈ ਜਿਸ ਸਾਰਾ ਮਾਲ ਤੇਰਾ ਕੰਜਰੀਆ ਤੇ ਗਵਾਇਆ ਹੈ ਉਦੇ ਵਾਸਤੇ ਹੱਥੋਂ ਤੂੰ ਨਿਆਜ਼ ਦਿੱਤੀ। ਉਸਨੇ ਉਨੰ੍ਹੂ ਆਖਿਆ ਤੂੰ ਹਰ ਵੇਲੇ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਹੇਂ। ਜੇੜ੍ਹਾ ਮੇਰਾ ਮਾਲ ਹੈ ਸਾਰਾ ਤੇਰਾ ਹੀ ਹੈ। ਅਸਾਂਨੂੰ ਹਿੱਕ ਗਲ ਲਾਇਕ ਆਹੀ ਜੇ ਖੁਸ਼ੀ ਕਰੇਂਦੇ ਤੇ ਖੁਸ਼ ਹੋਂਦੇ ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਕਿ ਭਿਰਾ ਤੇਰਾ ਮਰ ਗਿਆ ਆਹਾ ਔਰ ਵੱਤ ਜੀਵਦਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਓ ਖੜੀ ਗਿਆ ਆਹਾ ਤੇ ਲੱਭ ਪਿਆ ਹੈ॥

(नागरी रूपान्तर)

हिक्क आदमीदे दो पुत्र आहे। उन्हाँ विच्चो प्रिउनूं निक्के आखिया 'पिउ, जो मेरा हिस्सा रिज्क-विच्च है, ओ वण्ड-दे।' उसने अपना माल दुहाँनूं वण्ड-दित्ता। वाहले दिन अजाँ नहीं होए निक्केने सारा माल इकट्ठा चा-कीता, किसी दूर मुल्क ले-के वाँढा रहा, ते उथाँ भैड़े कम्माँ-विच्च माल विन्चाइआ। जिस वेले हब्भो माल उसने ला-लिआ, वत्त उस मुल्क दे विच्च वौंह काल पै-गिआ। वत्त उसनूँ लोड पवन लग्गी। वत्त ओ गिआ, उस मुल्कदे हिक्क शाहरदे आदमीदे नाल नौकर राह-पिआ। उसने उसनूं सूराँनूं चारा-वन वास्ते पैलीआँ-विच्च घल्लिआ। जेडे छिल्लड़ सूर खाँदे-आहे, ओ वी ढिढ राजी हो-कर भर-लैंदा। जब उननूं सुर्त आई, उस आखिआ, 'मेरे पिउदे नौकर कई हिन, ओ रज्ज-के खा भी लैंदे-हिन, ते वधिआ भी रहुँदा है। मै भुक्ख नाल पिआ मरनाँ-हाँ। मै उठिसाँगा ते वद्ध पिउ कोल वाँदा-रहाँगा; ते उननूं आखाँगा, "पिउ, मैं खुदादा गुनाह भी कीता तेरा भी कीता; मै इस गल जोगा नहीं रैह-गिआ जो तेरा पुत्र मै सदीवाँ; मैंनूं वी अपना हिक्क नौकर चा-जान।" वत्त ओ उठिआ ते अपने पिउ वले गिआ। अजाँ ओ ढेर दूर आहा, उन्दे पिउ उसनूं वेख-लिआ, उननूं तर्स आइआ, ते भज्ज वग-गिआ ते उननूं गल-विच ला-लिया, ते छुम लिआ। पुत्र उननूँ आखिआ, 'पिउ, मै खुदादा गुनाह भी कीता है, तेरा भी कीता-है, ते हुनो तेरा पुत्र सदीवाँ जोगा नहीं।' वत्त पिउने अपणे नौकराँनूं आखिआ, 'चङ्गे थिगड़े कढ्ढ ले आओ ते उननूं पा-देओ; इंधे हत्थ-विच्च मुन्दरी घत्तो, ते पैराँ-विच्च जुत्ती पवाओ; आओ, खा-लइए, ते राजी होईए; ए मेरा पुत्र मर-गिआ-आहा, जींदा हो-गिआ-है, ते खड़ी गिआ आहा, ते लब्भ-पिआ।' ते ओ खुश होवन लग्गे।

ते उन्दा वड्डा पुत्र पेहलीआँ-विच्च गिआ-आहा। जिस वेले ओ आइआ, ते घरदे नेडे आइआ, उसने गावन ते नच्चण सुणिआ। उस हिक्क नौकरने आखिआ ते पुछिया, 'ए कीह है?' उसने उननूं आखिआ, 'तेरा भिरा आइआ-है। तेरे पिउने निआज इस-वास्ते दित्ती है, तेरा भिरा खैर-मेहर नाल आइआ-है।' ओ कावीर होइआ, ते अन्दर नहीं जाँदा। इस -वास्ते उन्दा पिउ वाहर निकल-आइआ, अते उन्दी मिन्नत कीती। उस पिउनूं आखिआ, 'देख, मैं बौंह वर्हे तेरी खिदमत करेंदा रिहा-हाँ, तेरा आखिआ कदाँ मैं नहीं सिट्टिआ, ते हिक्क लेला वी नाँ दित्तोई, अपनिआ वेलीआँ-नाल मैं खुशी करेंदा। जिवें तेरा ए पुत्र आइआ-है, जिस सारा माल तेरा कन्जरीआँ-ते गवा-इआ-है; उन्दे वास्ते हत्थो तूं निआज़ दित्ती।' उसने उननूं आखिआ, 'तूं हर वेले मेरे कोल हैं; जेडा मेरा माल है, सारा तेरा-ही है; असाँनूं हिक्क गल लाइन आही, जे खुशी करेंदे ते खुश होंदे; इस वास्तें कि भिरा तेरा मर गिआ आहा, और वत्त जींवदा हो-गिआ-है; ओ खड़ी गिआ-आहा, तें लब्भ-पिआ-है।'

(अनुवाद)

एक आदमी के दो वेटे थे। उनमे से वाप को छोटे ने कहा, 'पिता, जो मेरा हिस्सा सम्पत्ति मे है, वह बाँट दे।' उसने अपनी सम्पत्ति दोनो को बाँट दी। वहुत दिन अभी नही हुए छोटे ने सारी सम्पत्ति इकट्ठी कर ली, किसी दूर देश लेकर जाता रहा, और वहाँ बुरे कामो मे सम्पत्ति खो दी। जिस समय सव सम्पत्ति उसने लगा दी तव उस देश के अन्दर वहुत अकाल पड गया। तव उसे आवश्यकता पडने लगी। तव वह गया, उस देश के एक शहरी आदमी के पास नौकर रह पडा। उसने उसको सूअरो के चराने के लिए खेतो मे भेजा। जो छिलके सूअर खाते थे, (उनसे) वह भी पेट राजी होकर भर लेता। जव उसे होश आया, उसने कहा, 'मेरे वाप के यहाँ नौकर कई हैं, वे पेट भरकर खा भी लेते हैं और फालतू भी (वच) रहता है। मैं भूख से पडा मरता हूँ। मैं उठूँगा और फिर वाप के पास जाता रहूँगा, और उसको कहूँगा, 'पिता, मैंने परमेश्वर का पाप भी किया और तेरा भी किया, मैं इस वात के योग्य नही रह गया कि तेरा पुत्र मैं कहलाऊँ, मुझे भी अपना एक नौकर जान ले।' तव वह उठा और अपने वाप की ओर गया। अभी वह बहुत दूर था, उसके वाप ने उसको देख लिया, उसको दया आयी, और दौडकर चल पड़ा और उसको गले लगा लिया और चूम लिया। पुत्र ने उसको कहा, 'पिता, मैंने भगवान् का पाप भी किया है, तेरा भी किया है, और अव तेरा पुत्र कहलाने योग्य नही।' तब वाप ने अपने नौकरो को

कहा, 'अच्छे (अच्छे) कपडे निकाल लाओ और इसको पहना दो, इसके हाथ मे अँगूठी डालो, और पैरो मे जूता पहनाओ, आओ खाये और खुश हो, यह मेरा बेटा मर गया था, जिन्दा हो गया है, और खो गया था, और मिल गया।' और वे खुश होने लगे।

तब उसका बडा बेटा खेतो मे गया (हुआ) था। जिस समय वह आया और घर के निकट पहुँचा, उसने गाना और नाचना सुना। उसने एक नौकर से कहा और पूछा, 'यह क्या है?' उसने उसको कहा, 'तेरा भाई आया है। तेरे बाप ने भोज इसलिए दिया है, तेरा भाई कुशलपूर्वक आया है।' वह क्रुद्ध हुआ, और भीतर नही जाता (था)। इसलिए उसका बाप बाहर निकल आया, और उसकी मिन्नत की। उसने बाप को कहा, 'देख, मैं बहुत बरस तेरी सेवा करता रहा हूँ, तेरी आज्ञा का कभी मैंने उल्लघन नही किया, और एक मेमना भी (तूने) न दिया, अपने साथियो के साथ मै खुशी मनाता। जिस तरह तेरा यह पुत्र आया है, जिसने सारी सम्पत्ति वेश्याओ मे गँवा दी है, उसके लिए उल्टे तूने भोज किया।' उसने उसको कहा, 'तू हर वक्त मेरे पास है, जो मेरी सम्पत्ति है, सारी तेरी ही है, हमे एक बात उचित थी कि खुशी मनाते और खुश होते, इसलिए कि भाई तेरा मर गया था, और फिर जिन्दा हो गया है, वह खो गया था, और मिल गया है।'

## सियालकोट, पूर्वी गुजरावाला और उत्तरपूर्वी गुजरात की पंजाबी

लहँदा और पजाबी के बीच की परम्परागत सीमा-रेखा गुजरात मे पब्बी पर्वत श्रेणी के उत्तरी सिरे से शुरू होती है, और रामनगर के पास गुजरावाला मे प्रवेश करती हुई उस ज़िले को दो लगभग बराबर भागो मे विभाजित करती है। इस रेखा मे पूर्व के क्षेत्र के अन्तर्गत सारा सियालकोट, गुजरावाला का पूर्वी आधा भाग और उत्तरपूर्वी गुजरात है। इसके पूर्व मे गुरदासपुर की माझी पजाबी, और दक्षिण मे पश्चिमी लाहौर की मिश्रित बोली है जिसका वर्णन अभी अभी किया गया है।

इस क्षेत्र की बोली का पूर्ण वर्णन गत पृष्ठ १५८ पर सदर्भित ग्राहम बेली और कम्मिग्स के ग्रन्थो मे हुआ है। यह पश्चिमी लाहौर की बोली से बहुत कुछ मिलती-जुलती है, और नमूने के तौर पर मैं फारसी लिपि मे सियालकोट से प्राप्त एक लोककथा, अक्षरान्तर और अनुवाद सहित दे रहा हूँ।

नमूने मे की निम्नलिखित विशेपताओ का ध्यान रहे। ये लगभग सभी विशेपताएँ लहँदा के प्रभाव के कारण है। बलाघात-पूर्ण अक्षर के वाद, और अन्यत्र भी, ह ध्वनि का लोप करने की प्रवल प्रवृत्ति है। जैसे राहे, रहे, के स्थान पर राए, ए या हे, है, इत्यादि। हमे आदर्श पजावी के -ना (-दा की जगह) वाले वर्तमान कृदन्त का उद्भव देंदा या देन्ना, देता, शब्द मे मिलता है। सारे भारतीय आर्य देश मे, अनुनासिक से पूर्ववर्ती द का उच्चारण विकल्प से न किया जा सकता है।

सज्ञाओ के रूपान्तर मे, सम्बन्ध कारक के परसर्ग का व्यवहार ऐसा ही होता है जैसा लहँदा मे। इस प्रकार हमे दे की जगह दिआँ या देआँ, पुल्लिग वहुवचन से मेल खाता हुआ मिलता है।

सर्वनामो मे कुछ अनियमितनाएँ है। 'हमारा' के लिए साड्डा, असोड्डा या असाड्डा है (वेली साड्डा देते है)। 'तुम्हारा' के लिए तुसाड्डा या तोहाड्डा है (वेली तुहाड्डा देते है)। अन्यपुरुष का तिर्यक् रूप एकवचन ओस है (जैमे इह, यह का तिर्यक् एकवचन एस है), और इसका तिर्यक् वहुवचन ओनाँ या ओहनाँ। जेडा या जेहडा, 'जो' के लिए है, और इसका तिर्यक् एकवचन जिस, या मालवाई रूप जिन, होता है।

अस्तित्ववाची क्रिया के निम्नलिखित रूप आते है—आँ या हाँ, मैं हूँ, हम है, एँ, तू है, ए या हे, वह है, साण या हैसाण, वे थे।

और अधिक विवरण के लिए पाठक का ध्यान पहले सदर्भित व्याकरणो मे दिये गये पूर्ण व्यौरे की ओर दिलाया जाता है।

[सं० २५]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

रचना दुआब के उत्तर-पूर्व की बोली (जिला सियालकोट)

ساڈا وڈا مہر مٹھہ ھویا اے اوسنے آکھیا کہ میرا ناں جہاں
وچ مشہور رئے - بادشاہ اکبر نے اوسدے پاسوں لڑکیدا ساک منگیا -
اوس اگوں آکھیا توں بادشاہ اے - مَیں زمیندار آں - ساڈا نساڈا نہ
نہیں مچدا - اوس آکھیا تینوں ایس گل وچ کی اے - میرا دِل
ایا اے - جس وقت اوسنے ساک دینا چا کیتا تاں اوسنے آکھیا میرے
گھر آڈھوک - اوہاں تد میل منڈل آکٹھا کیتا - اوس آکھیا بادشاہ
میری لڑکیدا ساک منگدا اے - توہاڈی کی صلاح ہے - کِسے آکھیا
دیئے ھاں تے کِسے آکھیا نہیں دیندے - باقیاں نے کہیا کہ دیندے
ھاں - اوہاں ساک دیتا - بادشاہ آ ڈھوکا - مہر مٹھہ نے سارے
بھرا سلائے روٹی کھواں واسطے اور خلقدی خدمت واسطے - کجھ خت
بادشاہ ول گئے - خت وقت وہ دو راتیں مہر مٹھہ دے گھر رئے اوتھے
کِسے آکھیا کہ کجھ دیئے کہ آساڈا ناں رئے - بادشاہ ول جیڑے لوک
آئے ساں اوہاں نال وی مراسی خدمت واسطے گئے ساں - ہور جیڑے
لوک مہر مٹھہ ول میل آئے ساں اوہاں نال وی مراسی آئے سان -

ھن جیڑے ویلے کوٹھے تے بہہ کے دھرات کرن لگے رپیے سکّہ اکبر بادشاہ
دے سان - مہر مٹھے اوہاں لوکاں دیاں مراسیاں نوں جہڑے اوس ول
میل آئے سان اِک اِک رُپیا دتّا - ہور جہڑے جٹ بادشاہ دے
نال جنجی آئے سان اوہاندیاں مراسیاں نوں آٹھ آٹھ آنے دتّے کہ اوہاں
اساڈی گھٹدی کیتی اے - مڑ ویاہ کے بادشاہ نوں ڈولہ دتّا ٭

(नागरी रूपान्तर)

साड्डा वड्डा मह्‌र मिठा होइआ-ए। ओसने आखिआ कि, 'मेरा नाँ जहान-विच मशहूर रए।' बादशाह् अकबर ने ओसदे पासो लड़कीदा साक मङ्गिआ। ओस अग्गो आखिआ, 'तूं बादशाह् एँ; मैं जमींनदार आँ। साड्डा तुसाड्डा वर नहीं मिचदा।' ओस आखिआ, 'तैनूं एस गल-विच की ए ? मुरा दिल आइआ-ए।' जिस वक्त ओसने साक देना चा-कीता ताँ ओसने आखिआ, 'मेरे घर आ ढुक्क।' ओनाँ तद मेल-मण्डल अकट्ठा कीता। ओस आखिआ, 'बादशाह् मेरी लड़कीदा साक मङ्गदा-ए। तोहाड्डी की सलाह् है ?' किसे आखिआ, 'देन्ने-हाँ', ते किसे आखिआ, 'नहीं दे देंदे।' बहुतिआँने कहिआ कि, 'देंदे-हाँ।' ओनाँ साक दे-दित्ता। बादशाह् आ-ढुक्का। मह्‌र मिठेने सारे भिरा बुलाए, रोटी खवान वास्ते और जन्जदी खिदमत वास्ते। कुज जट बादशाह्-वल गए। जित वक्त वोह् दो रातीं मह्‌र मिठेंदे घर रए, ओथे किसे आखिआ कि 'कुज देइए, कि असाड्डा नाँ रए।' बादशाह् वल जेड़े लोक आए-साण, ओनाँ नाल वी मिरासी खिदमत वास्ते गए-साण; होर जेडे लोक मह्‌र मिठे वल मेल आए-साण, ओनाँ नाल वी मिरसी आए-साण। हुण जेडे वेले कोठे-ते बहि-के खैरात करन लग्गे, रुपए सिक्का अकबर बादशाह् दे साण; मह्‌र मिठे ओनाँ लोकाँदेआँ मिरासीआँनूं जेह्‌डे ओस वल मेल आए-साण, इक-इक रुपैआ दित्ता, होर जेह्‌डे जट बादशाह् दे नाल जन्जी आए-साण, ओनाँदेआँ मिरासीआँनूं अठ-अठ आने दित्ते कि, 'ओनाँ असाड्डी घटदी कीती-ए।' मुड़ विवाह्-के बादशाह्नूं डोला दित्ता।

(अनुवाद)

हमारा बुजुर्ग महर मिठा हुआ है। उसने कहा कि 'मेरा नाम ससार मे प्रसिद्ध रहे।' वादशाह अकवर ने उसके यहाँ से लडकी का नाता माँगा। उसने आगे से (उत्तर मे) कहा, 'तू वादशाह है, मै जागीरदार हूँ। हमारी तुम्हारी बरावरी नही है।' उसने कहा, 'तुझे इस वात मे क्या है? मेरा दिल आ गया है।' जिस समय उसने नाता देना (स्वीकार) कर लिया तो उसने कहा, 'मेरे घर वरात लाओ।' उसने तव घराती (वन्धु-वान्धव) इकट्ठे किये। उसने (उनसे) कहा, 'वादशाह मेरी लडकी का नाता माँगता है। तुम्हारी क्या सलाह (सम्मति) है?' किसी ने कहा, 'हम देते है।' और किसी ने कहा, 'नही देते।' वहुतो ने कहा कि, 'देते हैं।' उसने नाता दे दिया। वादशाह वरात लेकर आ गया। महर मिठा ने सब भाई बुलाये, खाना खिलाने के लिए और वरात की सेवा के लिए। कुछ जाट वादशाह के पक्ष मे गये। जिस समय वे दो रात महर मिठा के घर (मे) रहे, वहाँ किसी ने कहा कि, 'कुछ दे ताकि हमारा नाम हो।' वादशाह के पक्ष से जो आदमी आये थे, उनके साथ भी मीरासी[1] सेवा के लिए गये थे, और जो लोग महर मिठे के पक्ष मे घराती आये थे, उनके साथ भी मीरासी आये थे। अव जिस समय छत पर वैठकर दान करने लगे, रुपये का सिक्का अकवर वादशाह (के नाम का) था, महर मिठे ने उन लोगो के मीरासियो को जो उसके (अपने) पक्ष मे घराती आये थे, एक-एक रुपया दिया, और जो जाट वादशाह के साथ वराती (होकर) आये थे, उनके मीरासियो को आठ-आठ आने दिये कि 'उन्होने हमारा निरादर किया है।' इसके वाद विवाह (कार्य) करके वादशाह को (लडकी का) डोला दिया।

## पूर्वी मंटगुमरी की पंजाबी

लहँदा मे विलीयमान पजावी के एक और उदाहरण के रूप मे मैं यहाँ अपव्ययी पुत्र की कथा के उस भाषान्तर का उद्धरण प्रस्तुत कर रहा हूँ जो मटगुमरी जिले की पाकपट्टन तहसील से प्राप्त हुआ है। विशेष टिप्पणी की आवश्यकता नही है। भाषा वैसी ही है जैसी पश्चिमी लाहौर और सियालकोट की।

१ मीरासी भिखारी-भाटो की एक जाति है जो विवाहो मे सम्मिलित होते हैं और कुछ पा जाते हैं।

[स० २६]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

बारी दुआब के पूर्व-मध्य की बोली (जिला मटगुमरी, तहसील पाकपट्टन)

हिक्क आदमीदे दो पुत्तर आहे। उन्हाँदे विच्चूँ लौढे पुत्तर पेओनूँ आखिआ, 'पेओ, माल ते रिजकदा हिस्सा जेहडा मैनूँ आँउँदा है, मैनूँ देह।' तदाँ पेओ माल ते रिजक उन्हाँनूँ वण्ड दित्ता। थोडे दिहाँ-तूँ पिच्छे लौढे पुत्तर सारा कुझ हिकट्ठा करके हिक्क दुरेडे देस चला-गिआ। उत्थे आपदा माल रिजक भैडे कम्माँ-विच लुटा-दित्ता। जिस वेले पल्ले कुझ नाँ रिहा, ताँ उस देस-विच वड्डा काल पै-गिआ। उह टिक्की-तूँ वी आजत हो गिआ, ताँ उस देस-विच हिक्क वड्डे आदमीदे कोल गिआ। उस वड्डे आदमी उसनूँ आपदी वाहीआँ-विच सूराँ चरावणदा छेड़ू वणा-दित्ता। उस-दा दिल एह आखदा-हा, 'जेह्डीआँ शईं सूर खादे-हैन, उन्हाँदे नाल आपदा ढिढ भराँ, जो उसनूँ कोई नही देदा-आह।

(अनुवाद)

एक आदमी के दो वेटे थे। उनमे से छोटे वेटे ने वाप से कहा, 'पिता, सम्पत्ति और धन का हिस्सा जो मुझे आता है, मुझे दे।' तव वाप ने धन-सम्पत्ति उनको वाँट दी। थोडे दिनो पीछे छोटा वेटा सव कुछ इकट्ठा करके एक दूर के देश को चला गया। वहाँ अपनी धन-सम्पत्ति वुरे कामो मे लुटा दी। जिस समय पल्ले कुछ न रहा, तो उस देश मे वडा अकाल पड गया, वह रोटी के लिए भी असमर्थ हो गया, तव उस देश मे एक वडे आदमी के पास गया। उस वडे आदमी ने उसको अपने खेतो मे सूअरो को चरानेवाला चरवाहा वना दिया। उसका दिल यह कहता था, 'जो चीजे सूअर खाते है, उनसे अपना पेट भरूँ', क्योकि उसको कोई (कुछ) नही देता था।

# डोगरा अथवा डोगरी

मैं पजाबी की डोगरी बोली के दो नमूने दे रहा हूँ। दोनो जम्मू राज्य से प्राप्त हुए हैं। बोली के विवरण के लिए देखे, गत पृष्ठ ६१ इत्यादि।

उदाहृत बोली से गुरदासपुर और सियालकोट की डोगरी कुछ भी भिन्न नही है, यद्यपि इन दोनो ज़िलो मे, जैसा कि अपेक्षित भी है, यत्र-तत्र आदर्श पंजाबी के रूपो का व्यवहार करने की प्रवृत्ति अवश्य है।

जम्मू का पहला नमूना अपव्ययी पुत्र की कथा का भाषान्तर है। दूसरा एक छोटा-सा लोकगीत है। प्रत्येक नमूना पहले चम्बा के टाकरी अक्षरो मे दिया जा रहा है, और इसके बाद साधारण डोगरी लिखावट के सामने नागरी लिपि मे रूपान्तर और उसके नीचे (हिन्दी) अनुवाद रखा जा रहा है।

[स० २७]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

**डोगरी बोली** (जम्मू राज्य)

### पहला उदाहरण

(चम्बा के टाकरी अक्षरो मे)

[illegible]

## पहला उदाहरण [क]

(जम्मू के डोगरी अक्षरो मे)

(नागरी अक्षरो मे, हिन्दी अनुवाद सहित)

एक (इक) आदमीदे दो पोत्तर (पुत्तर) थे। उदे (उँदे) वीचा (विच्च)
एक आदमी के दो पुत्र थे। उनमे से
निकडेने वावा-की (वव्वे-की) आखेआ (आखिआ) जे, 'हे वापो (वापू)-जी,
छोटे ने वाप को कहा कि, 'हे वापूजी,
जाएदातीदा जे हेसा (हिस्सा) मेकी (मिकी) पोजदा (पुजदा)
सम्पत्ति का जो हिस्सा मुझे प्राप्त होता
हेए (है), सहे (सँ) मेकी (मिकी) दई-दओ (देई-देओ)।' ता (ताँ) उसनै माल
है, सो मुझको दे दो।' तव उसने सम्पत्ति
उने-की वड़ी-दता (वण्डी-दित्ता)। अतै थुड़े (थोड़े) देण (दिणे) पेछे (पिच्छो)
उन्हें बाँट दी। और थोडे दिन पीछे
नेकड़ै (निकडै) पुतरने (पुत्त-रैने) सव-केजा (किझ) कण्ठा (किट्ठा) करी,
छोटे पुत्र ने सव कुछ इकट्ठा करके,
दूर देसे-दा पैंडा (पैंडा) कीता, अतै उथाँ (उथे)
दूर देश की यात्रा की, और वहाँ
अपना माल लुच-पणे-कने (कन्ने) उडाई-दता (दित्ता)।
अपनी सम्पत्ति वदमाशी मे उडा दी।
अते जद सब खर्च करी-चुका (चुक्किआ), उस
और जव सव खर्च कर चुका, उस
मुल्ख (मुल्खै)-विच वडा काल पी-गेआ (पै- गिआ),
देश मे वडा अकाल पड गया, और
अते ओह कङ्गाल होण लगा (लग्गिआ); अते उस मोल्खाद (मुल्खैदा)
वह कगाल होने लगा, और उस देश के
इक वडे जाएदती-वालेदे जाई लगा (लग्गिआ)।
एक वडे अमीर के जाकर लग गया।

(नागरी अक्षरो मे, हिन्दी अनुवाद सहित)

ओसनै (उसनै) ओसी (उसी) खेत्रें-विच सूर चारनै भेजा (भेजिआ)
उसने उसको खेतो मे सूअर चराने भेजा
अतै ओसदी (उसदी) मर्जी थी जे उने सेकडे (सिकडे)-कने (कन्ने)
और उसकी इच्छा थी कि उन छिलको से
जेडे (जेह्‌डे) सूर खादेन (खाँदेन) अपणा ढह्‌ड (ढिढ) भरे।
जो सूअर खाते है अपना पेट भरे,
जे कुई (कोई) ओसी (उसी) नही (नहीं) दिदा (दिन्दा)-था। तद होछअ (होशे)
जो कि कोई उसे नही देता था। तव होश
विच आए आ (आइआ) आखाआ (आखिआ), 'मेरे बावदे (वब्वेदे) किनै (किन्ने)
मे आया, कहा, 'मेरे बाप के (यहाँ) कितने
मजोरा (मजूरें)-की मती रुटी (रुट्टी) हुअ (है), अते आऊँ भूखा
मजदूरो को ढेर रोटी (मिलती) है और मैं भूखा
मर्रां। मेहा (में) उठीए (उठीएँ) अपणे बावे (वब्बै) -कछ जाअ (जाड)।
मरूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा।
अतै उसी आखाङ (आखङ) जे, हे बाबू-जी (बापू-जी), मेहा (मे)
और उसे कहूँगा कि, हे बापू जी, मैंने
आस्मानादा (आस्मानीदा) अतै तुसाड़ा पराद्ध कीत (कीता) हो (है);
आकाश (भगवान्) का और तुम्हारा अपराध किया है,
इस जुग (जोग) नही (नहीं) जे भरी (भिरी) तुसाडा पोतर (पुत्तर) खुअ (ख्वाँ),
इस योग्य नही कि फिर तुम्हारा बेटा कहलाऊँ,
मेंकी (मिकी) अपणे मजोर (मजूरे)-विचा इक जनेह (जिनेहा) बनाउ (बँनाओ)।' तअ
मुझे अपने मजदूरो मे एक के समान वना लो।' तव
(ताँ) ओठीअए (उठीए) अपणे बाव (वब्बे)-पास चलेआ (चलिआ); तअ (ते)
उठकर अपने बाप के पास चला, और

## पहला उदाहरण [ग]

(जम्मू के डोगरी अक्षरों मे)

(नागरी अक्षरो मे, हिन्दी अनुवाद सहित)

अजे दूर था जे उसी देखा (देखिआ); उसदे
अभी दूर था कि उसे देखा, उसके
बबा (बब्बे)-की तर्स आ-एआ (आइआ), अतै दरुड़ी (दौड़ीए) उसी गले-
बाप को दया आयी और दौडकर उसे गले
कने (कन्ने) पई-लते (लई-लीता), अतै मता चुमिआँ। पोतरे (पुत्तरै)-
(के साथ) लगा लिया, और बहुत चूमा।
ने उसी अखाआ (आखिआ) जे 'हे बापू-जी, मेह (मे)
पुत्र ने उसे कहा कि 'हे बापू जी, मैंने
आस्माणा (आस्माणी) अते तोसड़ा (तुसाडा) प्राद कीता, अतै होण (हुन) इस
आकाश (भगवान्) का और तुम्हारा अपराध किया, और अब इस
जुग (जोग) नही (नहीं) जे भरी (भिरी) तोसड़ा (तुसाड़ा) पोतर (पुत्तर) खुआ (ख्वाँ)।'
योग्य नहीं कि फिर तुम्हारा पुत्र कहलाऊँ।'
बावञ्ने' (बब्बेने) अपणे नौकरै (नौकरे)- की आखेआ (आखिआ) जे 'खरे
बाप ने अपने नौकरो से कहा कि 'अच्छी
थुं (थो) खरी पोछक (पोशाक) कडी (कड्डी) लईआउ (लिआओ), अतै
उसी लउआउ (लोआओ);
से अच्छी पोशाक निकाल लाओ, और उसे पहनाओ;
हुर (होर) उसदे हथ डाठी (डूठी), अतै पेरे (पैरे) जोड़ा लउआउ (लोआओ),
और उसके हाथ (मे) अँगूठी और पैरो मे जूता पहनाओ,
अतै अस खाचे (खाचैं) ते खोछी (खुशी) मनहचै (मनाचैं), की (कि) जे
और हम खाये और खुशी मनाये, क्योकि
मारा (मेरा) एह पोतर (पुत्तर) मुएदया (मोइदा-था), होन (हुन) जी पैंआ
(पेआ); गुअचा (गोआचा)-
मेरा यह बेटा मर गया था, अब जी पडा, खो
दा था, होन (हुन) मेलेआ (मिलिआ)।' ता ओह खुछी (खुशी) कर्णे (करन)
लगै (लगे)।
गया था, अब मिला।' तब वे खुशी मनाने लगे।

(नागरी अक्षरो मे, हिन्दी अनुवाद सहित)

अतै उसदा वड पोतर (पुत्तर) खैतर (खेत्रै)-वच (विच) था। जा (जाँ) घर (घरे)-
और उसका वडा वेटा खेत मे था, जव घर के
कछ आएआ (आइआ), गाने तै नच्चैंदी बलेल सोनी (सुनी)। तअ (ताँ)
निकट आया, गाने और नाचने का शोर सुना। तव
एक (इक) नउकरा (नौकरे)-की सदेआ (सदिआ), तै पोछा (पुछिआ) जे 'एहे (एह)
एक नौकर को वुलाया और पूछा कि 'यह
कहे (केह) ?' उसनै उसी आखेआ (आखिआ) जे, 'तेरा भरह (भरा) आएआ (आइआ),
क्या ?' उसनें उसको कहा कि 'तेरा भाई आया,
तै तेरे बावने (बब्वेने) वड़ी धाहम (धाम) कीती, इस करी
और तेरे वाप ने वडा भोज किया (है), इस करके
जे ओह राजी-वाजी आई-गेआ (गिआ)।' ओस्नै (उसनै) रहु (रोह)
कि वह राजी-वाजी आ गया।' उसने रोष
करेआ (करिआ); नही (नहीं) चैहा (चाहिआ) जे अन्दर जाए। ता (ताँ) उसदै
किया; नही चाहता था कि भीतर जाये। तव उसके
बावने (बब्वेने) वाह्रै आई ओसी (उसी) मनाए (मनाइआ)। ओस्नै
(उसनै) वावे (बब्वे)-
वाप ने वाहर आकर उसे मनाया। उसने वाप
की ओतर (उत्तर) देता (दित्ता), देख (दिख), एत्नै (इत्नै) वरे (वरें) दा आऊँ तेरी
को उत्तर दिया, 'देख, इतने वर्पों से मैं तेरी
टह्ल करणाँ-हे (करना-हाँ), अतै कदै (कदे) तेरे होक्मे (हुक्मे) वाहर नही
(नहीं) होएआ (होइआ),
सेवा करता हूँ, और कभी तेरी आज्ञा के वाहर नही हुआ,
तआ (ताँ) तोद (तुव) कदै (कदे) एक (इक) वकरीदा बचा (वच्चा)
माकी (मिकी)
तो (भी) तू ने कभी एक बकरी का वच्चा मुझे

## पहला उदाहरण [ङ]

(जम्मू के डोगरी अक्षरों में)

(नागरी अक्षरो में, हिन्दी अनुवाद सहित)

नही (नहीं) दंता (दित्ता) जे अपृणे जारै (यारें) कनै (कन्नै) खुछी (खूशी) मनाँ;
नही दिया, कि अपने मित्रों के साथ खुशी मनाऊँ,
अतै जदे (जद्) तेरे (तेरा) एह् पोतर (पुत्तर) आएआ (आइआ) जेस्नै'ए (जिसनै)
और जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने
तेरा माल कन्जरा (कन्जरे) दे उडा (उडाइ)-दुद (दित्ता) (सिओ)। उस्द (उसदे) वसत (वास्ते)
तेरी सम्पत्ति वेश्याओ मे उडा दी, उसके लिए
वड़ी धहम (धाम) कीनी।' उसनै ओसी (उसी) आखा (आखिआ), है पोतर (पुत्तर),
वडा भोज किया।' उसने उसे कहा, 'हे पुत्र,
तू (तूँ) सदा मेरै कछ ह (हैं), तै जे-केज (किज्ञ) मेर (मेरा) ह (है),
तू सदा मेरे पास हे, और जो कुछ मेरा है,
सह (सेह) तेर (तेरा) है। भरी (भिरी खुछी) (खुशी) मनाई तै खुछी (खुशी) कर्णी
सो तेरा है। फिर खुशी मनाना और खुश होना
चही-दी-है; की जे तेरा एहे भरह (भरा) मुए (मोई)-
चाहिए, क्योकि तेरा यह भाई मरा
द (दा)-था, सह (सेह) जी'ई (जी) पएआ (पेआ)-है, 'अतै गुआची (गोआची)
हुआ था, सो जी पडा है, और खो
गए'आ (गिआ)-द'आ-था, सह (सेह) होण (हुण) मली (मिली)-ग'आ (गिआ)-है।
गया था, सो अब मिल गया है।'

(नागरी अक्षरो मे)

हाँ-रे, जीआ घह्ब्रओदा (घबराओदा), चेत (चित) मेरा
गदीए-क्री (गद्दीए-की) चउह्दा (चाउँदा) केत (कित) वेद (बिध)
मिलए (मिलिए) गदीए-की (गद्दीए-की) जाए-के (जाई-के) ? ॥१॥

हाँ-रे, पन्ज ठग चुराँ (चोराँ) गदीएदा (गद्दीएदा); रहा (राह)
भही (भी) लुट्-लैंदे (लैंदे), ताअरे (तारे) गेन्दी (गिन्दी)
न् (नूँ) रँएन (रैंण) वेहवैं (विहावैं) ॥२॥

हाँ-रे, इछक (इश्क) ओनुखा (अनोखा) लाडीए-की गदीएदा (गद्दीएदा)
होएआ (होइआ); कैत (कित) बेद (विध) मलीए (मिलिए)
गदीएकी (गद्दीएकी) जाअ-कै (जाई-के) ॥३॥

हाँ-रे, कर-कै (के) म्हहबता (महव्वत) मानुए दे
राह वैंच (विच) रहदे (रहन्दे); तारे गेन्दी (गिन्दी) नो (नूँ) रेहण
(रैंण) वैहावे (विहावे) ॥४॥

(अनुवाद)

हाँ रे, जी घवराता है, चित्त मेरा
गदी[1] को चाहता है, किस विधि मिले
गदी को जाकर ? ॥१॥
हाँ रे, पाच ठग-चोर[2] गदी को
रास्ते मे भी लूट लेते है, (इधर) तारे गिनती
की रात बीत गयी ॥२॥
हाँ रे, प्रेम अनोखा वहू को
गदी का हुआ है, किस विधि मिले
गदी को जाकर ॥३॥
हाँ रे, करके प्यार पुरुष से
राह मे (प्रतीक्षा में) रहती है; तारे गिनती
की रात बीत गयी ॥४॥

१. पहाड़ी गडरियों की एक जाति। यहाँ बोलनेवाली गदी की पत्नी है।
२. पाँच विषय—काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह।

# कण्डिआली

जम्मू राज्य के आग्नेय कोण में रावी नदी सीमा वनाती है। दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश है जिससे पजाव के ज़िला गुरदासपुर का ईशान कोण बनता है। इस जिले की मुख्य भाषा तो पजाबी है, किन्तु उक्त प्रदेश मे और उसके आसपास निम्नलिखित पहाड़ी वोलियाँ वतायी गयी हैं—

| | वोलने वालो की संख्या |
|---|---|
| गूजरी . . . . . . | ६०,००० |
| डोगरी . . . . . . | ६०,००० |
| कण्डिआली . . . . . . | १०,००० |
| कुल जोड | १,३०,००० |

इसमे गूजरी को पहाडी भाषाओ के अन्तर्गत लिया जायगा। डोगरी का विवरण अभी पीछे दिया गया है। कण्डिआली रावी के निकटस्थ शाहपुर-कण्डी के आस-पास के प्रदेश की वोली है। यह कोई अलग वोली नही है, केवल साधारण डोगरी है जिसके साथ आदर्श पंजावी घुल-मिल गयी है। इसका कोई लम्वा नमूना देना अनावश्यक है। इसका लक्षण जताने के लिए अपव्ययी पुत्र की कथा के भाषान्तर से कुछ वाक्य दे देना पर्याप्त होगा। यह कहना कठिन है कि 'ए' को पजावी की तरह दीर्घ लिखना चाहिए या डोगरी की तरह मात्रा-चिह्न के विना। मैंने डोगरी पद्धति का अनसरण किया है।

[सं० २९]

भारतीय आर्य परिवार केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

कण्डिआली बोली (जिला गुरदासपुर)

कुसे मनुक्खेदे दउँ पुत्तर थे। उन्हाँ-विच्चो लौकडेने वब्बे-की आखिआ, 'वापू-जी, मे-की मेरा घरेदा हिस्सा दै-देओ।' उनी उन्हाँ-की रसोटी वण्डी दित्ती। थोरियाँ दिनाँ पिछ्छों लौकडे पुत्तरेने सारी रसोटी किट्ठी कित्ती, कुसे दूर मुल्के-की चली-गेआ। उत्थँ उँनी लुच्च-पने-विच सब-किछ (उच्चारण किग) गवाई-अड़िआ। जदूँ ऊदे कछ किछ (किश) बी नही रेहा, ताँ उत्थै मता काल पई-गिआ। उस-की भुक्ख पई-गई, उस पासेदे कुसे सह्रीए-कछ गेआ। उनी उस-की सूराँदी गवालिआ लाइ-दित्त।

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो वेटे थे। उनमे से छोटे ने वाप को कहा, 'वापूजी, मुझे मेरा घर का हिस्सा दे दो।' उसने उनको सम्पत्ति वाँट दी। थोडे दिन पीछे छोटे वेटे ने सारी सम्पत्ति इकट्ठी की, किसी दूर देश को चला गया। वहाँ उसने वदमाशी मे सव कुछ गँवा दिया। तव उसके पास कुछ भी न रहा, तो वहाँ वडा अकाल पड गया। उसको भुखमरी पड गयी तो उस तरफ के किसी शहरी के पास गया। उसने उसे सूअरो का चरवाहा लगा दिया।

# काँगड़ी बोली

जिला काँगड़ा (कुल्लू, लाहौल और स्पिती को छोडकर) होशियारपुर के उत्तर और चम्बा रियासत के दक्षिण की ओर स्थित है। इसके पूर्व मे मण्डी रियासत और पश्चिम मे गुरदासपुर का उत्तरपूर्वी कोना है। होशियारपुर की भाषा आदर्श पजाबी है, चम्बा और मण्डी की बोलियाँ पश्चिमी पहाडी के रूप है, और गुरदासपुर के उस भाग की, जो काँगडा के पश्चिम मे है, प्रमुख भाषाएँ डोगरी के नाना रूप हैं। काँगडा ही मे, उत्तरी सीमा के एक भाग मे, चम्बा के निकट गद्दी लोग, जो उस क्षेत्र मे बसे हुए है, एक प्रकार की पहाडी बोलते हैं। शेष ज़िले मे हमे पजाबी का एक रूप मिलता है जो पडोस की डोगरी और पहाडी से मिश्रित है और जिसमे कश्मीरी के प्रभाव के लक्षण प्रकट है। काँगडी बोली बोलने वालो की सख्या अनुमानत ६,३६,५०० है।

काँगडी बोली साधारण गुरमुखी लिपि का व्यवहार नही करती, बल्कि टाकरी के उस रूप मे लिखी जाती है जो चम्बा मे प्रचलित है। मूलत यह विचार था कि नमूने चम्बा-टाकरी टाइप मे मुद्रित किये जाये, जैसा कि डोगरी के विषय मे किया गया है, किन्तु इस टाइप के पर्याप्त मात्रा मे पाने की कठिनाई का अनुभव किया गया और उसकी जगह छपाई के लिए तैयार की गयी पाण्डुलिपि की शिलामुद्रीय अनुलिपियाँ दी गयी है। यह पाण्डुलिपि काँगडा के निवासी द्वारा नही लिखी गयी। और, क्योकि लिपिपद्धति की व्याख्या डोगरी का वर्णन करते समय कर दी गयी है, और साथ ही यह बोली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातो मे डोगरी के समान है, इसलिए इस भाषारूप का वृत्तान्त मैंने डोगरी के बाद रखा है।

उच्चारण मे एक ह्रस्व ए सामान्य है, जैसे सेँह, वह, टेँहल, सेवा, बब्बेँदा, पिता का। कभी-कभी, कश्मीरी की तरह, सज्ञाओ के अन्त्य -आ के स्थान पर दीर्घ ऊ लगता है, जैसे माणू (लगभग शुद्ध कश्मीरी), मनुष्य, छेलू, मेमना। यह सामान्य रूप से पडोस की पहाडी बोलियो मे भी मिलता है।

संज्ञा के रूपान्तर मे सब पुल्लिग सज्ञाओ का तिर्यक् एकवचन एकारान्त होता है,

चाहे उनके अन्त मे व्यंजन रहा हो चाहे स्वर। जैसे, वब्वे, वब्व, पिता, का तिर्यक् रूप। पुल्लिग तिर्यक् एकवचन वनाने का यह ढंग, और सम्प्रदान-कर्म कारक का की से निर्माण, दोनो वातें डोगरी की विशेषताएँ हैं। आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओ के तिर्यक् वहुवचन के अन्त मे -एआँ होता है। जैसे, घोडेआँदा, घोडो का, किन्तु घराँदा, घरो का।

स्वरो में अन्त होने वाली और कुछ एक व्यजनो मे अन्त होने वाली स्त्रीलिग मंज्ञाओ का तिर्यक् एकवचन -आ जोडने से, और व्यजनो मे अन्त होने वाली शेष स्त्रीलिग सज्ञाओं मे -ई जोडने से वनता है। निम्नलिखित तालिका उन नाना परिवर्तनो को स्पष्ट करती है जो सज्ञाओ मे हो जाते है—

| एकवचन | | वहुवचन | |
|---|---|---|---|
| कर्ता | तिर्यक् | कर्ता | तिर्यक् |
| पुल्लिग | | | |
| घोडा, घोडा | घोडे | घोडे | घोडेआँ |
| घर, घर | घरे | घर | घराँ |
| विच्चू, विच्छू | विच्चुए | विच्चू | |
| स्त्रीलिग | | | |
| विट्टी, वेटी | विट्टीआ | विट्टीआँ | विट्टीआँ |
| जुणास, स्त्री | जुणासा | जुणासाँ | जुणासाँ |
| वैहृण, वहन | वैहृणी | वैहृणी | वैहृणी |

करण कारक इस प्रकार से वनता है—

| एकवचन— | वहुवचन— |
|---|---|
| घोडें | घोडेआँ |
| घरें | घराँ |
| विच्चूएँ | विच्चूआँ |
| विट्टीएँ | विट्टीआँ |
| जुणामें | जुणासाँ |
| वैहृणी | वैहृणीं |

यह वात उल्लेखनीय है कि करण बहुवचन का रूप सदा वही होता है जो तिर्यक् बहुवचन का।

सम्प्रदान-कर्म का प्रत्यय है कि या जो।[1] अधिकरण का प्रत्यय है विच। अन्य रूपो मे सज्ञा के कारक पजाबी का अनुसरण करते हैं।

विशेषण पजावी के नियमो का अनुसरण करते हैं, सिवाय इसके कि करण कारक मे आने वाली सज्ञा का विशेषण भी उसी कारक मे रखा जाता है। जैसे, लौहड़ें पुत्तरें, छोटे वेटे द्वारा।

१. 'जो' प्रत्यय वस्तुतः संवन्धकारकीय परसर्ग 'जा' का अधिकरण रूप है। काँगड़ी में अव इसका प्रयोग नहीं होता, किन्तु कुछ परिवर्तित रूप में यह सिन्धी मे विद्यमान है। इसकी व्युत्पत्ति सं० कार्यकः>प्रा० कज्जउ से ध्वनि-नियमो के अनुसार 'क' का लोप होने से है। 'जो' का अधिकरण रूप इसके कतिपय परसर्गों के साथ प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है। ये परसर्ग मूलतः अधिकरण कारकीय संज्ञाएं हैं। जैसे 'साम्हने' वास्तव में 'साम्हना' (सामना) का अधिकरण रूप है। इसीलिए इससे पूर्व संवध कारक रहता है, और जैसा कि सभी भारतीय आर्य भाषाओ मे है, सबंध कारक विशेषण होते हैं तथा काँगड़ी वोली मे, लिंग और कारक संवंधी इनका अन्वय 'साम्हने' से होता है। अत 'तिजो साम्हने', तेरे सामने, में 'तिजो' संवध कारकीय अप्रयुक्त 'तिजा', तेरा, का अधिकरण रूप है। इसी प्रकार 'विच', मे, प्राचीन अधिकरण कारकीय 'विच्चे', बीच में, का सक्षिप्त रूप है, और 'तिजो विच', तुझ मे, वास्तव मे 'तेरे बीच मे' है। ठीक इसी प्रकार हिन्दी 'को' भी मूलतः 'का' का अधिकरण रूप है।

पहले दो पुरुषवाची सर्वनामो का रूपान्तर इस प्रकार होता है—

| | मैं | हम | तू | तुम |
|---|---|---|---|---|
| कर्ता | मैं | अस्साँ | तू | तुस्साँ |
| करण | मैं | अस्साँ | तैं, तुध | तुस्साँ |
| सम्प्र०-कर्म | मिन्जो | अस्साँजो | तिजो | तुस्साँजो |
| अधिकरण | मिन्जो-विच | अस्साँ-विच | तिजो-विच | तुस्साँ-विच |
| सम्वन्ध | मेरा | म्हारा, अस्साँडा | तेरा | तुम्हारा, तम्हारा, तुस्साँडा |

म्हारा और तम्हारा रूप पहाडी से लिये गये है।

नीचे अन्य सर्वनामो के मुख्य-मुख्य रूप दिये जा रहे हैं—

| | वह | यह | जो | सो | कौन | क्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एकवचन | | | | | | |
| कर्ता | ओह | एह | जो, जेह | सेह, सैह | कुण | किआ, क्या |
| करण | उनी | इनी | जिनी | तिनी | कुनी, किनी | — |
| तिर्यक् | उस | इस | जिस | तिस | कुस, कुह | केस (सम्प्र०कजो) |
| वहुवचन | | | | | | |
| कर्ता | ओह | एह | जो, जेह | सेह, सैह | कुण | — |
| तिर्यक् | उनाँ | इनाँ | जिनाँ | तिनाँ | किनाँ | — |

करण एकवचन की सानुनासिकता प्राय लुप्त हो जाती है। करण वहुवचन का रूप वही है जो तिर्यक् का। तिर्यक् वहुवचन मे प्राय -ह- डाला जाता है। जैसे उन्हाँ, इन्हाँ आदि। कोई का कोई, तिर्यक् कुसी होता है। कुछ को किछ कहते है। आप का अप्पू, तिर्यक् वही, सम्वन्ध अपणा होता है।

अदेहा, ऐसा; इसी प्रकार से तदेहा, जदेहा, कदेहा।

अस्तित्ववाची और सहायक क्रिया का रूपान्तर नीचे दिया जाता है—

वर्तमान काल, मैं हूँ, आदि

| | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| उ० | हाँ, है | हाँ, हूँ, हैं |
| म० | हे, है | हाँ, हा, हैं |
| अ० | हे, है | हाँ, है, हिन, हन |

भूतकाल मे एकवचन पुल्लिग था या थू; स्त्री० थी; बहुव० पु० थे; स्त्री० थिआं बनता है।

कर्तृवाच्य मे संज्ञार्थक क्रिया और कृदन्त पजाबी का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार वर्तमान कृदन्त है मारदा या मारना, मारता। संभावनार्थ सहायक क्रिया के सदृश चलता है। जैसे, मारे या मारैं, तू मारे, मारॉं, मारूँ। उत्तम पुरुष बहुवचन पंजाबी की तरह मारीए हो सकता है। अन्य कालो मे केवल भविष्यत् है जिसमे अनियमितताएँ हैं और जिसके पुल्लिग के रूपान्तर नीचे दिये जा रहे हैं। स्त्रीलिंग रूप पंजाबी के सादृश्य पर आसानी से पूरे किये जा सकते हैं।

भविष्यत्, मैं मारूँगा, आदि

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उ० | मारगा, मारघा, मारॉंगा, मारॉंघा | मारगे, मारघे |
| म० | मारगा, मारघा | मारगे, मारघे |
| अ० | मारगा, मारघा | मारगे, मारघे |

यदाकदा हमे भविष्यत् काल के छिटपुट पहाडी रूप मिल जाते हैं, जैसे होन, वह होगा, भोला, वह होगा।

भूत कृदन्त मे कभी-कभी -इ- का लोप हो जाता है, जैसे हिन्दुस्तानी मे। यथा, लगया के स्थान पर लग्गा, लगा, मिलिआ के स्थान पर मिला, मिला।

एक आकारान्त आदरसूचक आज्ञार्थ रूप होता है। जैसे, रक्खा, रखिए।

अभ्यासार्थ संयुक्त क्रिया बहुधा साधारण निश्चित वर्तमान के अर्थ मे प्रयुक्त होती है। जैसे मारा करदा-हॉं, मारा करता हूँ या मारता हूँ।

आरम्भार्थ सयुक्त क्रिया सज्ञार्थक क्रिया के अविकृत रूप से बनती है, तिर्यक् रूप से नही। जैसे करणा लग्गा, करने लगा।

ध्यान रहे कि पंजाबी और हिन्दुस्तानी सरचना के विपरीत, बोलणा, बोलना, का व्यवहार भूतकाल मे सकर्मक क्रिया की तरह होता है। जैसे लौहर्के पुत्तरें बोलिआ, छोटा लड़का बोला।

## पुस्तक-सूची

लयाल, सर जेम्स ब्रॉडवुड—कॉगडा जिला, पजाब, के भूमिकर वन्दोवस्त का प्रतिवेदन, (अंग्रेजी) १८६५-७२। लाहौर, १८७४ (परिशिष्ट ४, शब्दसूची, परिशिष्ट ५, कहावतें)।

कॉगडा गजटीयर के पिछले संस्करण के प्रथम परिशिष्ट मे स्वर्गीय ई० ओ' व्राएन (प्रसिद्ध मुलतानी शब्दसूची के लेखक) के "कॉगडा जिले के विशिष्ट शब्दो की सूची सहित कॉगडा घाटी की वोली पर टिप्पण" (अंग्रेजी) हैं। इनका परिवर्तित परिवर्धित नया संस्करण पादरी टी० ग्राहम वेली द्वारा तैयार किया गया है और इन महाशय की "उत्तरी हिमालय की भाषाएँ" (अंग्रेजी), लन्दन, १९०८ मे मुद्रित है।

कॉगडी वोली के नमूने के रूप मे मैं पहले अपव्ययी पुत्र की कथा का रूपान्तर; दूसरे, एक लघु लोककथा और तीसरे, कुछ स्थानीय लोकोक्तियाँ दे रहा हूँ।

[सं० ३०]

भारतीय आर्य परिवार | केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

काँगड़ी बोली | (जिला काँगड़ा)

### पहला उदाहरण

(चम्बाई टाकरी हस्तलिपि)

(नागरी रूपान्तर)

कुसी माह्‌णुएदे दो पुत्तर थे। तिनाँ-विचा लौह्‌के पुत्रें वब्बे कनें बोलिआ जे, 'हे वापू-जी, जे किछ घरेदे लट्टे-फट्टे विचा मेरा हिसा होए, सेह मिन्जो देओ।' ताँ वब्बे तिनाँ-की अप्णा लट्टा-फट्टा बण्डी दित्ता। मते दिन नहीं बीते जे छोटा पुत्तर सभ-किछ किट्ठा करी-के दूर देसे-की चला-गिआ; फिरी तित्थू लुच्पणे विच दिन कट्दे कट्दे अप्णा लट्टा-फट्टा उडाई-दित्ता। जाँ सेह सभ-किछ भुगती-चुक्का ताँ तिस मुल्खे विच वडा काळ पेया, होर सेह कंकाळ होई-गिआ। होर सेह तिस मुल्खेदे माह्‌णुआँ विचा इक-सी आद्मिएँ वाल रेह्‌णा लग्गा, जिनी तिसजो अप्णे लाह्‌डे विच सूराँ चारणाँ भेजिआ। सेह कक्ख-कूड़ा-सिकड़ाँ कने जिनाँ-की सूर खाँदे थे अप्णा पेट भरणा चाँहदा-था। होर कोई आदमी तिस-की किछ नहीं दिन्दा-था। ताँ तिस-की याद आई, होर वोलिआ जे, 'मेरे वब्बे वाल कितणे-ही मजूराँ-की खाने-ते भी रोटी घुल्ली रेंह वी-हे, होर मैं भुक्खा मरा करना हाँ। मैं उट्ठी-करी अप्णे वब्बे वाल जाँघा होर तिस-की गल्लाँघा जे, "हे वापू-जी, मै सुर्‌गे-ते उल्टा होर तिजी साम्हणे पाप कीता-हे। हुण मैं तुम्हारा पुत्तर गुलुआणे जोग नहीं हाँ। मिन्जो अप्णे मजूराँ विचा इक-सी बरावर समझी-करी रक्खा।" ताँ सेह उट्ठी-करी अप्णे वब्बे वाल गिआ, होर सेह दूर-ही था जे तिस्‌दे वब्बे तिस-की दिक्खी-करी दया कीती, होर खिट्ट देई-करी तिस्दे गलें लग्गी-करी फाओं लए। पुत्रे तिस कने वोलिआ, 'हे वापू-जी, मैं सुर्‌गे-ते उल्टा कनें तुम्हारे साम्हणे पाप कीता है, होर फिरी तुम्हारा पुत्तर गुलुआणे जोग नहीं हाँ।' ताँ-भी वब्बे अप्णे नौकराँ-की वोलिआ जे, 'सभ्नाँ-ते खरे कप्‌डे कड्ढी-करी इस-की लोआ; कनें इस्‌दे हत्थे गूठी, होर पैराँ विच जुत्ते पोआ; होर खाईए कनें आनन्द करीए। केंह जे एह मेरा पुत्तर मरी-गिआ-था, फिरी जींदा होइआ-हे; गुआची-गिआ-था, फिरी मिला-हे।' ताँ सेह मौज कर्णा लग्गे।

तिस्‌-दा वड़ा पुत्तर लाह्‌डे विच था। होर जाँ सेह आओदा होई घरे नेडे पुज्जा, ताँ तिनी वाजे कनें नाचेदी ओआज सुणी। होर तिनी अप्णे नौकराँ विचा इक-सी आद्मीए-की सद्दी-करी अप्पू वाल पुच्छिआ जे, 'एह किआ हे।' तिनी तिस कने वोलिआ जे, 'तुम्हारा भाऊ आइआ हे, होर तुम्हारे वब्बे वडी उम्‌दी रसो कीती हे, इस गल्ला-करी जे तिस-की भला-चङ्गा मिला हे।' अप्पर तिनी जळ्णी कीती, होर अन्दर जाणा नहीं चाहिआ। इस गल्ला-करी तिस्‌दा वब्ब वाहर आई-करी मनाणा लग्गा। तिनी वब्बे-की उत्तर दित्ता जे, 'मैं इतणिआँ वर्साँ-ते तुम्हारी टेहल कर्दा हाँ, होर कद्दी

तुम्हारे हुक्मे-ते बाहर नहीं होइआ। होर तुस्सॉ कद्दी मिन्जो इक छेलू भी नहीं दित्ता जे मैं अपणे मित्राँ कने मौज कर्दा। अप्पर तुम्हारा एह पुत्तर जे कन्जरिआँदे सायें तुम्हारा लट्टा-फट्टा खाई-गिआ हे, जिहाँ सेह आइआ तिहाँ, तुस्सॉ तिस-की ज्डी छैळ रसो वणाई-हे।' बब्बे तिस-की बोलिआ जे, 'हे पुत्तर, तू सदा मेरे कने हे। जे-किछ मेरा हे, सेह सभ तेरा हे। अप्पर मौज करणी कने खुसी होणी ठीक था, किहिआँ-करी जे एह तेरा भाऊ मरी-गिआ था, फिरी जी दा होइआ-हे; गुआची-गिआ-था, फिरी मिला-हे।'

(अनुवाद)

किसी आदमी के दो बेटे थे। उनमे छोटे पुत्र ने बाप को कहा कि, 'हे बापू जी, जो कुछ घर के सामान मे मेरा हिस्सा हो, सो मुझे दो।' तब बाप ने उनको अपना सामान बाँट दिया। बहुत दिन नही बीते थे कि छोटा बेटा सब-कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया, फिर वहाँ बदमाशी मे दिन काटते काटते अपना सामान उड़ा दिया। जब वह सब कुछ समाप्त कर चुका तो उस देश मे बडा अकाल पडा, और वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के आदमियो मे एक आदमी के पास रहने लगा, जिसने उसे अपने खेत मे सूअर चराने भेजा। वह तिनके-कूडा-छिलके (आदि) से जिन्हे सूअर खाते थे अपना पेट भरना चाहता था। और कोई आदमी उसको कुछ नही देता था। तब उसे स्मरण हुआ और बोला कि मेरे बाप के पास कितने ही मजदूरो के खाने से भी रोटी बची रहती है, और मैं भूखा मरा करता हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उसको कहूँगा कि 'हे बापू जी, मैं स्वर्ग से उलटा (हो गया) और तुम्हारे सामने पाप किया है। अब मैं तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नही हूँ। मुझे अपने मजदूरो मे एक को समझ कर रख (लो)।' तब वह उठकर अपने बाप के पास गया, और वह दूर ही था कि उसके बाप ने उसको देखकर दया की, और दौडकर उसके गले लगकर चुम्बन लिये। पुत्र ने उसको कहा, 'हे बापू जी, मैं स्वर्ग से उलटा (हुआ)और तुम्हारे सामने पाप किया है, और फिर तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नही हूँ।'तो भी बाप ने अपने नौकरो को कहा कि 'सब से अच्छे कपडे निकाल कर इसको पहनाओ; साथ ही इसके हाथ मे अँगूठी, और पैरो मे जूते पहनाओ, और खायें एव आनन्द मनायें। क्योकि यह मेरा बेटा मर गया था, फिर जिन्दा हुआ है। खो गया था, फिर मिला है।' तब वे मौज करने लगे।

उसका वडा बेटा खेत मे था। अव जव वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तव उसने वाजे के साथ नाचने की आवाज सुनी। और उसने अपने नौकरो मे एक आदमी को वुलाकर अपनी ओर, पूछा कि 'यह क्या है?' उसने इससे कहा कि 'तुम्हारा भाई आया है, और तुम्हारे वाप ने वडा अच्छा भोज किया है, इस कारण से कि उसको भला-चगा मिला है।' किन्तु उसने क्रोध किया, और भीतर जाना नही चाहा। इस कारण मे उसका वाप वाहर आकर मनाने लगा। उसने वाप को उत्तर दिया कि 'मैं इतने वरसो से तुम्हारी सेवा करता हूँ, और कभी तुम्हारी आज्ञा के वाहर नही हुआ। और तुमने कभी मुझे एक मेमना भी नही दिया कि मैं अपने मित्रो के साथ मौज करता। किन्तु तुम्हारा यह पुत्र जो वेश्याओ के साथ तुम्हारा सामान खा (पी) गया है, जव वह आया तव तुमने उसका वड़ा वढिया भोज किया है।' पिता ने उसको कहा कि 'हे वेटा, तू सदा मेरे साथ है। जो कुछ मेरा है, वह सव तेरा है। पर मौज करना और खुश होना ठीक था, क्योकि जो यह तेरा भाई मर गया था, फिर जिंदा हुआ है; खो गया था, फिर मिला है।'

(नागरी रूपान्तर)

इक-सी वुड्ढीएँ पंजाह् रुपय्ये इक-सी कराड़े वाल थँणी रक्खे-थे। कने तिस-ते कद्दी-कद्दी वुड्ढी थोड़ा थोड़ा सौदा लेंदी-थी। जाँ इक दिन वुड्ढीएँ कराड़े-ते अप्णी थँणी मङ्गी, ताँ कराड़ें लेखा करी पन्ज रुपय्ये बाकी देणा कड्ढे। फिरी भी वुड्ढी तिस-ते पाओ-पाओ सौदा कद्दी-कद्दी लेंदी-रही। जाँ फिरी लेखा होइआ, ताँ पन्ज रुपय्ये बाकी भी वुड्ढीआदे मुकी-गए। इस गल्लादा गल्लाण लोकाँ एह् कीता जे,—

'पन्ज पन्जाहाँ लैं-गए,
पन्जा-की लैं पाओ।
दम्म कराडाँ वस पेई,
ताँ वुड्ढी आओ जाओ।'

(अनुवाद)

एक वुढिया ने पचास रुपये एक वनिया के पास जमा रखे थे। और कभी-कभी वुढिया थोडा-थोडा सौदा लेती थी। जव एक दिन वुढिया ने वनिया से अपनी जमा (पूंजी) मॉगी, तो वनिया ने लेखा करके पाँच रुपये शेष देने के निकाले। फिर भी वुढ़िया उससे पाव-पाव सौदा कभी-कभी लेती रही। जव फिर लेखा हुआ, तो पाँच रुपये शेष भी वुढ़िया के चुक गये। इस वात का कथन लोगो ने यह किया कि,—

'पाँच ने पचास को ले लिया,
पाँच को पाव ले गया।
धोखे से वनिये के वश मे पडी,
तो वुढिया आओ जाओ।"

१. अन्तिम वाक्य मेरी समझ मे नहीं आया। इस उदाहरण के लेखक ने यह अर्थ दिया है कि "लोगो ने वुढ़िया को सलाह दी कि इस वनिया से लेन-देन वंद करो।"

(नागरी रूपान्तर)

खेती खस्मे सेती।
जिसा खेतीआ खस्म ना जाए,
सेह खेती खस्मे-की खाए ॥१॥
पर हत्थें वणज, सुनेहे खेती,
कद्दी ना होन वतिह्यांदे तेंती ॥२॥
घर जांदे ढोले वजूनें,
घर जांदे बौह्ते सज्णें,
घर जांदे, बौह्तिएँ धीए,
घर जांदे वाह्रीएँ बीएँ ॥३॥
ग्रास देणा। बास नहीं देणा ॥४॥

(अनुवाद)

खेती खस्मे सेती (खेती मालिक पर निर्भर है)।
जिस खेती मे मालिक न जाए
सो खेती मालिक को खाए ॥१॥[1]
दूसरे के हाथ मे व्यापार, सन्देश से खेती,
कभी बत्तीस के तेंतीस नही होंगे ॥२॥[2]
घर जाते (उन्नत नही होते) है ढोल बजाने (मौज करने) वाले।
घर जाते है, बहुत अतिथियो (वाले),
घर जाते है, बहुत लडकियो (वाले),
घर जाते हैं, बाहर का बीज (बोने वाले) ॥३॥[3]
(अपरिचित को) कौर देना (अच्छा), वास देना नही (अच्छा) ॥४॥[4]

१. तुलना कीजिए, मैकोनैकी के संग्रह मे स० ६९४, ६९७।
२. तुलना कीजिए, मैकोनैकी, सं० ६९८। मैंने उन्हीं का अनुवाद ले लिया है।
३. मैकोनैकी के सग्रह मे सं० ८०१, ८०२ का लगभग यही आशय है।
४. मुझे यह लोकोक्ति मैकोनकी मे नहीं मिली।

# भटेआली

चम्बा रियासत की प्रमुख बोली चमेआली नाम से जानी जाती है, और वह पश्चिमी पहाडी का एक प्रकार है। रियासत के पश्चिम मे जम्मू की ओर भटेआली नाम की एक बोली है जो अनुमानतः १४,००० लोगो द्वारा बोली जाती है। यह डोगरी का एक भेद है, किन्तु काँगडी की तरह एक मिश्रित प्रकार की भाषा है।

पादरी टी० ग्राहम बेली इस बोली का विवरण अपनी पुस्तक 'उत्तरी हिमालय की भाषाएँ' (लन्दन, १९०८) मे देते हैं। नीचे जो इसकी प्रमुख विशेषताओं का ढाँचा दिया जा रहा है वह उसी के आधार पर है, यद्यपि उसमे सलग्न नमूने, "अपव्ययी पुत्र की कथा" के रूपान्तर से सगृहीत कुछ बाते जोड दी गयी हैं। यह कथा स्थानीय टाकरी अक्षरो मे, अनुलिपि मे दी गयी है, अक्षरान्तर मूल की पक्ति-पक्ति के अनुसार क्रमबद्ध किया गया है और इस लिपि मे लिखाई मे आने वाली सामान्य अतथ्य वर्तनी को एकरूप कर दिया गया है ताकि उसका व्याकरणिक ढाँचे मे दी गयी वर्तनी के साथ सामञ्जस्य हो जाय।

लिप्यन्तर करने मे ह्रस्व ए को ऍ करके दिखाया गया है, पूर्व के नमूनो की तरह ए करके नही। क्योकि इसका कार्य नितान्त भिन्न है जो पजाबी के ह्रस्व इ की तरह है। जैसे भटेआली नारेँआ बराबर है पजाबी मारिआ के। बेली ने बहुत जगह ऐसे ए को दीर्घ चिह्नित किया है जिन्हे पूर्ववर्ती पृष्ठो मे ह्रस्व चिह्नित किया गया है। इसका अनुसरण भटेआली के सम्बन्ध मे भी किया गया है।

कारकीय रूपान्तर—ए के ऍ मे परिवर्तित होने वाले उपर्युक्त अपवाद को छोड़कर, जो इस प्रसग मे मात्र वर्तनी का ही प्रश्न है, पुल्लिग सज्ञाओं के तिर्यक् रूप की रचना बहुत सी वही है जो काँगडी मे। करण कारक का रूप भी वैसा ही है।

| एकवचन | | | बहुवचन | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कर्ता | तिर्यक् | करण | कर्ता | तिर्यक् | करण |
| पुंल्लिग | | | | | |
| घोडा, घोडा | घोडे | घोडें, घोडें | घोडे | घोडेआँ | घोडेआँ |
| घर, घर | घरे | घरें, घरें | घर | घराँ | घराँ |
| हाथी, हाथी | हाथी, हाथीए | हाथीएँ, हाथीएँ | हाथी | हाथीआँ | हाथीआँ |
| स्त्रीलिंग | | | | | |
| कुडी, लडकी | कुडीआ | कुडीआ | कुडीआँ | कुडीआँ | कुडीआँ |
| भैण, वहन | भैणू, भैणा | भैणू, भैणा | भैणू, भैणा | भैणू, भैणा | भैणू, भैण |
| गउ, गौ | गाई | गाई | गउआँ | गउआँ | गउआँ |

यह ध्यान रहे कि कर्ता वहुवचन सदा वही है जो तिर्यक् वहुवचन। भैण का उच्चारण कभी-कभी भेण होता है।

कारकीय परसर्ग इस प्रकार हैं—

| | |
|---|---|
| सम्प्र०-कर्म | केँआ, कि, या कने |
| अपादान | कछा या किछा, विच्चा या विच्चा |
| सम्बन्ध | दा |
| अधिकरण | विच्च, या बिच्च, मे |

नमूने मे हमे कुछ ऐसे रूप मिल जाते हैं जो उपरिलिखित रूपो से भिन्न हैं। एव कभी-कभी ऐसे रूप प्राप्त होते है जैसे घोड़ेआँ के स्थान पर घोड़ाँ। यद्यपि घर जैसी सज्ञाओ का तिर्यक् एकवचन प्राय· एकारान्त होता है, तो भी कभी-कभी आकारान्त होता है, जैसे मुल्ख से मुल्खे भी बनता है मुल्खा भी। ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओ मे तिर्यक् एकवचन के -आ का कभी-कभी लोप हो जाता है, जैसे सुरतीआ-विच्च की जगह सुरती-विच्च, स्मृति मे।

सर्वनामो मे डोगरी और कांगड़ी आदर्शों से कुछ भिन्नता है, पुरुषवाची सर्वनाम नीचे दिये जा रहे हैं—

| | मैं | हम | तू | तुम |
|---|---|---|---|---|
| कर्ता | मैं | असाँ, असी | तू | तुसां, तुसी |
| करण | मैं | असाँ | तैं, तुध | तुसां |
| सम्प्र०-कर्म | मिकेँआ,मिकी,मेकि | असा-केआ, -की | तुकेआ, तुकी | तुसां-केआ,-की |
| अपादान | मैं-कछा, मेरे कछा | असा-कछा | तैं-, तेरे-कछ | तुसां-कछा |
| सम्वन्ध | मेरा | साड़ा | तेरा | तुसाड़ा,तुहाड़ा, तुआड़ा |
| अधिकरण | मेरे-विच्च | असा-विच्च | असा-विच्च | तुसां-विच्च |

सम्प्रदान मे, सामान्यत कछा की जगह किछा हो सकता है।

अन्य पुरुष और सकेतवाचक सर्वनाम के लिए हमे निम्नलिखित रूप मिलते हैं—

| | वह | | यह | |
|---|---|---|---|---|
| | एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
| कर्ता | से, हे, ओ | से, हे, ओ | एह | एह |
| करण | उन्नी | उन्हाँ | इन्नी | इन्हाँ |
| तिर्यक् | उस | उन्हाँ | इस | इन्हाँ |

सम्वन्ध कारक मे, उद्दा भी है उस-दा भी।

जो, जे, करण एकव० जिनी, तिर्यक् एकव० जिस।

कौन, कुण, करण एकव० कुनी, तिर्यक् एकव० कुस, सम्वन्ध एकव० कुदा।

क्या, क्या, के, सम्वन्ध एकव० कँदा।

अन्य सर्वनाम हैं कोई, कोई; किच्छ, कुछ।

**क्रिया रूपान्तर**—अस्तित्ववाची और सहायक क्रिया काँगड़ी का अनुसरण करती है। जैसे—

वर्तमान, मैं हूँ इत्यादि

| | एकव० | बहुव० |
|---|---|---|
| उ० | **हाँ** | **हाँ** |
| म० | **हैं** | **हाँ** |
| अ० | **है** | **हन, हिन** |

भूतकाल है **था**, स्त्री० **थी**, बहु० **थे**, स्त्री० **थीआँ**। नमूने मे एक बार हमे **था** के स्थान पर पहाडी **थो** मिलता है।

कर्तृवाच्य क्रिया काँगडी का अनुसरण करती है। जैसे,

संभावनार्थ (मारना से)—**माराँ, मारें, मारे, माराँ** या **मारीए, माराँ, मारन**।

भविष्यत् पु० एक वचन **माहरघा**, बहुव० **माहरघे**। इस काल मे पुरुष के अनुसार परिवर्तन नही होता। स्त्रीलिंग रूप सामान्य ढंग से बनता है।

वर्तमान कृदन्त **मारदा**।

भूत कृदन्त **मारेंआ**। नमूने मे, **मिला** और **मिलेआ** दोनो हैं।

ग्राहम बेली वर्तमान काल वही देते हैं जो साधारण ढंग से बनता है—वर्तमान कृदन्त मे सहायक क्रिया जोडकर, जैसे **मारदा-हाँ**, मैं मारता हूँ। किन्तु, नमूने मे एक दूसरा वर्तमान काल -ना वाला है जो रूप मे संज्ञार्थक क्रिया से मिलता-जुलता है। जैसे, **करना**, मैं करता हूँ (सेवा)। याद रहे कि डोगरी वर्तमान कृदन्त के अन्त मे -ना हो सकता है।

जब न से तुरन्त पहले र हो तो दोनो की जगह ण हो जाता है। जैसे मरना, मैं मरता हूँ, **मणा**, और करना **कणा** हो जाता है।

निम्नलिखित उदाहरण अनियमित क्रियाओं के हैं—

| संज्ञार्थक क्रिया | वर्त० कृ० | भूत कृदन्त | भविष्यत् | संभावनार्थ |
|---|---|---|---|---|
| पौणा, पड़ना | पौन्दा | पैंआ | पोघा, पौघा | पौआँ |
| हौणा, होना | हुन्दा | होएँआ | हुङ्घा | होआँ |
| औणा, आना | औन्दा | अया | औंघा | औआँ |
| जाणा, जाना | जान्दा | गैंआ, गा | जङ्घा | जाँ |
| रैंहणा, रहना | रैंहन्दा | रेहा | रैंहङ्घा | रैंहाँ |
| वैंहणा, बैठना | वैंहन्दा | वैंठेआ | वैंहङ्घा | वौहाँ |
| खाणा, खाना | खान्दा | खाघा | — | — |
| पीणा, पीना | पीन्दा | पीता | — | — |
| देणा, देना | दिन्दा | दित्ता | दिङ्घा | — |
| लैणा, लेना | — | लेंआ | — | — |
| गलाणा, कहना | — | गलया, गलाया | — | — |
| करना या करणा, करना | — | किता | — | — |

अया, आया, जन्दा, जाता, जंघा, जाँघ और गलया, कहा, मे ह्रस्व अ का ध्यान रहे।

### उदाहरणार्थ कुछ वाक्य

१. तेरा क्या नाम है?
तेरा नां के है?

२. इस घोड़े की उम्र क्या है?
इस घोडेदी कितणी उम्वर है?

३. यहाँ से कश्मीर कितनी दूर है।
इत्थे कच्छों (या इत्थूं) कश्मीर कितणे दूर है?

४. तुम्हारे पिता के घर मे कितने बच्चे हैं?
तुआडे वव्वेदे घर कितणे जागत हन?

५. मैं आज बड़ी दूर से चलकर आया।
मैं अज्ज वड़ें दूरा-कच्छा (किछा) हण्डी अया।

६. मेरे चाचा का लड़का उसकी बहन से ब्याहा है।
मेरे चाचेदा जागत उसदी मैणू-कने विआहा है।

७. घर मे घोड़े की जीन है।
घरे कच्छे घोड़ेदी काठी है।

८. उसकी पीठ पर जीन वांध दो।
उसदीआ पिट्ठी-पर काठी वन्नूही देआ।

९. मैंने उसके वेटे को वहुत पीटा।
मैं उसदा जागत मता मारेंआ।

१०. वह पहाडी की चोटी पर ढोर चराता है।
से धारेदे रेहा उप्पर गउआ-वकरीआं चुगान्दा-है।

११. वह उस पेड के नीचे घोड़े पर वैठा है।
से उस रुक्खे-हेठ घोड़े उप्पर वैठेंआ है।

१२. उसका भाई अपनी वहनो से वडा है।
उद्दा भाई अपणीआ भेणू-(या भेणा) कछा वड्डा है।

१३. उसका मूल्य ढाई रुपये है।
उसदा मुल ढाई रुपय्ये है।

१४. मेरा वाप उस छोटे घर मे रहता है।
मेरा वव्व (या वापू) उस हल्के घरे रैंहन्दा-है।

१५ उसको ये रुपये दे दे।
उसकेंआ एह रुपय्ये देइ-देआ।

१६. वे रुपये उससे ले ले।
से रुपय्ये उस-कछा लेइ-लेआ।

१७. उसको अच्छी तरह पीटो और रस्सी से वांधो।
उसकेंआ जुगती करि मारो, जोडीआ-कन्ने वन्नूहो।

१८. कुएँ से पानी निकालो।
खूहे-कछा पाणी कढ्ढो।

१९. मेरे आगे चलो।
मैं अग्गे चलो।

२०. किसका वेटा तुम्हारे पीछे आता है?
कुदा पुत्तर तुमाड़े पिच्छे औन्दा है?

२१. वह तुमने किस से मोल लिया है?
से तुद्ध कुस-कछा मुल्लें लेआ-है?

२२. गांव के दुकानदार से।
[illegible] हटीवाबाळे-कछा।

[सं० ३३]

भारतीय आर्य परिवार | केन्द्रीय वर्ग

## पंजाबी

भटेआली बोली | (चम्बा राज्य)

[illegible]

(नागरी रूपान्तर)

इको-अदमीए-दे दो जातक थे। उन्हाँ-विच्चा निक्के बब्बे-कने गलाया, 'हे बापू, घर्बारीदा हेसा जे मेकी मिल्दा-है मेकी दे।' उन्नी घर्बारी बण्डी-दित्ती। थोरेआँ-रोजाँ-उप्रन्त निक्के जातके सभ-किच्छ किट्ठा करी दूर-मुल्खा-की गेआ। उते जाई-करी जे अप्णी घर्बारी थी, से लुच्पणे-विच्च गुआई। जाँ सभ मुकी-गेआ, उस-मुल्खे-विच्च बड़ा काल पेआ, अते ओ कङ्गाल होई-गेआ। ताँ उस मुल्खे इक-सहुकारे-कछ जाई रेहा। उन्नी अप्णे-खेत्राँ-विच्च सूर चुगाणे-की भेजा, अते उस्वी मर्जी थी जे, 'जे चिज सूर खान्दे-थे, से मैं बी खाँ।' अपण उस-की कोई दिन्दा ना थो। ताँ अप्णीआ सुर्ती-विच्च आई-करी, गलाया जे, मेरे-बब्बेदे कित्णेआँ

(अनुवाद)

एक आदमी के दो बेटे थे। उनमे से छोटे ने बाप से कहा, 'हे बापू, सम्पत्ति का हिस्सा जो मुझे मिलता है मुझे दे।' उसने सम्पत्ति बाँट दी। थोडे दिनो बाद छोटा लडका सब-कुछ इकट्ठा करके दूर देश को गया, वहाँ जाकर, जो अपनी सम्पत्ति थी, वह बदमाशी मे खो दी। जब सब चुक गया, उस देश मे बडा अकाल पडा, और वह कगाल हो गया। तब उस देश मे एक अमीर के पास जा रहा। उसने (उसे) अपने खेतो मे सूअर चराने को भेजा, और उसकी इच्छा थी कि 'जो चीज सूअर खाते थे, वह मैं भी खाऊँ।' पर उसको कोई देता न था। तब अपने होश मे आकर बोला कि मेरे बाप के कितने (ही)

## (नागरी रूपान्तर)

मजूराँ की रोटीयाँ हिन, अपण मैं भूखे मणा। मैं इते-कछा उठी-करी अप्णे बब्वे-कछ जांघा अते उस-की गलांवा, "हे वापू, मैं सुर्गेदा अते तेरा गुनाह् कित्ता, हुण मैं इस जोगा नहीं जे तेरा पुत्तर वणाँ। अप्णे-मजूराँ-विच्चा इक-मजूरा-साही मे-की वी वणा।" ताँ उठी-करी अप्णे बब्वे-कछ चलेआ। अजे ओ दूर था जे उस्दे वब्वे-की दीखी-करी दर्द आई; दोड़ी-करी उस्-की गळें-कने लाया, कनें-सुने दित्ते। पुत्रे उस-की गलाया, 'हे वापू, मैं सुर्गेदा अते तेरा पाप कित्ता, फिरी इस जोगा नही जे तेरा पुत्तर वणाँ।' बब्वे अप्णेआँ-नोक्राँ-की गलाया जे, 'अच्छे अच्छे कपड़े कड्ढी लेई-औओ, अते उस-की लावीओ; अते उस्दे हत्थे गुट्ठी, अते पैराँ जुत्ती; अते घाम लाओ, जे असी

## (अनुवाद)

मजदूरो को रोटियाँ (मिलती) हैं, पर मैं भूखा मरूँ। मैं यहाँ से उठकर अपने वाप के पास जाऊँगा और उसको कहूँगा, 'हे वापू, मैं स्वर्ग (भगवान्) का और तेरा पाप किया, अब मैं इस योग्य नही कि तेरा पुत्र वनूँ।' तव उठ कर अपने वाप के पास चला। अभी वह दूर था कि उसके वाप को देखकर दर्द हुआ, दौडकर उसको गले लगाया, साथ ही चूम लिया। पुत्र ने उसको कहा, 'हे वापू, मैं स्वर्ग का और तेरा पाप किया, फिर इस योग्य नही कि तेरा पुत्र वनूँ।' वाप ने अपने नौकरो को कहा कि 'अच्छे अच्छे कपडे निकाल लाओ, और उसको पहनाओ; और उसके हाथ मे अँगूठी, और पैरो मे जूती; और भोज लगाओ, कि हम

## (नागरी रूपान्तर)

खाई-करी खुसी करीए; कीहाँ जे एह मेरा पुत्तर मोयादा-था, हुण जिन्दा होएआ; गुआची-गेआ-था, हुण फिरी मिलेआ।' ताँ ओ खुसी कणा लगे।

अते उस्दा बड्डा पुत्तर खेत्रे-विच्च था। जाँ घरे-कछ अया, गाणे अते नच्च्णेदी उवाज सुणी। ताँ इकी-नोकरे-की सद्दी-करी पुछेआ जे, 'एह के है?' उन्नी उस-की गलाया जे, 'तेरा भाई अया, अते तेरे-बब्बे धाम लाई, इस-वास्ते जे उस-की राजी-बाजी मिला।' उन्नी निखरी-करी न चाहेआ जे, 'अन्दर जाँ।' ताँ उस्दे बब्बे बहार आई-करी उस-की पत्याया। उन्नी बब्बे-की जुवाब दित्ता जे, 'दीख, मैं इत्णेआँ-वर्साँ कछाँ तेरी टेहल कर्ना, अते कदे तेरे-गलाया-बिना मैं कोई गल नहीं कित्ती; अपण तुसाँ इक बक्रीदा छेलू सरी-बी न दित्ता

## (अनुवाद)

खाकर खुशी मनायें, क्योंकि यह मेरा बेटा मरा था, अब ज़िंदा हुआ, खो गया था, अब फिर मिला।' तब वे खुशी मनाने लगे।

और उसका बडा लडका खेत में था। जब घर के पास आया, गाने और नाचने की आवाज सुनी। तब एक नौकर को बुलाकर पूछा कि 'यह क्या है?' उसने उसको कहा कि 'तेरा भाई आया (है), और तेरे बाप ने भोज किया, इसलिए कि उसको राजी-बाजी पाया।' उसने क्रुद्ध होकर न चाहा कि भीतर जाये, तब उसके बाप ने बाहर आकर उसको आश्वासन दिया। उसने बाप को उत्तर दिया कि 'देख, मैं इतने बरसो से तेरी सेवा करता हूँ, और कभी तेरे कहे बिना मैंने कोई बात नही की; पर तुमने एक बकरी का मेमना भी नही दिया

(नागरी रूपान्तर)

जे मैं अपणे-मित्राँ-कने खुसी कराँ। जाँ तेरा एह पुत्तर अया, जिनी तेरा माल लुच्पणे-विच्च गुआया, तुसां धाम लाई।' उन्नी उस-की गलाया, 'हे पुत्तर, तू सदा मेरे-कछ रेह्दा-हैं, अते जे किच्छ मेरा हैं, से तेरा है। अपण खुसी कणा, अते खुसी होणा खरी गल है; कीहाँ जे तेरा एह भाई मोयादा था, से जिन्दा होएआ; गुआची-गेआ था, हुण मिला।'

(अनुवाद)

कि मैं अपने मित्रो के साथ खुशी मनाता। जव तेरा यह पुत्र आया, जिसने तेरी सम्पत्ति बदमाशी मे गँवा दी, तुमने भोज दिया।' उसने उसको कहा, 'हे वेटा, तू सदा मेरे पास रहता है, और जो कुछ मेरा है, सो तेरा है। किन्तु खुशी मनाना और खुश होना अच्छी बात है, क्योकि तेरा यह भाई मर गया था, सो जिंदा हुआ, खो गया था, अव मिला।'

## पंजाबी के आदर्श शब्दों और वाक्यों की सूची

| | हिन्दी | माझी (अमृतसर) | पोवाधी (अम्बाला) | मालवाई (फीरोजपुर) | डोगरी | काँगड़ी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | एक | इक्क | इक्क | इक | इक | इक्क |
| २ | दो | दो | दो | दो | दो | दो |
| ३ | तीन | तिन्न, त्रै | तिन्न | तिन्न | त्रै | त्रै |
| ४ | चार | चार | चार | चार | चार | चोउर |
| ५ | पाँच | पञ्ज | पञ्ज | पञ्ज | पञ्ज | पञ्ज |
| ६ | छ | छै | छी | छी | छे | छी, छे |
| ७ | सात | सत्त | सत्त | सत्त | सत | सत्त |
| ८ | आठ | अट्ठ | अट्ठ | अट्ठ | अठ | अट्ठ |
| ९ | नौ | नौ | नौ | नौं | नौ | नौ |
| १० | दस | दस | दस | दस | दस | दस |
| ११ | बीस | वीह | वीह | वीह, बीह | वीह | बीह |
| १२ | पचास | पञ्जाह | पञ्जाह | पञ्जाह | पञ्जाह | पञ्जाह |
| १३ | सौ | सौ | सौ | सौ | सौ | सौ |
| १४ | मैं | मैं | मैं | मैं | आउँ | मैं |
| १५ | मेरा, of me | मेरा | मेरा | मेरा | मेरा | मेरा |
| १६ | मेरा, mine | मेरा | मेरा | मेरा | मेरा | मेरा |
| १७ | हम | असी | असी | असी | अस | अस्सा |
| १८ | हमारा, of us | साड्डा | साडा | असाडा, साडा | साडा | म्हारा |
| १९ | हमारा, our | साड्डा | साडा | असाडा, साडा | साडा | म्हारा |
| २० | तू | तू | तू | तू | तू | तू |
| २१ | तेरा, of thee | तेरा | तेरा | तेरा | तेरा | तेरा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २२ | तेरा, thine | तेरा | तेरा | तेरा | तेरा | तेरा |
| २३ | तुम | तुसी | तुसी | तुसी | तुस | तुस्सा |
| २४ | तुम्हारा, of you | तुहाड्डा | तोहाडा | थुआडा | तुसाडा | तम्हारा, तुम्हारा, तुस्साडा |
| २५ | तुम्हारा, your | तुहाड्डा | तोहाडा | थुआडा | तुसाडा | तम्हारा, तुम्हारा, तुस्सांडा |
| २६ | वह | उह | ओह | ओह | ओ, ओतुह्व | ओह, सोह, सँह, |
| २७ | उसका, of him | उहदा | ओहदा | ओहदा | उहदा तिसदा, | उसदा, उद्दा, तिसदा, तिद्दा |
| २८ | उसका, his | उहदा | ओहदा | ओहदा | उहदा | उसदा, उद्दा, तिसदा, तिद्दा |
| २९ | वे | उह | ओह | ओह | ओ, ओह | ओह, सोह, सँह |
| ३० | उनका, of them | उन्हादा, उन्हदा | उन्हादा | ओहनां-दा | उदा | उनादा, उन्हादा, तिनादा, तिन्हादा |
| ३१ | उनका, their | ” ” | ” | ” | ” | ” ” ” ” |
| ३२ | हाथ | हत्थ | हत्थ | हत्थ | हथ | हत्थ |
| ३३ | पैर | पैर | पैर | पैर | पैर | पैर |
| ३४ | नाक | नक्क | नक्क | नक्क | नक | नक्क |
| ३५ | आँख | अक्ख | अक्ख | अक्ख | अख | हक्खी, हाखी, हाखर |
| ३६ | मुँह | मुंह | मूह | मुह | मुह | मूह |
| ३७ | दाँत | दन्द | दन्द | दन्द | दन्द | दन्द |
| ३८ | कान | कन्न | कन्न | कन्न | कन्न | कन्न |
| ३९ | वाल | वाल, केस | वाल, केस | बाल, वाल | वाल | बाल, सरील (सिर के वाल) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४० | सिर | सिर | सिर | सिर | सिर | सिर, मुण्ड |
| ४१ | जीभ | जीभ | जीभ | जीभ | जीभ | जीभ |
| ४२ | पेट | ढिड्ढ, ढिड्ड, पेट | ढिड | ढिड | ढिड | पेट, ढिड |
| ४३ | पीठ | पिट्ठ | पिट्ठ | पिट्ठ, कण्ड, ढूई | पिट्ठी | पिट्ठ |
| ४४ | लोहा | लोहा | लोहा | लोहा | लोहा | लोहा |
| ४५ | सोना | सिओन्ना, सोन्ना | सोना | सोना, सोएना | सोना | सुन्ना |
| ४६ | चाँदी | चादी | चान्दी | चादी | चाँदी | चादी, रुप्पा |
| ४७ | बाप | पिउ, पिओ, बाप्पू, बापू | पिउ | पेओ, बापू | बब, बब्बा | बब्ब |
| ४८ | माँ | मा, माई, बेब्बे | माँ | माँ | मा | अम्मा, मा |
| ४९ | भाई | भरा, वीर, भाई | भाई, भाईआ, भरा | भरा | भरा | भाऊ |
| ५० | बहन | भैंण | भैंन | भैंन | भैंण | बैंहन, भैन, बोबो |
| ५१ | पुरुष | मनुक्ख, मानस, आदमी | मनुक्ख, माणुस, आदमी | मनुक्ख, आदमी | आदमी | माह्णू, मणुक्ख, माणस, आदमी |
| ५२ | स्त्री | तीवी, बड्ढी | तीवी | तीवी, तीमी | जनानी | जुनास, त्रीमत, जनाना |
| ५३ | पत्नी | वोहरी, रन्त | वौहटी | रन्न, वौटी | लाडी | लाडी, जुनास, त्रीमत, जनाना |
| ५४ | बच्चा | बच्चा | पुत्त (पु०), धी (स्त्री०) | छोहर, मुण्डा | जातक | जातक, निका-च्का |
| ५५ | बेटा (पुत्र) | पुत्त, पुत्तर | पुत्त, पुत्तर, मुण्डा | पुत्त, बेटा | पुतर | जातक, पुत्तर |
| ५६ | बेटी | धी, काक्की, कुडी | धी, कुडी | धी | धी | धी, कुडी |
| ५७ | दास | गोल्ला | गुलाम | गुलाम, गोला | गुलाम | गुलाम, काम्मा |
| ५८ | किसान | जिमींदार | जिमीनदार | किरसान | सामी | पाहू |
| ५९ | गडरिया | आजाली | गडरिआ | अयाली | चरवाल | गुआलू |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६० | परमेश्वर | रब्ब, वाह-गुरु | रब्ब, वोह-गुरु, राम, अल्ला, खुदा | रब्ब | परमेसर | परमेशर, ठाकर |
| ६१ | प्रेत | भूत, परेत | भूत | शतान | पिसाच | शतान |
| ६२ | सूर्य | सूरज | सूरज | सुरज | सूरज | सूरज |
| ६३ | चाँद | चन्द | चन्द | चन्द | चन्न | चन्दरमा |
| ६४ | तारा | तारा | तारा | तारा | तारा | तारा |
| ६५ | आग | अग्ग, बसन्तर | अग्ग | अग्ग | अग | अग्ग |
| ६६ | पानी | पाणी, जल | पाणी, जल | पाणी | पानी | पाणी |
| ६७ | घर | घर, कुल्ला | घर | घर | घर | घर |
| ६८ | घोडा | घोडा, टट्टू | घोडा | घोडा | घोडा | घोडा |
| ६९ | गाय | गाँ, गऊ | गऊ | गाँ | गाओ | गा |
| ७० | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता |
| ७१ | बिल्ली | बिल्ली | बिल्ली | बिल्ली | बिल्ली | बिल्ली |
| ७२ | मुर्गा | कुक्कड | कुक्कड | कुक्कड | कुक्कड | कुक्कड |
| ७३ | बत्तख | बत्तक | बत्तग | बत्तख | बत्तक | बत्क |
| ७४ | गधा | खोत्ता, गधा | खोता | गधा, खोता | खोता | खोता, गधा |
| ७५ | ऊँट | उट्ठ | ऊठ | ऊठ, ओठ | ऊँट | ऊट |
| ७६ | पक्षी | पखेरू | पच्छी | पन्छी | पखेरू | पन्छी |
| ७७ | जा | जाह | जा | जा | जा | जा |
| ७८ | खा | खाह | खा | खा | खा | खा |
| ७९ | बैठ | बौह, बैठ | बैह | बैह, बेठ | बौह | बह |
| ८० | आ | आ | आ | आ | आ | आ |
| ८१ | मार | मार | मार, कुट्ट | मार | मार | मार |
| ८२ | खडा हो | खलो, उठ | उट्ठ | खडा हो, खडो | खरो | खडोई-जा |
| ८३ | मर | मर | मर | मर | मर | मर |

| | हिन्दी | माझी | पोवाधी | मालवाई | डोगरी | कांगडी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८४ | दे | देह | दे | दे | देह | दे |
| ८५ | दौड़, भाग | भग्ग, भज्ज, दौड | भग्ग, नस, दोड | भज्ज | दौड | दौड, नट्ठ, खिट्ट दे |
| ८६ | ऊपर | उत्ते, उप्पर | उत्ते | उत्ते | उप्पर | उप्पर |
| ८७ | निकट | नेडे, कोल | कोल, नेडे | नेडे | नेड | नेड |
| ८८ | नीचे | हेथा | हेषा | हैठ | खन्ह | वुन्ह, त्रिक्क, हेठ |
| ८९ | दूर | दूर, दुराड्डा | दूर | दूर | दूर | दूर |
| ९० | आगे | अग्गे, सामने, अगेडे | अग्गे | अग्गे | अग्गे | अग्गे, सम्हणे |
| ९१ | पीछे | पिच्छे | पिच्छे | पिच्छे | पिच्छे | पछाह, पिच्छे |
| ९२ | कौन | कौण, केहडा | केहडा | केहडा, कौन | कौन, कुन | कुण |
| ९३ | क्या | की | की | की | कि, केह | क्या, किया |
| ९४ | क्यों | किउ | काहनू | कियू, किओ | की | कजो |
| ९५ | और | होर, अते, ते, अर | होर | होर, और, ते | होर | कने |
| ९६ | परन्तु | मुड, पर | पर | पर, माले | पर | पर |
| ९७ | यदि | जे, जद, जदो | जे | जे, जेकर | जेकर | जे |
| ९८ | हाँ | हा, आहो, हला | हा, आह | हा, आहो | हां | हा |
| ९९ | न, नही | नही, ना | नाह | नईं, ना | ना | ना, नही |
| १०० | हाय | हाए-हाए, ओह-ओह | ओहो, मसोस | हाहा, अमसोस | मसोस | हाए |
| १०१ | पिता | पिओ | पिउ | पेओ | बब्ब, बब्बा | बब्ब |
| १०२ | पिता का | पिओदा | पिउदा | पेओदा | बब्बेदा | बाब्बेदा |
| १०३ | पिता को | पिओनू | पिउनू | पेओनू | बब्बेगी | बब्बेजो, बब्बे-की |
| १०४ | पिता से | पिओ-थो | पिउ-थो, पिउ-कोलो | पेओ-तों | बब्बे-कछा | बब्बे-ते |
| १०५ | दो पिता | दो पिओ | दो पिउ | दो पेओ | दो बब | दोबब्ब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०६ | पिता (बहुव०) | पिओ | पिउ | पेओ | बब, बब्बां | बब्बा |
| १०७ | पिताओ का | पिओदा | पिवादा | पेवादा | बब्बैंदा | बब्बादा |
| १०८ | पिताओ को | पिओनू | पिवानू | पेवानू | बब्बैंगी | बब्बा जो, बब्बा की |
| १०९ | पिताओ से | पिओ-थो | पिवा-थो,-कोलो | पेवा-तो | बब्बैं-कछा | बब्बा-ते |
| ११० | बेटी | काक्की | घी | घी | घी | घी |
| १११ | बेटी का | काक्कीदा | घीदा | घीदा | घीदा | घीआदा |
| ११२ | बेटी को | काक्कीनू | घीनू | घीनू | घीगी | घीआजो, घीआ-की |
| ११३ | बेटी से | काक्की-थो | घी-थो,-कोलो | घी-तो | घी-कछा | घीआ-ते |
| ११४ | दो बेटियाँ | दो काक्कीआ | दो घीआ | दो घीआ | दो घीआ | दो घीआ |
| ११५ | बेटियाँ | काक्कीआ | घीआ | घीआ | घीआ | घीआ |
| ११६ | बेटियो का | काक्कीआदा | घीआदा | घीआदा | घीएदा | घीआदा |
| ११७ | बेटियो को | काक्कीआनू | घीआनू | घीआनू | घीएगी | घीआंजो, घीआ-की |
| ११८ | बेटियो से | काक्कीआ-थो | घीआ-थो,-कोलो | घीआ-तो | घीए-कछा | घीआ-ते |
| ११९ | एक भला आदमी | इक्क भला मानस | इक्क भला मनुक्ख | इक चगा मनुक्ख- | इक खरा आदमी | इक्क खरा माणस |
| १२० | एक भले आदमी का | इक्क भले मानसदा | इक्क भले मनुखदा | इक चगे मनुक्खदा | इक खरे आदमीदा | इक्क खरे माणसेदा |
| १२१ | एक भले आदमी को | इक्क भले मानसनू | इक्क भले मनुक्खनू | इक चगे मनुक्खनू | इक खरे आदमी कछ | इक्क खरे माणसे-जो, (-की) |
| १२२ | एक भले आदमी से | इक्क भले मानस-थो | इक्क भले मनुक्ख-थो,-कोलो | इक चगे मनुक्ख-तो | इक खरे आदमी-कछा | इक्क खरे माणसे-ते |
| १२३ | दो भले आदमी | दो भले मानस | दो भले मनुक्ख | दो चगे मनक्ख | दो खरे आदमी | दो खरे माणस |
| १२४ | भले आदमी | भले मानस | भले मनुक्ख | चगे मनुक्ख | खरे आदमी | खरे (अथवा खरा) माणसा |
| १२५ | भले आदमियो का | भले मानसांदा | भले मनुक्खादा | चंगे मनुक्खादा | खरे आदमीआदा | खरे (अथवा खरा) माणसादा |
| १२६ | भले आदमियो को | भले मानसांनू | भले मनुक्खानू | चंगे मनुक्खानू | खरे आदमीआ-कछ | खरे (अथवा खरा) |

| | हिन्दी | माझी | पोवाधी | मालवाई | डोगरी | काँगडी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२७ | भले आदमियो से | भले मानसा-थो | भले मनुक्खा-थों, -कोलो | चगे मनुक्खा-तो | खरे आदमीआ-कछा | माणसाजो, (-की) खरे (अथवा खरा) माणसां-ते |
| १२८ | एक भली स्त्री | इक्क भली तीवी | इक्क भली तीवी | इक चगी तीमी | इक खरी जनानी | इक्क जुनास भली माणस |
| १२९ | एक बुरा लडका | इक्क कुपत्ता मुण्डा | इक्क बुरा मुण्डा | भैंडा मुण्डा | इक कच्चा लौहड़ा | इक्क बुरा मण्डू |
| १३० | भली स्त्रियाँ | भलीआ तीवीआ | भली तीवीआ | चगीआ तीमीआ | खरी जनानीआ | खरीआ त्रीमती (अथवा माणसी) |
| १३१ | एक बुरी लडकी | इक्क भैंडी कुडी | इक्क बुरी कुडी | भैंडी कुडी | इक्क कच्ची कुडी | इक्क बुरी कुड़ी |
| १३२ | भला, अच्छा | भला, चगा | चगा, अच्छा, भला | चगा | खरा | खरा, भला, अच्छा |
| १३३ | और अच्छा (श्रेयस्) | होरना-थो चगा (औरो से अच्छा) | बोहत चगा | वाहला चगा | मता खरा | बौहत खरा |
| १३४ | सबसे अच्छा (श्रेष्ठतम) | समनां-थो चगा | डाहडा चगा | वाहला-ई-चगा | मत-गै खरे | बौहत-ही खरा |
| १३५ | उच्च (ऊँचा) | उच्चा | उच्चा | उच्चा | उच्चा | उच्चा |
| १३६ | उच्चतर | होरना-थो उच्चा | बोहत उच्चा | वाहला उच्चा | मता उच्चा | बौहत उच्चा |
| १३७ | उच्चतम | समना-थो उच्चा | सम-थो उच्चा | वाहला-ई-उच्चा | गते-गै उच्चे | बौहत-ही उच्चा |
| १३८ | घोडा | घोडा | घोडा | घोडा | घोरा | घोडा, |
| १३९ | घोडी | घोडी | घोडी | घोडी | घोडी | घोडी |
| १४० | घोडे | घोडे | घोडे | घोडे | घोडे | घोडे |
| १४१ | घोडियाँ | घोडीआँ | घोडीआँ | घोडीआँ | घोडीआँ | घोडीआ |
| १४२ | साँड | साहन | साहडा | धत्ता, साहन | साहन | साहन |
| १४३ | गाय | गा | गऊ | गा | गाओ | गा |
| १४४ | साँड (बहु०) | साहन | साहडे | धत्ते | साहन | साहन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४५ | गाये | गाईआ | गऊआ | गाईआ | गावें | गाईं |
| १४६ | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता | कुत्ता |
| १४७ | कुतिया | कुत्ती | कुत्ती | कुत्ती | कुत्ती | कुत्ती |
| १४८ | कुत्ते | कुत्ते | कुत्ते | कुत्ते | कुत्ते | कुत्ते |
| १४९ | कुत्तिया | कुत्तीआ | कुत्तीआ | कुत्तीआ | कुत्तीआ | कुत्तीआ |
| १५० | वकरा | वकरा | वर्हा | बक्करा | वकरा | वकरा, वकरू |
| १५१ | वकरी | बकरी | वर्ही | बक्करी | बकरी | वकरी |
| १५२ | वकरिया | वकरे | वर्हे | बक्करीआ | बकरीआ | वकरू |
| १५३ | हरिण | हरन | हरण | हर्न | हर्न | हर्न |
| १५४ | हरिणी | हरनी | हरणी | हरनी | हरनी | हनी |
| १५५ | हरिण (बहु०) | हरन | हरण | हर्न | हर्न | हर्न |
| १५६ | मैं हूँ | मैं हा | मैं हा | मैं हा | आऊ हा, आ | मैं हा |
| १५७ | तू है | तू हैं | तू हैं | तू हैं, ऐ | तू हे, ए | तू हे, हे |
| १५८ | वह है | उह है, ई | ओह है | ओह है | ओह हे, ऐ, ए | सेह हे, है |
| १५९ | हम हैं | असी हा, है | असी हा | असी हा | अस हे, ऐ, ए | अस्सा हा, हैं, हूं |
| १६० | तुम हो | तुसी हो | तुसी ओ | तुसी हो | तुस हो, ओ | तुस्सा हा, हैं हा |
| १६१ | वे हैं | उह हैं, हन | ओह हैंन | ओह हन | ओह हैं, ऐं, एं | सेह हा, हैं, हिन, ह्न |
| १६२ | मैं था | मैं सा | मैं सा | मैं सा, सी | आऊ-सा, था, सा | मैं था, थू |
| १६३ | तू था | तू सैं | तू सैं | तू सैं, सी | तू सा, था | तू था, थू |
| १६४ | वह था | उह सी | ओह सी | ओह सी | ओह सा, था | सेह था, थू |
| १६५ | हम थे | असी सां | असी सा | असी सां, सी | अस से, थे | अस्सा थे |
| १६६ | तुम थे | तुसी सौ | तुसी साओ | तुसी सो, सी | तुम से, थे | तुस्सा थे |
| १६७ | वे थे | उह से | ओह सन | ओह सन, सी | ओह से; थे | सेह थे |
| १६८ | हो | हो | हो | हो | हो | हो |
| १६९ | होना | होणा | होणा | होना | होना | होणा |

| | हिन्दी | माझी | पोवाधी | मालवाई | डोगरी | काँगडी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १७० | होता | होन्दा | होन्दा | हुन्दा | हुन्दा | होन्दा |
| १७१ | होकर | हो-के | हो-के | होआ होआ | होई-के, होईए | होई-के |
| १७२ | मैं होऊँ | मैं हूआ | मैं होवा | मैं होमां | आऊ होआ | मैं होआ |
| १७३ | मैं हूँगा | मैं होआगा | मैं होवागा | मैं होमागा | आऊँ होङ | मैं हुगा, होघा, मोला |
| १७४ | मैं | ,, ,, | ,, ,, | ,, ,, | आऊं हुन्दा | ,, ,, |
| १७५ | मार | मार | मार | मार | मार | मार |
| १७६ | मारना | मारना | मारणा | मारना | मारना | मारणा |
| १७७ | मारता | मारदा | मारदा | मारदा | मारदा, मारना | मारदा |
| १७८ | मारकर | मार-के | मार-के | मार-के | मारीए | मारी-के |
| १७९ | मैं मारता हू | मैं मारदा-हा, मारना-हा | मैं मारदा-हा (अथवा मारना-हा) | मैं मारदा-हा | आऊ मारना, मारदा | मैं मारदा-हा |
| १८० | तू मारता है | तू मारदा-हैं, मारना-हैं | तू मारदा-हैं, मारना-हैं | तू मारदा-हैं | तू मारना, मारदा | तू मारदा-हे |
| १८१ | वह मारता है | उह मारदा-है, मारना-है | ओह मारदा-है, मारना-है | ओह मारदा-है | ओह मारना, मारदा | सेह मारदा-हे |
| १८२ | हम मारते हैं | असी मारदे-हैं, मारने है | असी मारदे-हा, मारने-हा | असी मारदे-हा | अस मारना, मारदा | अस्सा मारदे-हा |
| १८३ | तुम मारते हो | तुसी मारदे-हो, मारने हो | तुसी मारदे-ओ, मारने-ओ | तुसी मारदे-हो | तुस मारना, मारदा | तुस्सा मारदे-हा |
| १८४ | वे मारते हैं | उह मारदे-हन, मारने-हन | ओह मारदे-हन, मारने-हम | ओह मारदे-हन | ओह मारना, मारदा | सेह मारदे-हां |
| १८५ | मैंने मारा | मैंनैं मारिआ | मैं मारिआ | मैं मारिआ | मे मारिआ | मैं मारिआ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १८६ | तूने मारा | तैंनै मारिआ | तै मारिआ | तू मारिआ | तुध तारिआ | तैं (अथवा तुध) मारिआ |
| १८७ | उसने मारा | उहनै मारिआ | ओहने मारिआ | उस मारिआ | उस मारिआ | तिनी मारिआ |
| १८८ | हमने मारा | असानैं मारिआ | असा मारिआ | असी मारिआ | असें मारिआ | अस्सा मारिआ |
| १८९ | तुमने मारा | तुसानैं मारिआ | तुसां मारिआ | तुसी मारिआ | तुसें मारिआ | तुस्सा मारिआ |
| १९० | उन्होंने मारा | उन्हानैं मारिआ | ओन्हा मारिआ | ओहना-ने मारिआ | उनें मारिआ | तिना (अथवा तिन्हां) मारिआ |
| १९१ | मैं मारता हूँ | मैं मारदा-हा | मैं मारदा-हा | मैं मारदा-हा | आऊ मारदा-आ | मैं मारदा-हां |
| १९२ | मैं मारता था | मैं मारदा-सी | मैं मारदा-सी | मैं मारदा-सा | आऊ मारदा-सा | मैं मारदा-था |
| १९३ | मैंने मारा था | मैंनैं मारिआ-सी | मैं मारिआ-सी | मैं मारिआ-सी | मे मारिआ-सा | मैं मारिआ-था |
| १९४ | मैं मारूँ | मैं मारा | मैं मारा | मैं मारा | आऊँ मारा | मैं मारां |
| १९५ | मैं मारूँगा | मैं मारांगा | मैं मारागा | मैं मारागा | आऊ मारङ | मैं मारगा, मारघा, मारागा |
| १९६ | तू मारेगा | तू मारेंगा | तू मारेगा | तू मारेंगा | तू मारगा | तू मारगा; मारघा |
| १९७ | वह मारेगा | उह मारेगा | ओह मारूगा | ओह मारेगा | ओह मारग | सेह मारगा, मारघा |
| १९८ | हम मारेंगे | असी मारागे | असी मारागे | असी मारागे | अस मारङ | अस्सा मारगे; मारघे |
| १९९ | तुम मारोगे | तुसी मारोगे | तुसी मारोगे | तुसी मारोगे | तुस मारगिओ | तुस्सा मारगे मारघे |
| २०० | वे मारेंगे | उह मारेंगे | ओह मारणगे | ओह मारनगे | ओह मारगन | सेह मारगे, मारघे |
| २०१ | मैं मारता | ” ” | ” ” | ” ” | आऊँ मारदा | ” ” |
| २०२ | मुझे मारा है | मैंनू मार पैंदी-है | मैंनू मार पई | मैंनू मारिआ-है | मिगी मार पई-ए | मिन्जो मारदा-है |
| २०३ | मुझे मारा था | मैंनू मार पैंदी-सी | मैंनू मार पई-सी | मैंनू मारिआ-सी | मिगी मार पई-सी | मिन्जो मारिआ |
| २०४ | मुझे मारा जायगा | मैंनू मार पऊ | मैंनू मार पैएगी | मैंनू मारेगा | मिगी मार पवग | मिन्जो मारघा |
| २०५ | मैं जाता हूँ | मैं जान्दा हां, जान्ना-हा | मैं जान्दा-हा, जाना-हा | मैं जादा (अथवा जाना) हा | आऊँ जाना (अथवा जादा)-आ | मैं जादा-हा |
| २०६ | तू जाता है | तू जान्दा-हैं, जान्ना-हैं | तू जान्दा-हैं, जाना-हैं | तू जादा-हैं | तू जाना (जादा)-ए | तू जादा-हे |

| | हिन्दी | माझी | पोवाधी | मालवाई | डोगरी | कांगडी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०७, | वह जाता है | उह जान्दा-है, जान्ना-है | ओह जादा-है जाना-है | ओह जादा है | ओह जाना (जादा) –ए | सेह जादा-हे |
| २०८ | हम जाते हैं | असी जान्दे-हैं, जान्ने हैं | असी जान्दे-हा, जानें-हा | असी जादे-हा | अस जाने (जादे) –आ | अस्सा जादे-हा |
| २०९ | तुम जाते हो | तुसी जान्दे-हो जान्ने-हो | तुसी जान्दे ओ, जाने ओ | तुसी जादे-हो | तुस जाने (जादे)-ओ | तुस्सा जादे-हा |
| २१० | वे जाते है | उह जान्दे-हैं, जान्ने-हैं | ओह जान्दे-हैण, जानें-हैण | ओह जादे-हन | ओह जाने (जादे)-एं | सेह जादे-हा |
| २११ | मैं गया | मैं गिआ | मैं गेआ | मैं गिया | आऊँ गिआ, गया | मैं गिआ |
| २१२ | तू गया | तू गिआ | तू गेआ | तू गिया | तू गिआ, गया | तू गिआ |
| २१३ | वह गया | उह गिआ | ओह गेआ | ओह गिया | ओह गिआ, गया | सेह गिआ |
| २१४ | हम गये | असी गए | असी गए | असी गए | अस गए | अस्सा गए |
| २१५ | तुम गये | तुसी गए | तुसी गए | तुसी गए | तुस गए | तुस्सा गए |
| २१६ | वे गये | उह गए | ओह गए | ओह गए | ओह गए | सेह गए |
| २१७ | जा | जाह | जा | जा | जा | जा |
| २१८ | जाकर (जाता) | जान्दा, जान्ना | जान्दा | जादा | जाना, जादा | जाई-के |
| २१९ | गया | गिआ | गेआ | गिया | गिआ, गया | गिआ |
| २२० | तुम्हारा क्या नाम है | तुहाड्डा ना की है | तुहाडा की ना है | थुआडा की ना है | तुसाडा किह ना ऐ | तुस्साडा किआ नां है |
| २२१ | इस घोडे की उम्र क्या है ? | एह घोडा किन्ने वरिहादा हे ? | एस घोडेदी की उमर हे ? | एस घोडे की किन्नी उमर है ? | उस घोडे दी उमर किह है ? | एह घोडा कितनिआं बरिहादा है ? |
| २२२ | यहां से कश्मीर कितनी दूर है ? | ऐत्थो कस्मीर किन्ना हे ? | ऐथों कस्मीर किन्ना है ? | कश्मीर एथो किन्नी वाट है ? | इथो कस्मीर किन्नी दूर ऐ ? | इत्यू-ते कश्मीर कितनी दूर है ? |
| २२३ | तुम्हारे बाप के घर | तुहाड्डे पिओदे घर | तुहाडे पिउदे घर | थुआडे पेओदे किन्नें | तेरे बब्बैदे घर किन्ने | तुस्साडे बब्बेदे घर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | कितने बेटे है ? | किन्ने पुत्तर हन ? | किन्ने पुत्तर हन ? | पुत्र हन | पुत्तर हैन ? | कितने जातक हन ? |
| २२४ | आज मैं बहुत चला हूँ | आज मैं बडा पैन्डा कीता है | अज्ज मैं बडा पैंडा कीता | अज्ज मैं बाहला टुरिआ-फिरिआ हा | अज मैं बडा फिरिआ | मैं अज्ज बडी दूर जाई आइआ |
| २२५ | मेरे चाचा का लडका उसकी बहन से विवाहित है | मेरे ताएदा पुत्त उहदी भैण नाल बीआहा-है | मेरे चाचेदे पुत्तरदा बिआह ओसदी भैण नाल होइआ है | मेरा भरा चाचेदा पुत्त ओहदी भैनदे नाल बिआहिया होया-है | मेरा चादेदा पुत्तर उसदी धीऊ कन्ने विहाया-गिआ ऐ | मेरे चाचेदा पुत्तर तिहिआ बैहनी कने बिआहिया-है |
| २२६ | घर मे सफेद घोडे की जीन है | चिट्टे घोडे दी काठी घरिच है | चिट्टे घोडे दी काठी घर विच्च है | घर-विच बग्गे घोडे दी काठी है | चिट्टे घोडे दी काठी घर ऐ | घरे विच चिट्टे घोडे दी काठी-है |
| २२७ | उसकी पीठ पर जीन डाल दे | उहदी पिट्ठ-ते काठी पा | ओहदी पिट्ठ-ते काठी पा-देओ | काठी ओहदी पिठ-ते पा-दे | काठी उसदी पट्ठी-पर रख | काठी तिहिआ पिट्ठी उप्पर पाई-दे |
| २२८ | मैंने उसके बेटे को (कई) कोडों से पीटा | मैंनें उहदे पुत्तनू बडे कोटले मारे | मैं ओहदे पुत्तनू बडे चाबक मारे | मैं ओहदे पुत्तनू कोर-डिया-नाल कुट्टिआ | अज मैं उसदे पुत्तरंगी मते कोरडे मारे | मैं तिहे पुत्तरेजो कोरडिआ-कने मारिआ |
| २२९ | वह पहाडी की चोटी पर ढोरो को चरा रहा है | उह पहाडीदी चोट्टी-ते डङ्गर चरा-रिहा-ई | ओह पहाडीदे टिब्बे-ते डङ्गर चराओन्दा-है | ओह पहाडी दी चोटी उत्ते माल चराउदा-है | ओह पहाडीदी चोटी पर डङ्गर चारदा-ए | सेह धारादिआ चुण्डिआ ऊपर डङ्गर चारा करदा-है |
| २३० | वह उस पेड के नीचे घोडे पर बैठा हुआ है | उह उस रुक्खदे हेठ घोडे ते बैठा-होइआ-है | ओह रुखदे हेठा घोडे-ते चडिआ खलोता-है | ओह उस रुखदे हेठ घोडे-ते चडिया बैठा-है | ओह उस रुक्खें-हेठ घोडे-पर बैठा-दा-ऐ | सेह उस रुक्खे हेठ घोडे उप्पर चढिआ-है |
| २३१ | उसका भाई उसकी बहन से लम्बा है | उहदा भरा उहदी भैण-कोलो लम्मा है | ओहदा भरा ओहदी भैण-नालो उच्चा है | ओहदा भरा ओहदी भैन-नालो उच्चा है | उसदा भरा उसदी भैनू कछा लम्मा ऐ | तिसदा, भाऊ तिह्आ बहनी-ते ।लम्मा है |
| २३२ | उसका मूल्य ढाई रुपये है। | उहदा मुल्ल ढाई रपइए है। | ओहदा मुल्ल ढाई रप्पीए हैं | ओहदा मुल्ल ढाई रुपैये है | उसदा मुल ढाई रुपये ऐं | तिहा मुल्ल ढाई रुपय्ये है |
| २३३ | मेरा बाप उस छोटे | मेरा पिओ उस छोटे | मेरा पिउ ओस छोटे | मेरा पेओ ओस छोटे | मेरा बब उस निक्के | मेरा बब्ब तिस छोटे |

| | हिन्दी | माझी | पोवाधी | मालवाई | डोगरी | काँगडी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २३४ | घर मे रहता है | घरिच रहिन्दा-है | घर-विच रैहन्दा-है | घर-विच रैहन्दा है | घर-विच रौहदा-ऐ | घरे-विच रैहदा-है |
| | यह रुपया उसको दे | एह रपईआ उहनू देह | एह रप्पीआ ओसनू दे-देओ | एह रुपैया ओहनू देह | एह रुपया उसी देह | एह रुपय्या तिस-की दै-दे |
| २३५ | वे रुपये उससे ले ले | ओहदे कोलो ओह। रपईए लै लै | ओह रप्पीए ओस-कोलो ले लओ | ओह रुपैये ओस-तों लै-लै | ओह रुपये उसदे कछा लई लै | सेह रुपय्ये तिस-ते लै-ले |
| २३६ | उसे अच्छी तरह पीटो और रस्सियो से बाँध दो | ओहनू खूब फण्डो ते रसिआ नाल मुस्का वन्हो | ओहनू चगी तरा मारो, रस्सिआ नाल बन्ह लओ | ओहनू चगी तरा मार-कुट्ट के रस्सिआट नाल बन्न दियो | उसी खरा करीए मार ते रस्से कन्ने बन्न | तिस-की मता मारी-करी रस्सिया कने बन्ही-दे |
| २३७ | कुएँ से पानी निकालो | खूओ पानी खिच्च | खूहचो पाणी खिच्चो | खूह विच्चों पाणी कड्ढो | खूहे-विच्चा पानी काड | खूए-ते पाणी धीड़ी लै-आ |
| २३८ | मेरे आगे आगे चल | मेरे अग्गे अग्गे चल | मेरे अग्गे चल्लो | मेरे सामने टुट-फिर | मेरे अग्गें चल | मेरे अग्गे हुण्ड |
| २३९ | किसका लड़का तुम्हारे पीछे आता है | तुहाड्डे पिच्छे किहदा मुण्डा आन्दा-ई ? | तुहाडे पिच्छे कीहदा मुण्डा आओन्दा-है ? | किहदा मुण्डा तेरे पिच्छे आउदा-है ? | कुहदा लीहडा तेरे पिच्छे आविआ-दा ऐ ? | कुहदा जातक तुस्सादे पिच्छे आओंदा-है ? |
| २४० | तुमने वह किस से खरीदा था ? | तुसी ओह किहदे कोलो मुल्ल लित्ता-सी ? | तुसा ओह कीहदे-कोलो मुल्ल लेआ-है ? | तुसा एह चीज किह-दे कोलो मुल्ल लई-है ? | ओह तुध कुहदे कछार खरीदिया ऐ ? | कुस-ते तुस्सा सैह मुल्ले लिआ ? |
| २४१ | गाव के दुकानदार से | पिण्डदे इक्क हट्टी-वाले कोलो | पिण्डदे हट्टीवाले-कोलो | पिण्डदे हट्टीवाले-तो | गरादे इक हट्टी-वाले कछा | गराएदे हटवाणीए-ते |